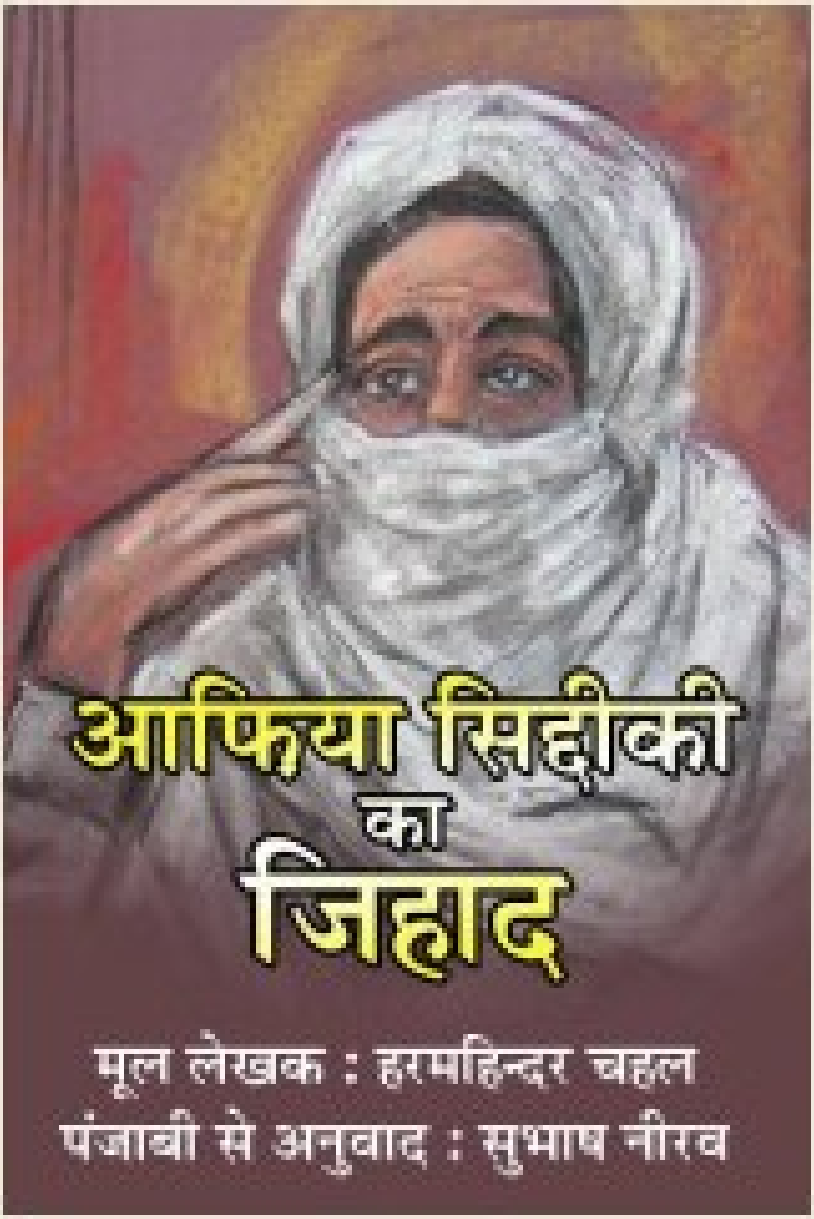
आफिया सिद्दीकी
का
जिहाद
मूल लेखक : हरमहिन्दर चहल
पंजाबी से अनुवाद : सुभाष नीरव

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –1

हरमहिंदर चहल

अनुवाद : सुभाष नीरव

(1)

यह अफ़गानिस्तान का गज़नी शहर था। उस दिन वर्ष 2008 के जुलाई महीने की 17 तारीख़ थी। दिन भर बेइंतहा गरमी पड़ती रही थी। दिन ढलने लगा तो गरमी की तपिश भी कम होने लगी। आख़िर लंबा दिन गुज़र गया और थाने की दीवारों के साये अहाते के दूसरे सिरे पर जा पहुँचे। सूरज छिपने ही वाला था जब थानेदार गनी खां शहर का चक्कर लगाने के लिए उठा। आज उसका सारा दिन बाहर ही गुज़र गया था। सुबह से ही वह अमेरिकन फ़ौज़ की उस टुकड़ी के साथ घूम रहा था जो कि गाँवों की तरफ़ चक्कर लगाने गई थी। आजकल इस इलाके में तालिबानों का ज़ोर था। अमेरिकी फ़ौज़, इलाके की पुलिस को संग लेकर गाँवों की छानबीन के काम में लगी हुई थी। अमेरिकी फ़ौज़ों ने इस इलाके को तालिबानों से मुक्त करवाने का बीड़ा उठा रखा था। वे अपने मिशन में सफल भी हो रहे थे। हर रोज़ सवेरे ही फ़ौज़ का काफ़िला चल पड़ता था। जिस इलाके में उन्हें जाना होता, वहाँ के थाने का अमला-फेला साथ जाता था। इसी तरह आज गनी खां के थाने के गाँवों की बारी थी। इसीलिए आज उसका पूरा दिन बाहर घूमते हुए ही गुज़र गया था। गनी खां की एक आदत थी कि वह कितना भी व्यस्त होता, पर शाम के वक़्त शहर का चक्कर अवश्य लगाता था। आज भी घर जाने से पहले उसने शहर का एक चक्कर लगाने का मन बनाया। उसके कहने पर हवलदार कुछ सिपाहियों को ले आया और ड्राइवर ने पिकअप ट्रक को थाने के गेट के आगे ला खड़ा किया। गनी खां आगे ड्राइवर के साथ बैठ गया और शेष

अमला ट्रक के पीछे खड़ा हो गया। थोड़ा घूमकर ड्राइवर ने ट्रक को बाज़ार की ओर मोड़ लिया। बाज़ार में से गुज़रते हुए ट्रक गली का मोड़ मुड़ने लगा तो गनी खां ने सामने बंद पड़ी एक दुकान के आगे बुर्के से ढकी एक औरत की ओर देखा। वह औरत नीचे ज़मीन पर बैठी थी और उसके साथ करीब बारह वर्ष का एक लड़का था। गनी खां ने मन ही मन सोचा कि शहर में मंगतों की गिनती बहुत बढ़ गई है। मोड़ मुड़ते ही पिकअप ट्रक जब करीब से गुज़रा तो उसने बड़े ध्यानपूर्वक उस औरत की तरफ़ झांका। औरत ने पास रखे काले रंग के बड़े-से बैग को कसकर हाथों में पकड़ रखा था। तभी गनी खां का पुलिसिया दिमाग हरकत में आ गया। यह इतना बड़ा बैग क्यों उठाये घूमती है - उसने सोचा। उसको शक हुआ तो उसने ट्रक रुकवा लिया और नीचे उतरकर औरत के पास चला गया। एक पैर चबूतरे पर रख और हाथ वाला डंडा औरत की तरफ करके उसने पूछा, "ऐ बीबी, कौन है तू ?"

"मैं तो एक गरीब औरत हूँ। अपने पति को खोजती फिरती हूँ जो लड़ाई में कहीं गुम हो गया है।" इतना कहते हुए वह खड़ी हो गई। उसने पास में रखा बैग उठा लिया।

"तेरे साथ यह लड़का कौन है ?"

"यह तो कोई अनाथ है। भूचाल में इसके माँ-बाप मारे गए थे। मैं इसको संग ले आई थी।" इतना कहकर वह उठी, बैग को कंधे से लटकाया और लड़के की उंगली पकड़कर चल पड़ी।

"ऐ रुक जा।" गनी खां ने आगे बढ़कर उसका रास्ता रोक लिया। औरत के हावभाव और बोलने के ढंग ने उसके सन्देह को और भी बढ़ा दिया था। उसको पिछले दिनों किसी मुखबिर से मिली ख़बर याद हो आई कि कोई औरत यहाँ गवर्नर पर आत्मघाती हमला करने की ताक में है। इतने में सिपाहियों ने औरत को चारों ओर से घेर लिया। एक ने आगे बढ़कर उससे बैग छीना और उसको खंगालने लगा। कुछ काग़ज़ बाहर निकाले। गनी खां ने काग़ज़ों को ध्यान से देखा तो वह बहुत हैरान हुआ। ये नक्शे वगैरह थे। उसके कहने पर पुलिस वालों ने उस औरत को बच्चे सहित ट्रक में बिठा लिया और थाने की तरफ़ चल पड़े। थाने पहुँचकर उसके बैग की अच्छी तरह से तलाशी ली गई। और भी हैरान करने वाली वस्तुएँ बैग में से मिलीं। दो बोतलों में कोई ख़तरनाक कैमिकल थे जो कि बम बनाने का मसाला प्रतीत होते थे। इसके अलावा दो किलो के करीब सोडियम सायनाइड मिला। बाकी हाथ से लिखे

हज़ारों काग़ज़ मिले जो कि अधिकतर अंग्रेजी में थे। बैग में काफ़ी संख्या में नक्शे थे जिनमें एक यहाँ के गवर्नर के घर का भी था। उस औरत ने अपना नाम सलीहा बताया। गनी खां को पूरा यकीन हो चुका था कि यह औरत किसी आतंकवादी संगठन की ख़तरनाक मेंबर है और हो सकता है कि यहाँ के गवर्नर को आत्मघाती हमले में मारने निकली हो। उसने तुरन्त गवर्नर दफ़्तर को ख़बर की। उन्होंने आगे अमेरिका के बैगराम एअरपोर्ट बेस को सूचना भेजी। इस बीच रात में औरत की पिटाई भी हुई, पर उसने मुँह नहीं खोला। उसके साथ पकड़े गए लड़के को अलग कर दिया गया था। अगले दिन सवेरे ही अमेरिकन फ़ौज़ का कैप्टन राबर्ट सिंडर अपनी टुकड़ी लेकर गज़नी थाने की ओर चल पड़ा। तब तक उस औरत को थाने में से निकालकर नज़दीक की एक इमारत के बड़े कमरे में बिठाया हुआ था। काबुल से अफ़गान सरकार के कुछ बड़े अधिकारी भी उससे बात करने के लिए पहुँचे हुए थे। जब कैप्टन सिंडर अपने अमले-फेले के साथ वहाँ पहुँचा तो इमारत को स्थानीय अफ़गानियों ने घेर रखा था। वे हथियारबंद थे क्योंकि वहाँ बात फैल चुकी थी कि थाने वाले किसी बेकसूर औरत को अमेरिकियों के हवाले करने जा रहे हैं। कैप्टन मन ही मन बोला, "जिस बात का डर था, वही हो गई।" उसने देखा था कि यहाँ अफवाहों का बहुत ज़ोर रहता था। ज़रा-सी बात हुई नहीं कि अफवाह उड़ी नहीं। यही नहीं बल्कि अफगानी लोग हथियारबंद होकर पहुँच जाते थे। आज भी ऐसा ही हुआ था। लोगों के हुजूम ने हथियार उठाये हुए थे। आसपास नज़र घुमाते हुए उसने मन ही मन सोचा, "आज यहाँ ज़रूर कुछ न कुछ होकर रहेगा। एक तो औरत का मामला है और ऊपर से उसे कल रात से पकड़ा हुआ है। लोग भी धड़ाधड़ इकट्ठे हुए जा रहे हैं। पता नहीं हालात कैसे बन जाएँ।" यही सब सोचकर उसने सबको पूरी मुस्तैदी के साथ रहने का हुक्म दिया और लोगों में से राह बनाता हुआ अपने खास दस्ते के साथ बड़ी इमारत के अन्दर चला गया। आगे करीब तीन सीढ़ियाँ चढ़कर वे इमारत के दरवाजे तक पहुँच गए। दो व्यक्ति बाहर पहरे पर खड़े हो गए। कैप्टन और वारंट अफ़सर अंदर चले गए। दुभाषिया भी उनके साथ था। कैप्टन ने अंदर बैठे अफगानी लोगों और अफ़सरों की ओर देखते हुए झुककर सलाम किया। उसने इधर-उधर नज़रें दौड़ाईं। पिछली ओर पर्दा तना हुआ था। वह समझ गया कि गिरफ्तार की गई औरत इस पर्दे की ओट में होगी। कैप्टन और वारंट अफ़सर अन्य सभी के साथ नीचे फर्श पर ही बैठ गए। उन्होंने अभी बातचीत आरंभ ही की थी कि वहाँ गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ सुनते ही वारंट अफ़सर ने अपना पिस्तौल निकालकर गोली चला दी जो कि पर्दे के पीछे बैठी औरत के पेट में लगी। जब पता चला कि औरत ज़ख़्मी हो चुकी है तो कैप्टन ने अपने लोगों को आवाज़ दी। सभी ने तुरंत औरत को स्ट्रेचर पर डाला और पिछले दरवाजे से अपने ट्रक तक पहुँचे। वहाँ से ज़ख़्मी औरत को संग लेकर वे बैगराम एअरफोर्स बेस की ओर चल दिए। वहाँ उसे अस्पताल में भर्ती करवाया गया। साथ ही उसकी असली पहचान मालूम करने के लिए उसके फिंगर-प्रिंट लिए गए। दो

घंटों के बाद एफ.बी.आई के दफ़्तर से उसकी सही पहचान की रिपोर्ट आ गई। जब सभी विभागों को उसके असली नाम का पता चला तो हर तरफ़ तहलका मच गया। वह कोई साधारण औरत नहीं थी। वह अमेरिकी एफ.बी.आई. द्वारा घोषित की गई विश्व की सबसे ख़तरनाक आतंकवादी औरत थी और उसका नाम था - आफ़िया सिद्दीकी।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –2

(2)

इस्मत जेहान का जन्म 1939 में बुलंद शहर में हुआ। यहीं उसने बचपन बिताया। इस्मत ने स्कूल अभी पूरा भी नहीं किया था कि हिंदुस्तान का बंटवारा हो गया। वह परिवार के साथ पाकिस्तान चली आई। यहीं उसका विवाह मुहम्मद सुलेह सद्दीकी के साथ हुआ। सुलेह सद्दीकी पेशे से डॉक्टर था। विवाह के कुछ समय बाद वह इंग्लैंड चले गए। वहाँ वे कई वर्ष रहे। उनके परिवार में पहले बेटे का जन्म हुआ जिसका नाम उन्होंने मुहम्मद अली रखा। फिर 1966 में पहली लड़की फौजिया का जन्म हुआ। इसके बाद वे वापस पाकिस्तान लौट आए। यहीं मार्च, 1972 में उनकी दूसरी बेटी ने जन्म लिया जिसका नाम आफिया रखा गया। इसी साल जुलाई महीने में सुलेह के साले एस.एच. फारूकी का परिवार उनसे मिलने आया। फारूकी परिवार इस्लामाबाद में रहता था। नाश्ता-पानी से फुर्सत पाकर वे ड्राइंग रूम में बैठ गए। बातें चलीं तो शीघ्र ही वे मौजूदा मसले के बारे में बात करने लगे। बात शुरू करते हुए फारूकी बोला, “भाई साहब, भुट्टो ने मुल्क का बेड़ा डुबो कर रख दिया।”

“क्या किया जा सकता है। मगर अकेला वही तो जिम्मेदारी नहीं है। सभी ने मिलकर ही पाकिस्तान के मुँह पर कालिख़ मली है।”

“गर असल में पूछते हो तो यह काम याहया खां के ज़माने से शुरू हुआ।” फारूकी की बीवी ने बातचीत में हिस्सा लेते हुए अपना विचार रखा।

“फौज तो सारी ही इस बदनामी का कारण बनी है।”

“अगर पहले ही संभलकर चलते तो क्या फर्क़ पड़ता था। आज ये दिन तो न देखने पड़ते।”

“सच बात तो यह है कि इन्होंने पूर्वी पाकिस्तान के लोगों की भावनाओं की कद्र नहीं की। जब मुजीब-उल-रहमान पाटी की पार्टी जीत गई थी तो हुकूमत उसके हवाले कर देते। उसूल तो यही कहता है।”

“उसूल आम लोगों के लिए हैं। इन रजवाड़ों के लिए नहीं। इन्होंने तो उन लोगों को कभी बराबरी का दर्ज़ा भी नहीं दिया था। फिर यह सब तो होना ही था।”

“इंडिया ने पूर्वी पाकिस्तान के लोगों की मदद करके हमारी छाती पर मूंग दली है। इंशा अल्ला कभी मौका मिला तो हमें भी हिसाब बराबर करना चाहिए।” इस बार इस्मत बोली।

“इंडिया ने जो भी किया है, वह अपने हिसाब से सही किया है। उसकी जगह कोई दूसरा देश होता तो वह भी यही करता। राजनीति यही कहती है।” सुलेह सद्दीकी ने अपना विचार प्रकट किया।

“जो भी हुआ, अच्छा या बुरा यह अलग बात है। पर इस कार्रवाई ने कायदे-आज़म, अल्ला उनकी रूह को जन्नत बख्शे, का दो कौमों का सिद्धांत गलत साबित कर दिया है। इस बात ने पाकिस्तान का अस्तित्व ख़तरे में डाल दिया है।”

“और नहीं तो क्या... कितनी हसरतों से इधर आए थे कि मुसलमानों का अपना मुल्क बन गया है। अल्ला की मार पड़े इन लीडरों को जिन्होंने लोगों की भावनाएँ कुचल कर रख दी हैं। यह बंगला देश नहीं बना, यह तो हमारी जम्हूरियत के मुँह पर थप्पड़ है।”

“कौन सा बंगला देश ? मैं नहीं मानती इसको। तुम पूर्वी पाकिस्तान कहो।” इस्मत नफ़रत में बोली।

“आपा, तुम्हारे कहने से क्या होता है। ज़रा गौर फरमाओ कि पिछले हफ़्ते ही तो हमारे वज़ीरे आलम भुट्टो साहिब शिमला समझौते पर दस्तख़त करके आए हैं। उस समझौते की मुख्य मद यही है कि पाकिस्तान बंगला देश के अस्तित्व को मानता है। उस पर दस्तख़त करने का मतलब है कि पाकिस्तान ने बंगला देश को मान्यता दे दी है।”

“यह समझौता भी तो भुट्टो ने अपनी छवि बचाने के लिए ही किया है। अगर उसको मुल्क की फिक्र होती तो वह उन एक लाख फौजियों की रिहाई की बात करनी न भूलता जो इंडिया ने जंगी-क़ैदी बनाए हैं।”

“अगर जनरल नियाज़ी ज़रा हिम्मत से काम लेता तो वह क़ैद ही नहीं होते और शायद बंगला देश भी न बनने देते।” यह विचार फारूकी की बेगम का था।

“बेगम क्या बात करती हो तुम। इसमें नियाज़ी साहब का रत्तीभर भी कसूर नहीं है। वह अपनी सरकार की मदद के बग़ैर कितनी देर लड़ सकता था।”

“अवाम कभी भी भुट्टो को मुआफ़ नहीं करेगी। न ही फौज करेगी। और तो और, उसने कश्मीर मसले को भी दूसरा ही रूप दे दिया। मकबूज़ा(अधिकृत) कश्मीर की हद को ‘लाइन-ऑफ कंट्रोल’ का रूप दे आया। कहता है कि भविष्य में इस मसले का हल बातचीत के जरिये ही निकाला जाएगा। कोई पूछ तो सही कि अगर भविष्य में कभी इंडिया, पाकिस्तान पर हमला कर दे तो उसका हल भी बातचीत से ही निकालना।”

“भाई साहब, यह सब तो होना ही था। और फिर जो हो चुका है, वह बदला नहीं जा सकता। हमें सच्चाई कुबूल करनी ही पड़ेगी।” सुलेह सद्दीकी ने यह बात कही तो सभी चुप हो गए। फारूकी ने बात का रुख बदलते हुए अन्य बात छेड़ दी, “भाई साहब, तुम्हारा अफ्रीका जाने का प्रोग्राम कैसे है ?”

“बस, सब इंतज़ाम मुकम्मल हैं। जैम्बिया की लोअस्का यूनिवर्सिटी की ओर से नौकरी का ख़त भी आ चुका है। अब तो शायद इसी महीने रवाना हो जाएँ।”

फिर वे दूसरी बातें करने लगे। शाम ढले फारूकी परिवार जाने के लिए उठा। उन्होंने सभी बच्चों के सिर पर हाथ रखा। चादर में लिपटी पड़ी छोटी-सी आफिया का मुँह चूमा। फिर कार में बैठकर चले गए। इसके कुछ हफ़्ते बाद ही सद्दीकी परिवार जैम्बिया चला गया।

यहाँ आकर सुलेह सद्दीकी, लोअस्का मेडिकल युनिवर्सिटी में प्रोफेसर की नौकरी करने लगा। इस्मत बच्चों को संभालती थी। वह सारा दिन घर में खाली रहती थी। उसने इस खाली समय को धर्म के कामों में लगाने के विषय में सोचा। धार्मिक कामों में वह प्रारंभ से ही बढ़-चढ़कर भाग लेती थी। इस्लाम पर चर्चा करना उसको बहुत अच्छा लगता था। यहाँ वह पड़ोसी स्त्रियों को दिन के समय एकत्र कर लेती और उनके साथ धार्मिक मसलों पर बातें करती। अच्छा वक्ता होना उसका बड़ा गुण था। शीघ्र ही, उसके घर आने वाली स्त्रियों की संख्या में वृद्धि होने लगी।

फिर तो यह गिनती इतनी हो गई कि उसको कहीं बाहर जगह का प्रबंध करना पड़ा। उसने अपने संगठन का नाम भी रख लिया। यू.आई.ए. यानी युनाइटिड इस्लामिक ऑरगनाइजेशन। उसका प्रभाव यहाँ के मुस्लिम समाज में बढ़ने लगा। सारी एशियन कम्युनिटी में सद्दीकी परिवार मशहूर हो गया। इस्मत का नाम दिनों दिन हरेक की जुबान पर आने लगा। अपने लोगों को धार्मिक शिक्षा देने के अलावा, इस्मत यह भी कोशिश करती थी कि करीबी क्रिश्चियन भाईचारे में से लोगों को अपने धर्म में लाया जाए। इस काम में वह सफल भी हो रही थी। आफिया हालाँकि तब बहुत छोटी थी, पर उसकी माँ उसको हर रोज़ ऐसे जन-समूहों में संग लेकर जाती। आफिया बड़े ध्यान से माँ की बातें सुनती। आफिया यद्यपि पूरी तरह इन बातों को नहीं समझ सकती थी, पर ये बातें उसके अवचेतन पर उतर रही थीं। इस्मत कहीं भी जाती छोटी-सी आफिया उसके साथ होती थी।

आख़िर सुलेह की नौकरी का समय पूरा हो गया। पूरा परिवार पाकिस्तान वापस लौट पड़ा। आफिया उस वक्त सात वर्ष की थी। यह 1980 का वो समय था जब पाकिस्तान के आस-पड़ोस में उथल-पुथल हो रही थी। ईरान में खुमैनी की रिवोलिशनरी इस्लामिक सरकार ने सत्ता संभाल ली थी। हर तरफ खुमैनी की चढ़त थी। पाकिस्तान में वो सबकुछ बदल गया था जो कि उनके अफ्रीका जाने के समय में था। वहाँ फौजी जनरल जियाउल हक़ की कमांड के नीचे डिक्टेटरशिप कायम हो चुकी थी। उससे पहले प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो जो कि बहुत अमीर व्यक्ति था, मुल्क को धार्मिक प्रभाव से ऊपर उठाकर एक शक्तिशाली जनतांत्रिक देश बनाना चाहता था। इससे धार्मिक लोग अर्थात मुल्ला वगैरह उससे बहुत नाराज़ थे। जियाउल हक़ ने मौके की नब्ज़ को पहचानते हुए राज पलट दिया। उसके आते ही मुल्लों की अच्छी सुनवाई होने लगी। जियाउल हक़ ने मुल्क को धार्मिक रंग में रंगना शुरू कर दिया था, क्योंकि वह जानता था कि यदि स्थायी रूप में राज स्थापित करना है तो लोगों को धार्मिक हथियार से काबू में करना पड़ेगा। इसके लिए उसने ज़रूरी काम प्रारंभ किए। उसने धार्मिक उसूलों को लागू करने के लिए कौंसिल आफ इस्लामिक आयडियोलॉजी कामय की। ऐसे धार्मिक संगठनों की मदद से जियाउल हक ने पाकिस्तान को धार्मिक स्टेट बनाने के लिए पूरे यत्न आरंभ कर दिए। उसका पहला कदम था - स्त्रियों को परदे और चारदीवारी में बंद करना। कितने ही नए धार्मिक रंग वाले कानून बनाकर जिया उल हक ने मुल्क के धार्मिक लीडरों का विश्वास जीत लिया। हर तरफ धार्मिक रंग उभर रहा था जो कि पश्चिम के खिलाफ़ था। पश्चिम के खिलाफ़ ज़ोर-शोर से प्रचार हो रहा था। इन्हीं दिनों ईरान में अमेरिकी एम्बेसी के स्टाफ को क़ैद कर लिया गया। सऊदी अरब में उग्र इस्लामिस्टों ने मक्के की पवित्र बड़ी मस्जिद काबा पर कब्ज़ा कर लिया। पाकिस्तान में उग्रवादियों ने अमेरिका की अमेरिका की इस्लामाबाद स्थित एम्बेसी को आग लगाकर जला दिया। पश्चिम के विरुद्ध

हर जगह गुस्सा भड़क रहा था। तभी दिसम्बर 1979 में सोवियत यूनियन की फौजें अफ़गानिस्तान में दाख़िल हो गईं। इस घटना ने सब कुछ बदलकर रख दिया।

अमेरिका जो अब तक जिया उल हक की कार्रवाइयों के कारण बहुत गुस्से में था, उसको अब जिया उल हक की ज़रूरत महसूस हुई। सोवियत यूनियन को टक्कर देने के लिए वह जिस करीबी शक्ति को ढूँढ़ रहा था, जिया उल हक उसके बिल्कुल मुफ़ीद आता था। सऊदी अरब और अमेरिका ने मिलकर अफ़गानिस्तान में सोवियन यूनियन के खिलाफ़ लड़ने की योजना बनाई जिसमें उन्होंने जिया उल हक को आगे लगा लिया। जिया ने पाकिस्तान की खूफ़िया एजेंसी, आई.एस.आई. को इसकी कमांड सौंप दी। उन्हीं दिनों में अफ्रीका से लौटकर डॉक्टर मुहम्मद सुलेह सद्दीकी ने कराची की एक हाई सोसायटी 'गुलशने इकबाल' में बंगला खरीद लिया जहाँ कि बड़े-बड़े अफ़सर और अन्य प्रभावशाली लोग रहते थे। जिया उल हक के चीफ़ ऑफ स्टाफ मिर्ज़ा असलम बेग का परिवार, सद्दीकी का पड़ोसी था। इस प्रकार यह परिवार पाकिस्तान पर राज करने वाले ग्रुप के बहुत करीब आ गया।

इस समय आफिया अपने बचपन का आनंद ले रही थी जबकि उसकी माँ अपने धार्मिक संगठन यू.आई.ओ. के लिए अधिक से अधिक काम कर रही थी। इस्मत सद्दीकी दिनों दिन प्रसिद्ध हो रही थी। यहाँ तक कि जिया उल हक की बेगम शैफ़ीक भी उसके प्रभाव के अधीन थी और उसकी धार्मिक कक्षाओं में उपस्थित हो रही थी। उस वक़्त तक इस्मत ऊँची सोसायटी में एक बहुत ही सम्मानजनक मुकाम हासिल कर चुकी थी। जिया उल हक खुद उससे प्रभावित था। जिया, इस्मत से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसको उस बोर्ड का मेंबर बना दिया जो कि कुरान के अनुसार ज़कात अर्थात चैरिटी एकत्र करने और उसको खर्च करने का प्रबंध करता था। इस बोर्ड में आते ही इस्मत का अन्य बहुत बडे बड़े संगठनों से सम्पर्क हुआ जो कि किसी न किसी ढंग से अफ़गानिस्तान में चल रहे जिहाद के जुड़ी हुई थीं। अफ़गानिस्तान के लिए जाने वाला प्रथम लड़ाकू जिहादी दल, सद्दीकी परिवार के घर से कुछ ही दूर स्थिति बिनूरी कस्बे की मस्जिद से रवाना होने लगा तो लोगों ने उन्हें बहुत ही मान-सम्मान से विदा किया। इसके साथ ही लोगों की नज़रों में सद्दीकी परिवार विशेष तौर पर इस्मत के प्रति इज्ज़त और बढ़ गई। उस दिन आफिया भी दीवार से लगी खड़ी जाते हुए जिहादियों को देखती रही। इस प्रकार छोटी उम्र में ही आफिया जिहाद के बारे में सुनने लगी थी। इतना ही नहीं, बल्कि उसका जिहाद के प्रति लगाव बढ़ने लगा। आफिया तब 'गुलशने इकबाल' में लोकल इंग्लिश की छात्रा थी। वह स्कूल में इंग्लिश, मैथ, साइंस, कुरान और सुन्ना पढ़ रही थी। आफिया उस वक़्त बहुत ही मासूम थी। उसकी रुचियाँ भी मासूमों वाली थीं। वह घर में पंछियों को हर रोज़ दाना डालती। इसके अलावा

उसने घर में कुत्ते, बिल्ली, बत्तख, मछलियाँ और तोते वगैरह पालतू जानवर रखे हुए थे। फुर्सत का समय वह इनके साथ खेलते हुए बिताती।

अपनी माँ के प्रभाव तले वह भी बहुत धार्मिक होती जा रही थी। माँ को देखकर उसने भी स्कूल में छोटे छोटे बच्चों को लेक्चर देने प्रारंभ कर दिए थे। सद्दीकी परिवार में हर वक़्त अफ़गानिस्तान के अंदर चल रहे जिहाद की बातें चलती रहती थीं। यद्यपि सुलेहे सद्दीकी की इन बातों में अधिक दिलचस्पी नहीं होती थी, पर उसकी पत्नी दिलोजान से जिहादियों की मदद करती थी। उसके लिए उस वक़्त इससे बड़ा कोई दूसरा काम नहीं था कि इस्लाम की धरती से कम्युनिस्टों का सफाया किया जाए और वहाँ सच्चा इस्लामिक राज्य कायम हो। आफिया माँ की इन कार्रवाइयों को बहुत ही ध्यान से देखती थी। उसका मन करता कि वह इन जिहादियों की दिलोजान से सेवा करे जो कि अपने धर्म के लिए शहीद हो रहे थे। वह जिहादियों के बहादुरी भरे कारनामे सुनती तो उसको लगता कि यही धर्म के असली हीरो हैं। थोड़े-से लड़ाकुओं की मदद से शुरू किया गया जिहाद आख़िर उनके हक में होने लगा। बड़ा कारण अमेरिका था जो कि परदे के पीछे रहता, जिया उल हक को आगे रख कर सारी लड़ाई आप लड़ रहा था। आख़िर जिहादियों का पलड़ा भारी पड़ने लगा। आहिस्ता आहिस्ता उन्होंने सोवियत यूनियन को अफ़गानिस्तान में से खदेड़ दिया। फिर समझौता हुआ जिस के अनुसार सोवियत यूनियन वहाँ से अपनी फौजें निकालने के लिए राजी हो गया। जब सोवियत यूनियन की फौजें अफ़गानिस्तान में से गर्दन झुकाकर निकलनी प्रारंभ हुई तो आफिया ने भी अन्य लोगों की तरह जश्न के कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। उस वक़्त हर तरफ खुशी का आलम था। ख़ास तौर पर सद्दीकी परिवार के घर में। उनके अनुसार अल्ला की पार्टी की जीत हो चुकी थी। उनका विचार था कि यह जिहाद ही था जिसने अफ़गानिस्तान को कम्युनिस्टों से आज़ाद करवाया। इस विजय को हर एक ने अपने नुक्ते से देखा। अमेरिका को लगा कि उसने काफी अरसे से चल रहे शीतयुद्ध में रशिया का सिर कुचल दिया है। अफ़गानिस्तान के लोगों को लगा कि उन्होंने जिहाद की राह पर चलकर अपना मुल्क आज़ाद करवा लिया है। पर जनरल जिया उल हक और उसकी सरकार ने सोवियत यूनियन की हार को किसी दूसरे रूप में देखा। जिया ने यह भ्रम पाल लिया कि यह सब कुछ पाकिस्तान की वजह से हुआ है। उसका विचार था कि इस वक़्त पाकिस्तान कुछ भी कर सकता है। उसके अनुसार आहिस्ता आहिस्ता पाकिस्तान, पूरे मध्य एशिया में अपना दबदबा कायम कर लेगा। उसने अफ़गानिस्तान से फुर्सत पाकर दूसरे हिस्सों की तरफ देखना शुरू कर दिया। सबसे पहले उसने अपना मुख्य एजेंडा चालू करने की विचार बनाया। वह था- इंडिया की ओर कश्मीर की आज़ादी (पाकिस्तानी इसको मकबूज़ा अर्थात पाक-अधिकृत कश्मीर कहते हैं जब कि पाकिस्तान की ओर के कश्मीर को आज़ाद कश्मीर कहा जाता है)। जिया ने अपने

लोगों को कश्मीर आज़ाद करवाने का नारा दिया। इसके लिए उसने वही तरीका चुना जो कभी अमेरिका ने अफ़गानिस्तान के लिए चुना था। अर्थात पाकिस्तान परदे के पीछे रहकर सारी लड़ाई लड़ेगा जब कि कश्मीर में तैयार किए गए जिहादी असली लड़ाई लड़ेंगे। इसके लिए उसने एक्शन शुरू किया तो शांत पड़े जम्मू-कश्मीर में भूचाल आ गया। जगह-जगह जिहादी पैदा हो गए। इस खेल में जिया उल हक दो मोर्चे मारना चाहता था। एक तो था इंडिया से कश्मीर छीनना और दूसरा था, बंगला देश वाला हिसाब चुकता करना। वह यहाँ तक आत्मविश्वास से भर गया कि उसने सोचा कि कश्मीर के आज़ाद होने के पश्चात वह इस प्रॉक्सी वार को भारत के अन्य हिस्सों में फैला देगा और देश के टुकड़े-टुकड़े कर देगा। कश्मीर के साथ ही उसने पंजाब पर भी आँख रख ली। अपना अलग देश बनाने के लिए वह सिक्खों को भड़काने लगा। उसका कहना था कि असली लड़ाई तुम लड़ोगे और सारी मदद वह करेगा। जिया उल हक उस वक़्त बहुत ऊँची उड़ानें भर रहा था। परंतु कुदरत अपना खेल स्वयं खेलती है। एक दिन सद्दीकी परिवार के घर फारूकी का फोन आया। फोन इस्मत ने उठाया तो उधर से वह बोला, “आपा गज़ब हो गया।”

“क्यों क्या हुआ ?”

“जिया साहब नहीं रहे।”

“क्या कहा ?” इस्मत को अपने कानों पर विश्वास न हुआ।

“अभी अभी पता चला है कि जनरल जिया उल हक हवाई हादसे में मारे गए।”

“हाय अल्ला...।”

इस्मत का शरीर सुन्न हो गया। वह कुर्सी के डंडे को पकड़कर वहीं गिर पड़ी। उधर से दो चार बार आवाज़ आई तो वह अपने आप को संभालती हुई बोली, “भाई जान, यह तो बहुत बड़ा क़हर हो गया। हम तो जीते जी ही मर गए। अपने लिए तो वही सब कुछ थे। अल्लाह ख़ैर करे, पता नहीं इनके बग़ैर मुल्क का क्या होगा। पर यह सब हुआ कैसे ?”

“वो कहीं दौरे पर गए थे। साथ ही, बड़े फौजी अफ़सरों के अलावा अमेरिकी राजदूत भी था। लौटते हुए बहावलपुर से हवाई जहाज से रावलपिंडी आ रहे थे। शायद किसी ने जहाज में बम रखवा दिया। जहाज उड़ने से कुछ समय बाद ही तबाह हो गया। कोई भी सवार नहीं बचा।”

“भाई जान, कौन उनकी जान का दुश्मन बन गया होगा ?”

“आपा, क्या कह सकते हैं। पर लगता है कि या तो अमेरिका ने यह सब करवाया है या फिर रशिया ने।”

“अमेरिका भला ऐसा क्यों करवाएगा ? उसकी तो जिया साहिब ने इतनी मदद की है। रशिया की यहाँ तक पहुँच नहीं हो सकती।”

“और फिर किसने करवाया होगा यह काम ?”

“अल्लाह दोजख की भट्ठी में झोके उसको, यह सब हिंदुस्तानियों का किया करवाया है। इस वक़्त सबसे ज्यादा हिंदुस्तान ही जिया साहब से डरता था।”

“आपा आपने दुरस्त फरमाया है। ख़ैर, धीरे-धीरे पता लग जाएगा। पर हुआ बहुत बुरा।”

“बुरे से भी बुरा। अपना तो सब कुछ ही बर्बाद हो गया। अल्लाह जन्नत बख्शे उनको। हमें तो जिया साहब ने बड़ा आदर-सम्मान दिया था। अब पता नहीं आगे क्या होगा।”

“आपा, एक बार तो सारा मुल्क दहशतज़फा हो गया है। इस्लामाबाद शहर तो इस तरह लगता है मानो वहाँ कोई बसता ही न हो। लोग बहुत ज्यादा उदास है। अल्लाह ख़ैर करे, देखो आगे क्या होता है।” इतना कहते हुए फारूकी ने फोन काट दिया।

इस्मत को इस ख़बर ने तोड़कर रख दिया था। छोटी-सी आफिया माँ को दहाड़ें मारकर रोते देखती रही।

जहाँ जिया के समर्थक लोग इस हादसे से टूटकर बिखर गए थे, वहीं विरोधी इसको अपने लिए एक अच्छा वक़्त मान रहे थे। उनके अनुसार एक ज़ालिम हाकिम से पीछा छुड़वाने में अल्लाह ने उनकी मदद की थी। इन लोगों में सबसे ऊपर बेनज़ीर भुट्टो थी। कुछ वर्ष पहले ही तत्कालीन प्रधान मंत्री और बेनज़ीर के पिता जुल्फकार अली भुट्टो को जिया उल हक ने न सिर्फ़ गद्दी से नीचे उतारा था, बल्कि बाद में फांसी पर भी लटका दिया था। पिता की मौत के बाद अपनी पार्टी को आगे बढ़ाते हुए बेनज़ीर ने बड़ी यातनाएँ सही थीं। जिया उल हक की सरकार ने उसको ख़त्म करने की कोई कसर नहीं छोड़ी थी, पर फिर भी उसने लड़ाई जारी रखी। पिछले कुछ समय से वह पाकिस्तान में रहते हुए, लोगों को लामबंद कर रही

थी। यह अवसर उसको बिल्कुल मुफ़ीद बैठ गया। उसने ज़ोर-शोर से लोगों का जम्हूरियत के लिए जागरूक करना शुरू कर दिया। उसकी मेहनत का नतीजा ही था कि कुछ देर बाद हुए चुनाव में उसकी पार्टी बहुमत ले गई और बेनज़ीर भुट्टो किसी इस्लामिक देश की पहले महिला प्रधान मंत्री बन गई। जिया के समय से जो लोग धार्मिक प्रभाव के नीचे दबकर रह गए थे, उन्हें बेनज़ीर के आने से नई उम्मीदें मिल गईं। मुल्लो की जकड़ में आया मुल्क, एकदम घुटन से बाहर आ गया। एकदम सभी हालात बदल गए। इस परिवर्तन को इस्मत ने नए नज़रिये से देखा। उसने सोचा कि यदि बेनज़ीर भुट्टो राजनीति में आगे बढ़ रही है तो आफिया क्यों नही राजनीति कर सकती। उसका विचार था कि आफिया किसी बात में भी बेनज़ीर से कम नहीं है। वह सत्रह वर्ष की हो चुकी थी। उसने प्रारंभिक पढ़ाई पूरी कर ली थी। पढ़ाई भी उसने पाकिस्तान के मशहूर सेंट जॉसिफ कालेज से की थी, जहाँ पर बड़े बड़े लोगों के बच्चे पढ़ते थे। उसने हर विषय में 'ए'ग्रेड लेते हुए क्लास में टॉप किया था। देखने में भी वह बहुत खूबसूरत थी। कद हालांकि उसका छोटा यानी पाँच फुट दो इंच ही था, पर उसका व्यक्तित्व देखने में बहुत प्रभावशाली था। परंतु इसमें एक अड़चन वह स्पष्ट देख रही थी। वह यह थी कि पाकिस्तान में रहते हुए आफिया की शीघ्र ही शादी हो जानी थी। यहाँ के रिवाज़ के अनुसार उसकी शादी की उम्र हो चुकी थी। उसकी माँ ने सोच-विचार करके यह तय किया कि यदि इसको पढ़ने के लिए विदेश भेज दिया जाए तो यह बहुत आगे बढ़ सकती है और इस प्रकार उसके विवाह वाला मसला भी पीछे रह जाएगा। आफिया का भाई मुहम्मद अली, पहले ही पढ़ाई करने के लिए अमेरिका गया हुआ था। उसने वहाँ पढ़ाई पूरी करने के बाद आर्चीटेक्ट का काम शुरू कर रखा था। आख़िर, इस्मत ने अली के साथ सलाह-मशवरा किया। उसका भी यही कहना था कि आफिया अभी छोटी है और साथ ही पढ़ाई में बहुत होशियार भी है। इसलिए इसको अमेरिका भेज दिया जाए। आफिया के माँ-बाप ने विचार-विमर्श करके आख़िर आफिया को अमेरिका भेजने की तैयारी आरंभ कर दी। ईद के हफ़्ताभर बाद ही वह अमेरिका जाने वो जहाज़ में बैठी हुई थी।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –3

(3)

डेल्टा एअरलाइन्ज़ का जहाज़ नीचे होने लगा तो आफिया ने नीचे धरती की ओर गौर से देखा। उसको कुछ भी नज़र न आया। नीचे धुंध की चादर-सी बिछी हुई थी। जहाज़ नीचे होता गया, पर नीचे अभी कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। आफिया ने महसूस किया जहाज़ काफ़ी नीचे पहुँच गया है। फिर उसको मद्धम-सी रोशनियाँ दिखाई देने लगी और तभी जहाज़ लैंड कर गया। एक झटका-सा लगा और जहाज़ रन-वे पर दौड़ने लगा। जहाज़ की गति धीमी हुई तो आफिया ने बाहर की तरफ देखा। बाहर रात का अँधेरा पसरा हुआ था और हर तरफ गहरी धुंध छाई हुई थी। तभी, जहाज़ टर्मिनल पर जा लगा। वह कस्टम वगैरह में से निकलकर बाहर आई तो सामने उसका भाई मुहम्मद अली उसका इंतज़ार कर रहा था। उसके साथ उसका कोई दोस्त प्रतीत होता एक गोरा लड़का था। आफिया भाई के संग घर चली गई। उसके भाई का हूस्टन यूनिवर्सिटी के करीब ही अपना अपार्टमेंट था। वह वहीं रहकर पढ़ा था और अब आर्चीटेक्ट का काम कर रहा था। सभी उसको मुहम्मद कहकर बुलाते थे। अगले पाँच सात-दिन तो आफिया की थकान ही नहीं उतरी। उसका मन पीछे अपने माँ-बाप के लिए बहुत उदास था। वह दिन भर अपार्टमेंट में ही पड़ी रहती थी। टी.वी. वगैरह की उसको पूरी समझ नहीं थी और न ही उसको टी.वी. देखना पसंद था। फिर मुहम्मद उसको यूनिवर्सिटी ले गया और उसकी पढ़ाई के बारे में मालूम किया। सारी जानकारी लेकर आफिया ने कक्षाओं में जाना प्रारंभ कर दिया। परंतु अभी भी उसका मन यहाँ पूरी तरह नहीं लग पा रहा था। वह घर के अंदर ही घुसी रहती। फिर आहिस्ता-आहिस्ता उसका मन बहलने लगा। इसका बड़ा कारण था कि यहाँ मुस्लमान विद्यार्थियों बहुत बड़ी संख्या में थे। वह कइयों के करीब होने लगी। अपने स्वाभाव के अनुसार आफिया हरेक के साथ धर्म के विषय में चर्चा अवश्य करती। इसी बीच उसने देखा कि उसके भाई के अपार्टमेंट में बहुत सारे विद्यार्थी आते थे। वहाँ

मुस्लमान विद्यार्थियों की समस्याओं के बारे में चर्चा चलती रहती थी। उसका भाई मुस्लिम कम्युनिटी का उभरता लीडर था। ऐसे समय वह पिछले कमरे में चली जाती। वह सबके बीच नहीं बैठती थी। इसी दौरान उसने देखा कि उसके भाई का वह दोस्त लड़का जो कि उसके अमेरिका आने वाले दिन उसके भाई के संग एअरपोर्ट पर आया था, वह भी अपार्टमेंट में बहुत आता-जाता था। उसका नाम जॉर्ज था। जॉर्ज जब भी आता तो आफिया उससे एकतरफ हो जाती। जबकि जॉर्ज हमेशा उसके साथ कोई बात करना चाहता। वह उसके साथ पहली बार तब बोली जब एक दिन मुहम्मद ने जॉर्ज के आने पर उसको कमरे में बुलाया। उसने बताया कि जॉर्ज उसका बहुत ही गहरा दोस्त है और वह उसके साथ बेझिझक बातचीत कर सकती है। फिर वह जॉर्ज के साथ थोड़ा-बहुत खुलने लगी। जॉर्ज उसको फ्रेंड कहकर बुलाता तो उसको यह सम्बोधन अच्छा न लगता। फिर जॉर्ज उसको सिस्टर कहकर बुलाने लगा तो वह जॉर्ज के साथ पूरी तरह खुल गई। वह उसके साथ धर्म को लेकर लम्बी बहसें करती। इन बहसों के दौरान जॉर्ज देखता कि वह हर समय मुस्लिम धर्म की ही प्रशंसा करती थी। दूसरे धर्मों की वह अधिक कद्र नहीं करती थी। जॉर्ज बहुत बार क्रिश्चियन धर्म के बारे में बहुत कुछ समझाता, पर वह किसी बात से सहमत न होती। वह हर बहस के समय मुस्लिम धर्म को ऊँचा और असली धर्म कहती। जॉर्ज ने एक बात ज़रूर देख ली थी कि आफिया धर्म के बारे में बहुत गहरी जानकारी रखती है और उसके अंदर दूसरों को अपने प्रभाव के अधीन लाने की योग्यता है। मुहम्मद के कई दोस्त तो पहली बार में ही उसका प्रभाव स्वीकार कर लेते थे। आफिया के अन्य रिश्तेदार भी हूस्टन में रहते थे। किसी न किसी त्योहार के दिन सभी इकट्ठे होते रहते थे। जॉर्ज इन सभी को जानता था और सबके साथ व्यवहार करता था। इसलिए बाद में जाकर आफिया उसके संग पूरी तरह खुल गई। वह खुलकर बहसें करते। एक दिन जॉर्ज मुहम्मद के अपार्टमेंट में आया तो उसने देखा कि आफिया चुपचाप एक तरफ बैठी हुई थी। घर में गहरी चुप छाई हुई थी।

“क्या बात है सिस्टर, आज इतनी उदास है ?“ जॉर्ज ने पूछा।

“जॉर्ज, आज घर याद आ रहा है। खास तौर पर अम्मी।”

“न तू टी.वी. देखती है। न कोई किताब वगैरह पढ़ती है। फिर अकेली बैठी उदास ही होगी न।”

“इसी कारण मैं टी.वी. नहीं देखती और न ही कुछ पढ़ती हूँ।”

“मतलब ?“ जॉर्ज हैरान हुआ।

“क्योंकि यह बातें सिर्फ़ वक़्तकटी के लिए हैं। ये इन्सान का वक़्त पास ही नहीं करवातीं, बल्कि बर्बाद भी करती हैं। इसीलिए इन बातों की हमारे धर्म में मनाही है।”

“खाली समय में फिर और क्या करना चाहिए।”

“अल्लाह की इबादत करो, या फिर सामाजिक भलाई के लिए काम करो।”

“अगर तुम टी.वी. नहीं देखोगे, कोई अखबार नहीं पढ़ोगे तो तुम्हें कैसे पता चलेगा कि संसार में क्या हो रहा है ?“

“तेरे जैसों से पता चल ही जाता है कि संसार में क्या चल रहा है।” इतना कहकर आफिया हँस पड़ी। उसकी यह बात सुनकर जॉर्ज हैरान न हुआ। क्योंकि उसने पहले ही देख लिया था कि जो आजकल की युवा पीढ़ी कर रही है, आफिया उन बातों से कोसों दूर है। वह टी.वी. नहीं देखती, संगीत नहीं सुनती, कोई उपन्यास वगैरह नहीं पढ़ती और किसी लड़के के साथ घूमने जाने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। उसके लिए बस दो ही बातें ज़रूरी थीं - अपनी पढ़ाई या फिर धर्म। वह कुछ देर चुप रहकर बोला -

“सिस्टर, तुम्हें मैं एक सलाह दूँ। तू टी.वी. वगैरह पर समाचार वगैरह अवश्य देख लिया कर। इससे इन्सान को इतना पता लगता रहता है कि हमारे आसपास क्या घट रहा है।”

“क्यों ? कुछ ख़ास हो रहा है आसपास ?“ आफिया ने बात फिर मज़ाक में डाल दी।

“तुम्हें नहीं पता कि आज क्या हुआ है ?“

“नहीं तो।”

“इराक ने कुवैत पर हमला कर दिया है।”

“क्या !“ आफिया ने हैरान होते हुए जॉर्ज की तरफ़ देखा। वह एकदम सकते में आ गई।

“हाँ, यह सच है। पिछले कई दिनों से झगड़ा चल रहा था, यह तो तुम जानती ही होगी। पर आज सद्दाम हुसैन सारी दुनिया के रोकने के बावजूद न रुका और उसने कुवैत पर चढ़ाई कर दी।”

“सद्दाम हुसैन तो बुच्चड़ है, यह सभी जानते हैं, पर कुवैत के शेख भी कम नहीं।”

“सिस्टर, कुवैत का इसमें क्या कसूर है ?“ जॉर्ज उसकी बात सुनकर हैरान हुआ।

“ये जितने भी डिक्टेटर, सुल्तान और ख़लीफे हैं, ये सभी शैतान हैं। सभी मुसलमान धर्म को नुकसान पहुँचा रहे हैं। इन सबका ही खात्मा होना ज़रूरी है।”

“फिर, तेरे ख़याल में अब क्या होना चाहिए ?“

“पहले सद्दाम का टंटा साफ़ किया जाए। उसके बाद इन डिक्टेटरों का सफाया हो।”

“कौन करेगा यह सब ?“

“लोग।” इतना कहकर आफिया ने जॉर्ज की तरफ़ देखा।

“लोग यहाँ कुछ नहीं कर सकते। इस वक़्त किसी बड़ी शक्ति की ज़रूरत है जो सद्दाम को नकेल डाले।“

“मतलब ?“

“मतलब यह है कि अमेरिका ने इराक को कह दिया है कि वह अपनी फौजें कुवैत से बाहर निकाले। नहीं तो फिर नतीजे भुगतने के लिए तैयार रहे।”

“अमेरिका यहाँ बीच में कहाँ से आ गया। यह अरब मुल्कों का आपसी मामला है।” आफिया तुरन्त बात का रुख बदल गई।

“तुम्हें नहीं मालूम, इराक तो कुवैत से भी आगे सऊदी अरब पर भी हमला करने की तैयारी किए जा रहा है। यदि उसको न रोका गया तो...।”

“मुझे यह सब एक साज़िश लगती है।” जॉर्ज की बात बीच में ही काटते हुए आफिया बोली।

“साज़िश ! मतलब ?“

“अमेरिका शैतान की पार्टी है। आज यह दुनिया में किसी को भी टिक कर बैठने नहीं देता। हर देश के घरेलू मामलों में दख़ल देता रहता है। यहाँ भी इसने कोई न कोई शरारत की होगी।”

“मैं यह बात नहीं मानता। मुझे तो अमेरिका ऐसा करता कहीं दिखाई ही नहीं देता।”

“दूर जाने की ज़रूरत ही नहीं। मेरे अपने मुल्क पाकिस्तान की बात कर लेते हैं। वहाँ वही होता है जो अमेरिका को अच्छा लगे। मुल्क पर राज करने वाला कोई भी हो, उसको अमेरिका की बात माननी पड़ती है। असल में, हमारे मुल्क के सभी सियासतदान अमेरिका के पिट्ठू हैं। अपनी राजगद्दी बचाने के लिए वे कोई भी समझौता कर सकते हैं। ऐसा ही शेष देशों में हो रहा है। अरब देशों में अमेरिका एक दूसरे को लड़ा कर अपना मतलब निकाले जाता है।”

“पर हम बात इराक की कर रहे हैं।” जॉर्ज ने उसको टोका।

“ठीक है, इराक की सही। पहले तो अमेरिका इराक को इरान के खिलाफ़ उठाए रहा। इतने साल की इरान-इराक लड़ाई में इसने इराक की पूरी हिमायत की। अब वह लड़ाई ख़त्म हो गई तो इसने अपना अगला एजेंडा शुरू कर लिया।”

“सिस्टर, तू फिर मसले से दूर जा रही है। हमला, इराक ने कुवैत पर किया है न कि अमेरिका ने।”

“जॉर्ज, मैं सब जानती हूँ। पिछले कई महीनों से यह हल्ला चल रहा था। इराक ने अमेरिका के पास शिकायत भी की थी कि उसका कुवैत के साथ किसी इलाके को लेकर झगड़ा है। पर अमेरिका ने यह कहकर पल्लू झाड़ लिया कि यह तुम्हारा आपसी मामला है, जैसे चाहो सुलझाओ। वह इसमें नहीं पड़ेगा। असल में, यह कहकर अमेरिका ने इराक को एक किस्म की हल्लाशेरी दी थी कि वह जो मर्जी में आए, करे, अमेरिका बीच में नहीं आएगा। सद्दाम ने भी उसका इशारा समझ लिया और अवसर मिलते ही कुवैत पर चढ़ाई कर दी। इराक के ऐसा करते ही अमेरिका अपनी बात से पलट गया। असल में, अमेरिका चाहता था कि किसी न किसी प्रकार इराक कोई कदम उठाए और उसको बीच में पड़ने का अवसर मिले। अब देख ले, अमेरिका के मन की हो गई। इराक को रोकने के लिए उसने सऊदी अरब को आगे लगा लिया।”

“सिस्टर आफिया, पहले यह बता कि तू इराक के उठाये इस कदम के हक में है कि इसके विरोध में ?“

“मैं इसके बिल्कुल खिलाफ़ हूँ। मैं तो यहाँ तक कहती हूँ कि इस बुच्चड़ सद्दाम का खात्मा हो और इराक के लोगों का उससे पीछा छूटे। अकेला वही नहीं है, जैसा कि मैं पहले ही कह चुकी हूँ कि अरब मुल्कों के सारे डिक्टेटरों और शेखों का खात्मा ज़रूरी है। ऐसा होने पर ही इस्लाम तरक्की कर सकता है। पर यह मामला मुसलमान लोगों का अपना है। मैं चाहती हूँ कि वे खुद ही इसे सुलझाएँ। अमेरिका को हमारे लोगों के मसलों में दख़ल देने की कोई आवश्यकता नहीं है।”

“जो भी है सिस्टर, पर एक बात तय है कि कुछ ही दिनों में अमेरिकी फौजें सऊदी अरब की ओर कूच कर देंगी।” जॉर्ज ने चुटकी मारते हुए हँसकर कहा।

“ऐसा कभी नहीं होगा। मुसलमान लोग ऐसा नहीं होने देंगे।”

“यह तो समय ही बताएगा, पर अब मैं चलता हूँ। मुहम्मद को बता देना कि जॉर्ज आया था।” इतना कहकर जॉर्ज बाहर निकल गया, पर आफिया चिंता में डूब गई। उसके मन-मस्तिष्क को इराक वाले मसले ने घेर लिया। दिल से हालांकि वह चाहती थी कि सद्दाम का सफाया हो जाए, पर वह यह भी नहीं चाहती थी कि अमेरिका इस बात में दख़ल दे। उसने जब से होश संभाला था, उसने घर में अमेरिका के खिलाफ़ होती बातें ही सुनी थीं। उसने अफ़गानिस्तान वाला सारा मसला अपने सामने घटित होते देखा था। वह सोचा करती थी कि अपना काम निकालने के लिए पहले तो अमेरिका ने पाकिस्तान को आगे लगा लिया। जब सोवियत यूनियन हार गया तो अमेरिका ने अपने ही उन दोस्तों का सफाया कर दिया जिन्होंने अफ़गानिस्तान की लड़ाई में उसका साथ दिया था। ख़ास करके उसको जिया उल हक वाला हादसा बहुत चुभता था। उसकी अपनी सोच यह थी कि हवाई हादसा अमेरिकी सी.आई.ए. ने करवाया था जिसमें जिया उल हक की मौत हो गई थी। उसके परिवार का अभी भी जिया उल हक के परिवार से गहरा वास्ता था। ख़ासकर उसके पुत्र इजाज उल हक के साथ। ख़ैर, जॉर्ज और आफिया की इस मुलाकात के कुछ दिन पश्चात ही वे फिर मुहम्मद के अपार्टमेंट में बैठे थे। आज मुहम्मद भी वहीं था।

“देख ले जॉर्ज, अमेरिका ने सऊदी अरब की पवित्र धरती गंदी कर दी।” बात मुहम्मद ने शुरू की।

“मुहम्मद, दूसरा कोई राह भी तो नहीं। यदि अमेरिका वहाँ न जाता तो इराक आगे ही बढ़ता जाता।”

“सब चालें हैं। जो कुछ भी हो रहा है, इस सबका जिम्मेदारी अमेरिका ही है।” आफिया बातचीत में हिस्सा लेते हुए बोली।

“असल में अमेरिका को तो बड़ी मुश्किल से मौका हाथ लगा है, अरब देशों में जाकर अड्डा जमाने का। अमेरिका कब से बहाना तलाश रहा था, वह उसको इराक ने दे दिया। अब नहीं अमेरिका वहाँ से कभी निकलने वाला।” मुहम्मद बोला।

“नहीं, मेरे ख़याल में ऐसा नहीं होगा। अमेरिका ने इराक को कहा है कि वह कुवैत में से निकल जाए। मुझे लगता है कि यह सब अमरिका ने उसको डराने के लिए किया है। इस प्रकार इराक वापस चला जाएगा तो अमेरिका भी अपनी फौजें वापस बुला लेगा।”

“जॉर्ज, ऐसा कभी नहीं होने वाला। अमेरिका ने न कभी पहले मुसलमानों की परवाह की है और न अब करेगा।”

“सिस्टर, सऊदी अरब के किंग के कहने पर ही तो अमेरिका ने फौजें वहाँ एकत्र की हैं। वह भी मुसलमान ही है।”

“जॉर्ज, तू मुझे वही बातें बार बार दोहराने को पता नहीं क्यों उकसाता रहता है कि ये शेख, किंग और डिक्टेटर सब शैतान हैं। जब तक ये जिंदा हैं, तब तक मुसलमानों का भला नहीं हो सकता।”

“जॉर्ज, वैसे तो तू बहुत फड़ें मारता रहता है कि क्रिश्चियन अहिंसा में विश्वास रखते हैं। पर अब बता कि यह सब क्या हो रहा है। अब वहाँ जाकर मुसलमान लोगों का क़त्लेआम करने लगे हो तो अहिंसा का उसूल कहाँ है ?“ मुहम्मद को गुस्सा आ गया लगता था।

“अपने तौर पर तो मैं अब भी खून-खराबे के खिलाफ़ हूँ। पर ये मुसलमान ही हैं जो अमेरिका को ऐसा करने के लिए विवश करते हैं।”

“तुम यूँ क्यों नहीं कहते कि ताकतवर का हर जगह ज़ोर चलता है।”

“यह तो है ही। हम दुनिया की सबसे बड़ी ताकत हैं। जो चाहे करें।” जॉर्ज ने हँसी में कहा। परंतु मुहम्मद इस बात का गुस्सा मान गया। दाँत पीसते हुए वह बोला, “जॉर्ज, अगर एक लफ़्ज भी आगे बोला तो मैं तुझे उठाकर बाहर फेंक दूँगा।”

“हम सुपर पावर हैं, हमें कौन छेड़ सकता है।” जॉर्ज फिर हँसी की रौ में बोला। इससे मुहम्मद को और अधिक गुस्सा आ गया। वह उठता हुआ बोला, “तू अभी मेरे घर से निकल जा।”

“यह घर तेरा ही नहीं, यह मेरी इस लिटिल सिस्टर का भी है। मैं नहीं जाने वाला यहाँ से।” जॉर्ज आफिया की ओर देखता हुआ बोला।

“ठीक है फिर, मैं ही यहाँ से चला जाता हूँ। कुएँ में गिरे तू और तेरा अमेरिका।” मुहम्मद उठकर चल पड़ा। आफिया शांत चित्त उसकी ओर देखती रही। जब वह अपार्टमेंट में से बाहर निकल गया तो आफिया बोली, “एक सच्चे मुसलमान को इतना गुस्सा शोभा नहीं देता।”

“चलो, कोई बात नहीं। वह मेरा जिगरी दोस्त है। जब गुस्सा शांत होगा, खुद ही लौट आएगा।”

इसके पश्चात आफिया और जॉर्ज आगे घटित होने वाली घटनाओं पर चर्चा करते रहे। देर रात जॉर्ज अपने घर चला गया। अगली मुलाकात के समय मुहम्मद और जॉर्ज में सुलह हो गई। उसके बाद काफी कुछ अकल्पित घटित हो गया। अमेरिकी फौजों ने हमला करके इराक को कुवैत में से बाहर धकेल दिया। इतना ही नहीं, अमेरिका ने इराकी फौजों की कमर तोड़कर रख दी। लड़ाई बंद होने के उपरांत इराक को वापस

लौट रही इराकी फौजों का सफाया किया गया। जंगबंदी उसूलों की परवाह किए बग़ैर अमेरिकी फौजों ने इराकियों को मारने में कोई झिझक न दिखलाई। सब कुछ टी.वी. पर दिखाया जा रहा था। उस दिन आफिया बहुत ज्यादा चुप थी। जॉर्ज के पास गर्दन झुकाये बैठी थी। मुहम्मद ने चुप्पी तोड़ी।

“जॉर्ज, देख लिया अपने अमेरिका का असली चेहरा ?“

“हाँ, यह बहुत ही बुरा हुआ। मैं इस सबके खिलाफ़ हूँ।”

“इन्होंने कुवैत से इराक वापस लौट रही निहत्थी फौजों पर गोलाबारी करके लाखों सिपाही मार दिए। अभी कहते हैं कि हमने यह सब कुछ विश्व-शांति के लिए किया है।”

“टी.वी. वालों ने तो उस रास्ते का नाम ही डैथ हाई-वे रख दिया है जिधर से इराकी फौजें लौट रही थीं। अंधाधुंध बमबारी करके तकरीबन तीन लाख फौजी मार गिराये गए हैं। यह सब कुछ मनुष्यता के नाम पर धब्बा है। मेरा अब यहाँ रहने को जी नहीं करता।” आफिया बुझे मन से बोली।

“फिर सिस्टर अब किधर जाओगी ? क्या पाकिस्तान लौट जाने का इरादा है ?“

“नहीं जॉर्ज, वापस तो मैं नहीं जाऊँगी, पर मैंने किसी दसरे शहर की ओर जाने का मन बना लिया हैं।”

“दूसरा शहर कौन-सा ?“

“पिछले महीने मैं मैसाचूसस इंस्टीच्यूट आफ टेक्नोलॉजी में दाख़िले के लिए अप्लाई किया था। वहाँ मुझे दाख़िले के साथ साथ मुझे तो स्कॉलरशिप भी मिल गई है।”

“अच्छा तू एम.आई.टी. की बात कर रही है। पहले तुमने इस बात की भनक ही नहीं पड़ने दी। पर तुम्हें इस तरह यहाँ से नहीं जाना चाहिए।”

“नहीं जॉर्ज, मुझे अब यहाँ नहीं रहना।” आफिया वैसे ही गर्दन झुकाये बोली।

“सिस्टर, ऐसा न कर। तेरे बिना हमारा दिल नहीं लगेगा।” जॉर्ज ने उसको झिंझोड़ा। वास्तव में वह आफिया को सगी बहन से भी अधिक प्यार करता था।

“मैं फैसला कर चुकी हूँ।”

“मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगा।” जॉर्ज का मोह बोला, पर आफिया ने उसकी बात की ओर ध्यान नहीं दिया।

अगले दिन उनके बीच फिर बात हुई तो आफिया ने अपना यहाँ से जाने का इरादा दोहराया। जॉर्ज ने उसको यहीं रुक जाने के लिए कहा। काफी देर उनके बीच बहस चलती रही।

“जो चाहे कर, पर आफिया तू यहाँ से न जा।” जॉर्ज अपनी बात पर अड़ा रहा। आफिया कुछ पल उसके चेहरे की ओर देखती रही और फिर बोली, “जॉर्ज, तू मुझे इतने अपनेपन से क्यों रोक रहा है ?“

“क्योंकि मैं तुम्हें रियल सिस्टर के तौर पर प्यार करता हूँ।”

“वह तो मैं समझती हूँ पर...।” आगे आफिया ने बात बीच में ही छोड़ दी।

“पर क्या ?“

“तू मुझे यहाँ रखने के लिए क्या कर सकता है ?“

“कुछ भी, जिससे तुझे खुशी मिले।”

“पक्की बात है।” आफिया ने जॉर्ज के चेहरे पर निगाहें गड़ा दीं।

“हाँ-हाँ, मैं अपनी लिटिल सिस्टर के लिए कुछ भी कर सकता हूँ।”

“तो फिर ऐसा कर।”

“बता।”

“तू क्रिश्चियन धर्म छोड़कर मुसलमान बन जा।”

उसकी बात सुनकर जॉर्ज के मुँह पर ताला लग गया और वह अंदर तक हिल उठा। उसको मुहम्मद ने कई बार बताया था कि यदि कोई मुसलमान किसी अन्य धर्म के इन्सान को मुस्लिम धर्म में ले आए तो उससे बड़ा पुण्य का कार्य कोई हो ही नहीं सकता। मुहम्मद के साथ वह बहुत अधिक खुला हुआ था इसी कारण मुहम्मद उसके साथ हर बात कर लेता था। पर धर्म बदलने के लिए उसने कभी नहीं कहा था। परंतु आज वही बात आफिया के मुँह से सुनकर वह हैरान रह गया। वह आफिया की बात सुनकर लगे सदमे में से बाहर आया तो उसने ध्यान से आफिया की ओर देखा। वह मन ही मन सोचने लगा, ‘यह जो दिखाई देती है, वह यह नहीं है। यह असल में कुछ और ही है। इसको किसी की भावनाओं की परवाह नहीं है। इसको सिर्फ़ अपने धर्म से प्यार है। दूसरी कोई भी बात इसके लिए मायने नहीं रखती। शायद इसका अपना सगा भाई मुहम्मद भी इसको अच्छी तरह नहीं जानता।’ अपने आप से बातें करता जॉर्ज दरवाज़ा खोलकर घर से बाहर निकल गया।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –4

(4)

आफिया, मैसाचूसस स्टेट के लोगन इंटरनेशनल एअरपोर्ट बॉस्टन पर उतरी। वहाँ से वह टैक्सी लेकर मैसाचूसस इंस्टीच्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी अर्थात एम.आई.टी. की ओर चल पड़ी। टैक्सी बॉस्टन शहर की सड़कों पर दौड़े जा रही थी और आफिया अपने ही ध्यान में गहरी डूबी हुई थी। उसको पहली नज़र में ही बॉस्टन शहर भा गया। उसको बॉस्टन शहर बहुत सुंदर लगा। पता ही नही लगा कि टैक्सी कब यूनिवर्सिटी के नज़दीकी होटल में जा रुकी। टैक्सी ड्राइवर के बुलाने पर आफिया विचारों की गुंजल से बाहर निकली। किराया चुकता करके उसने सामान उठा लिया। होटल में कमरा लेकर सामान वगैरह वहाँ टिकाकर वह यूनिवर्सिटी की ओर चल पड़ी। अंदर जाते ही उसने देखा कि हर तरफ़ विद्यार्थी झुंडों में घूम रहे थे। उसने इधर-उधर नज़रें दौड़ाईं। उसको कोई भी लड़की पंजाबी पहरावे में न दिखाई दी जबकि उसने स्वयं सलवार-कमीज़ पहन रखी थी और सिर पर चुन्नी ले रखी थी। उसको अपना आप पराया-सा न लगा। अपितु उसको अपनी भिन्नता पर गर्व अनुभव हुआ। दफ़्तर जाकर उसने दाख़िले वगैरह का शेष बचा काम निपटाया। फिर वह नज़दीकी लड़कियों के हॉस्टल मकार्मिक हॉल चली गई। उम्मीद के उलट उसको थोड़ा-सा पेपर वर्क पूरा करने के उपरांत ही कमरा मिल गया। दफ़्तर से कमरे की चाबी लेकर वह लिफ्ट से कमरे में पहुँची। ऊँची-लम्बी इमारत की बीसवीं मंज़िल पर उसका कमरा था। कमरा खोलकर वह अंदर आ गई और पिछली खिड़की में से उसने नीचे झांका। उसका मन बागबाग हो उठा। बाहर हरियाली ही हरियाली दिखाई दे रही थी और चार्सल दरिया, हॉस्टल की इमारत के साथ ही लगकर बहता था। काफी देर खड़ी वह कुदरत के नज़ारे का आनंद लेती रही। फिर होटल जाकर अपना सामान उठा लाई।

अगले दिन से ही वह पढ़ाई में डूब गई। उसके घर वाले चाहते थे कि वह डॉक्टर बने, पर उसका विचार कुछ और ही था। पहले वह पुलिटिकल साइंस पढ़ना चाहती थी। घरवालों के अधिक ज़ोर देने पर उसने साइंस और मैथ की कक्षाएँ ले लीं। आफिया हालांकि छोटे कद और हल्के शरीर की दुर्बल-सी लड़की थी, पर उसका चेहरा-मोहरा बहुत प्रभावशाली था। उसका समूचा व्यक्तित्व दूसरे को मोह लेता था। अपने काम में

मस्त रहने और पढ़ाई में बहुत ही होशियार होने के कारण शीघ्र ही अपने प्रोफेसरों की चहेती बन गई। हॉस्टल में थोड़ी जान-पहचान बढ़ने के बाद उसने मुसलमान लड़कियों को जोड़ने का काम प्रारंभ कर दिया। यहाँ दूसरे धर्मों की लड़कियाँ अधिक थीं। पर वह उनसे दूरी बनाकर रखती थी। विशेष तौर पर यहूदी लड़कियों से तो वह बिना मतलब के बातचीत भी नहीं करती थी। आहिस्ता आहिस्ता उसने वहाँ अपना एक ग्रुप बना लिया। वह मुसलमान लड़कियों के साथ धर्म पर चर्चा करने लगी। परंतु अधिकांश लड़कियों का धर्म से अधिक सरोकार नहीं था। वे तो अमेरिकन ज़िन्दगी में घुलमिल गई प्रतीत होती थीं। आफिया ने उन्हें धर्म की शिक्षा का वास्ता दे देकर अपने हिसाब से सीधे राह पर लाने का प्रयत्न शुरू कर दिया। इसमें वह काफी हद तक सफल भी रही। फिर वह अपने ग्रुप को संग लेकर साझे काम करने लगी। जैसे कि कालेज कैंपस की सफाई वगैरह। इसके अलावा, वह हर सप्ताह लगभग चालीस घंटे बिना किसी वेतन के कालेज के साझे कामों में लगाती थी। अवसर मिलते ही वह गरीब इलाकों के स्कूलों में जाकर बच्चों के लिए मुफ्त साइंस फेयर वगैरह लगाने लगी। इस प्रकार वह शीघ्र ही सभी की नज़रों में आ गई। कालेज में उसका अक्स एक अच्छी होशियार और समाजसेवी छात्रा का बन गया। परंतु निजी तौर पर वह हमेशा धर्म के साथ जुड़े कामों को पहल देती। वह जब अपने ग्रुप की लड़कियों के साथ बैठकें करती तो हमेशा इस बात पर ज़ोर देती कि गैर-मुसलमानों से दूर रहा जाए। उनके साथ दोस्ती न की जाए। पर उनके साथ व्यवहार करते समय बहुत ही प्रेमपूर्वक मीठी बोली में बात करने का दिखावा किया जाए। उसके समाजसेवा वाले कामों के कारण उसको दो बार ईनाम मिला। वैसे तो पढ़ाई के हर क्षेत्र में ही वह बहुत अच्छी थी, पर कंप्युटर में तो उसका इतना नाम बन गया कि कभी कभी तो कई प्रोफेसर भी उसकी मदद ले लेते। अब तक मुस्लिम स्टुडेंट्स एसोसिएशन जिसको कि आम तौर पर एम.एस.ए. कहा जाता था, में वह काफी आगे बढ़ गई थी। वह एम.एस.ए. के माध्यम से मुसलमान छात्रों के हकों के बारे में सभी को जागरूक कर रही थी। कालेज अथॉरिटी के साथ मिलकर वह मुसलमान विद्यार्थियों की ज़रूरतें भी पूरी करने के लिए ज़ोर डालती रही थी। यहाँ तक कि कालेज कैंपस के छोटे रेस्टोरेंटों में उसने हलाल मीट की प्रयोग शुरू करवाने के लिए अथॉरिटी को मना लिया ताकि मुसलमान विद्यार्थी अपने धार्मिक अकीदे के अनुसार हलाल मीट की इस्तेमाल कर सकें। इसके अतिरिक्त उसने हॉस्टलों में पृथक कमरों की सुविधा मुहैया करवा ली जहाँ कि मुसलमान विद्यार्थी नमाज़ अदा कर सकें। जैसे जैसे वह एम.एस.ए. के माध्यम से मुसलमान विद्यार्थियों की ज़रूरतों के लिए सक्रिय हो रही थी, वैसे वैसे उसका नाम प्रसिद्ध होता जा रहा था। मुसलमान विद्यार्थियों में उसको बहुत इज्ज़त के साथ देखा जाता था। कट्टर धार्मिक लड़के उसको ट्रू सिस्टर कहकर बुलाने लग पड़े थे। इसी दौरान उसकी मुलाकात सुहेल लैहर से हुई। सुहेल के माता पिता इंडिया से थे, पर वो जिम्बावे में जन्मा था। पेशे के तौर पर वह इंजीनियर था। सुहेल की मार्फ़त वह

एम.एस.ए. के अंदरूनी क्षेत्र में आ गई। जब उसने एम.एस.ए. के भीतरी विद्यार्थियों की सोच सुनी तो वह बड़ी प्रसन्न हुई। उसको लगा कि यही असली जगह है जहाँ रहकर वह अपने धर्म की अधिक से अधिक सेवा कर सकती है। असल में, यह ग्रुप एम.एस.ए. की अगली कतार की लीडरशिप था जो कि आम तौर पर परदे के पीछे रहता था। एम.एस.ए. की अगली बैठक में अपनी बारी आने पर वह बोलने लगी, "हमें यहाँ इस्लाम की अधिक से अधिक शिक्षा देनी चाहिए। क्योंकि यही एक ढंग है अल्लाह की रहमतों को हासिल करने का। हमें सभी विद्यार्थियों के लिए जुम्मे की नमाज़ कालेज कैंपस में पढ़ने के लिए ज़रूरी कर देनी चाहिए। अपने आसपास के लोगों का विश्वास जीतकर उनको इस्लाम धर्म में लाने के लिए यत्न करना चाहिए। इंशा अल्ला ज़रा सोचो कि वो दिन कितना किस्मतवाला होगा जब अमेरिका में ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया में इस्लाम का झंडा फहरेगा। इसके अलावा आज और बहुत कुछ करने वाला है...।" उसने अपनी बात रोककर श्रोताओं की ओर देखा। सभी बड़े ध्यान से उसकी बात सुन रहे थे। ज़रा रुक कर वह फिर बोलने लगी, "आज संसार में बहुत कुछ घटित हो रहा है। जगह जगह मुसलमानों पर अत्याचार हो रहे हैं। यह क्यों हो रहा है। क्योंकि हम मुसलमान अपनी जिम्मेदारी भूल गए हैं। हम भूल गए हैं कि हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है - जिहाद। हरेक को आज दुनिया के अलग अलग हिस्सों में चल रहे जिहाद में अपनी हैसियत के अनुसार हिस्सा लेना चाहिए। असली मुसलमान वो हैं जो फ्रंट पर लड़ाई में हिस्सा ले रहे हैं। पर फिर भी हम उतना तो कर ही सकते हैं जो उनके काम में मदद बन सके। उदाहरण के लिए हम जिहाद में शहीद हो रहे हमारे भाइयों के बच्चों और उनकी विधवाओं को संभाल सकते हैं। उसके लिए चैरिटी संस्था बनाकर फंड एकत्र करने की आवश्यकता है। हमें अधिक से अधिक चैरिटी एकत्र करनी चाहिए।"

जब तक उसने अपना भाषण समाप्त किया, तब तक वह एम.एस.ए. की अगली पंक्ति के लीडरों की नज़रों में आ चुकी थी। सभी उससे प्रभावित हुए थे। वे समझ गए कि जिस लड़की की वह एक अरसे से प्रतीक्षा कर रहे थे, वह आज उन्हें मिल गई है। मीटिंग ख़त्म होने पर वह बाहर निकली और सुहेल के साथ कार में बैठ गई। सुहेल ने कार आगे बढ़ाई तो आफिया ने बात प्रारंभ की, "सुहेल वो एक कोने में बैठी गोरी अमेरिकन लड़की कौन थी ?"

"उसका नाम मार्लेन अर्ल है।"

"मतलब वह अमेरिकन है ?"

“हाँ है तो अमेरिकन ही, पर...।“

“पर क्या ?“

“उसने धर्म परिवर्तन करके इस्लाम धर्म अपना लिया है। अब वह पक्की मुसलमान है।”

“किसके प्रभाव से उसने मुस्लिम धर्म अपनाया है ?“

“इस बात को छोड़ो, पर तुम्हें बताऊँ कि उसका पति बसम कुंज बहुत बड़ा जिहादी है। उसने कई जिहादों में लड़ाई लड़ चुका है।”

“अच्छा !“

इसके बाद आफिया चुप हो गई। उसके मन में आ रहा था कि वह कितना किस्मत वाला होगा जिसने मार्लेन का धर्म परिवर्तन करवाया होगा। दूसरा उसको मार्लेन पर इस बात से भी गर्व महसूस हुआ कि उसका पति जिहादी है और फ्रंट पर बंदूक उठाकर लड़ाई में हिस्सा लेता है।

“चुप क्यों हो गईं ?“ सुहेल ने आफिया को ख़यालों में गुम देखकर उसकी चुप्पी तोड़ी।

“नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं। मैं तो सोच रही थी...।”

“क्या सोच रही थी तुम ?“

“मैं तो यह सोच रही थी कि...।”

“अच्छा सुहेल, एक बात और बता।” आफिया ने पहली बात बीच में ही छोड़ते हुए बात बदली।

“हाँ हाँ पूछ।“

“वो जो तेरे संग बैठा था, वह कौन है ? जो पूरी मीटिंग के दौरान बिल्कुल ही नहीं बोला।”

“उसका नाम...।” सुहेल ने बात बीच में ही छोड़ते हुए गौर से आफिया की ओर देखा। पल भर रुककर वह फिर बोला, “उसका नाम रम्जी यूसफ है। वह अल कीफा का कभी न थकने वाला एक बड़ा वर्कर है।”

“अल कीफा ?“ आफिया ने अल कीफा का नाम सुना तो था, पर उसके विषय में पूरी जानकारी नहीं थी।

“तुम्हें अल कीफा के बारे में बता ही देता हूँ।” सुहेल ने एक बार फिर ध्यान से आफिया की ओर देखा और मन में सोचा कि यह लड़की हमारे कॉज़ के लिए बहुत ही वफ़ादार साबित होगी। और इसके साथ हर बात साझी कर लेनी चाहिए।

“अल कीफा अपने ही बहन-भाइयों का संगठन है। यह बातों में नहीं, बल्कि एक्शन में विश्वास रखती है। अपनी सभी मस्जिदों और जिहादी सर्किलों में इसका बहुत ज़ोर है। पर ये खुलकर सामने नहीं आता। इसका नेता गुलबदन हेकमत्यार है।“

“जो अफ़गानिस्तान का वार लोर्ड है ?“ आफिया बीच में ही बोल उठी।

“हाँ वही। शुरुआत उसने की थी। पर अब यह सब तरफ फैल चुकी है। मुस्लिम समाज इसको बहुत ज्यादा मान देता है और इसको आर्थिक मदद भी बहुत मिलती है। परंतु

कई बार यही आर्थिक सामर्थ्य झगड़े का कारण भी बन जाता है। तुमने पिछले दिनों मुस्तफा शलेबी के क़त्ल के बारे में सुना ही होगा ?“

“हाँ, पता है मुझे। वही जिसका कोई भेद ही नहीं खुल सका।”

“वह क़त्ल अल कीफा के पास पड़े मिलियन डॉलर का फंड लेकर ही हुआ था। अल कीफा के ही एक मैंबर को शक हो गया कि शलेबी पैसे की हेराफेरी करता है। पर मैं ऐसा नहीं मानता। शलेबी को मारकर किसी ने सही नहीं किया। उस जैसा धार्मिक और अकीदे वाला कोई हो ही नहीं सकता।”

“वह कैसे ?“ आफिया को जिज्ञासा हुई।

“उसने अल कीफा के लिए या समझ लो कि समूचे जिहाद के लिए बहुत काम किया है। वही शेख उम्र अब्दुल रहमान को अमेरिका लाने में कामयाब हुआ था।”

“शेख उम्र वही है न जो कि मिस्र से है ? जो बचपन से अंधा है ?“

“हाँ वही। वह बहुत बड़ा धार्मिक फिलासफ़र है। अमेरिका को उसके बारे में कुछ भी पता नहीं है। पर वह मिस्र के कट्टर जिहादियों में से एक है। सारे मुस्लिम समाज में उसका रुतबा बहुत ऊँचा है। कोई भी उसकी बात का विरोध नहीं कर सकता। काश ! तू कभी उसको सुने तो...।”

“मुझे उसके फ़ल्सफ़े का पता है।” आफिया को याद आया कि पिछले दिनों ही उसको किसी ने शेख उम्र की वीडियो दिखाई थी। वीडियो में सुने शेख के शब्द उसके मन में घूमने लगे, “हर मुसलमान का एक ही धर्म है कि गैर मुसलमानों को ख़त्म कर दो। दुनिया पर कोई भी ऐसा न रहे जो मुसलमान न हो। लोगों को समझा-बुझाकर मुसलमान बनाने से बेहतर यह है कि उनका खातमा करो। जितनी जल्दी गैर मुसलमानों का सफाया होगा, उतनी जल्दी ही हम दुनिया पर इस्लाम का झंडा फहरा सकेंगे। इसके अलावा हर मुसलमान का यह भी धार्मिक फर्ज़ है कि वो कई शादियाँ

करके अधिक से अधिक बच्चे पैदा करे ताकि हमारी गिनती काफ़िरों से अधिक हो जाए।"

"तू मेरी बात सुन रही है न ?"

"हाँ-हाँ, मेरा ध्यान तेरी बात की ओर ही है।" आफिया ने ख़यालों में से निकलते हुए सुहेल की बात का हुंकारा भरा।

"हमे शेख उम्र जैसे धार्मिक रहनुमा की ज़रूरत है।"

"पर...।" आफिया ने उसकी बात काटी।

"हाँ, बता ?"

"पर, यह रम्जी यूसफ फिर आज एम.एस.ए. की मीटिंग में क्या कर रहा था ?"

"असल में सभी बातों का तुम्हें आहिस्ता आहिस्ता पता चल जाएगा। कई मैंबर दोनों तरफ काम करते हैं। जैसे कि मार्लेन का पति बस्म कुंज है। वह दोनों तरफ का मैंबर है।"

"आजकल वह कहाँ है ? क्योंकि वह आज मार्लेन के साथ तो कहीं दिखा नहीं ?" बात फिर दूसरी तरफ चली गई।

"उसकी भी लम्बी कहानी है। वह लिबनान का जन्मा पला है। वह वहीं से किसी धार्मिक संगठन से वजीफा लेकर यहाँ पढ़ने आया था। बॉस्टन यूनिवर्सिटी से उसने ग्रेज्युएशन की। यहीं वह जिहादी लीडरों के सम्पर्क में आया। फिर वह अल कीफा का सरगरम मैंबर बन गया। उन्हीं दिनों उसने मार्लेन से शादी की और उनके एक बच्ची

हो गई। फिर वे दोनों पाकिस्तान चले गए। वहीं से बस्म तो जिहाद में लड़ने की खातिर बार्डर पार करके अफ़गानिस्तान चला गया और मार्लेन अपनी बच्ची के साथ पेशावर के उस इलाके में रही जहाँ कि सभी जिहादियों के परिवार रहते हैं। वहीं बस्म लड़ाई के दौरान सख़्त ज़ख्मी हो गया और उसको सर्जरी के लिए यहाँ अमेरिका वापस आना पड़ा। मार्लेन और बस्म यहाँ आकर कुछ देर रहे। जब बस्म पूरी तरह ठीक हो गया तो वह फिर जिहाद की लड़ाई में हिस्सा लेने लिबनान पहुँच गया। वहाँ से वह आगे बास्निया चला गया। आजकल वह बास्निया में ही लड़ रहा है।"

तभी आफिया का हॉस्टल आ गया था। बातों का सिलसिला बंद हो गया। सुहेल आफिया को हॉस्टल पर उतार कर वापस चला गया। आफिया अपने कमरे की ओर जाती हुई मार्लेन और बस्म कुंज के बारे में सोचे जा रही थी। उसको वह एक सच्चा मुसलमान जोड़ा लगा जो कि पूर्णरूप में जिहाद को समर्पित था। उसको मार्लेन अच्छी लगने लगी। देर रात तक भी वह उनके बारे में सोचती रही। अगले कुछ दिनों में ही उसने मार्लेन के साथ अच्छी दोस्ती गांठ ली।

आफिया की पढ़ाई के विषय में किसी कोई शंका नहीं थी। सब जानते थे कि वह इतनी होशियार है कि वह कोई भी विषय चुन ले, पर हमेशा पहले नंबर पर आएगी। इन्हीं दिनों में उसने एक पर्चा लिखा जिसका नाम था - 'इस्लामीजेशन इन पाकिस्तान एंड इट्स इफेक्ट्स ऑन वुमन।' इस पर्चे के कारण उसको एम.आई.टी. ने कैरल विल्सन अवार्ड से सम्मानित किया जिसमें पाँच हज़ार डॉलर का नकद ईनाम शामिल था। इस ईनाम से खुश हुई आफिया 1992 का ग्रीष्म अवकाश बिताने के लिए पाकिस्तान चली गई। उन्हीं दिनों पाकिस्तान में हदूद लॉ के बारे में शोर मचा हुआ था। ह्युमन राइट्स जैसे संगठनों का कहना था कि यह लॉ न सिर्फ़ औरत की आज़ादी को कुचल रहा है अपितु इसने तो औरत जाति को भी कुचल कर रख दिया है। इस कानून को घड़ने में मुफ़्ती मुहम्मद तकी उस्मानी ने बड़ी मेहनत की थी। मुफ्ती उस्मानी आफिया के परिवार का धार्मिक रहनुमा था। इस कारण आफिया को उन्हीं दिनों चल रहे शोर-शराबे में दिलचस्पी हो गई। उसने मुफ्ती साहिब का पक्ष लेने का निर्णय ले लिया। वह यह पक्ष इस कारण नहीं ले रही थी कि इसको घड़ने वाला मुफ्ती उस्मानी था बल्कि इस कारण कि उसकी अपनी सोच थी कि इस्लाम ने जो भी पाबंदियाँ स्त्रियों पर लगाई हैं, वे मुसलमान स्त्री के लिए सही हैं। इनको मानते हुए ही वह अपने धर्म का सही पालन कर सकेगी। इस अरसे के दौरान वह जिस किसी भी बड़े लीडर को मिली, हर कोई उसके विचारों से प्रभावित हुआ। क्योंकि एक औरत होकर वह औरतों की ओर से चलाए जा रहे संघर्ष के उलट थी। उसके शुभचिंतकों में पहले पाकिस्तानी डिक्टेटर जिया उल हक का पुत्र इयाज़ उल हक भी

था। उस वक़्त पाकिस्तान की राजनीति में भी फेरबदल हो चुका था। बेनज़ीर भुट्टो की जगह नवाज शरीफ की पार्टी सत्ता में आ चुकी थी और वह मुल्क का प्रधान मंत्री था। सरकार के बदल जाने से और चाहे सब कुछ बदल गया हो, पर एक बात नहीं बदली थी। वह थी पाकिस्तान की खुफ़िया एजेंसी आई.एस.आई. का एजेंडा। इसके तत्कालीन प्रमुख जावेद नासिर का विचार था कि पाकिस्तान को दुनिया के किसी भी हिस्से में चल रहे जिहाद की अधिक से अधिक मदद करनी चाहिए। इसी एजेंडे के अधीन वह बास्निया में चल रहे गृह युद्ध में जिहादियों की मदद कर रहा था। इसके अलावा यह एजेंसी फिलिपीन्ज़, रशिया के कई हिस्सों में चल रहे जिहाद और चीने के सिनज्यांग प्रांत में चल रहे संघर्ष में भी ऊपरोक्त नीति अपना रही थी। हर जिहाद में अरब अफ़गानों के जत्थे लड़ रहे थे। ये वही लोग थे जो अफ़गानिस्तान की जंग के समय अमेरिका की ओर से रशिया के विरुद्ध लड़े थे। जब वहाँ लड़ाई ख़त्म हो गई तो इन्हीं जत्थों के लीडर अपने लड़ाकों को दुनिया के अन्य क्षेत्रों की ओर ले गए। इन्हीं लीडरों में से सबसे अधिक उभरकर बाहर आ रहा लीडर उसामा बिन लादिन था। इसके अतिरिक्त बलोचिस्तान का एक बड़ा और बहुत ही अमीर परिवार जिहाद में मुख्य भूमिका निभा रहा था। उसको अल बलोची के नाम से जाना जाता था। यह सारा परिवार काफी पहले पाकिस्तान से कुवैत चला गया था। परंत 1990 के इर्द गिर्द यह पुनः पाकिस्तान में लौट आया और आजकल जिहाद में बढ़-चढ़कर भाग ले रहा था। इस परिवार के प्रमुख का नाम खालिद शेख मुहम्मद था जिसका सभी उसके निक नाम अर्थात के.एस.एम. के रूप में जानते थे। रम्जी यूसफ इसी के.एस.एम. का भतीजा था।

खैर, अपनी छुट्टियाँ बिताकर आफिया वापस अमेरिका आ गई। जब वह लोगन इंटरनेशनल एअरपोर्ट पर उतर कर कस्टम वगैरह की क्लीयरेंस के लिए लाइन में लगी हुई थी तो उसने देखा कि साथ वाली लाइन में खड़ा कोई व्यक्ति उसकी ओर बड़े गौर से देख रहा था। उसने दिमाग पर ज़ोर डालकर याद करने की कोशिश की कि इस आदमी को उसने पहले कहाँ देखा था, पर उसको कुछ याद न आया। वह गर्दन झुकाकर सोचने लगी। फिर उसके दिमाग में अचानक कुछ कौंधा और उसने तुरंत ही साथ वाली लाइन की ओर देखा। तब तक वह व्यक्ति आगे निकल गया था। आफिया मन ही मन बोली, ‘ओह, यह तो रम्जी यूसफ है जिसको उस दिन एम.एस.ए. की मीटिंग में देखा था।’

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –5

(5)

अल कीफा की मीटिंग में हिस्सा लेने मार्लेन और आफिया एकसाथ पहुँचीं। यह मीटिंग किसी के घर पर हो रही थी। मीटिंग शुरू होने से पहले आफिया और मार्लेन एक तरफ़ खड़ी होकर बातें कर रही थीं कि तभी आफिया के कानों में आवाज़ पड़ी।

“सलाम वालेकम, हमशीरा।“

आफिया ने पीछे मुड़कर देखा। सामने रम्जी यूसफ खड़ा था। वह बड़े उत्साह के साथ बोली, “अरे ! वालेकम सलाम! मेरा ख़याल है, हम उस दिन इकट्ठे एक ही फ्लाइट पर आए थे।“

“मार्लेन तेरा क्या हाल है ?“ रम्जी यूसफ ने आफिया की फ्लाइट में एक साथ आने वाली बात पर कोई ध्यान न दिया।

“जी, ठीक है। तुम सुनाओ।“

“और, बसम का फोन वगैरह आया था ?“

“हाँ, फोन तो उसका आता ही रहता है। कह रहा था कि बास्निया की घरेलू जंग ख़तरनाम रूप अख्तियार करती जा रही है।“

“यह घरेलू जंग नहीं, यह मुसलमानों को खत्म करने की योजनाबद्ध स्कीम है। इस स्कीम में सारी दुनिया, मुसलमानों के खिलाफ़ हो चुकी है। ख़ैर...।“ वह बात बीच में ही छोड़ता हुआ किसी अन्य के पास जाकर बातें करने लगा। फिर मीटिंग शुरू हो गई। आज का मुख्य एजेंडा था- बास्निया में चल रहा जिहाद। अन्य चर्चाओं के अलावा इस बात पर सहमति प्रकट की गई कि वहाँ के जिहाद में यतीम हो रहे बच्चों और विधवाओं के लिए फंड इकट्ठा करने की आवश्यकता है। इसके लिए एक नया संगठन ‘रिलीफ इंटरनेशनल’ शुरू करने का निर्णय लिया गया। इसके सारे कामकाज और लोगों से इसके लिए फंड एकत्र करने की जिम्मेदारी आफिया ने ले ली। मीटिंग खत्म होने के करीब थी जब एक व्यक्ति के कंधे पर हाथ रखे, उसके पीछे पीछे चलता शेख उमर रहमान कमरे में दाख़िल हुआ। सभी ने खड़े होकर, झुककर सलाम कहा। शेख ने हाथ के इशारे से सभी को बैठने के लिए कहा और अपनी सोटी इधर-उधर घुमाते हुए सोफा ढूँढ़कर आराम से बैठ गया।

“सभी जिहादियों का आज की मीटिंग में स्वागत है। मैं अधिक बातें नहीं करूँगा। बस, मुझे इतना ही याद करवाना है कि तुम्हें अपना फर्ज़ हर वक़्त याद रहना चाहिए।“

वह बोलते बोलते चुप हो गया। कमरे में मुकम्मल चुप्पी छाई हुई थी। कोई ऊँचा साँस भी नहीं ले रहा थ। उसने पलभर रुककर आगे बोलना शुरू किया, “यह दुनिया क़ाफ़िरों से भरी पड़ी है। जब तक इन सबका सफाया नहीं हो जाता, तब तक धरती पर शांति नहीं हो सकती। यह मुकम्मल शांति तभी होगी, जब चारों ओर इस्लामी झंडा फहरेगा। मैं बेशक देख पाने में असमर्थ हूँ, पर क़ाफ़िरों की प्रगति हर वक़्त मेरे मन की आँखों के सामने रहती है। ये कुछ ही दूरी पर इन क़ाफ़िरों की आसमान छूती इमारतें मेरे दिल में कांटे की तरह चुभती हैं। काश कि कोई...।“ वह चुप होकर आगे की बात वहीं दबा गया। सभी समझ गए कि उसका इशारा वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के टॉवरों की ओर था। कुछ देर बेजान पुतलियाँ इधर-उधर घुमाने के बाद वह फिर बोला, “इन क़ाफ़िरों के दोहरे मापदंड देखो। इन्होंने जापान में बम फेंककर करीब सवा दो लाख लोग एक हफ़्ते में मार दिए। हमारे फिलिस्तीनी भाइयों की लड़ाई को ये टैरेरिज़्म बताते हैं। ज़रा सोचो कि असली टैरेरिस्ट कौन हुआ ? अपने हकों के लिए लड़ने वाला या निर्दोष लोगों को एटम बमों से मारने वाला। ख़ैर, पाक फतवा जारी हो चुका है। उस पर अमल करना हर सच्चे मुसलमान का फर्ज़ है।“ इतना कहते हुए वह उठ खड़ा हुआ। जो व्यक्ति उसको लेकर आया था, उसने आगे बढ़कर शेख की बांह पकड़ ली और अंदर की ओर ले चला। इसके बाद मीटिंग बर्खास्त हो गई। सभी उठकर चलने लगे। आफिया और मार्लेन भी बाहर आ गईं। आफिया देख रही थी कि हर कोई मीटिंग में से उठ आया है, परंत रम्ज़ी यूसफ, मुहम्मद सालेमाह और एक व्यक्ति

पीछे ही रुक गए थे। वहाँ से वे दोनों चल पड़ीं, पर रास्ते में उनके बीच अधिक बातचीत न हुई। आफिया चुप थी, पर उसका मन चुप नहीं था। वह सोच रही थी कि शेख उमर अब्दुल रहमान ने जो फतवे के बारे में कहा था, वह अवश्य ही कोई अहम बात होगी। उसने मन में यह बात भी आ रही थी कि रम्ज़ी, दूसरे साथियों सहित वहीं क्यों रुक गया। उसको इस बात का अफ़सोस हो रहा था कि यदि कोई ज़रूरी बात है तो उसको भी इस बारे में बताया जाना चाहिए था। उसको लगा कि शायद उस पर अभी पूरा भरोसा नहीं किया जा रहा। उसका मन कह रहा था कि वह इस प्रकार पीछे हटने वालों में से नहीं है। वह तो अगली कतार की जिहादी है। इस प्रकार सोचते हुए पता ही नहीं चला कि कब उसका हॉस्टल आ गया। मार्लेन उसको उतार कर आगे बढ़ गई।

इसके सप्ताहभर बाद आफिया दोपहर के समय समाचार देख रही थी, जब वह उछल कर खड़ी हो गई। ख़बर ही ऐसी थी जिसने उसका रोम रोम उत्साह से भर दिया था। सी.एन.एन. समाचार दे रहा था, "वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के नॉर्थ टॉवर की पॉर्किंग में बम धमाका। जिसमें करीब आधा दर्जन लोग मारे गए और सैकड़ों ज़ख़्मी हो गए।"

यह ख़बर सुनते ही आफिया के कान फटाक फटाक से खुल गए। उसको याद आ गया कि उस दिन मीटिंग में शेख उमर ने जो फतवे वाली बात कही थी, वह इसी काम को लेकर थी। फिर साथ ही उसको यह ख़याल भी आया कि रम्ज़ी यूसफ और उसके दो साथी मीटिंग के बाद शायद इसी काम के लिए रुके थे जो कि आज वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में घटित हुई है। उसने कई मित्रों को फोन किए, पर कहीं से कोई पक्की जानकारी न मिली। उसने सुहेल को फोन किया तो उसने कहा कि वह उसको अगले दिन मिलेगा।

अगले रोज़ शाम के समय आफिया और सुहेल कार में बैठकर किसी नए पॉर्क में चले गए। वहाँ पहुँचकर सुहेल ने बात शुरू की, "शेख साहिब ने फतवा जारी किया था कि कम से कम ढाई लाख अमेरिकी लोगों को एकसाथ एक ही एक्शन में मारा जाए। इसके लिए रम्ज़ी यूसफ की जिम्मेदारी लगाई गई थी। रम्ज़ी ने अपने साथ ख़ास दोस्त मुहम्मद सालेमाह को लिया। वैसे वह इसकी तैयारी पहले से ही कर रहे थे। उन्होंने किसी अन्य दोस्त के घर, गैराज में पंद्रह सौ पौंड का बम तैयार कर रखा था। फिर 26 फरवरी के दिन मुहम्मद सालेमाह ने ट्रक किराये पर लिया और बम उसमें टिका दिया। लंच के समय वह ट्रक में बैठ वर्ल्ड ट्रेड सेंटर की ओर चल पड़े। ट्रक के पीछे ही एक अन्य मित्र ने अपनी कार लगा ली। बम कहाँ रखना है, इसकी निशानदेही रम्ज़ी पहले ही कर चुका था। उन्होंने ट्रक नॉर्थ टॉवर की पॉर्किंग के बी

ब्लॉक में जा खड़ा किया। ट्रक खड़ा करने के बाद रम्ज़ी ने बम के पलीते को आग लगाई और दौड़कर साथ आई दोस्त की कार में जा बैठा। वहाँ से कार स्टार्ट करके वे भाग निकले। इसके कुछ मिनट के बाद वहाँ बहुत जबरदस्त धमाका हुआ जिसने सारा लोअर मैनहंटन हिलाकर रख दिया। पर अफ़सोस कि जो सोचा गया था, वह न हो सका।“

“वह क्या ?“ चुपचाप सुहेल की बात बात सुन रही आफिया ने हैरान होकर पूछा।

“रम्ज़ी यूसफ का ख़याल था कि यह बम इतना शक्तिशाली है कि इससे नॉर्थ टॉवर ध्वस्त हो जाएगा। इतना ही नहीं, बल्कि यह ढहते हुए साउथ टॉवर को भी अपने साथ गिरा देगा। उसका विचार था कि उसका यह काम दोनों टॉवरों को धरती पर बिछा देगा और यहाँ काम करने वाले सारे लोग मारे जाएँगे। पर अफ़सोस, उसकी मंशा पूरी न हुई। सिर्फ़ पाँच-छह लोग ही मरे हैं।“

“अल्लाह उसकी इन टॉवरों को गिराने की मंशा ज़रूर पूरी करेगा। पर सुहेल, रम्ज़ी हमारी कौम का हीरो है। वह असली जिहादी है। हमें ऐसे ही जिहादियों की ज़रूरत है।“

“अल्लाह, सब इच्छाएँ पूरी करेगा। बस, अपना काम है कि अपने राह पर चलते रहें।“ इतना कहते हुए सुहेल गाड़ी बैक करने लगा।

“हम लोगों को अधिक से अधिक लड़ाकू भर्ती करने चाहिएँ।“ आफिया ने अपनी बात कही।

“आगे आगे देखना कि क्या होता है। वैसे तू भी जिहाद के लिए बहुत कुछ कर रही है।“

“सुहेल अगर सूच पूछो तो मेरा मन भी करता है कि मैं भी फ्रंट पर जाकर लड़ूँ।“

“नहीं, लड़ाई में हरेक का अपना अपना काम होता है। तू जो कर रही है, यही सही है। बस आगे बढ़ती चल।“

वे बातें करते हुए वापस लौट आए।

अगले दिन मुहम्मद सालेमाह पकड़ा गया। उसके गिरफ्तार होने की देर थी कि जर्सी सिटी के अल कीफा सदस्यों में अफरा-तफरी मच गई। कितने ही और सदस्य पकड़े गए और कितने ही अंडरग्राउंड हो गए। यह मामला यहीं नहीं रुका। पुलिस बॉस्टन शहर में भी पहुँच गई और वहाँ के कई अल कीफा सदस्य पुलिस की गिरफ्त में आ गए। उधर रम्जी यूसफ ने धमाके वाले दिन ही शाम को पाकिस्तान की फ्लाइट ले ली। जब तक उसका नाम बाहर आया, तब तक वह बिलोचिस्तान में अपने घर पहुँच चुका था। अगले दिन वह पेशावर के उन सुरक्षित ठिकानों की ओर निकल गया जहाँ कि अल कायदा और अन्य संगठनों के जिहादी बड़े आराम से बिना किसी भय से रह रह थे।

धड़ाधड़ हुई अल कीफा की गिरफ्तारियों ने तहलका तो मचा दिया, पर सदस्यों के हौसले और अधिक बुलंद हो गए। वे सोचते थे कि उन्होंने इतनी बड़ी घटना को अंजाम दिया है और आगे चलकर वे इससे भी अधिक काम कर सकते हैं। आफिया का भी हौसला बुलंद हो गया। उसने अपने इंटरनेट वाले इश्तहार में लिखा कि इन पकड़े गए सदस्यों के कोर्ट केसों के लिए धन इकट्ठा किया जाए। पुलिस के दबाव के कारण अल कीफा का दफ़्तर बंद कर दिया गया। इसके अधिकतर सदस्य बॉस्टन शहर में जा पहुँचे। उन्होंने अल कीफा का नाम छोड़कर एक नया संगठन बना लिया जिसका नाम था - केयर इंटरनेशनल। न्यूज़ लैटर अल्हसम और अल्हसम वैब साइट केयर इंटरनेशनल से जोड़ दिए गए। इनके माध्यम से मुस्लिम समाज से बड़े ज़ोशोख़रोश के साथ फंड की अपील की गई। दिनों में ही लाखों डॉलर एकत्र हो गया। इससे सभी सदस्यों के हौसले बुलंदियाँ छूने लगे। इन्हीं दिनों ही एक दिन आफिया ने अख़बार में रम्जी यूसफ के विषय में पूरा लेख पढ़ा। लिखा था - “नॉर्थ टॉवर बम धमाके के प्रमुख दोषी को एफ.बी.आई. की मोस्ट वांटिड लिस्ट में डालने के बाद उसका पीछा किया गया। शीघ्र ही पता लग गया कि वह अपने पुश्तैनी घर क्वेटा में रह रहा है। पाकिस्तानी पुलिस की मदद से उसको पकड़ने की योजना बनाई गई। पर जब तक पुलिस की टीम वहाँ पहुँचती, तब तक वह वहाँ से फरार हो गया था। लगता है कि उसके पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई.एस.आई. के अंदर गहरे सम्बंध हैं। उसके इस घर से मिले काग़ज़ों से यह भी जानकारी मिली कि उसका असली नाम

अब्दुल बसत करीम है। बम धमाका करने से बाद वह इसी नाम के पासपोर्ट से पाकिस्तान पहुँचा था। इसके अतिरिक्त उसके घर से मिले चित्रों में कई बड़े लोगों के साथ खींचे गए फोटो भी मिले। जिनमें जनरल जिया उल हक, उसका पुत्र इजाज उल हक और प्रधान मंत्री नवाज शरीफ जैसी शख़्सियतें भी शामिल हैं। इससे पता चलता है कि वह पाकिस्तान राजनीतिज्ञों के कितना करीब है। उम्मीद है कि वह पेशावर के एरिये में पहुँच चुका है। इसके अलावा, और भी बहुत सारी गुप्त जानकारी मिली है।"

आफिया ने अख़बार एक तरफ रख दिया और सुहेल की कही बात को लेकर सोचने लगी। सुहेल ने ही उसको बताया था कि पेशावर सारे जिहादियों का एक बहुत बड़ा अड्डा है। वहाँ कोई बाहरी व्यक्ति तो क्या, खुद पाकिस्तानी सरकार भी नहीं जा सकती। आफिया को लगा कि अच्छा ही हुआ कि रम्जी यूसफ पुलिस के हाथ नहीं आया। यदि वह पकड़ा जाता तो पता नहीं फिर और कितनी गिरफ्तारियाँ होती। तभी आफिया का फोन बजा। उसने फोन ऑन किया तो दूसरी तरफ उसका भाई था जो कि हूस्टन से बोल रहा था।

"आफिया, क्या हो रहा है ?"

"भाई जान, कुछ नहीं, बस खाली बैठी हूँ।"

"मैंने कराची फोन किया था, अब्बा की तबियत कुछ ढीली है।"

"क्यों ? क्या हुआ अब्बू को ?" आफिया एकदम घबरा गई।

"नहीं, इतना फिक्र वाली बात तो नहीं है। वैसे तुझे पता ही है कि वह हाई ब्लॅड प्रैशर के मरीज़ हैं। अब, दिल की बीमारी भी शुरू हो गई है।"

"उन्हें कहो कि यहाँ आकर इलाज करवाएँ। यहाँ हर बीमारी का बेहतर इलाज है।"

“मैं तो बहुत बार कहकर देख चुका हूँ, पर वो मानते ही नहीं। तू बात करके देखना।“

“मैं करती हूँ फोन आज ही। और अम्मी तो ठीक है न ?“

“अम्मी बिल्कुल ठीक है। फौज़िया भी कह रही है कि अमेरिका पढ़ने आना है।“

“अच्छा है, यहाँ आ जाए। सभी इकट्ठा हो जाएँगे।“

“इकट्ठा कहाँ होंगे ? मैंने तुझे कितना कहा, हूस्टन न छोड़, पर तूने मेरी बात नहीं मानी। ऐसे ही वो भी अपनी मर्ज़ी ही करेगी।“

“भाई जान, कोई बात नहीं। मैं यहीं ठीक हूँ। वो हो सकता है, तुम्हारे पास रह जाए।“

“आफिया और तो सब ठीक है, पर मुझे तेरा एक बात से बड़ा फिक्र रहता है।“

“भाई जान, वह क्या ?“

“तुम्हारा बॉस्टन शहर आजकल ख़बरों में खूब रहता है। सुनते हैं कि वहाँ बड़े जिहादी घूम रहे हैं। वर्ल्ड ट्रेड सेंटर की पॉर्किंग में धमाके वाले केस के साथ ही बॉस्टन जुड़ा हुआ है। तू इस तरफ से बचकर रहना।“

“नहीं भाई जान, ऐसी कोई बात नहीं है। मेरा इन लोगों से कोई लेना-देना नहीं है। मैं तो सिर्फ़ चैरिटी तक ही सीमित हूँ।“ आफिया ने झूठ बोला तो डर भी गई कि उसका भाई उसकी घबराहट को न जान जाए। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। मुहम्मद अली आगे बोला, “आफिया, यह काम चैरिटी से ही शुरू होता है। जितने भी जिहादी देख रहे हैं, ये पहले चैरिटी में ही काम करते थे। वहीं इनका वास्ता असली जिहादियों से पड़ता है।

तू मेरी बहन खुद को बचा कर रखना। मैं तो कहता हूँ कि तूने क्या लेना है चैरिटी वगैरह से। तू चुपचाप अपनी पढ़ाई कर।“

“हाँ, भाई जान। मैं आगे की क्लासें लेने के बारे में सोच रही हूँ। तुम्हारे साथ भी सलाह करनी है कि कौन-सी क्लासें लूँ।“ आफिया बात को पढ़ाई की ओर ले गई और चैरिटी वाली बात टाल गई। वे बातें कर ही रहे थे कि बीच में आफिया की दूसरी कॉल आ गई। उसने फोन के स्क्रीन पर देखते हुए बोली, “भाई जान, मैं तुम्हें फिर फोन करती हूँ। मेरा कोई फोन आ रहा है।“ उसने दूसरी तरफ फोन ऑन करते हुए ‘हैलो’ कहा। उधर, मार्लेन थी। वह घबराई हुई आवाज़ में बोली, “आफिया, बहुत बुरा हुआ।“

“क्या हो गया ?“

“शेख उमर अब्दुल रहमान गिरफ्तार हो गए।“

“या अल्लाह !“ आफिया ने फोन काट दिया और सिर पकड़कर बैठ गई। अगले दिन सभी अख़बारों की मुख्य ख़बर थी कि नॉर्थ टॉवर की पॉर्किंग वाले बम धमाके का मुख्य सूत्रधार, अंधा शेख उमर अब्दुल रहमान पकड़ा गया।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –6

(6)

1993 में आफिया ने पहला सेमेस्टर खत्म होने के बाद, छुट्टियों में परिवार को मिलने जाने का मन बना लिया। ग्रीष्म अवकाश प्रारंभ हुआ तो उसने टिकट खरीदी

और अगले ही दिन पाकिस्तान पहुँच गई। उसके कराची पहुँचने के दो दिन बाद उसका मामा एस.एच. फारूकी अपनी पत्नी सहित उसको मिलने आ पहुँचा। दोपहर के भोजन के बाद पूरा परिवार ड्राइंग रूम में बैठा बातों में मशगूल हुआ पड़ा था।

“अब्बू, आप देखने में तो बीमार बिल्कुल नहीं लगते, पर फोन पर मुश्किल से बोलते हो ?“ आफिया ने हँसते हुए कहा।

“भाई साहब, बिल्कुल तंदरुस्त हैं। ये तो तुझे यहाँ बुलाने के लिए बहाना घड़ा होगा।“ समीप बैठा फारूकी भी हँसा।

“बीमार को आफिया बेटा क्या है। इस उम्र में तो वैसे ही कोई न कोई बीमारी चिपटी रहती है।“ आफिया के पिता ने ढीला-सा उत्तर दिया। इसके बाद अन्य घरेलू बातें चल पड़ीं।

“अब तो फौज़िया बेटी भी अमेरिका की तैयारी कर रही लगती है।“ फारूकी की बेगम ने बात बदली।

“हाँ जी, दाख़िला तो हो गया है। बस, अब जाने ही तैयारी ही करनी है।“

“क्या पढ़ रही है फौज़िया बेटी ?“

“जी, डॉक्टरी।“

“बहुत अच्छा है। आजकल अपने लड़के-लड़कियाँ धड़ाधड़ अमेरिका जाकर डॉक्टर, नर्स बन रहे हैं। बड़े फ़ख्र वाली बात है यह तो।“ फारूकी ने गर्व से फौज़िया की ओर देखते हुए कहा।

“मगर कुछेक लोग पाकिस्तान के नाम को वहाँ जाकर धब्बा भी लगा रहे हैं।“ सुलेह सद्दीकी ने चोट की।

“तुम किस की बात करते हो ?“ इस्मत ने चुप्पी तोड़ी।

“बिलोचिस्तान के उस अल बलोची परिवार के लड़के रम्जी यूसफ की। जिसने वहाँ किसी बड़ी इमारत के पॉर्किंग लाट में बम धमाका करके कितने ही लोगो को मारा। लोग समझते नहीं कि जो देश हमको इतनी सहूलियतें दे रहा है, हमारी अगली पीढ़ी के लिए कितने अच्छे पढ़ाई के अवसर मुहैया करवा रहा है, उसी को तुम ध्वस्त करने में लगे हो।“ सुलेह सद्दीकी थोड़ी नफ़रत में बोला।

“क्या पता है जी, सच क्या है। हम अमेरिका के कहने पर तो किसी को दोषी नहीं मान सकते।“ इस्मत ने गोलमोल-सा जवाब दिया।

“पर वहाँ हमारे ऐसे लोग भी तो हैं जो समाज सेवा का काम कर रहे हैं। अपनी आफिया भी तो समाज सेवा के कामों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है।“ फारूकी की बेगम बोली।

“यह तो अच्छी बात है। समाज सेविका माँ की बेटी, समाज सेवा न करेगी तो और क्या करेगी।“ फारूकी ने आफिया को और उसकी माँ को सराहा।

“आफिया, वहाँ हो रही ऐसी तोड़-फोड़ की कार्रवाइयों के बारे में वहाँ के लोगों के क्या विचार हैं ?“

“अंकल, मैं और मेरी सहेलियाँ, हम तो ज्यादा चैरिटी का काम करते हैं। हमें इन बातों का ज्यादा पता नहीं लगता। पर एक बात ज़रूर है कि सिर्फ़ अपने लोगों को ही दोष न दो। क्योंकि उन्हें ऐसा करने के लिए मज़बूर भी तो पश्चिम ही करता है। अब बास्निया में ही ले लो। वहाँ मुसलमानों पर इतने अत्याचार हो रहे हैं कि अल्लाह ही जानता है। मेरे पास वीडियो कैसिटें हैं जिनमें आप देखोगे कि कैसे वहाँ हमारे लोगों

पर अत्याचार हो रहे हैं। कैसे हमारी बहन-बेटियों के साथ सामूहिक बलात्कार होते हैं। ये कैसिटें देखकर रौंगटे खड़े हो जाते हैं।“

“पर यह कैसे संभव है कि जिस वक़्त बलात्कार हो रहे थे, उस वक़्त तुम्हारे लोगों ने वो कैसिटें या मूवियाँ बनाई। तू तो ऐसे बता रही है जैसे किसी फिल्म की सूटिंग की कैसिटों की बात कर रही हो।“ सुलेह सद्दीकी नाराज़ होकर आफिया की ओर देखते हुए बोला। इस्मत को घरवाले की यह बात अच्छी न लगी। पर इसका जवाब आफिया ने ही दिया। वह बोली, “जो जिहादी वहाँ लड़ रहे हैं, वे ऐसी घटनाओं को कैमरे में कैद कर लेते हैं। ताकि आप जैसे पश्चिम के भक्तों को सच दिखलाया जाए।“

“मैं किसी पश्चिम-वश्चिम का भगत नहीं हूँ। मगर सच्चाई तो सच्चाई ही है न। पहले तू यह बता कि तेरे पास जो कैसिटें हैं, ये किस ग्रुप ने बनाई हैं। फिर मैं आगे बात करूँगा।“

“अब्बू, यह अधिकांश काम मुस्मिल ब्रदरहुड का किया हुआ है। इस वक़्त जिहाद में सबसे अधिक योगदान वही दे रहे हैं।“ इतना कहकर आफिया अपनी कॉपी पलटने लगी।

“यह मुस्लिम ब्रदरहुड ही असली झगड़े की जड़ है। तेरी ये वीडियो कैसिटें देखने से पहले ही मैं बता देता हूँ कि यह सब प्रोपेगंडा है। मुसलमानों को भड़काने के लिए ऐसे काम तो ब्रदरहुड मुद्दत से करता आ रहा है।“

पति की बात सुनकर इस्मत ने आफिया की ओर देखा और उसे चुप रहने का इशारा किया। अगले पल कमरे में चुप्पी-सी छा गई। सभी को चुप-सा देखकर फौज़िया बोली, “अब्बू, इस मुस्लिम ब्रदरहुड की असलीयत क्या है ? मेरा मतलब यह किसने शुरू किया और इसका निशाना क्या है ?“

“इसके बारे में फौज़िया बेटी, मैं तुझे बताता हूँ।“ फारूकी ने गला साफ़ करते हुए खंखारा और फिर फिर बोलने लगा -

“बहुत पहले मिस्र के एक मशहूर बुद्धिजीवी ‘हसन अल बन्ना’ ने इस पार्टी बनाई थी। उसके इरादे बहुत नेक थे। उस वक़्त अपने आसपास ब्रितानिया ने सबको गुलाम बना रखा था। सभी देश ब्रितानिया की कालोनियाँ बनाकर रख दिए थे। इन कालोनियों के लोग जो गाढ़े पसीने की कमाई करते थे, ब्रितानवी उसी कमाई पर ऐश करते थे और हमारे लोगों के साथ पशुओं जैसा व्यवहार होता था। हसल अल बन्ना की इस नई बनाई पार्टी, मसलन ब्रदरहुड ने नारा दिया कि आओ लोगो हम सब मिलकर इन ब्रितानवी लोगों को यहाँ से भगा दें और कुरान हमारा संविधान हो। उसके कहने का भाव था कि ऐसा राज्य हो जहाँ का राज-प्रबंध और कानून व्यवस्था वगैरह मज़हबी अकीदे के अनुसार हो। अपने हकों के लिए लड़ना मज़हब का काम माना जाए और इसको जिहाद समझकर लड़ा जाए। उस वक़्त ब्रदरहुड ब्रितानिया के इतना खिलाफ़ था कि इसने दूसरी बड़ी जंग में जर्मनी का पक्ष लिया क्योंकि वह ब्रितानिया के खिलाफ़ लड़ रहा था। जंग बंद होने के बाद जब इज़राइल स्टेट बना तो मुस्लिम ब्रदरहुड ने सबसे पहले इसका विरोध किया। इसी कारण पहली अरब इज़राइल जंग में मिस्र मुख्य पार्टी था। हालांकि अरब उस जंग में हार गया, पर ब्रदरहुड की धूम मच गई। जब ब्रितानिया यहाँ से चला गया तो मुस्लिम ब्रदरहुड अपनी ही सरकार के खिलाफ़ हो गया। सरकार ने इस पर पाबंदी लगा दी। फिर, यह अन्य मुल्कों में फैलने लगा। आज हालात ये हैं कि हरेक अरब मुल्क में इसकी शाखाएँ हैं, पर तकरीबन सभी देशों ने इस पर पाबंदी लगा रखी है। क्योंकि आजकल ये इंतहापसंदों के कब्ज़े में है और बहुत ही हिंसक हो गया है।“

“जब इतना ख़तरनाक है तो यह किसी देश की मदद के बग़ैर अपना वजूद कैसे कायम रख सकता है ?“ इस्मत ने टेढ़ा सवाल किया।

“ऐसा नहीं है। कई देशों के यह फिट बैठता है। सउदी अरब का उदाहरण ले लो। वहाँ का राज घराना वहाबी है जो सुन्नी और शिया दोनों के खिलाफ़ है। वह अपनी वहाबी शाखा को फैलाने के लिए मुस्लिम ब्रदरहुड की मदद करता है। असल में, सबसे अधिक सउदी अरब ही ब्रदरहुड को उठाता है।“

“इसका मतलब, बाकी सारी दुनिया पागल है जो ब्रदरहुड का पक्ष लेती है।“ इस्मत गुस्से में बोली। इसके बाद वहाँ हो रही बहस में तल्ख़ी आने लगी। फारूकी ने जाने की इजाज़त मांगी और दोनों मियाँ-बीवी उठकर चल पड़े।

इस्मत और फौज़िया उन्हें विदा करने के लिए बाहर निकल गईं। पीछे आफिया और उसका पिता रहे गए। सुलेह सद्दीकी आफिया के सर पर हाथ फेरते हुए बोला, “बेटी, तू अपनी पढ़ाई में ध्यान दे। तूने क्या लेना है इस चैरिटी वगैरह से।“

“अब्बू, यह तो दीनवाला काम है। अम्मी ने भी तो सारी उम्र यही सब किया है। फिर आप मुझे इस तरफ से क्यों रोकते हैं ?“

“क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह असली चैरिटी नहीं है।“

“और क्या है यह ?“

“असली चैरिटी वह होती है जो वास्तव में ज़रूरतमंदों की मदद करें, पर आजकल जितनी भी चैरिटी हो रही हैं, वे असल में जिहाद के नाम पर लड़ रहे आतंकवादियों की मदद कर रही हैं।“

“अब्बू प्लीज़, उन्हें आतंकवादी न कहो, नहीं तो मैं नाराज़ हो जाऊँगी।“ आफिया उठकर खड़ी हो गई।

“तू यूँ गुस्सा न हो, मेरी बात सुन।“ पिता ने आफिया की बांह पकड़कर उसको फिर से बिठा लिया।

“तू जिहाद का मतलब समझती है ?“

“कुछ कुछ समझती हूँ और बाकी आप समझा दो।“ आफिया रूखे स्वर में बोली।

“देख बेटा, ये लोग पवित्र कुरान में से उतने ही लफ्ज़ उठा लेते हैं जितने इनको ठीक बैठते हैं। सारी कुरान को पढ़ा जाए तो असली मतलब कुछ और निकलता है।“

“क्या निकलता है असली मतलब ?“ आफिया की अभी भी त्यौरियाँ चढ़ी हुई थीं।

“मुहम्मद साहिब ने फरमाया है कि इन्सान की ज़िन्दगी में नौ जिहाद और हैं और यह लड़ाई वाला जिहाद दसवें नंबर पर आता है। पहले ये हैं - जैसे गुस्सा, क्रोध, लालच, लोभ, मोह और काम वगैरह। जो लोग इन नौ जिहादों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं, सिर्फ़ वही दसवा जिहाद लड़ने के काबिल समझे जाते हैं। क्या तुझे लगता है कि आज के जिहादियों ने इन पर काबू पाया हुआ है।“

आफिया चुप रही। वह कुछ न बोली तो उसका पिता फिर बोला, “मैं तुझे एक कहानी सुनाता हूँ। जंग के मैदान में मुहम्मद साहिब के साथ उनका एक रिश्तेदार जीमल लड़ रहा था। उसने लड़ते हुए अपने दुश्मन को नीचे ज़मीन पर गिरा लिया और उसकी छाती पर चढ़ बैठा। वश न चलता देख नीचे पड़े दुश्मन ने उसके मुँह पर थूक किया। इस पर एकदम गुस्से में आकर जमील ने तलवार उठाई और दुश्मन का गला काटने को आगे बढ़ा। तभी उसके अंदर कुछ कौंधा और उसने तलवार दूर फेंक दी। वह दुश्मन की छाती पर से भी उठ खड़ा हुआ। नीचे पड़े दुश्मन ने कहा कि अब छोड़ क्यों दिया मुझे, मार क्यों नहीं देता। यह सुनकर उसने मालूम है क्या कहा ?“

“क्या कहा ?“

“वह बोला, अभी तो मैं अपने आपको ही मार नहीं पाया, किसी दूसरे को मैं क्या मारूँगा। उसके कहने का संकेत उसे आए क्रोध की ओर था। मतलब यह है कि अभी तो मैं अपने गुस्से को ही नहीं मार सका। इतना कहकर वह जंग के मैदान से बाहर चला गया।“

आफिया ने पिता की बात तो सुनी, पर अधिक दिलचस्पी न दिखलाई। उसकी ओर देखता सुलेह बोला, “आफिया बेटी, पुण्य-दान करना कोई बुरा काम नहीं है। पर इसके लिए सारी ज़िन्दगी पड़ी है। अभी तू अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे। जब पढ़-लिखकर ज़िन्दगी में कामयाब हो गई तो जितना चाहे चैरिटी के लिए काम करते रहना।“

“अब्बू, जो काम करने को आदमी का दिल आज कर रहा है, उसके लिए वह आगे की ज़िन्दगी का इंतज़ार क्यों करे। और मैंने पहले भी कहा है कि यह कोई बुरा काम नहीं है।“

“देख आफिया, मैंने तेरी अम्मी को सारी उम्र यह काम करते हुए देखा है। मैं यह भी जानता हूँ कि ये सभी जिहादी इसी चैरिटी के रास्ते ही जिहादी बनते हैं। आख़िर में सभी के तार जिहाद से ही जाकर जुड़ते हैं। यह तो एक लपलपाती आग है। इस तरफ़ जाता हर राह बरबादी का राह है। इधर जो भी गया, भस्म हो गया। इतना ही नहीं, जो इसके करीब से गुज़रा, वह भी झुलस गया।“

“अब्बू, मैं समझती हूँ सब। आप कोई फिक्र न करो।“

“बस बेटी, कुछ ऐसा करने के बारे में सोचना भी नहीं जिससे मेरी और खानदान की इज्ज़त को बट्टा लगे।“

“ठीक है अब्बू।“ इतना कहते हुए आफिया उठकर चली गई। सुलेह उसको जाते हुए देखता रहा। उसको आफिया की बातों में से उसके अंदर की तपिश महसूस हो रही थी। यही नहीं, उसको अपने पुत्र का जब भी हूस्टन से फोन आता था तो वह भी हमेशा यही फिक्र ज़ाहिर करता था कि कहीं आफिया राह से भटक ही न जाए। क्योंकि उसके बताये अनुसार उसको पता चलता रहता था कि आफिया उन चैरिटियों के लिए काम करती है जो किसी न किसी जिहाद की मदद कर रही हैं।

शाम के वक़्त इस्मत, आफिया और फौज़िया को लेकर घूमने निकल गई। वह अपने जान-पहचान वाले घरों में आफिया को मिलवा लाई। उसका विचार था कि लोगों में उसकी इस बात के कारण धाक जम जाए कि उसकी बेटी कितनी बड़ी समाज-सेविका है और धर्म के लिए बहुत बड़ा काम कर रही है। अगले कई दिन अनेक जन-समूहों में आफिया के उसने भाषण भी करवाए। हर जगह श्रोता उससे बहुत प्रभावित हुए। वह हर भाषण के दौरान बॉस्निया में चल रहे घरेलू युद्ध में मरने वाले मुसलमानों की बात करती थी। इन जन-समूहों में वह मुसलमानों पर हो रहे अत्याचारों की वीडियो भी दिखाती थी। ये सब जन-समूह बड़े परिवारों की ओर से आयोजित करवाए जाते थे। ये वे परिवार थे जो राजनीतिक लोगों के बहुत करीब थे। इन्हीं दिनों एक दिन

इस्मत ने शैरेटन होटल में आफिया का भाषण करवाया तो एक स्त्री इस्मत को एक तरफ ले गई। उसका नाम जाहिरा खां था। असल में, वह अपने पुत्र अमजद खां के लिए वधु खोज रही थी। आफिया को देखकर उसको लगा कि इस लड़की से अच्छी बहू तो उसको मिल ही नहीं सकती। इधर उधर की बातें करते हुए उसने इस्मत को खान परिवार के घर आयोजित कार्यक्रम में आने का निमंत्रण दिया। वह बहाने से आफिया को अपने पुत्र से मिलाना चाहती थी। फिर, उस दिन जाहिरा खां के घर भाषण भी हुआ और आफिया की अमजद के साथ मुलाकात भी हुई। लेकिन बाद में अमजद ने अपनी अम्मी को बताया कि लड़की तो उसको पसंद है, पर उसका भाषण और अन्य बातें उसको व्यर्थ लगती हैं। जाहिरा खां को लगा कि चलो, अमजद लड़की को पसंद करता है, यही बहुत है। उसने अमजद से कहा कि वह और सोच ले। इस दौरान वह सद्दीकी परिवार से बात चलाएगी। आफिया की छुट्टियाँ समाप्त हो चुकी थीं। जिस दिन उसको जाना था, उस दिन एअरपोर्ट पर विदा करते समय इस्मत उसको एक तरफ़ ले गई और गले मिलते हुए बोली, "आफिया, तू जल्दी से जल्दी अपनी पढ़ाई पूरी करके वापस लौट आ। यहाँ तेरे करने के लिए बहुत कुछ है। मुझे तेरी काबलियत पर भी शक नहीं है। तू बहुत ऊँचा मुकाम हासिल करेगी।"

"अम्मी, मैं ऐसा कौन-सा मोर्चा मारूँगी।" आफिया ने माँ की बात को हँसी में टाल दिया।

"तू किसी दिन राजनीति का चमकता हुआ सितारा होगी। अगर भुट्टो परिवार की लड़की बेनज़ीर इतने बड़े ओहदे पर पहुँच सकती है तो मेरी बेटी क्यों नहीं। तू बस यूनिवर्सिटी की अपनी पढ़ाई खत्म करके यहाँ आ जा और राजनीति शुरू कर। तुझे आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। मैं तेरे अंदर का जोश देख रही हूँ। बस, तू मेरी बात पर ग़ौर कर।"

"ठीक है अम्मी।" इतना कहते हुए आफिया सामान उठाकर चल पड़ी और चैकिंग वगैरह से गुज़र कर हवाई जहाज में जा बैठी। फ्लाइट अमेरिका के लिए रवाना हुई तो आफिया के दिल में से माँ-बाप द्वारा दी गई नसीहतें भाप की तरह उड़ गईं। दूसरे दिन वह अपनी यूनिवर्सिटी के हॉस्टल में पहुँच गई।

इस बार जब वह यहाँ पहुँची तो उसके अंदर का जोश ठाठें मार रहा था। इसका बड़ा कारण था कि पाकिस्तान में जहाँ कहीं भी उसने लेक्चर दिया था, हर जगह उसकी

भरपूर तारीफ़ हुई थी। हरेक ने उसको इस्लाम की सच्ची बेटी कहकर सराहा था। इसके अलावा, वह खुद भी सोचने लगी थी कि उसको जिहाद में आगे बढ़कर काम करना चाहिए। इन सभी बातों ने उसके अंदर एक नई शक्ति भर दी।

उसने अमेरिका पहुँचते ही जोशोखरोश के साथ काम प्रारंभ कर दिया। वह एम.एम.ए. की मीटिंगें नियमित रूप से करवाने लगी। चैरिटी के काम में दिलचस्पी बढ़ा दी। एक दिन उसको सुहेल मिलने आया। बातें करते हुए वे दोनों पॉर्क की ओर निकल गए।

"कैसी रहीं तेरी छुट्टियाँ ?" सुहेल ने बात छेड़ी।

"बहुत बढ़िया।"

"तेरे अब्बू का क्या हाल है अब ?"

"ठीक है। बस, दिल का रोग होने के कारण कमज़ोरी बहुत आ गई है।"

"तेरी अम्मी के चैरिटी के काम कैसे चलते हैं ?"

"अम्मी के तो ठीक चल रहे हैं, पर यहाँ के मुझे सही नहीं लगते।"

"वो कैसे ?"

"मेरे जाने के बाद सब कुछ सुस्त-सा हो गया लगता है।"

"तू आ गई है, सब कुछ ठीक हो जाएगा। हमें लोगों को आकर्षित करने के लिए अच्छे वक्ताओं की ज़रूरत है।"

“बुलाओ फिर, देर किस बात की है।“

“मैंने इंतज़ाम किया है। इसबार कैनेडा से कैथरीन बल्क को बुलाया है। तुझे मालूम ही है कि वह बोलती है तो आग बरसती है।“

“हाँ, मैंने उसकी किताब ‘सोशियल जस्टिस इन अमेरिका’ पढ़ी है। उसके ख़याल बहुत ऊँचे हैं। पर एक बात है।“

“वह क्या ?“

“उसको हम आम वक्ताओं के सामने नहीं बुला सकते। उसके विचार आम लोगों की समझ में नहीं आने वाले। बल्कि कई बार तो वे उसकी बातों को उलट ले जाते हैं।“

“फिर इसका हल क्या है ?“

“मैंने यह सोचा है कि हम एक अलग संगठन बना लें। जो बिल्कुल गुप्त हो। उसकी बैठकों में जिहाद को पूरी तरह समर्पित लोग ही आएँ।“

“यह बिल्कुल ठीक है। साथ ही इस बात से मुझे याद आया कि बॉस्निया में जिहादियों की कमी पड़ती जा रही है। हमें वहाँ लड़ने के लिए जिहादी चाहिएँ।“

“यह बात मैंने पहले ही सोच ली थी। इसके लिए मैंने अपनी गुप्त ई-मेल में मैसिज़ भी डाल दिया है कि हमें बॉस्निया के पाक जिहाद के लिए शहीदों की ज़रूरत है। इसके बहुत सारे जवाब भी आए हैं।“

“यह तो तुमने बहुत अच्छा किया। तुम्हारी और क्या योजनाएँ हैं ?“

“मैं चाहती हूँ कि चिकागो में चैरिटी के लिए काम कर रहे ग्लोबल रिलीफ़ फाउंडेशन और बैनेवोलैंस इंटरनेशनल फाउंडेशन की यहाँ भी ब्रांचें खोली जाएँ। इस तरह चैरिटी के अवसर बढ़ जाएँगे और बॉस्निया में चल रहे जिहाद के लिए धन की कमी भी नहीं रहेगी। तुझे पता ही होगा कि वहाँ हथियारों के लिए पैसा चाहिए।“

“यह तो ठीक है। दोनों ही चैरिटी यहीं शुरू कर लेते हैं। कुछ और ?“

“मैंने लड़कियों के ग्रुप को हथियार चलाने की ट्रेनिंग के मंतव्य से एक क्लब ज्वाइन करवाया है। खुद भी वहाँ बंदूक आदि चलाने का प्रशिक्षण ले रही हूँ। इसके अलावा...।“ आफिया ने बात बीच में ही छोड़ ऊपर आकाश की ओर देखा। बादल बरसने लगे थे। वह दौड़कर समीप की एक इमारत के छज्जे के नीचे जा खड़े हुए।

“इसके अलावा, मैं यहाँ की एक...।“ आफिया फिर से बोलने लगी ही थी कि सुहेल ने मुँह पर उंगली रखते हुए उसको चुप रहने का इशारा किया। आफिया ने चुप होकर अपने आसपास देखा। उसको याद आया कि यहाँ हरेक बिल्डिंग के किसी न किसी कोने में कैमरे लगे होते हैं जो बातों को भी रिकार्ड करते हैं। उसने दूसरी साधारण-सी बात शुरू की। करीब पंद्रह मिनट बाद बारिश बंद हो गई तो वे बाहर निकलकर क्रॉसवाक पर चलने लगे। आसपास झांकते हुए आफिया ने बीच में छोड़ी पहले वाली बात पुनः शुरू की।

“हाँ, मैं कह रही थी कि मैंने यहाँ की एक ऐसी मस्जिद के इमाम के साथ राबता कायम किया है जो यहाँ की जेलों में मुसलमान क़ैदियों को हर हफ़्ते धार्मिक शिक्षा देने जाता है। मैं उसके माध्यम से बहुत सारी अंग्रेजी में तर्ज़ुमा हुई किताबों को मुसलमान कैदियों तक पहुँचा रही हूँ। इस तरह उनके अंदर भी जिहाद की चिंगारी सुलगेगी...।“ बात करते करते आफिया चुप हो गई, क्योंकि कोई करीब से गुज़र रहा था। थोड़ा रुककर वह फिर बोलने लगी, “इससे अलावा, मैं किताबों की पुरानी दुकानों से अमेरिकी मिलेट्री मैनुअल खरीद रही हूँ ताकि उन्हें अपने मुजाहिदीनों को भेजा जा सके। उन्हें अमेरिकियों के खिलाफ़ लड़ने के समय इनसे मदद मिल सके।“

“आफिया, तू तो बहुत आगे की सोचती है। जो कुछ तू कर रही हो वो तो साधारण व्यक्ति सोच भी नहीं सकता। तेरी इस अमेरिकी मिलेट्री मैनुअल वाली बात ने मुझे

बहुत प्रभावित किया है। पर ज़रा संभालकर चलना क्योंकि अगर किसी को थोड़ा-सा भी शक हो गया तो काम खराब हो जाएगा। तेरा यह काम बगावत माना जाएगा। तू बस...।“ तभी, सुहेल का फोन बजने लगा। फोन ऑन करके वह बात सुनने लगा। कई मिनट बात होने के बाद वह आफिया की ओर आते हुए उदास स्वर में बोला, “असल में, किसी घर के भेदी ने ही सारा काम बिगाड़ा था।“

“क्या !“

“आज फिर अलकीफा के कई मेंबरों की गिरफ्तारियाँ हुई हैं। युनाइटिड नेशन्ज़ बिल्डिंग, बड़े पुल और कई सुरंगों को नुकसान पहुँचाने के आरोप लगाकर इन मेंबरों को पकड़ा गया है। असल में, भीतरी सूत्रों से पता चला है कि जिस दिन शेख उमर अब्दुल रहमान ने ढाई लाख अमेरिकियों को मारने का फतवा जारी किया था, उस दिन वहाँ कोई ऐसा मुसलमान भी था जो कि एफ.बी.आई का मुख्बिर था। उसी के कारण सारी बात का भेद खुला और वही आगे चलकर आज वाली गिरफ्तारियों का कारण बना।“

“ऐसे गद्दारों का क्या किया जाए ?“ आफिया की भवें सिकुड़ गईं।

“इनका हल वही है जो एक दुश्मन का है। पर यहाँ यह काम बहुत कठिन है।“

“अच्छा मैं चलता हूँ। जब तक थोड़ी शांति नहीं हो जाती, तब तक बचकर रहने की ज़रूरत है।“

सुहेल चला गया तो आफिया हॉस्टल की ओर चल पड़ी।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –7

(7)

वर्ष 1994 को आरंभ हुए तीन सप्ताह हो चुके थे। उस दिन रातभर बर्फ़बारी होती रही थी। आफिया गहरी नींद सोई हुई थी जब उसके सैल फोन की घंटी बजी। उसने अलसाते हुए 'हैलो' कहा। दूसरी ओर मार्लेन बोल रही थी। उसने इतना कहकर फोन काट दिया कि वह उसको एक घंटे बाद लेने आ रही है। वह तैयार रहे। आफिया ने धीरे-धीरे बिस्तर छोड़ा और उठकर कमरे में से बाहर आ गई। उसने खिड़की का पर्दा उठाकर बाहर देखा। सूरज की तेज किरणों ने उसकी आँखें चुंधिया दीं। रात यद्यपि बर्फ़ गिरती रही थी, पर इस समय सूरज निकला हुआ था। स्नो पर पड़ती धूप आँखों में चुभ रही थी। वह पर्दा गिराकर वापस कमरे में आ गई। फिर तैयार होने लगी। तैयार होकर उसने अपना बैग उठाया और लम्बा कोट पहनकर नीचे आ गई। उसके नीचे पहुँचने के करीब दो मिनट बाद ही मार्लेन आ गई। आफिया दरवाज़ा खोलकर कार में बैठी तो मार्लेन ने कार आगे बढ़ा ली। बीस मिनट में वे उसके अपार्टमेंट में पहुँच गईं। दरवाज़ा खोलते ही आफिया ने देखा कि सामने सुलेमान अहमर बैठा था। दोनों ने एक दूसरे को आदाब कहा। वे पहले मिल चुके थे। सुलेमान अहमर, बैनेवोलैंस इंटरनेशनल का डायरेक्टर था। उसने पहली मुलाकात में ही आफिया को बता दिया था कि वह जिहाद की ओर कैसे अग्रसर हुआ। उसने बताया था कि वह ओर कुछ अन्य दोस्त जो कि पूरे नबरास्का यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी थे, टूर लगाने क्रोशिया गए थे। वहाँ उनको जिहादियों ने बंदी बना लिया था। कुछ दिन उन्हें कैद में रखकर छोड़ दिया गया, परंतु जो कुछ उसने इस दौरान जिहाद के बारे में सुना, उसने उसके दिल में जिहाद के प्रति हमदर्दीभरा आकर्षण पैदा कर दिया। बाहर आकर उसने और खोजबीन की तो उसको लगा कि उसका असली काम जिहाद ही है। फिर वह छोटे सर्किलों में विचरता हुआ इस संगठन के डायरेक्टर के पद पर आ पहुँचा। आज वह यहाँ बैनेवोलैंस की ब्रांच स्थापित करने आया था। सारा दिन वे मीटिंग के विषय में विचार-विमर्श करते रहे। यह एक छोटी-मोटी मीटिंग नहीं थी। बैनेवोलैंस बहुत बड़ा संगठन था। जिसका काम हालांकि चैरिटी ही बताया जाता था, परंतु असल में यह अलकायदा के साथ जुड़ा हुआ था। अलकायदा के लिए बहुत सारा फंड इसी संगठन के जरिये इकट्ठा होता था। शाम के वक़्त मीटिंग हुई तो आफिया हैरान रह गई। इतना जोश उसने किसी भी मीटिंग में नहीं देखा था। इसके अतिरिक्त, यहाँ बहुत बड़े-बड़े

जिहादी पहुँचे हुए थे। जिनके इससे पहले आफिया ने सिर्फ़ नाम ही सुने थे। सुलेमान ने बहुत ही प्रभावशाली भाषण दिया। यहाँ आफिया को भी बोलने का अवसर मिला। उसने इस अवसर का इतना अच्छा इस्तेमाल किया कि सभी हैरान रह गए। उसका लैक्चर इतना प्रभावशाली था कि सदस्यों के मुँह बंद हो गए। हरेक को लगा कि इतनी जोशिली लड़की जिहाद में पहले कभी नहीं देखी। उसने सभी की ओर देखते हुए कहा कि किधर गया मुस्लिम मर्द आज। किधर गया उसका स्वाभिमान कि बॉस्निया में हमारी बेटियों-बहनों का कुछ नहीं बचा और उसके कानों पर जूं नहीं रेंगी। उसने कहा कि मैं स्टेज पर क्यों खड़ी हूँ। यहाँ किसी मर्द को होना चाहिए। उसकी बातों का इतना असर हुआ कि कई युवकों ने जिहाद के लिए अपने नाम लिखवा दिए।

वापस लौटते हुए सुलेमान ने बात शुरू की, “आफिया इस संगठन का प्रधान मुझे नहीं, बल्कि तुझे होना चाहिए, पर...।“ आगे कुछ कहते कहते वह रुक गया। वह कहना चाह रहा था कि इस्लाम के अनुसार मर्द संगठन का मुखिया मर्द ही हो सकता है। उसको चुप हुआ देख आफिया बोली, “मैं तुम्हारी बात समझ गई हूँ। पर मैं इस बात के हक़ में हूँ कि इस्लाम ने औरत को जो भी रुतबा दे रखा है, वह सही है। मैं जिस ओहदे पर काम कर रही हूँ, वह ठीक है। बस, काम चलते रहना चाहिए।“

“आफिया, तूने कामीला की बात सुनी है।“ सुलेमान ने बात बदली।

“कामीला कौन ?“

“यह नई घटित घटना है, इसलिए तुझे पता नहीं होगा। कामीला एक जिहादी लड़की है जो कि इंग्लैंड में जन्मी-पली थी। वह अपने बलबूते पर ही बॉस्निया चली गई और जिहादी दलों में शामिल हो गई। लड़ाई में उसने काफ़िरों के छक्के छुड़ा दिए। उसकी बहादुरी की कहानियों से इंटरनेट भरा पड़ा है।“

“अच्छा ! औरत होकर उसने इतनी बहादुरी भरे कारनामे किए हैं, यह तो बहुत ही अहम बात है।“

आफिया उसकी बात सुनकर अपने आप में लीन हो गई। ख़याल में खोई आफिया कामीला की जगह स्वयं को देख रही थी। उसको लग रहा था कि बॉस्निया में कामीला नहीं, बल्कि वह गई हो। दुश्मनों के छक्के कामीला ने नहीं अपितु उसने छुड़ाये हों। उसके विचारों की लड़ी टूट गई जब सुलेमान की आवाज़ उसके कानों में पड़ी, "पर...।"

"पर क्या ?" आफिया ने सोच के घेरे से बाहर निकलकर उसकी ओर देखा।

"उसके बारे में बड़े मज़हबी लीडर इस बात से नाराज़ हैं कि वह एक औरत होकर अकेली ही जिहाद में शामिल हो गई है। मेरा मतलब ऐसे समय में उसके साथ उसका महरम होना चाहिए। इस्लाम के मुताबिक अगर कोई औरत जिहाद में हिस्सा लेती है तो वह घरवाले के बग़ैर यह काम नहीं कर सकती।""यह बात तो बिल्कुल ठीक है।"

"मेरा ख़याल है कि तुमने जिहादी वेबसाइट पर आज की ख़बर नहीं पढ़ी।" अब तक शांत बैठी उनकी बातें सुन रही मार्लेन बोली।

"क्यों, क्या ख़बर है आज की ?"

"उस लड़की ने सूडान के किसी जिहादी के साथ निकाह कर लिया है। अब दोनों पति-पत्नी मुहाज़ पर लड़ रहे हैं।"

"ये हैं फिर सच्चे जिहादी जो सही ढंग से इस्लाम का पालन कर रहे हैं। काश कि...।" आफिया बात बीच में ही छोड़ती हुई चुप हो गई। अब उसको ख़याल आया कि काश वह भी घरवाले के साथ जिहाद लड़ रही होती। कुछ आगे चलकर मार्लेन और सुलेमान उसे उतारकर आगे बढ़ गए। आफिया के ख़यालों में कामीला ही घूम रही थी। इतना ही नहीं, उसको रात में नींद भी नहीं आई। सारी रात वह किसी ख़याल से गुत्थम-गुत्था होती रही कि काश, वह किसी ऐसे व्यक्ति के साथ शादी करवाये जो कि जिहाद लड़ रहा हो या आवश्यकता पड़ने पर जिहाद में जाए। दिन चढ़ने तक उसने अपने आप से एक दृढ़ फैसला कर लिया कि वह ऐसे ही किसी लड़के के साथ विवाह करवाएगी जो उसकी इस सोच को पूरा करता हो।

आफिया ने युनिवर्सिटी की पढ़ाई पूरी कर ली थी। उसने बहुत अच्छे अंकों से पढ़ाई खत्म की थी। वर्ष 1995 के जनवरी महीने उसके माता-पिता उसकी ग्रेज्युएशन पर आए। ग्रेज्युएशन की पार्टी के बाद माँ-बाप के साथ वह अपार्टमेंट में आई तो उसकी माँ ने बात प्रारंभ की।

“आफिया, हम तेरी शादी के बारे में सोच रहे हैं।“

इस्मत की यह बात सुनकर आफिया की खुशी का ठिकाना न रहा। क्योंकि जबसे उसके माँ-बाप आए थे, तब से वह अवसर खोज रही थी कि किसी वक़्त वह माँ से बात करे और किसी जिहादी के साथ विवाह करवाने की अपनी ख्वाहिश बताए। अब उसके मन की हो गई जब माँ ने खुद ही बात छेड़ ली।

“अम्मी, उससे पहले मैं कुछ कहना चाहती हूँ।“

“हाँ, बोल।“

“अम्मी, मेरी दिली इच्छा है कि मैं किसी ऐसे लड़के से विवाह करवाऊँ जो कहीं जिहाद लड़ रहा हो।“

“आफिया, तेरा दिमाग तो नहीं खराब हो गया। मैंने तुझे क्या कहकर भेजा था ?“ इस्मत गुस्से में उसकी ओर लपकी। भवें सिकोड़ती वह कुछ पल आफिया की तरफ देखती रही और फिर सख़्त आवाज़ में दुबारा बोलने लगी, “मैं तुझे कई बार कह चुकी हूँ कि यह काम चैरिटी तक तो ठीक है, पर उससे आगे नहीं। तेरा असल मैदान तो राजनीति है। पाकिस्तान की राजनीति तुझे पुकार रही है। तू है कि पता नहीं क्या उल्टा-सीधा सोचती रहती है। अगर यह बात तेरे अब्बू ने सुन ली तो क़हर हो जाएगा।“

“पर अम्मी, मेरा मज़हब मुझे इजाज़त देता है कि अगर मुझे अच्छा न लगे तो मैं निकाह से इन्कार कर सकती हूँ।“

“पर इस में अच्छा या बुरा लगने वाली क्या बात है। मैंने तो तुझे अभी यह भी नहीं बताया कि तेरी मंगनी किसके साथ करने की सोच रहे हैं हम। साथ ही, मज़हब यह भी तो कहता है कि बच्चे को माँ-बाप की बात माननी चाहिए। तू पहले पूरी बात सुन ले।“

“हाँ, बताओ।“ आफिया ने मन में सोचा कि यहाँ सीधे ढंग से बात करने से बात नहीं बनने वाली। वह माँ-बाप की बात का जवाब नहीं दे सकेगी। उसने किसी दूसरे ढंग से बात को अपने हक़ में रखने का फैसला कर लिया।

“तुझे याद होगा कि जब पिछली बार तू पाकिस्तान आई थी, तो वहाँ जाहिरा खां नाम की एक बेगम साहिबा ने तेरा भाषण सुना था। बाद में उसका बेटा अमजद तुझे घर तक छोड़ने भी आया था। उस लड़के के साथ तेरी मंगनी की बात चल रही है। वह इस साल आगा खां युनिवर्सिटी से डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी कर रहा है। फिर, वह एनेस्थीसियोलॉजी की उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका आ रहा है। हमारे मुताबिक यह लड़का हर तरह से तेरे योग्य है। तू अब सोचकर अपनी राय बता।“

माँ की बात सुनकर आफिया चुप हो गई और मन में सोचने लगी, ‘सीधे ढंग से तो माँ जिहाद वाली बात नहीं मानेंगी। पर कई बातों से यह लड़का मेरा अच्छा जीवन-साथी हो सकता है। वह यहाँ अमेरिका में होगा तो मैं उसको जिहाद में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित कर लूँगी। इस प्रकार मेरा मनोरथ भी पूरा हो जाएगा और घरवालों का मान भी रह जाएगा। मैं तरीके के साथ माँ को कहकर उस लड़के को जिहाद के लिए हामी भरवा लेती हूँ।’ मन में निर्णय करके आफिया माँ से बोली, “पर अम्मी, मेरा यह अधिकार है कि मैं अपने होने वाले घरवाले से पूछूँ कि क्या ज़रूरत पड़ने पर वह जिहाद में हिस्सा लेगा जो कि हर मुसलमान का पहला कर्तव्य है।“

इस्मत को उसकी बात कुछ-कुछ ठीक लगी। उसने सोचा कि इस तरह पूछने में क्या हर्ज़ है। इस प्रकार तो हर एक मुसलमान सोचता है कि अगर ज़रूरत होगी तो वह जिहाद में हिस्सा अवश्य लेगा। निकाह वग़ैरह के समय यह एक किस्म की रस्म ही समझी जाती है। उसने इस बात के विषय में आफिया को ‘हाँ’ कह दी और साथ ही, पाकिस्तान में अपने परिवार को खान परिवार तक यह बात पहुँचाने का संदेश भिजवा दिया। उधर खान परिवार वाले संदेश मिलने पर सद्दीकी परिवार के मज़हबी रहनुमा मुफ्ती साहिब से मिलने गए। सारी बातचीत करने के बाद मुफ्ती साहिब ने

अमजद के साथ अलग ढंग से बात करते हुए पूछा, “बेटा अगर ज़रूरत पड़े तो क्या तू जिहाद में हिस्सा लेगा ?“

“क्या !“ अमजद हैरान हुआ। उसने सोचा कि वह एक डॉक्टर है, न कि कोई फौजी। फिर उसके मन में ख़याल आया कि एक मज़हबी रहनुमा होने के नाते मुफ्ती साहिब द्वारा इस तरह पूछा जाना स्वाभाविक है। उसने भी इसको एक रस्म-सी समझते हुए कहा, “जी, इंशा अल्लाह अगर खुदा ने चाहा तो ऐसा ही होगा।“ मीटिंग खत्म हो गई। यह बात अमेरिका बैठे सद्दीकी जोड़े की मार्फ़त आफिया तक पहुँच गई कि होने वाले दूल्हे ने जिहाद में हिस्सा लेने की सहमति प्रकट की है। उसने खुशी खुशी रिश्ते के लिए ‘हाँ’ कर दी। सद्दीकी परिवार के पाकिस्तान लौटने के बाद अमजद और आफिया की मंगनी हो गई। बाद में यह निकाह फोन पर ही हुआ।

इस बीच 1993 में बेनज़ीर भुट्टो दूसरी बार प्रधानमंत्री चुनी जा चुकी थी। सबको पता था कि वह अमेरिका समर्थक है। अमेरिकी सरकार ने पहली बात जो उससे कही, वह दुनिया के सबसे ज्यादा वांटेड आतंकवादी रम्जी युसफ को पकड़ने वाली बात थी। भुट्टो ने इसके लिए पूरी मदद देने का भरोसा दिया। इसके बाद कई बार छापे मारे गए, परन्तु रम्जी युसफ हर बार बच निकलता था। एक दिन भुट्टो ने अपने ख़ास अफ़सर से बात की तो उसने अपना विचार बताते हुए कहा कि ऐसा लगता है कि आई.एस.आई. में रम्जी युसफ के ख़ास सैल हैं। वे हर बार पुलिस रेड होने से पहले ही उसको निकाल देते हैं। फिर, भुट्टो ने एक ऐसी टॉस्क फोर्स बनाई जिसकी वह स्वयं इंचार्ज़ थी। इस टॉस्क फोर्स में सभी उसके विश्वसनीय अफ़सर थे। इसका परिणाम यह हुआ कि अगले ही महीने रम्जी युसफ पकड़ा गया। उसको गिरफ्तार करते ही अमेरिकी सरकार उसको अमेरिका ले गई। इससे बेनज़ीर भुट्टो पर बहुत तोहमतें लगीं कि उसने मुसलमान होकर एक मुसलमान को काफ़िरों के हवाले कर दिया है। परन्तु उसने इसकी ज़रा भी परवाह नहीं की। बल्कि इसके पश्चात वह आतंकवादियों के पीछे हाथ धोकर पड़ गई। सबसे पहला काम उसने यह किया कि आई.एस.आई के मुखिया और आतंकवादियों के कट्टर समर्थक जावेद नासिर को पद से हटा दिया और उसके स्थान पर अपना ख़ास व्यक्ति बिठा दिया। इस क्षेत्र में वह और भी बड़े काम कर रही थी, पर इस दौरान उसकी सरकार भ्रष्टाचारों के चक्कर में फंस गई और अपना कार्यकाल भी पूरा न कर सकी। अगले चुनाव में भुट्टो की पार्टी हार गई और भुट्टो स्थाई तौर पर देश छोड़कर इंग्लैंड चली गई।

ग्रेज्युएशन होने के बाद भी आफिया ने एम.आई.टी. में अपनी कम्प्यूटर की पार्ट टाइम नौकरी जारी रखी थी। आजकल उसको महसूस होने लगा था, मानो उसका हर वक़्त पीछा किया जाता हो। उसने इस विषय में सुहेल से बात की तो सुहेल ने बताया कि एफ.बी.आई. केयर ब्रदर्ज़ संगठन के पीछे पड़ा हुआ है, इसलिए बचकर रहा जाए। केयर ब्रदर्ज़, एम.एस.ए. और अन्य संगठन सहमे-से रहने लगे थे। हर किसी को लगता था कि एफ.बी.आई. उनके पीछे घूम रही है। फिर तभी 19 अप्रैल 1995 को आक्लोहामा सिटी की मूरा नामक फैडरिल बिल्डिंग में भयानक बम धमाका हो गया जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए। सारा अमेरिका दहल उठा। एफ.बी.आई. ने ध्यान से देखा तो पता चला कि इस बम धमाके के सारे तौर-तरीके उस बम धमाके से मिलते-जुलते थे जो रम्जी युसफ ने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के नॉर्थ टॉवर के पार्किंग लॉट में किया था। एफ.बी.आई. सभी मुस्लिम संगठनों के पीछे हाथ धोकर पड़ गई। ख़ास तौर पर केयर ब्रदर्ज़ के पीछे। अगले दिन आफिया काम पर गई तो उसको सहकर्मी ने बताया कि कुछ देर पहले ही उसको एफ.बी.आई वाले खोजते हुए आए थे। आफिया तुरन्त वापस लौट आई और बाहर से ही चिकागो चली गई। उसकी बड़ी बहन फौजिया कुछ महीने पहले ही पढ़ने के लिए चिकागो आई थी और वहाँ एक अपार्टमेंट में रहती थी। आफिया उसके पास जा ठहरी। वहीं उसको एक दिन सुहेल का फोन आया। आवाज़ पहचानते हुए वह बोला, “आफिया, आक्लोहामा सिटी बम धमाके का दोषी पकड़ा जा चुका है।“

“अच्छा ! कौन है वो ?“

“वह टिम्थी मकबेथ नाम का कोई अमेरिकी है।“

“अच्छा ! अमेरिका में भी जिहादी पैदा होने लग पड़े।“ आफिया हँसी।

“तू यह बात छोड़, पर उसके पकड़े जाने से हम लोगों को बहुत फायदा हुआ है।“

“वह कैसे ?“

“क्योंकि अब तक अमेरिकी सरकार समझती थी कि यह धमाका किसी इस्लामिक जिहादी ने किया है। इस कारण हमारे सभी संगठनों के पीछे हाथ धोकर पड़ गई थी। पर अब सब कुछ बदल गया है। अपनी ओर से वे पीछे हट गए हैं। तू चाहे तो वापस आ सकती है। वैसे तेरी मर्ज़ी है, पर जो भी तेरा प्रोग्राम बने, मुझे बता देना।“

इसके बाद, सुहेल ने फोन काट दिया और आफिया के सिर पर से भी बोझ उतर गया।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –8

(8)

अक्तूबर 1995 में अमजद अमेरिका पहुँचा। उसी नई-नवेली दुल्हन आफिया चिकागो एअरपोर्ट पर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वहाँ से वह अमजद को लेकर फौज़िया के अपार्टमेंट में आ गई। फिर, वे होटल चले गए। लगभग दो हफ़्तों का वक़्त उन्होंने होटल में गुज़ारा। अगले करीब दो महीने फौज़िया के घर रहे। फिर वो बॉस्टन, मैसाचूसस चले आए। यहाँ आकर उन्होंने किसी बड़ी इमारत के निचले हिस्से का छोटा-सा अपार्टमेंट ले लिया और अपनी ज़िन्दगी शुरू कर दी। अमजद को यह छोटा-सा अपार्टमेंट बिल्कुल भी नहीं भाया। वह एक बड़े परिवार और अच्छे खाते-पीते घर से आया था। पाकिस्तान में वे तीन भाई, माँ-बाप के साथ भरे-पूरे परिवार में रहते थे। यहाँ यह गूठ-सी जगह उसको अच्छी नहीं लगती थी। समय पाकर उन्होंने शहर से बाहर छोटे-से कस्बे मालडेन में बड़े हाई-वे 95 से थोड़ा आगे हटकर काफी बड़ा और खुला अपार्टमेंट ले लिया। यहाँ आकर अमजद बहुत खुश हुआ। उसकी ब्याहता ज़िन्दगी बहुत बढ़िया ढंग से शुरू हुई थी। वह आफिया को जी-जान से चाहने लगा था और आफिया भी अमजद को गहरी मुहब्बत करने लगी थी। दोनों को लगता था कि वे एक-दूजे के लिए ही बने हैं। इन दिनों दोनों के मध्य प्यार-मुहब्बत की बातें ही खत्म होने का नाम न लेती थीं। अमजद को लगता था कि यह भोली भाली-सी लड़की कभी गुस्सा तो होती ही नहीं होगी। पर फिर एक दिन बातें करते हुए आफिया ने

अचानक कुछ ऐसा कहा कि अमजद के मुँह में कड़वाहट घुल गई। वह बोली, “अमजद, मुझे पिछली गर्मियों में एफ.बी.आई. खोजती रही थी।”

“किस बात के सिलसिले में ?“ वह हैरान होकर आफिया की ओर देखने लगा।

“यह तो मालूम नहीं, पर मैं एक बात बता देती हूँ कि अगर ऐसा कभी दुबारा हुआ तो मैं अमेरिका में नहीं रहूँगी।”

“लेकिन पता तो चले कि बात क्या है। कोई तो वजह होगी कि एफ.बी.आई. तेरे पीछे आई। तू जो कह रही है कि अगर वे दुबारा आए तो तू यहाँ नहीं रहेगी, तुझे थोड़ा-बहुत तो शक होगा ही कि वे किसी बात पर तुझे तलाश रहे थे।”

“मैंने कह दिया न कि मुझे नहीं मालूम।” इतना कहकर आफिया उठकर चल दी। अमजद भौंचक-सा उसकी ओर देखता रहा। पहली बार वह आफिया को गुस्से में देख रहा था। दो दिन वह इस तरह चुप चुप-सी रही। कुछ दिनों के बाद वह फिर घुलमिल गई। अमजद भी यह बात भूल गया। परंतु अगली बार उसने आफिया का और भी अधिक भयानक रूप देखा। असल में, इससे पहले अमजद दाढ़ी बढ़ाकर और ट्रिम करके रखता था। पर उसने पाकिस्तान में रहते हुए सुन रखा था कि अमेरिका में पाकिस्तानी चेहरे-मोहरे वाले व्यक्ति को अलग ही निगाह से देखा जाता है। वैसे वह रोजे भी रखता था और नमाज भी पढ़ लेता था, पर वह कट्टर नहीं था। इसलिए उसने अपनी सुविधा के लिए एक दिन शेव करवा ली। वह घर आया तो पहले तो आफिया उसको पहचान ही न सकी। फिर एकदम भड़ककर बोली, “तुम्हें शर्म नहीं आई दाढ़ी कटवाते हुए ?“

“क्यों, इसमें शर्म वाली कौन सी बात है। मैंने क्या गुनाह कर दिया ?“

“एक मुसलमान होकर तुम सफाचट करवाए घूमते हो और अभी पूछते हो कि क्या गुनाह कर दिया।”

“मैंने एक मज़हबी नेता की सलाह ली थी। उसका कहना है कि किसी अच्छे काम के लिए तुम्हें दाढ़ी कटवानी पड़े तो तुम कटवा सकते हो। जब मौका मिले तो फिर रख लो।”

“तुम ऐसा कौन-सा नेक काम करने लग पड़े कि तुम्हारे दाढ़ी रखने से वो काम नहीं हो सकता था।”

“आफिया, मैंने पढ़ाई शुरू कर ली है। हर रोज़ कालेज जाता हूँ। मैं नहीं चाहता कि वहाँ लोग मुझे दूसरी नज़रों से देखें।”

“अच्छा ! तुम्हें मुसलमान होने के कारण शर्म महसूस होती है।”

“यह बात नहीं है। तुम मेरी बात को समझने की कोशिश करो।”

बहस आगे ही आगे बढ़ती गई। आफिया कोई बात सुनने की बजाय आग-बबूला होती गई। आख़िर, वह इतने गुस्से में आ गई कि करीब होकर वह अमजद की छाती पर मुक्के मारती हुई चीखने-चिल्लाने लगी। पहले तो अमजद को बहुत गुस्सा आया, पर जब उसने देखा कि आफिया अपने छोटे छोटे हाथों से उसको बच्चों की तरह पीट रही है तो मन ही मन उसको हँसी आ गई। उसने विरोध करना छोड़ दिया। आख़िर, आफिया मुक्के मारते मारते हाँफ गई। उसने पलभर अमजद की तरफ देखा और फिर उसकी छाती से लगकर उसको अपनी बांहों में भरकर ज़ोर-ज़ोर से रोने गी। अमजद ने उसको छाती से कस लिया। उनके बीच की सारी कड़वाहट चली गई। इसके साथ ही अमजद को उसके रूठने और इस तरह खुद मान जाने का निराला ढंग बहुत ही प्यारा लगा। ज़िन्दगी अपने ढंग से फिर चलने लगी। मगर आफिया ने अमजद से यह वायदा ले लिया कि वह शीघ्र ही फिर से दाढ़ी बढ़ा लेगा। कुछ ही सप्ताह बीते थे कि एक दिन वह नई स्कीम लेकर घर आई।

“अमजद, मैं और सुलेमान अहमर ने एक बहुत बढ़िया काम सोचा है।”

“यह सुलेमान कौन है ?“

“यह बैनेवोलैंस इंटरनेशनल संगठन का डायरेक्टर है। तुम्हें पता है कि मैं चैरिटी के काम के सिलसिले में ऐसे लोगों से मिलती रहती हूँ।”

“क्या है तुम्हारा यह नया ख़याल ?“ अमजद ने सोचा कि आफिया उसको फिर से दाढ़ी बढ़ाने या कोई ऐसा ही काम कहेगी।

“क्यों न हम दोनों बॉस्निया चलें ?“

“बॉस्निया ? वह क्यों ?“

“मैं वहाँ जाकर अनाथों के लिए स्कूल खोल लूँगी और तुम कोई अस्पताल चला लेना। कुछ देर बाद हम सचमुच के जिहाद में शामिल हो जाएँगे।”

उसकी बात सुनकर अमजद के पैरों तले से धरती खिसक गई। उसको कोई भी बात न सूझी। उसके तो यह सुनकर ही होश गुम हो गए कि उसकी घरवाली जिहाद के प्रति इतनी समर्पित है। वह कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, “आफिया, मैं यहाँ पढ़ने के लिए आया हूँ, न कि लड़ने। मेरी ज़िन्दगी का लक्ष्य पढ़ाई करके मेडिकल के क्षेत्र में प्रैक्टिस करने का है। मैं ऐसे कामों में हिस्सा लेने वाला इन्सान नहीं हूँ।”

“पर विवाह से पहले तुमने जिहाद में शामिल होने की हामी क्यों भरी थी फिर ?“

उसकी बात सुनकर अमजद को धक्का लगा। उसको वह वक़्त स्मरण हो आया जब मुफ्ती साहिब ने उससे पूछा था कि ज़रूरत पड़ने पर क्या वह जिहाद में हिस्सा लेगा और उसने इसे विवाह से पहले की एक मज़हबी रस्म समझकर हाँ कर दी थी। मगर आज उसको लगा कि मुफ्ती साहिब ने यह बात आफिया के कहने पर ही उससे पूछी होगी।

“तुम बोलते क्यों नहीं ? क्या सांप सूंघ गया तुम्हें ?“ आफिया गरम होने लगी तो अमजद चुपचाप घर से बाहर निकल गया। अगले दो दिन उनके बीच तनाव जारी रहा। लेकिन तीसरे दिन आफिया को पता चला कि वह गर्भवती है। इस बात ने उनके बीच सारी कड़वाहटें दूर कर दीं। आफिया बॉस्निया जाने वाली बात भूलभुला गई। अमजद ने आफिया के गर्भवती होने के बारे में अपने और उसके माता-पिता के घर में जब बताया तो सब तरफ खुशी फैल गई। इसी दौरान आफिया की माँ ने अमजद के साथ आफिया के भविष्य को लेकर बात शुरू की, “अमजद, आफिया कह रही है कि अब उसको आगे पढ़ना है ?“

“क्या ! इस हालत में ? अम्मी, अब तो उसको आराम करना चाहिए।”

“अमजद, तुम नहीं जानते इस लड़की में कितनी एनर्जी भरी हुई है। तुम इसकी जिद्द भी जानते हो। अगर इसने तय कर लिया है कि इसको अब पढ़ाई शुरू करनी है तो यह शुरू करके ही रहेगी।”

“मैं तो चाहता था कि बच्चे के जन्म तक इसको आराम करना चाहिए।”

“नहीं अमजद, यह जो करना चाहती है, करने दे। तुम देखना, यह इन हालात में भी क्लास में टॉप करेगी। मगर तू एक बात ज़रूर कर।”

“हाँ, बताओ।”

“मैं चाहती हूँ कि यह डॉक्टर बने। कम से कम इसके नाम के साथ डॉक्टर अवश्य लगे।”

“पर इसका प्रारंभिक क्षेत्र तो दूसरा है। फिर इस स्टेज पर आकर...।”

“तू इसको कह कि यह न्यूरो-साइंस के क्षेत्र में आगे की पढ़ाई करे।”

“अम्मी, उस क्षेत्र में तो दिमागी मेहनत बहुत करनी पड़ेगी।”

“जब इसके सामने चैलेंज होता है तभी इसकी सारी शक्ति प्रयोग में आती है। बस तू इसको मेरी कही बात मनवा।”

इसके पश्चात् अमजद ने आफिया के साथ बात की। उसने पहली बात तो यही कही कि उसको आगे पढ़ने से न रोका जाए, मगर साथ ही यह भी बता दिया कि उसको अम्मी की चाहत का पता है। इसलिए उसने न्यूरोसाइंस के कागनेटिव क्षेत्र में पी.एच.डी. करने का मन बना लिया है। अमजद हैरान रह गया, जब उसे पता चला कि आफिया ने अपने तौर पर इसके लिए दाख़िला भी ले लिया है और पढ़ाई प्रारंभ होने वाली है। उसको अपनी पत्नी की कुशलता पर गर्व महसूस हुआ।

“आफिया, तुमने इसके लिए कौन-सा कालेज चुना है ?“

“मैंने ब्रैंडीज़ यूनिवर्सिटी चुनी है। उन्होंने मेरा पढ़ाई का रिकार्ड देखते हुए ही मुझे दाख़िला दिया है। तुम्हें पता ही है कि ऐरे-गैरे को तो वे करीब भी नहीं फटकने देते।”

“पर आफिया, तुम वहाँ कैसे अडजस्ट करोगी ? तुम्हें पता ही है कि वह यूनिवर्सिटी तो यहूदियों की है।”

“हाँ, मुझे पता है। पर मुझे भी वहीं काम करने में मज़ा आता है, जहाँ आगे विरोध हो। तुम देखना तो सही, मैं उनकी यूनिवर्सिटी की ऐसी की तैसी कैसे करती हूँ।”

“तेरी मर्ज़ी है। वैसे मुझे पता है कि तुम्हारे लिए दुनिया में कुछ भी कठिन नहीं है।”

बहस समाप्त हो गई और आफिया ने यूनिवर्सिटी जाना प्रारंभ कर दिया। ब्रैंडीज़ यद्यपि अपने तौर पर धर्म-निरपेक्ष रहने की कोशिश करती थी मगर उसके सारे ताने-बाने पर यहूदी संस्कृति भारी थी। विशेषतौर पर आफिया जैसी कट्टर

मुसलमान के लिए तो वहाँ एडजस्ट करना बहुत ही कठिन था। परंतु आफिया अंदर से खुश थी। क्योंकि ऐसे विरोधाभास में ही उसको आनंद आता था। खैर, जब उसने यूनिवर्सिटी जाना शुरू किया तो उस वक़्त वह सात माह की गर्भवती थी। पढ़ाई शुरू होते ही आफिया ने यहूदी सभ्याचार के विषय में पढ़ना शुरू कर दिया। इसके साथ ही उसने इज़राइल की इंटैलीजेंस एजेंसी, मुसाद के बारे में भी जानकारी एकत्र करना प्रारंभ कर दी। शायद वह अपने होने वाले दुश्मन के बारे में पूरी जानकारी ले लेना चाहती थी। वह पूरी तरह इस्लामी लिबास में लिपटी हुई पहले दिन कालेज पहुँची। उसका इस प्रकार का पहरावा या उसका मुसलमान होना उसके लिए कोई कठिनाई पैदा नहीं करता था, अपितु इसके लिए एक बात और थी। आफिया का विचार था कि यह यूनिवर्सिटी अपने आप को धर्म निरपेक्ष कहती है जबकि अंदर से यह बिल्कुल यहूदी रंग में रंगी हुई है। बस, इसी बात को आधार बनाकर वह यूनिवर्सिटी के साथ पंगा करने के लिए तैयार हो रही थी। इसका पहला रंग उसने अपने पहले लैक्चर में ही दिखा दिया। दूसरों की भाँति उसको भी किसी ख़ास क्षेत्र में रिसर्च करके पर्चा लिखने और पढ़ने के लिए कहा गया। उसके पर्चे का विषय था - 'प्रेगनेंट वुमन एंड अल्कोहल।' उसने अपने पर्चे में कहा कि गर्भवती स्त्री के शराब पीने से होने वाले बच्चे के दिमाग पर असर पड़ता है। यहाँ तक तो ठीक था, पर उसने आगे कहा कि इसीलिए तो अल्लाह ने कुरान में शराब पीने की मनाही की हुई है। उसके प्रोफैसर इस बात से नाराज़ हो गए। वह उसको समझाते हुए बोले, "देख आफिया, हम साइंसटिस्ट हैं। हम वही बात कह सकते हैं जिसे सिद्ध कर सकते हों। डॉक्टरों द्वारा शराब पीने वालियों और न पीने वाली गर्भवती स्त्रियों पर स्टडी की गई है। यहीं से यह बात साबित होकर सामने आई कि शराब पीने वालियों के बच्चे दिमागी तौर पर सही डवलैप नहीं होते। हम इसी स्टडी के आधार पर यह बात कह सकते हैं कि गर्भ के दौरान शराब बच्चे पर बुरा प्रभाव डालती है।"

"नहीं, यह इस तरह नहीं है...।" वह उनकी बातों का उत्तर देते हुए पलभर रुकी और फिर कहने लगी, "जो कुछ भी है, वह सब कुरान में दर्ज़ है। हम साइंसटिस्टों को चाहिए कि कुरान की पढ़ाई करके उसी हिसाब से आगे के कामों को दिशा दें।"

उसकी बात सुनकर प्रोफेसर और अधिक अपसेट हो गए। उन्होंने उसको समझाने की काशिश की, पर वह टस से मस न हुई। आगे भी वह अपने परचों में कुरान में से लिए गए कुटेशन प्रयोग करती रही। इससे उसका डिपार्टमेंट उसके साथ और नाराज़ होता गया। इससे भी आगे बढ़ते हुए आफिया ने इस युनिवर्सिटी के बारे में लिखना शुरू कर दिया कि स्वयं को धार्मिक निरपेक्ष बताने वाली यह युनिवर्सिटी अति दर्ज़े की कट्टर धार्मिक है। आख़िर उसको उसके डिपोर्टमेंट की ओर से नोटिस मिल गया कि

वह अपनी सीमा में रहे, नहीं तो उसके विरुद्ध एक्शन लिया जाएगा। वह डरी नहीं अपितु सीधी डीन के दफ़्तर में जा पहुँची। डीन ने उसको समझाने का यत्न किया, मगर वह चिढ़कर बोली, “या तो मुझे चुपचाप मेरी डॉक्टरीन करने दो, नहीं तो फिर मैं आपके खिलाफ़ ऐसा मोर्चा खोलूँगी कि आपकी रेपूटेशन की ऐसी-तैसी फेर दूँगी।”

उसकी बात सुनकर डीन ने पल भर सोचा और फिर बोला, “मिस आफिया, यदि तू वायदा करे कि चुपचाप अपनी पढ़ाई तक ही सीमित रहेगी तो मैं तेरे डिपार्टमेंट को हिदायत कर दूँगा कि तुझे नाजायज़ तंग न किया जाए।”

आपसी सहमति के बाद बात ठंडी तो पड़ गई, पर डीन ने उसके डिपार्टमेंट को अंदरखाते कह दिया कि जैसे तैसे करके वक़्तकटी करो और इस आफत से पीछा छुड़वाओ। तभी, आफिया की माँ इस्मत पाकिस्तान से उनके पास आ गई। वह आफिया के होने वाले बच्चे के कारण उसकी मदद के लिए आई थी। इस कारण आफिया का भी ध्यान बंट गया। इस्मत को बच्चे की देखरेख के लिए स्पेशल वीज़ा मिला था जिसके कारण आगे चलकर उसको ग्रीन कार्ड भी मिल गया। आफिया ने निश्चित समय से पहले ही अपनी पढ़ाई अच्छे नंबरों से पास कर ली। उसका सिर्फ़ लैबोटरी वाला काम शेष रहता था। इसके लिए वह रात की शिफ्टों में आतीं या फिर रविवार के दिन आ जाती। यहाँ उसका जो इंचार्ज़ था, वह पुराने विचारों वाला बड़ी आयु का यहूदी था। उससे आफिया ने कहा कि बच्चे की आमद के कारण उसके लिए दिन के समय आना कठिन है। उसने आफिया को अपना लैब वर्क रात की शिफ्ट में अथवा वीकएंड पर करने की अनुमति दे दी। आफिया ने उसका तहेदिल से धन्यवाद करते हुए कहा, “सर, आपकी बड़ी मेहरबानी जो आपने मेरी मदद की।”

“कोई बात नहीं आफिया, तू मेरी बेटी जैसी है। तेरी मदद करना मेरा फर्ज़ बनता है।”

“सर आप, अपनी सोच के कारण किसी बहुत ही धार्मिक मुसलमान जैसे लगते हैं।”

“अच्छा ! मुसलमान धर्म में भी इस तरह ही सोचा जाता है ?“

“हाँ सर, आप इस्लाम के बारे में कोई किताब पढ़कर तो देखो।”

“अच्छा कभी तुझे कोई अच्छी-सी किताब मिले तो मेरे लिए लेते आना। मैं ज़रूर पढ़ूँगा।”

इसके बाद आफिया ने उसके घर बड़े बड़े मुसलमान स्कॉलरों की किताबों के ढेर लगा दिए। पर उसको पढ़ने की फुर्सत कहाँ थी। उधर आफिया समझती थी कि यह सारी किताबें बहुत ही रोचकता से पढ़ रहा है। एक दिन उसने पूछ लिया, “सर, आपको कैसी लगीं ये किताबें ?“

“अच्छी हैं, अच्छे विचार है इन लेखकों के।” उसने पढ़ी यद्यपि एक भी किताब नहीं थी, पर उसने आफिया का दिल रखने के लिए यह बात कह दी। इस बात से उत्साहित होकर आफिया उसके घर जाने लग पड़ी। टीचर को उसके बारे में ज्यादा पता नहीं था, पर उसको उसका भोलापन अच्छा लगता था। वह उसको अक्सर ही कह देता कि तू तो मेरी बेटी है। जब लैबवर्क खत्म हो गया तो आफिया एक दिन उसके घर गई। आम बातें करते हुए बोली, “सर, आप मुझे अपनी बेटी समझते हो, आपको मुसलमान धर्म भी अच्छा लगता है।”

“हाँ, मैं तुझे अपनी बेटी समझता हूँ।”

“फिर सर अपनी बेटी की एक बात मान लो।”

“हाँ, बोल बेटे।”

“आप इस्लाम मज़हब अपना लो।”

“क्या ?...“ यह बात उसका सुनकर रंग उड़ गया। उसका पलभर कोई बात ही न सूझी। वह भौंचक -सा आफिया की तरफ देखने लगा। वह मुस्करा रही आफिया के चेहरे की ओर देख रहा था। साथ ही वह इस मासूम मुस्कराहट के पीछे छिपे क्रूर चेहरे को पहचान चुका था।

“मिस आफिया अब तू जा सकती है। अपना लैबवर्क खत्म हो गया है। अपना अध्यापक और विद्यार्थी का नाता भी खत्म हो चुका है। मैं चाहूँगा कि तू मुझे भविष्य में कभी न मिले।” इतना कहते हुए वह उठा। आफिया दरवाज़ा खोलकर बाहर निकली तो टीचर ने भड़ाक-से दरवाज़ा बंद कर लिया।

उधर अफगानिस्तान में बहुत कुछ बदल रहा था। सोवियत यूनियन के वहाँ से निकल जाने के बाद भिन्न भिन्न दलों के वार लोर्ड मिलजुल कर सरकार चला रहे थे। परंतु फिर वहाँ एक नया ही संगठन पैदा हो गया। इस नए संगठन का नाम था - तालिबान। तालिबान अर्थात विद्यार्थी। अफगानिस्तान से आए रिफ्यूजियों के बच्चों के लिए, पाकिस्तान में जो मदरसे खोले गए थे, उनमें उन्हें मज़हबी तालीम देने के अलावा लड़ाई के लिए तैयार किया गया था। अफगानिस्तान के जिस जाने-माने मज़हबी रहनुमा की अगुवाई में यह काम हुआ था, उसका नाम था - मुल्ला उमर। मुल्ला उमर ने सोवियत यूनियन के साथ लड़ाई के समय बड़ी भूमिका अदा की थी। मुल्ला उमर के तालिबानों को पाकिस्तान के अलावा सउदी अरब सरकार का पूरा समर्थन हासिल था। खैर, जब उसने अपने तालिबानों की फौज अफगानिस्तान के अंदर उतारी तो वहाँ वार लोर्डों में भगदड़ मच गई। तालिबान नौजवान बहुत ही जोशिले थे जो इन वार लोर्डों की फौजों को हर फ्रंट पर मात देते चले गए। आख़िर 1995 में आकर तालिबानों ने वार लोर्डों की कमर तोड़कर रख दी और अफगानिस्तान के उत्तर की ओर के थोड़े-से इलाके को छोड़कर सारे अफगानिस्तान पर अपना अधिकार जमा लिया। लोगों को लगा कि अब पुराने लीडरों की वहशी कारवाइयों से पीछा छूट जाएगा। पर यह उनका भ्रम साबित हुआ। तालिबानों ने आते ही ऐसे शरीअत कानून लागू किए कि लोगों का सांस लेना भी कठिन हो गया। इन नए कानूनों ने खासतौर पर औरत का तो गला ही दबा दिया। हर क्षेत्र में उनकी आज़ादी खत्म कर दी गई। औरतों के स्कूल कालेज बंद कर दिए गए। औरतों को नौकरी करने से रोक दिया गया। औरत के अकेली घर से निकलने पर पाबंदी लगा दी गई। बग़ैर किसी नज़दीकी रिश्तेदार के वह घर से बाहर नहीं जा सकती थी। औरतों पर पाबंदियाँ लग गईं। हार-शिंगार पर पाबंदी, अच्छा पहनने पर पाबंदी, ऊँची एड़ी की सैंडिल पहनने पर पाबंदी, बाहर कहीं भी ऊँचे स्वर में हँसने पर पाबंदी। इसके अतिरिक्त गीत-संगीत के स्टोर वगैरह आग लगाकर राख कर दिए गए। ख़बरों के अलावा रेडियो पर हर प्रोग्राम को रोक दिया गया और सिनेमाघर बंद कर दिए गए। गाना-नाचना बंद, साहित्य-कविता आदि की किताबें बंद। तात्पर्य यह कि कोई ऐसा क्षेत्र नहीं था जहाँ मज़हबी पाबंदी न लगी हो। इस तालिबान लीडरशिप को पाकिस्तान की पूरी सरपरस्ती हासिल थी। पाकिस्तान का मज़हबी ग्रुप, संगठन आदि इस सारी मूवमेंट के पीछे था। आफिया के परिवार का इसी संगठन के साथ संबंध था। सो, आफिया इस

सबको बड़े रोमांच-से देख रही थी। जब तालिबानों ने मानवीय अधिकारों का क़त्ल करने में कोई कसर न छोड़ी तो यू.एन.ओ. ने अफगानिस्तान को सारी मदद बंद कर दी। इससे चिढ़कर कट्टर लीडरों ने अल रशीद नाम का संगठन शुरू कर लिया जिसका काम तालिबानों के लिए फंड आदि का प्रबंध करना था। इसने अपने अख़बार भी निकाले। आफिया इस सबके हक में थी। उसने इन अख़बारों के लिए लेख भी लिखे। इस दौरान अमेरिका ने अफगान सरकार को आगाह किया कि वह सउदी अरब के करोड़पति इंतहापसंद ओसामा बिन लादिन को पनाह देना बंद करे। मगर तालिबान सरकार ने इस बात की कोई परवाह नहीं की। आफिया इस बात के कारण भी तालिबानों के हक में खड़ी हुई। उसके लिए ओसामा बिन लादिन हीरो था।

ओसामा बिन लादिन पहली बार अमेरिका की नज़रों में 1993 में तब आया जब वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के नॉर्थ टॉवर के अंदर रम्ज़ी यूसफ द्वारा किए गए बम धमाके वाला केस शुरू हुआ। जांच के दरम्यान पता चला कि अपनी रूपोश ज़िन्दगी के दौरान रम्जी यूसफ, ओसामा बिन लादिन के गैस्ट हाउस में ठहरता रहा था। यहीं से ही ओसामा बिन लादिन के विषय में पूरी जानकारी एकत्र की गई तो पता चला कि वह सउदी अरब का एक अमीर और इंतहापसंद व्यक्ति है जो कि अफगानिस्तान की लड़ाई के समय अपनी निजी फौज से सोवियत यूनियन के खिलाफ लड़ता रहा है। बाद में उसको उसकी सरकार यानी सउदी अरब ने उसकी बगावती कार्रवाइयों के कारण देश से बाहर निकाल दिया। वह कुछ समय सूडान में रहा और मुल्ला उमर की तालिबान सरकार के अस्तित्व में आने के बाद उसने अफगानिस्तान में आकर स्थायी तौर पर डेरा जमा लिया।

आफिया को ओसामा बिल लादिन की जीवनशैली ने बहुत प्रभावित किया। जब वह नीचे ज़मीन पर बैठकर खा रहा होता या अपने साथयों के साथ जंगलों में भटक रहा होता तो आफिया की आँखें भर आतीं। वह सोचती कि यदि यह चाहे तो एक शहजादे की ज़िन्दगी व्यतीत कर सकता है। पर इसने सब कुछ धर्म के नाम अर्पित कर दिया है। आफिया के दिल में मुहम्मद साहिब के बाद यदि किसी की इज्ज़त थी तो वह ओसामा बिन लादिन की थी।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –9

(9)

आफिया ने पढ़ाई और लैब का सारा काम समाप्त कर लिया था। अब वह पी.एच.डी. के लिए अपना थीसिस लिख रही थी। अमजद ने भी अपनी रेज़ीडैंसी खत्म कर ली थी। उसने सेंट विन्सेंट होस्पीटल में इंटर्नशिप शुरू कर ली थी। वे दोनों बॉस्टन से पैंतीस-चालीस मील दूर पड़ने वाले शहर वोरैस्टर में मूव हो गए। वोरैस्टर में केयरब्रदर्स के बहुत सारे सदस्य रहते थे। यहाँ की स्थानीय मस्जिद का इमाम मुहम्मद मासूद था। यह पुराना एम.एस.ए. का सदस्य रह चुका था। इसके अलावा मुहम्मद मासूद का भाई पाकिस्तानी आतंकवादी ग्रुप लश्करे तायबा का लीडर था। इन बातों के कारण आफिया को वोरैस्टर बहुत पसंद आया। यहाँ लश्करे तायबा संगठन का औरतों का एक विंग भी था, जिसकी उमा हमाद प्रधान थी। मगर आफिया को उमा हमाद अच्छी न लगी। उसने सोच लिया कि वह यहाँ अपना एक पृथक संगठन बनाएगी। उसकी माँ उसका नवजन्मा बच्चा जिसका नाम अहमद रखा था, को संभालती थी। आफिया इस वक़्त फुर्सत में होने के कारण आसपास के इस्लामिक संगठनों की जांच-पड़ताल कर रही थी। तभी आफिया का पिता बीमार हो गया। उसकी माँ ने काफी सोच-विचार किया और इस नतीजे पर पहुँची कि आफिया का बेटा कई महीनों का हो चुका है और वह उसकी खुद देखरेख कर सकती है। इसके अगले सप्ताह ही इस्मत पाकिस्तान चली गई। अगले दिनों में घर में काफी भूचाल आ गया। अब तक तो आफिया को माँ के होते किसी काम की चिन्ता ही नहीं थी, पर अब घर का ही नहीं बल्कि अहमद का भार भी उस पर आ पड़ा। उसने अहमद के लिए बाहर किसी बेबी सिटर के यहाँ प्रबंध कर लिया। उसको वहाँ छोड़ने भी अमजद ही जाता था और लेकर भी खुद आता था। आफिया को अपने कामों से ही फुर्सत नहीं थी। एक दिन अमजद घर लौटा तो अहमद रो रहा था जबकि आफिया किसी के साथ फोन पर हँस हँसकर बातें कर रही थी।

“आफिया ?“ अमजद बैग एक तरफ रखता हुआ चिल्लाते हुए ऊँची आवाज़ में बोला।

“क्या है ? क्यों धरती सिर पर उठा रहे हो ? खैर तो है।” आफिया दूसरी ओर फोन होल्ड करने को कहकर धीमे स्वर में बोली।

“क्यों ? तुझे नहीं दिख रहा कि बच्चे का रो रोकर बुरा हाल हो रहा है और तुम हो कि बातों से ही फुर्सत नहीं है।”

“बच्चे को तो तुम भी चुप करवा सकते हो। यूँ कूदने की क्या ज़रूरत है।”

“क्यों, कूदूँ नहीं तो और क्या करूँ ? सवेर के समय अहमद को बेबी सिटर में छोड़ने मैं जाता हूँ। शाम के वक़्त मैं ही उसको वापस लेकर आता हूँ। तू सारा दिन खाली रहकर क्या इतना भी नहीं कर सकती। इसकी छोड़, पर जब वो घर आ गया, उसके बाद तो उसको तू संभाल सकती है।”

“तुम्हें मैं खाली नज़र आती हूँ। तुम्हें पता है कि मैं और मेरा संगठन आजकल क्या कर रहा है ?“

“तू ही बता दे।” अमजद खीझा हुआ बोला।

“हम बॉस्निया के जिहादी परिवारों के लिए फंड इकट्ठा कर रहे हैं।”

“अब तो बॉस्निया में शांति हो चुकी है। अब तो तू इस बात का पीछा छोड़ दे।”

“मिस्टर अमजद, जिहाद कभी ख़त्म नहीं होगा। यह तब तक चलता रहेगा जब तक सारे संसार में इस्माल का झंडा न फहराने लग पड़े। अब लड़ाई बॉस्निया में नहीं हो रही तो क्या हुआ। अगला फ्रंट चेचनिया और कास्वो में खुल चुका है।”

“तेरे इस जिहाद मेरा घर बर्बाद कर देगा, आफिया।”

“और जिनके घरघाट पहले ही उजड़ चुके हैं। काफ़िरों ने हमारे जिहादियों का छोड़ा ही क्या है ? तुझे इस अपने छोटे से घर की चिंता है, पर बड़े संसार की और झांक कर देख।”

इस बीच अहमद रोने लग पड़ा तो उनकी बहस कुछ देर के लिए थम गई। अमजद बच्चे के करीब हुआ तो आफिया ने पहले ही उसको उठाकर छाती से लगा इससे अमजद का गुस्सा कुछ ठंडा पड़ गया। पर अहमद के चुप होते ही आफिया फिर बोली, “कुरान में लिखा है कि घर चलाना आदमी का काम है। तू नौकरी की वजह से मेरे पर यूँ रौब न झाड़ा कर।”

“कुरान में तो फिर यह भी लिखा है कि औरत घर संभाले, बच्चे संभालें अगर तू सच्ची मुसलमान है तो अपनी जिम्मेदारी समझ।”

“जिम्मेदारी तुझे समझने की ज़रूरत है। मेरी सहेलियों के खाविंद जिहाद में सेवा निभा रहे हैं और एक तू है कि अमेरिकी बनकर मौजें कर रहा है।”

“मैं मौजें नहीं करता, अपना काम करता हूँ।”

अहमद सोने लग पड़ा तो आफिया उसको थपथपाने लग पड़ी। उसका ध्यान झगड़े से हटकर सो रहे अहमद के चेहरे की ओर चला गया। वह बोलना बंद करके उसके मासूम चेहरे की ओर देखती रही। जब वह सो गया तो आफिया ने एक ओर पड़ी फाइलें उठा लीं और उनमें काट-पीट करने लग पड़ी।

“मुहतरमा, यह कैसी लिखा-पढ़ी चल पड़ी।” अमजद का गुस्सा भी खत्म हो गया था। इस कारण उसकी आवाज़ में कड़वाहट न रही।

“अमजद, कुछ लोग मुझे अपनी टैक्स रिटर्न्स दे गए थे। मैं इनमें से गलतियाँ वगैरह निकाल कर ठीक कर रही हूँ।”

“इससे क्या होगा ?“

“कम से कम उनके दो-दो, चार-चार डॉलर रिफंड हो ही जाएँगे।”

“ये दो-दो, चार-चार डॉलर गवर्नमेंट के भी तो काम ही आएँगे।”

“अमेरिकन सरकार का सारा पैसा एक ही काम आता है। वह है, मुसलमानों को मारने का काम।”

“आफिया तू हर बात को उल्टी तरफ सोचती है।”

“सिर्फ़ सोचती ही नहीं, मैं करती भी वैसा ही हूँ जिससे मुसलमानों का भला हो।”

“कभी अपने खाविंद का भला भी सोच लिया कर।” अमजद ने उबासी ली।

“तुझे शरम नहीं आती मेरा खाविंद कहते हुए।” पता नहीं क्यों आफिया एकदम भड़क उठी।

“क्यों, अब क्या हो गया ?“ अमजद ने हैरान होकर आफिया की ओर देखा।

“मैं ब्याही हुई हूँ, इसलिए किसी भी जलसे-समूह में अकेली नहीं जा सकती। तूने कभी इस बात की ओर ध्यान दिया है कि बेगम के साथ जाने में उसकी मदद करनी चाहिए।”

“आफिया, देख मेरे लिए पहले अपना परिवार है और फिर मेरी पढ़ाई। और फिर तुझे पता ही है कि अब मुझे कालेज वाले पहले से भी ज्यादा काम देते हैं। मुझे वीक एंड

पर लेख लिखने होते हैं। तू अपनी बात तो फटाक से कह देती है, पर मेरी मज़बूरी नहीं समझती।"

"तुझे पता होना चाहिए कि तेरा पहला काम जिहाद है। पर मेरी ही किस्मत खराब है जो ऐसा खाविंद मिला है जिसको जिहाद के मायने भी नहीं पता।"

"तू जान तेरा जिहाद जाने। मुझे तेरी इन बातों में कोई दिलचस्पी नहीं।"

आफिया को एकदम गुस्सा चढ़ आया, मगर वह उठ न सकी। उसका शरीर इसकी इजाज़त नहीं दे रहा था। इस वक़्त वह दूसरी बार गर्भवती थी। वह कड़वाहट से भरी वही ढेरी हो गई और सो गई। उधर अमजद भी सो चुका था।

कुछ महीनों के बाद आफिया ने एक बच्ची को जन्म दिया। जिसका नाम उन्होंने मरियम बिंत मुहम्मद रखा। नवजन्मे बच्चे के कारण कुछ देर आफिया घर में टिक गई। उनके मध्य फिर से बढ़िया पारिवारिक माहौल बन गया। दोनों समीप वाले पॉर्क में घूमने जाते। कई बार ग्रॉसरी लेने जाते तो बच्चों को संग ले जाते। अमजद को लगा कि शायद अब आफिया बच्चों के कारण ही घर में मन लगा ले। पर यह उसका भ्रम था। आफिया ने फोन पर सबसे सम्पर्क रखा हुआ था। बच्ची के जन्म के बाद वह पहली बार केयर ब्रदर्ज़ की मीटिंग में गई तो सभी को बहुत उत्साह मिला।

"आफिया, अब तू बच्चों की तरफ से फुर्सत पाकर एम.एस.ए. और बोनेवोलैंस का काम संभाल।" सुलेमान अहमर बोला। वह आज की इस ख़ास मीटिंग में चिकागो से खासतौर पर आया था।

"यह बात सही है। बस, मुझे कुछ दिन दो। मैं किसी ऐसी औरत का प्रबंध कर लूँ जो मेरे घर रहकर मेरे बच्चों की देखभाल कर सके। फिर मैं खाली ही खाली हूँ।"

“दोस्तो, कुछ महीनों के बाद नया साल आने वाला है जो कि हमारे लिए नई ज़िन्दगी लेकर आएगा। सब जानते हैं कि बीसवीं सदी खत्म होते ही काफ़िरों का खात्मा हो जाएगा और हर तरफ इस्लाम का झंडा फहरेगा।”

“इंशा अल्ला ! इंशा अल्ला!!“ हर तरफ से आवाजें उठीं। इसके बाद कई अन्य वक्ताओं ने अपनी बात रखी। ज़रूरी मसलों पर विचार-विमर्श किया गया। आख़िर में सुहेल उठा और बोलने लगा, “हमें बड़ा गर्व है कि हमारा साथी और केयर ब्रदर्ज़ का जिहादी बसम कुंज बड़ा मार्के का काम कर रहा है। वह वापस लिबनान आ गया है। उसने वहाँ नए जिहादियों को ट्रेनिंग देने के लिए कैम्प भी शुरू कर लिया है। हालांकि यह काफी कठिन है क्योंकि वहाँ की सरकार हमको सहयोग नहीं देती, मगर उसने नामुमकिन को मुमकिन कर दिखाया है।”

सभी ने तालियाँ बजाईं। आफिया, मार्लेन की ओर देखती मन ही मन सोचने लगी, ‘यह कितनी अच्छी किस्मत वाली है जिसका घरवाला जिहाद लड़ रहा है। नए जिहादी पैदा कर रहा है। और मेरा अपना पति क्या कर रहा है ? वह तो ऐसी बैठकों में आना भी नहीं चाहता। बल्कि मुझे खुद को उससे छिपकर ऐसी मीटिंगों में आना पड़ता है। उसको तो सिर्फ़ पढ़ाई की पड़ी हुई है जब कि इस वक़्त सारा मुस्लिम समाज पूरी तनदेही से जिहाद का काम कर रहा है। मैं क्या करूँ। कैसे अमजद को जिहाद की ओर खींचूँ। यदि मैं ज़ोर डालूँ तो उसको मानना ही पड़ेगा। मेरे साथ उसे गहरी मुहब्बत जो है। मुहब्बत तो ख़ैर मुझे भी उससे बहुत है, पर मुझे उसकी यह एक ही बात बर्दाश्त नहीं होती कि उसको जिहाद से कोई सरोकार नहीं है।’

इसके पश्चात उसके नाम की घोषणा हुई तो वह ख़यालों में से निकली। उसने अपने भाषण के दौरान नए जिहादी भर्ती करने पर ज़ोर दिया। चैरिटी के लिए तो हमेशा ही वह ज़ोर देती थी। उसने सभी को बसम का उदाहरण देते हुए कहा कि आज हरेक को बसम बनने की ज़रूरत है।

मीटिंग समाप्त हुई। वह घर आ गई। उसने आकर देखा, बच्चे सोये हुए थे। उसने दूसरी ओर देखा। अमजद भी गहरी नींद में था। वह उसके पास होकर उसके चेहरे को निहारती रही। अमजद के माथे पर चुम्बन देने के लिए वह ज़रा-सा झुकी, फिर रुक गई कि कहीं उसकी नींद खराब न हो जाए। फिर वह भी अपने बैड पर जा पड़ी और

सोचते सोचते उसको काफी देर बाद नींद आई। अगली सवेर ज़ोर-ज़ोर से फोन बज रहा था। वह हड़बड़ाकर उठी।

उसने आसपास देखा। वहाँ कोई नहीं था। अमजद बच्चों को तैयार करके निकल चुका था। वह ऐसे ही किया करता था। जिस दिन आफिया देर रात में लौटती तो अगले दिन वह बच्चों को खुद ही बेबी सिटर के यहाँ छोड़ने जाता था। फोन कट गया तो आफिया बिस्तरे में से निकली। तभी दुबारा घंटी बजी। उसने आगे बढ़कर फोन उठा लिया। उधर सुहेल बोल रहा था। फोन ऑन होते ही वह बोला, "आफिया, बहुत बुरी ख़बर है।"

"क्यों ? क्या हुआ ?"

"बसम कुंज शहीद हो गया।"

"क्या !" आफिया के शरीर में कंपकंपी छिड़ गई। मगर फिर वह अपने आप को संभालने लगी। उधर सुहेल दुबारा बोलने लगा, "बसम ने लिबनान फौज के दो सिपाही किडनैप कर लिए थे। वह उनके माध्यम से अपनी कुछ मांगें मनवाना चाहता था। मगर इस बीच ही फौज ने उसके कैंप पर हमला कर दिया। इसी लड़ाई में वह शहीद हो गया।"

"अल्लाह उसकी रूह को सुकून दे। पर अब आगे का क्या प्रोग्राम है ?"

"आज शाम, उसको श्रद्धांजलि देने के लिए मीटिंग रखी गई है। तू वक़्त से पहुँच जाना।"

"ठीक है।" फोन कट गया। आफिया सोचने लगी कि कितना किस्मत वाला परिवार है। आप तो वह जिहादी शहीद बनकर बहिश्त में चला ही गया, साथ ही मार्लेन के लिए बहिश्त के दरवाजे खोल गया।

उस शाम मीटिंग हुई। हर एक ने बसम की तारीफ़ करते हुए उसके काम को आगे बढ़ाने का प्रण लिया। इसी दौरान एक पच्चीसेक साल का युवक उठा और बोला, “अगर आप सबकी इजाज़त हो तो मैं उस महान शहीद बसम की विधवा से शादी करना चाहता हूँ।”

“क्यों नहीं, क्यों नहीं। यह तो बड़े फख्र का काम है। जिहादी शहीद की विधवा से निकाह करवाने का मान किसी किसी को मिलता है।” कई आवाज़ें उठीं और उस युवक की बात मान ली गई। उसका नाम अनवर अल मीराबी था जो कि सउदी अरब का बाशिंदा था और आजकल हूस्टन, टैक्सास में रहता था। अगले दिन मस्जिद में दोनों का निकाह हो गया। अनवर अल मीराबी अपनी नई बेगम मार्लेन को उसके पाँच बच्चों सहित लेकर हूस्टन को चला गया। शाम के वक़्त आफिया घर लौटी तो उदास थी। पर अमजद ने उसकी ओर ख़ास ध्यान न दिया। वह समझता था कि यह तो इसका नित्य का काम है। यह किसी न किसी चैरिटी समागम से आई होगी। इससे आगे अमजद का न ही कभी ध्यान गया था और न ही जा सकता था कि यह तो बहुत समर्पित जिहादी है।

उधर केयर ब्रदर्ज़ और आफिया वगैरह समझते थे कि उनकी कार्रवाइयों का किसी को पता नहीं है। मगर यह सच नहीं था। क्योंकि एफ.बी.आई. हरेक चैरिटी संगठन के पीछे पड़ी हुई थी। केयर ब्रदर्ज़ के तो विशेष तौर पर। केयर ब्रदर्ज़ के सारे फोन टेप होते थे। जैसे ही एफ.बी.आई. को पता चला कि बसम कुंज मारा गया तो वह आगे की कार्रवाई देखने के लिए सावधान हो गए। इसी कारण मार्लेन और अनवर अल मीराबी के निकाह का एफ.बी.आई. को तुरंत पता लग गया। उन्होंने हूस्टन ब्रांच में इसकी सूचना दी और वह अनवर अल मीराबी के पीछे लग गए।

आफिया ने अपना थीसिस पूरा करके सबमिट करवा दिया। इसके साथ ही उसने मास्टर डिगरी भी पूरी कर ली थी। यह सब कुछ उसने तय समय अर्थात चार साल से भी पहले कर लिया। यह एक रिकार्ड था। वह भी तब जब कि उसने इस बीच बच्चों को जन्म दिया और अपनी दूसरी सरगर्मियों में भी पूरी तरह वह व्यस्त रही। इसके बाद उसके मन-मस्तिष्क से एक किस्म का बोझ-सा उतर गया। वह पढ़ाई और कालेज का पीछा छोड़ चुकी थी। यही नहीं, उसने अपना पहरावा भी बदल लिया। वह लम्बा बुर्का पहनने लगी। जिसमें से उसकी सिर्फ़ दो दिपदिपाती आँखें ही नज़र आती थीं। उधर अमजद ने पढ़ाई में बहुत अच्छा स्थान लिया था। उसने अपनी अनैस्थिसीऑलाजी की रैजीडेंसी में पूरी क्लास में टॉप किया था। उसकी इस प्राप्ति से

प्रभावित होकर उसको अमेरिकन एसोसिशन ऑफ़ अनस्थिसीऑलाजी के नेशनल न्यूज़लैटर का चीफ़ एडिटर बना दिया गया। वह डॉक्टरी के क्षेत्र में हद से बढ़कर उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा था। इसके बाद उसने हावर्ड यूनिवर्सिटी के हैल्थ सेंटर में मास्टर की डिगरी के लिए आवेदन कर दिया। उसको प्रवेश मिल गया और उसने पढ़ाई प्रारंभ कर दी। परंतु आफिया का ध्यान इस वक़्त कहीं ओर था। वह इस वक़्त जिहादी वेबसाइट पर बहुत सारा काम कर रही थी। आजकल वह जिहाद में मारे जा रहे जिहादियों की बॉयोग्राफी वेबसाइट पर डाल रही थी। वह हर ऐसा आर्टिकल वेबसाइट पर डालती जिससे नए लोगों को जिहाद में शामिल होने की प्रेरणा मिले। इसके अलावा वह इंटरनेट पर इस्लामिक बहसों में भी हिस्सा लेती थी। सारा दिन उसका इस तरह की बहसों में हिस्सा लेते ही गुज़रता था। मगर वह कभी भी कुछ ऐसा नहीं सुन सकती थी जो कि जिहाद की सराहना न करता हो। अगर कोई कहता कि मुसलमानों को कुरान का पालन करते हुए शांति और सद्भावना से इस देश में रहना चाहिए तो उसको लगता कि इस प्रकार की बोली बोलने वाले मुसलमान कौम के गद्दार हैं।

आफिया की बड़ी बहन फौज़िया विवाहित और बाल-बच्चेदार थी। वह अपने डॉक्टरी क्षेत्र में न्यूरोलॉजी में फैलोशिप करने के लिए बॉस्टन आई और अपने बच्चों को भी यहाँ ले आई। यहाँ आकर उसने देखा कि आफिया, पहले वाली आफिया नहीं रह गई थी। फौज़िया को लगा कि उसकी चंचलता और मासूमियत गायब हो चुकी है। भीतरी बातों का उसको कुछ पता नहीं था। उसने इसका कारण यही निकाला कि शायद अमजद आफिया को तंग करता है। उसने इस बारे में आफिया से लम्बी-चौड़ी बातचीत की। जब आफिया ने उसकी बातों में अधिक दिलचस्पी न दिखाई तो फौज़िया को लगा कि शायद इसको अमजद ने बहुत डरा-धमका रखा है। उन्हीं दिनों में आफिया अमजद को किसी फंड रेजिंग समारोह में ले गई। वहाँ वह इतनी भावुक हो गई कि उसने अमजद की ओर से किसी समय भेंट की गई कीमती अंगूठी दान कर दी। इससे अमजद चिढ़ उठा। उसने आफिया को इशारे से समझाया कि जो हो गया, सो हो गया, अब वह यहाँ से उठकर घर चले। परंतु आफिया तो भावुकता के सागर में डूबी हुई थी। उसने अमजद की कोई बात न सुनी। वह अपना भाषण देती रही। उधर बच्चे भी घर जाने की जिद्द कर रहे थे। अमजद अपसेट हो गया। वह आफिया को अकेला छोड़कर भी नहीं जा सकता था। आख़िर कहीं देर रात समारोह खत्म हुआ। बच्चे कार में सोये पड़े थे। कार में बैठकर वे घर की ओर चले तो अमजद ने आफिया को अंगूठी दान करने के बारे में बुरा-भला कहा। इस बात पर आफिया ने उसका मजाक उड़ाया। आहिस्ता आहिस्ता चलती बातें आख़िर गरमी पकड़ गईं। जब वे घर पहुँचे तो वे बुरी तरह आपस में बहस रहे थे। घर पहुँचकर अमजद, बच्चे को बोतल से दूध पिलाने लगा। आफिया बहस करती हुए उसके साथ हाथापाई पर उतर

आई और बोतल उसके मुँह पर अनायास बज गई। परिणामस्वरूप उसके मुँह पर ज़ख़्म हो गया और खून निकलने लगा। अमजद ने उसी वक़्त किसी दोस्त डॉक्टर को फोन किया और आफिया के ज़ख़्म की स्टिचिंग करवाकर लाया। उसके बाद दोनों के बीच तल्ख़ी लगभग ख़त्म हो गई। अगले रोज़ आफिया फौज़िया के पास बच्चे छोड़ने गई तो उसने मुँह पर स्टिचिंग के निशान देखकर पूछा। आफिया द्वारा सारी हकीकत बयान करने के बाद फौज़िया ने सबसे पहले आफिया के मुँह के चित्र लिए। फिर वह उसको भड़काने लगी। आख़िर, आफिया उसकी बातों में आ गई। शाम के समय जब अमजद वहाँ पहुँचा तो फौज़िया ने दरवाज़ा नहीं खोला। अमजद को यह बात खटक गई कि फौज़िया ने बीच में पड़कर उसके आपसी मामले को तूल दिया है। अगले दिन वह फोन करता रहा, पर किसी ने फोन नहीं उठाया। उसका मन बहुत खराब हो गया। तीसरे दिन उसने फोन किया तो आफिया ने फोन उठाकर हौले से 'हैलो कहा।

"आफिया, क्या बात हो गई ? न तू लौटकर घर आई है और न ही फोन उठा रही है ?"

"वो फौज़िया आपा...।" इतना कहकर वह चुप हो गई।

"आफिया, देख यह अपना आपसी मामला है। अच्छा है कि इसको हम आप ही निपटाएँ।"

"अच्छा, आज शाम को आ जाना। उस वक़्त फौज़िया घर पर नहीं होगी।"

उस शाम अमजद फौज़िया के घर गया तो आफिया ने दरवाज़ा खोल दिया। उसका चेहरा उतरा हुआ था। वैसे भी वह काफी उदास दिख रही थी। अमजद ने उस दिन के लिए माफ़ी मांगी। आफिया का रंग एकदम बदल गया। वह ऊँची आवाज़ में बोलने लगी। बोलते बोलते वह अमजद के करीब आ गई और उसकी छाती पर मुक्के मारने लगी। अमजद चुपचाप खड़ा रहा। आहिस्ता आहिस्ता आफिया के हाथ रुकते चले गए। फिर उसने अमजद को अपनी बांहों में लपेट लिया और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। अमजद ने उसको शांत किया। जब शाम के समय फौज़िया घर आई तो उसने देखा कि आफिया अपने बच्चों सहित वहाँ से जा चुकी थी। इसके बाद अमजद ने सोचा कि यहाँ से कहीं दूर मूव हुआ जाए ताकि भविष्य में फौज़िया हमारे घरेलू मसलों में दख़ल

न दे सके। जून 2001 को उसने ग्रैंडा हाईटस नाम के इलाके में बड़ा-सा अपार्टमेंट ले लिया। यह काफी बड़ा था। इस कारण उसने इसका एक कमरा अपने साथ काम करते एक सउदी अरब के बाशिंदे को किराये पर दे दिया। ज़िन्दगी फिर से बढ़िया ढंग से गुज़रने लगी। इन्हीं दिनों में ओसमा बिन लादेन की वीडियो टेप चैनलों पर दिखाई जाने लगी। पहली बार वह बहुत ही खुलकर बोल रहा था। अमेरिका के वह बहुत ही खिलाफ़ था। सुनने वाले अपने अपने कयास लगाने लगे कि इसका मतलब क्या हुआ कि ओसमा बिन लादेन एकदम पब्लिक के सामने इतने ज़ोरदार ढंग से आया है। केयर ब्रदर्ज़ जैसे संगठन भी कुछ समझ न सके।

उधर मार्लेन अपने नए पति अनवर अल मीराबी के साथ हूस्टन से चलकर बॉस्टन पहुँची। यह सारा सफ़र उन्होंने कार से तय किया। बड़ी बात उस वक़्त मार्लेन गर्भवती थी और बच्चे की डिलीवरी में भी ज्यादा वक़्त नहीं था। एफ.बी.आई. इस जोड़े की हरकतों को नोट कर रही थी, मगर उनको यह समझ में नहीं आया कि ये इस प्रकार बॉस्टन में क्या करने आए हुए हैं। मार्लेन ने वहाँ के दोस्तों को बताया कि पहले बच्चे की डिलीवरी वह बॉस्टन में चाहते हैं, इसलिए वे यहाँ आए हैं। इस बीच वे ख़ास मित्रो से मिलते रहे। उन्हें बहुत अधिक मान-सम्मान दिया गया। कई दिनों के बाद 29 अगस्त 2001 को मार्लेन ने बेटे को जन्म दिया। इसके सप्ताह भर बाद वे दोनों ही कार से वापस चले गए। जाने से पहले मार्लेन आफिया को एक तरफ ले जाकर बोली, “वह बड़ा दिन आने वाला है जिसकी हमें मुद्दत से प्रतीक्षा है।”

“मार्लेन, ज़रा विस्तार से बता।” आफिया को खुशीभरा अचंभा हुआ।

“बस, इस वक़्त मैं इतना ही कह सकती हूँ कि बहुत कुछ बड़ा होने जा रहा है, जो सारी दुनिया को हिलाकर रख देगा।”

“इंशा अल्ला, ऐसा ही हो।” आफिया को यह तो पता था कि ओसामा बिन लादेन की हिदायत पर जिहादी ग्रुप कुछ ऐसा करने वाले हैं जो वाकई तहलका मचा देगा। पर वह है कि इस बारे में उसको कुछ पता नहीं था। न ही उसने मार्लेन से इस विषय में विस्तार से पूछना आवश्यक समझा।

एफ.बी.आई. अपने अंदाज़ लगाती रही कि इस युगल का इस मुकाम पर यहाँ आने का क्या काम हो सकता है। टी.वी. चैनल अपने दिमाग लड़ाते रहे कि ओसामा बिन लादेन की कुछ ही दिन पहले आई ज़ोरदार टेप का क्या संदेश हुआ। उधर आफिया अपना दिमाग खपाती रही कि मार्लेन की बात का क्या अर्थ हुआ। सबके अपने अपने कयास थे। मगर 11 दिसंबर 2001 के दिन सबके भ्रम दूर हो गए। उस दिन आफिया सुबह के समय समाचार सुन रही थी। किसी ख़ास ख़बर ने उसकी आँखें टी.वी. स्क्रीन से चिपका दीं। ख़बर आ रही थी -

"आज सवेरे अमेरिकन एअरलाइन्ज़ की फ्लाइट नंबर 11 ने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के नॉर्थ टॉवर को आठ बजकर छियालीस मिनट पर हिट किया। इसके ठीक सत्रह मिनट बाद युनाइटिड एअरलाइन्ज़ की फ्लाइट संख्या 175 सेंटर के साउथ टॉवर से टकरा गई। दोनों प्लेन बॉस्टन के लोगन इंटरनेशनल एअरपोर्ट से उड़े थे। वहाँ से उड़ान भरने के बाद इन्हें हाईजैकरों ने अगवा कर लिया और फिर स्वयं ही इन हवाई जहाज़ों को उड़ाकर वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के नॉर्थ और साउथ टॉवरों में ला मारा। हज़ारों आदमी मर चुके हैं। हज़ारों ही ढह रहे टॉवरों के अंदर घिर हुए हैं। इसके अलावा एक प्लेन पेंटागन से जा टकराया है। एक अन्य अगवा किया गया प्लेन हाईजैकरों ने पैन्सलवेनिया के खेतों में गिरा दिया है।"

टी.वी. चैनल ने कुछ देर के लिए कैमरा ताश के पत्तों की भांति गिरती इमारतों की ओर कर दिया। वहाँ मौत का तांडव-नृत्य हो रहा था। हर तरफ ऊपर से नीचे गिरकर मरते लोग दिखाई दे रहे थे। सैकड़ों लोग बचने के उम्मीद में दफ़्तरों से बाहर निकलकर खिड़कियों से लटक गए थे। जिस किसी का भी हाथ फिसलता, वह आधे आसमान से नीचे आ गिरता। हर तरफ लोगों की दर्द भरी चीखें सुनाई दे रही थीं। आसपास गहरी गर्द छा गई थी। हर कोई रो रहा था। बल्कि सारा अमेरिका रो रहा था। वहाँ से बचकर निकल भागते लोगों के साथ सड़कें भरी पड़ी थीं। दोनों ट्विन टॉवर धू-धू करके जल रहे थे। समाचार वाचिका फिर से बोलने लगी, "सरकार को पूरा शक है कि आज की इस अति क्रूर घटना के लिए इंतहापसंद इस्लामी आतंकवादी जिम्मेदार हैं। बॉस्टन शहर में अलकायदा सदस्यों और उनके हमदर्दों के घरों में छापे लगने शुरू हो चुके थे। समाचार जारी रहेंगे।"

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –10

(10)

आज की घटना ने आफिया को इतना डरा दिया कि वह चीख चीखकर रोने लगी। अमजद उसकी हालत देखकर काम पर नहीं गया। आफिया निरंतर मित्रों को फोन कर रही थी और नई उपज रही स्थिति के विषय में जानकारी ले रही थी। मगर उसका भय वैसे ही कायम था। दोपहर ढलने से पहले ही समाचार आने लग पड़े कि आधे से अधिक आतंकवादी जिन्होंने आज के इन क्रूर कारनामों को अंजाम दिया है, उनकी पहचान हो चुकी है। पहचाने जाने वालों में सबसे पहला मुहम्मद अट्टा था जो कि बॉस्टन का रहने वाला था। पुलिस ने छापामारी तेज़ कर दी। जिस किसी के बारे में यह पता चलता कि इसके संग आतंकवादी का परिचय रहा है, उसे गिरफ्तार कर लिया जाता। यहाँ तक कि जिन होटलों में वे लोग रातों को रुके थे, उन सभी को छानबीन के लिए बंद कर दिया गया और कर्मचारियों को पकड़ लिया गया। यह सब सुनकर आफिया ज़ोर-ज़ोर से रोती हुई बोलने लगी, “अमजद जितना जल्दी हो सके हमें पाकिस्तान चले जाना चाहिए। यहाँ अपनी जान को खतरा है।“

“खतरेवाली इसमें क्या बात है। अपनी तरह यहाँ और बहुत से मुसलमान रहते हैं। वे क्या सभी अतिवादी हो गए। जिन्होंने ये अमानवीय कारनामा किया है, खतरा उनको या उनके हमदर्दों को है। तू यूँ ही न घबरा।“

“तुम मेरी बात समझने की कोशिश करो, बाद में पछताओगे। अभी भी मौका है कि यहाँ से शीघ्र चले जाएँ।“

“पर हम क्यों भाग जाएँ ? हमने कौन-सा कोई गलत काम किया है ?“

“मुझे पता चला है कि अमेरिकी, मुसलमानों के बच्चों को किडनेप करेंगे।“

“तुझसे यह बात किसने कही है ?“

“बस, किसी से पता चला है, तभी तो कह रही हूँ कि मुसीबत आने से पहले निकल चलें।“

“आफिया, मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तू इतनी घबरा क्यों रही है। इस तरह हम बना-बनाया घर और अपनी पढ़ाई वगैरह बीच में ही छोड़कर कैसे जा सकते हैं।“

“इसका मतलब तुम मेरी बात नहीं मानोगे ?“ आफिया गुस्से में कांपने लगी।

“तू मुझे अपनी बात अच्छी तरह से समझा। तू तो बग़ैर सिर-पैर की बातें किए जा रही है।“

“अच्छा, करो अपनी मर्जी। जब भुगतोगे तो खुद पता लग जाएगा।“ आफिया पैर पटकती सीढ़ियाँ चढ़ गई। ऊपर जाकर उसने सुहेल, सुलेमान, मार्लेन और अन्य कई मित्रों को फोन किए। पर किसी का भी फोन न लगा। सबके फोन बंद थे। आफिया का दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। फिर उसने किसी ऐसी सहेली को फोन किया जिसका जिहाद से कोई वास्ता नहीं था, पर वैसे वह इस तरह की बातों की काफ़ी जानकारी रखती थी। वह सउदी अरब की रहने वाली थी।

“आफिया, तू इतनी अपसेट क्या हो रही है। फिर क्या हो गया अगर हम मुसलमान हैं तो। लेकिन हम सबके साथ हैं।“ उसने आफिया को ढाढ़स बंधाया।

“तू मेरी असली बात नहीं समझ रही। अगर नुकसान कराकर यहाँ से निकले तो फिर क्या फायदा हुआ।“

उसकी बात सुनकर सहेली सोच में पड़ गई। उसको लगा कि आफिया हद से अधिक डरी हुई है। वह कुछ सोचते हुए बोली, “आफिया, तू यही चाहती है न कि यहाँ से जल्दी निकल जाए।“

“हाँ, बिलकुल।“

“पर, यह भी नहीं हो सकता, क्योंकि अभी तो अमेरिका का सारा एअरस्पेश बंद पड़ा है। न कोई फ्लाइट अंदर आ रही है, न ही कोई यहाँ से बाहर जा रही है।“

“पर मुझे पता चला है कि एक ख़ास फ्लाइट जा रही है।“

“आफिया, वो फ्लाइट तो बहुत गुप्त तौर पर यहाँ से जा रही है। काग़ज़ों में उसका कहीं जिक्र नहीं है। तुझे पता नहीं कैसे उसके बारे में पता चला गया, वरना तो...।“

“तू क्या कोशिश करके मुझे उस फ्लाइट पर सीट नहीं दिलवा सकती ?“ सहेली की बात बीच में ही काटती हुई आफिया बोली।

“नहीं, यह मुमकिन नहीं है। उस फ्लाइट पर सिर्फ़ सउदी अरब के वही बाशिंदे जा रहे हैं जिनके सउदी अरब की अंबेसी से गहरे संबंध हैं। सउदी अंबैसडर नहीं चाहता कि कल को उसका कोई बाशिंदा इस प्लाट में फंस जाए। तुझे पता ही है कि हाईजैकरों में आधे से अधिक तो सउदी अरब के हैं। उस फ्लाइट के बारे में तू भूल ही जा।“

आफिया की अन्तिम उम्मीद भी खत्म हो गई। इसके बाद उसने अमजद से कोई बहस न की। उदास बैठी वह टी.वी. पर चल रही ख़बरें देखती रही। हर पंद्रह-बीस मिनट के बाद किसी न किसी के पकड़े जाने का समाचार आ रहा था। उसकी सहेली मार्लेन का पति अनवर अल मीराबी भी गिरफ्तार कर लिया गया। उसकी गिरफ्तारी की ख़बर सुनते ही वह कांपने लगी। क्योंकि उसको याद था कि दो सप्ताह पहले ही वह वापस हूस्टन जाते समय उसके घर आए थे। अमजद, आफिया के अंदर चल रही बातों से अनभिज्ञ सिर्फ़ यही समझता हुआ कि वह बेचारी कुछ अधिक ही डर गई है, उसको शांत करने का प्रयत्न कर रहा था। आफिया अमजद के साथ कोई बात नहीं कर रही थी। वैसे वह अपने तौर पर वापस जाने की कोशिश कर रही थी। फिर, यह उसकी कोशिशों का नतीजा ही था कि 17 सितंबर को जिस दिन अमेरिकी एअरस्पेश पहली बार खुला तो आफिया अपने दोनों बच्चों सहित पाकिस्तान को जाने वाली फ्लाइट में बैठी हुई थी। उसको बड़ा अफसोस था कि अमजद उसके साथ जाने के

लिए राज़ी नहीं हुआ था। साथ ही, उसका दिल भी तेज़ी से धड़क रहा था। मगर जब जहाज़ उड़ा तो उसका सारा डर जाता रहा और उसका मन दूसरी तरफ चला गया। उसकी सोच के मुताबिक आख़िरी लड़ाई शुरू हो चुकी थी। जिहादियों के अनुसार यह वो लड़ाई थी जिसमें सब काफ़िर मारे जाएंगे और पीछे सिर्फ़ इस्लाम का झंडा सारी दुनिया पर फहरेगा। उसको सारे रास्ते इसी खुशी में पलभर भी नींद नहीं आई। वह सोचती जा रही थी कि इस्लामी देशों में ख़ास तौर पर पाकिस्तान में तो इस वक़्त जिहाद बड़े स्तर पर लड़ा जा रहा होगा। लोग सब कुछ भूलकर जिहाद में शामिल हो चुके होंगे। पर जब वह कराची एअरपोर्ट पर उतरी तो वह बड़ी हैरान हुई। वहाँ तो लोग अपने अपने कामकाजों में व्यस्त थे। लगता था कि किसी को परवाह ही नहीं थी कि अमेरिका में क्या हुआ है। उसका दिल टूट गया। उसको अमजद परिवारवाले एअरपोर्ट पर लेने आए थे। घर जाते समय वह और अधिक हैरान हुई जब अमजद के घरवालों ने ट्विन टॉवरों के ढह जाने वाली बात एकआध बार ही छेड़ी और फिर अन्य बातें करने लगे। अमजद के घरवाले उसके आने पर अधिक खुश भी नहीं थे। अमजद ने उन्हें फोन पर बता दिया था कि कैसे आफिया उसकी बात न मानते हुए सिर्फ़ हालातों से डरकर अमेरिका छोड़ रही है। इससे पहले घरवाले काफी देर से कहते आ रहे थे कि अमजद और आफिया एक बार आकर मिल जाएँ और बच्चों को मिलवा जाएँ। परंतु उन्होंने कभी परिवार वालों की बात नहीं सुनी थी। आज आफिया एकदम ही आ पहुँची। मगर फिर भी खुश थे कि चलो, इस बहाने वे अपने पोता-पोती के साथ कुछ दिन बता सकेंगे।

खान परिवार एक शांत और अपने मज़हब को मानने वाला प्रतिष्ठित परिवार था। उन्होंने ज़िन्दगी में मेहनत करके यह मुकाम हासिल किया था कि उनके बच्चे विदेशों में पढ़ते थे और अच्छे ओहदों पर थे। अमजद का पिता आगा नईम खां इस वक़्त रिटायर्ड जीवन व्यतीत कर रहा था। उसकी पत्नी जाहिरा खां की घर में अच्छी चलती थी। पूरा परिवार संयुक्त परिवार के तौर पर रता था। नईम खां यद्यपि राजनीतिक नहीं था, पर उसकी सूझ-बूझ गहरी थी। घर में अमेरिका में आतंकवादियों द्वारा किए गए हमलों की चर्चा हुई थी, पर एक हद तक। परिवार ने कट्टरवादियों के इस कदम की निंदा की थी कि निर्दोषों को मारने से क्या प्राप्त होगा। मगर जब आफिया घर पहुँची तो उसने नाइन एलेवन की घटना को बहुत ही अचम्भे से बयान करना शुरू कर दिया। वह उसकी निंदा नहीं कर रही थी, बल्कि वह इस काम को करने वालों के हक़ में बोल रही थी। वह लगातार इसी घटना के बारे में बोले जा रही थी। परिवार वालों को उसको इस प्रकार उत्साहित होना अच्छा न लगा। पर फिर जाहिरा खां ने सभी को समझाया कि यह शायद उस घटना के कारण सदमे में है इसलिए इस तरह की बातें कर रही है। जब उसने बोलना बंद किया तो नईम खां थोड़ा ताव खाकर बोला, “आफिया बेटी, तुझे पता है कि अब क्या होगा ?“

“होना क्या है। बस, जिस दिन का एक मुद्दत से इंतज़ार था, वह आ चुका है। इन काफ़िरों का सफाया हो जाएगा और अल्लाह के बंदों की जीत होगी।“

“नहीं, ऐसा कुछ नहीं होगा। जो कुछ होगा, वह मुझे दिखाई दे रहा है।“

“वो क्या ?“ आफिया ने माथे पर बल डालकर पूछा।

“अब अमेरिका, अफगानिस्तान पर चढ़ाई करेगा। क्योंकि यह नाइन एलेवन का कारा करवाने वाला वहाँ पनाह लिए बैठा है। वहाँ अमेरिका अकेला नहीं होगा। सारी दुनिया उसके साथ होगी। ख़ास तौर पर पाकिस्तान ने तो ऐलान भी कर दिया है कि वह अमेरिका का साथ देगा।“

“यही तो हम चाहते हैं। इसी तरह यह आख़िरी लड़ाई में तब्दील होगी। यही अल्लाह की मर्ज़ी है।“

“तुमने कभी यह भी सोचा है कि इस लड़ाई में नुकसान किसका होगा ?“

“किसका ?“

“अफगानिस्तान की गरीब जनता का, जो पिछले तीस सालों से लड़ाई में घुन की तरह पिस रही है। बड़े लोग अपना खेल खेल रहे हैं, पर गरीबों को कौन पूछता है।“

“जिहाद में आहुति तो देनी ही पड़ती है।“

आफिया जब नईम खां की बातों का जवाब देने से न हटी तो जाहिरा खां ने पति को चुप रहने का संकेत किया। कुछ देर के लिए वह चुप भी हो गया। परंतु जब आफिया फिर भी अपनी ही हांकती रही तो वह दुबारा बोला, “आफिया बेटी, मुझे यह बता कि

तुम इस वक़्त अपने आपको अमेरिका की अपेक्षा यहाँ कैसे सुरक्षित समझते हो ? अमेरिका तुम्हारा देश है। तुम्हारा सब कुछ वहाँ है। और यहाँ तो अब अपने पड़ोस में लड़ाई शुरू होने वाली है।“

“आप इस बात को छोड़िए। जल्द ही अमजद को संदेशा भेजो कि वह जितनी जल्दी हो सकता है, यहाँ आ जाए। वहाँ उसकी ज़िन्दगी को ख़तरा है।“

“किससे ख़तरा है उसकी ज़िन्दगी को ?“

“अमेरिकी सरकार से।“

“वहाँ तो लाखों मुसलमान रह रहे हैं। क्या वे सारे इस नाइन एलेवन के कारनामे के लिए जिम्मेदारी हैं ? नहीं, वे तो आम शहरी हैं। और मैं बता दूँ कि इन आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता।“

“आप किसी को आतंकवादी नहीं कह सकते।“ आफिया भड़क उठी। सभी हैरान रह गए। आख़िर, सभी ने नतीजा यह निकाला कि इस वक़्त शायद सदमे के कारण इसकी दिमागी हालत सही नहीं है। इसलिए इसको आराम करने दिया जाए।

उधर अमेरिका ने अफगानिस्तान के तालिबान लीडर, एक आँख वाले मुल्ला उमर को वार्निंग दे दी कि वह कोई एक रास्ता चुन ले। या तो वह ओसामा बिन लादेन को अमेरिका के हवाले कर दे, या फिर अमेरिकी हमले के लिए तैयार हो जाए। मुल्ला उमर ने किसी की कोई बात नहीं मानी। लड़ाई शुरू होने की शंकाएँ बढ़ गईं। आख़िर 7 अक्तूबर 2001 को अमेरिका ने पहला बम अफगानिस्तान पर फेंकते हुए युद्ध की घोषणा का बिगुल बजा दिया। इस बीच आफिया बहुत अधिक उत्साहित थी। कभी वह किसी कमरे में जाती थी और कभी किसी में। कभी वह कुछ बोलती थी और कभी कुछ। घरवाले उसकी हरकतों से बड़े अवाज़ार हो गए थे। दोपहर के समय सभी खाने की मेज़ पर बैठे तो अमजद के बड़े भाई ने बात प्रारंभ की, “आफिया ऐसी कौन-सी बात है जो तू यूँ अपसेट है। और किस बात पर तुझे यूँ खड़े पैर अमेरिका छोड़ने की बात सूझी ?“

“क्योंकि वहाँ के अमेरिकन लोग मुसलमानों के बच्चे अगवा करने लग पड़े थे।“

“पर मैं तो यह बात तुझसे ही पहली बार सुन रहा हूँ। मेरे और भी कई दोस्त वहाँ हैं, उनमें से तो किसी ने भी बच्चे अगवा करने वाली बात नहीं बताई।“

“तो फिर क्या मैं झूठ बोल रही हूँ ?“

“पर आफिया तेरे अपने भाई और बहन के बच्चे भी तो वहीं हैं। वे तो अपने बच्चों को लेकर नहीं आए।“

“आप सब मुझे बेवकूफ समझते हो ? आपका मतलब इस सबके लिए मैं ही ज़िम्मेदार हूँ ?“ इतना कहते हुए वह उठी और ऊँची आवाज़ में बोलती हुई सीढ़ियाँ चढ़ गई। घरवाले उसका यह व्यवहार देखकर हैरान रह गए। साथ ही, उन्हें अन्य दूसरी बातें भी परेशान कर रही थीं। बड़ी बात थी कि आफिया घर के अंदर भी सिर से पांव तक बुरके में लिपटी हुई थी। उसकी सिर्फ़ आँखें दिखाई देती थीं। जबकि खान परिवार में बुरके को अधिक अहमियत नहीं दी जाती थी। वैसे भी वे सोचते थे कि इतने वर्ष अमेरिका जैसे मॉडर्न देश में रहकर भी वह वही दकियानूसी अंदाज़ में जी रही है। खैर, जब वह बड़बड़ाती हुई सीढ़ियाँ चढ़ गई तो उसकी सास उसके पीछे पीछे गई। काफी देर बाद वह उसको किसी तरह मनाकर वापस खाने की मेज़ पर ले आई। वह आ तो गई, पर उसने बुरका एकतरफ नहीं किया। इसपर जाहिरा खां बोली, “आफिया बेटी, अब तो तू परदा हटा सकती है। यहाँ सब घर के ही लोग हैं।“

“यहाँ बैठे सब लोग शैतान है। किसी को इस्लाम की परवाह नहीं है।“ इतना कहते हुए वह फिर भाषण देने लग पड़ी। इस बीच वह अमजद के घरवालों का अपमान किए जा रही थी कि वे लोग धर्म के बारे मे कुछ नहीं जानते। आख़िर, नईम खां खान की मेज़ पर से उठ खड़ा हुआ। वह अपनी बहू के साथ कोई वार्तालाप नहीं कर सकता था और चुप रहकर उसकी बेहूदगी भरी बातों को भी नहीं सुन सकता था। वह उठकर बाहर चला गया। उसी रात उसने अमजद को फोन करके कहा कि वह शीघ्र वापस आकर अपनी बेगम को संभाले, क्योंकि उसने सारे परिवार का जीना दूभर किया हुआ है। उधर आफिया ने भी अमजद को फोन करके कहा, “अमजद, अब तू आकर फैसला कर ले कि तू शैतानों के साथ रहना चाहता है या फिर मेरे साथ ?“

“आफिया, मेरे इम्तहान में इस वक़्त सिर्फ़ पाँच महीने शेष हैं। यदि मैं अब आ जाता हूँ तो अब तक का किया-कराया सब कुएँ में पड़ जाएगा। तू मुझे अपनी पढ़ाई पूरी कर लेने दे। तब तक तू किसी न किसी तरह एडजस्ट कर।“

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –11

(11)

अमजद दुविधा में फंस गया। उसके घरवाले उसको आने को कह रहे थे। उधर आफिया भी दिन रात उसको आ जाने के लिए फोन किए जा रही थी। आख़िर ऊबकर उसने यूनिवर्सिटी से अनुमति ली और पाकिस्तान के लिए चल पड़ा। जब अमजद घर पहुँचा तो बाकी परिवार उसके आने पर खुश तो हुआ, साथ ही उनको अफ़सोस भी था कि उसकी पढ़ाई का नुकसान हो गया। पर आफिया इतनी खुश थी कि धरती पर उसके पैर नहीं लग रहे थे। उस रात वह अमजद के करीब बैठते हुए बोली, “अमजद, तू बड़े सही मौके पर आया है।“

“क्या मतलब ?“

“मतलब यह कि इस वक़्त सुलेमान अहमर भी यहीं है।“

“कौन सुलेमान ?“ अमजद उसकी बात सुनकर हैरान हुआ।

“तू शायद उससे मिला तो होगा, पर उसको निजी तौर पर नहीं जानता होगा।“

“पर ऐसी क्या बात है कि मैंने अभी घर में पांव रखा ही है और तू कुछ ज्यादा ही उत्साहित हुई फिरती है ?“

“क्योंकि बात ही ऐसी है। जिस समय का मुझे बहुत दिनों से इंतज़ार था, वह वक़्त आ पहुँचा है।“

अमजद बिना कुछ कहे उसकी तरफ देखता रहा तो वह आगे बोली, “सुलेमान अहमर, बोनेवोलैंस इंटरनेशनल संगठन, चिकागो का डायरेक्टर था। अब वह स्थायी तौर पर अमेरिका छोड़ आया है। यहाँ उसने अपनी एक अन्य चैरिटी शुरू कर ली है। जिसके जरिये वह फंड इकट्ठा करके अफगानिस्तान में लड़ रहे तालिबानों की मदद करता है। इसके अलावा, वह नए जिहादियों को भर्ती करके भी अफगानिस्तान भेज रहा है।“

“फिर मैं क्या करूँ ?“ अमजद ने त्यौरी चढ़ाई।

“मैंने उसके साथ तेरे बारे में बात कर ली है।“

“मेरे बारे में ? किस काम के सिलसिले में ?“

“पहले पूरी बात सुन ले, फिर बोलना।“

अमजद कुछ न बोला। वह चुपचाप आफिया के मुँह की ओर देखता रहा तो आफिया फिर से बोलने लगी, “मैंने सारी बातचीत पक्की कर ली है। सुलेमान अहमर तुझे अपने ग्रुप में लेने के लिए राजी हो गया है। तू यहाँ से चलकर बार्डर पर पड़ने वाले बिलोचिस्तान के शहर क्वेटा जाएगा। वहाँ सुलेमान के आदमी तुझे बार्डर पार करवाकर अफगानिस्तान के शहर कलट पहुँचाएँगे। वहाँ के लोकल अस्पताल में सुलेमान ने तेरे लिए काम का इंतज़ाम कर रखा है।“

“आफिया, तेरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया ?“

“क्यों ?“

“तू मुझे यह बता कि मैं क्यों क्वेटा जाऊँ। क्यों मैं बार्डर पार करके अफगानिस्तान जाऊँ। और रही बात अस्पताल में काम करने की, तुझसे मैंने कब कहा कि मुझे नौकरी की ज़रूरत है ?“

“यह काम तू अपनी नौकरी की ज़रूरत पूरी करने के लिए नहीं कर रहा।“

“तो फिर यह सब क्या है ?“

“वो अस्पताल जिहादियों के लिए खोला गया है। वहाँ जाकर तू जिहाद की खिदमत करेगा। जब तू वहाँ पहुँच जाएगा तो मैं भी तेरे पीछे पीछे ही आ जाऊँगी। उसके बाद हम पूरे जोश-ओ-खरोश के साथ जिहाद के लिए काम करेंगे।“

“पर मैं इस राह का राही नहीं हूँ। तुझे मैंने पहले भी कई बार बताया है कि मैं एक अच्छा मुसलमान बनने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं ये डिगरियाँ लेने और पढ़ाई करने अमेरिका जैसे देश में इस कारण नहीं गया कि तालीम हासिल करने के बाद जिहाद जैसे कामों में शामिल होऊँ।“

“अमजद, यह काम तो तुझे करना पड़ेगा।“

“क्यों ? मेरा मतलब है क्यों करना पड़ेगा यह काम मुझे ?“

“क्योंकि तुझे मैं कह रही हूँ। तुझे अपनी बेगम की बात माननी पड़ेगी। यही मज़हब सिखाता है।“

“आफिया, मेरी बात सुन। हो सकता है कि मैं तेरी बहुत सारी बातों से सहमत होऊँ। पर सहमत या असहमत होना और बात है, किसी के खिलाफ लड़ना और। अब तू ही बता कि अमेरिका जिसने मुझे मेडिकल क्षेत्र में इतना आगे बढ़ने का अवसर दिया, जिसने मुझे इतना बड़ा ज्ञान का भंडार दिया है, तू चाहती है कि मैं उसी देश के खिलाफ सिर्फ़ इसी वजह से बंदूक उठा लूँ कि मेरी पत्नी को यह अच्छा लगता है। मेरा दिल तो यह कहता है कि जिस काबिल मुझे अमेरिका ने बनाया है, वो काबलियत मुझे लोगों में बाँटनी चाहिए। डॉक्टर होने के नाते मुझे ज़रूरतमंदों की मदद करनी चाहिए।“

“तूने अमेरिका की तारीफ के पुल तो बांध दिए, पर यह भूल गया कि आज अमेरिका दुनिया में मुसलमानों पर कितने अत्याचार कर रहा है। इस्लाम की जितनी बर्बादी आज अमेरिका कर रहा है, उतनी आज तक किसी ने नहीं की होगी।“

“आफिया, यह राजनीतिक बातें हैं। तूझे पता है कि राजनीति में ऊपर-नीचे होता रहता है। जो शक्तिशाली होता है, वह ज़रा ज्यादा कर जाता है और कमज़ोर कम। कसूर तो हरेक का ही होता है।“

“तू बड़ा फिलॉस्फर बनता है तो मुझे यह बात समझा कि फलस्तिनियों का क्या कसूर है जो इन्हें आज जगह-जगह मारा जा रहा है।“

“आफिया, तू मुझे पहले यह बता कि जो ट्विन टॉवरों में हज़ारों लोग मारे गए, उनका क्या कसूर था ?“ गुस्से में आए अमजद ने भी प्रत्युत्तर में सवाल कर दिया।

“उनमें ज्यादा अमेरिकी ही मरे हैं जो कि यहूदियों के चमचे बनते हैं। हर जगह यहूदियों का समर्थन करते हैं। मैं कहती हूँ कि यहूदी वो कौम है जिस पर कभी भी एतबार नहीं करना चाहिए। जो भी इनका भला करता है, ये उसी की पीठ में छुरा मारते हैं। संसार को इनसे मुक्ति दिलाना बहुत ज़रूरी है।“

“आफिया, एक बात ध्यान से सुन ले कि मरने वाले का कोई धर्म नहीं होता। वह सिर्फ़ और सिर्फ़ इन्सान होता है।“

“मैं इस तरह नहीं सोचती। मुझे फलस्तिनी मरते दिखते हैं तो लगता है कि यह मुसलमान मर रहे हैं। और किसी का मुझे पता नहीं।“

“तुझे फलस्तिनियों के मरने से अफसोस होता है। पर जब वे निर्दोषों को मारते हैं तो तू बोलती तक नहीं।“

“क्योंकि वो अपने अस्तित्व के लिए लड़ रहे हैं। पहल तो यहूदियों ने की थी।“

“टैरेरिज़्म सबसे पहले तेरे इन फलस्तिनियों ने ही शुरू किया था।“

“कब ? क्या कह रहा है तू ?“

“यह कैसे हो सकता है कि तू इस बारे में जानती न हो। पर फिर भी जितना मुझे मालूम है, बता देता हूँ। यह 1972 में आयोजित समर ओलम्पिक खेलों के समय घटित हुआ था। दुनिया भर के खिलाड़ी ओलम्पिक गाँव में ठहरे हुए थे। तब सिक्युरिटी भी इतनी नहीं हुआ करती थी क्योंकि तब आतंकवादी घटनाएँ होती ही नहीं थीं। पर फलस्तिनियों जिहादियों ने इसी बात का लाभ उठाया और अवसर पाकर ओलम्पिक गाँव में दाख़िल हो गए। सवेरे करीब चार बजे का समय था और सब सोये हुए थे। फलस्तिनियों ने इज़राइल की टीम की निशानदेही पहले ही की हुई थी। वह सबसे पहले उनके कमरों में जा पहुँचे जहाँ इज़राइली टीम ठहरी हुई थी। एकदम हमला करके उन्होंने इज़राइलियों को बंदी बना लिया। इन बंदी बनाये लोगों में एथलीट, कोच और अन्य मेंबर शामिल थे। वहाँ उनको बंदी बनाकर किसी दूसरी बिल्डिंग में ले गए। ख़ैर, उसके बाद मारा मारी हुई। दोनों धड़ों के लोग मारे गए। पर मेरा यह बात बताने का मतलब सिर्फ़ इतना ही है कि फलस्तिनियों ने कैसे आतंकवादी कार्रवाई शुरू की थी।“

“कोई बात तो होगी जो फलस्तिनियों को यह कदम उठाना पड़ा।“

“वे इज़राइल की जेलों में से अपने सज़ायाफ्ता क़ैदियों को छुड़वाना चाहते थे।“

“अपने हक लेने के लिए सबकुछ करना जायज़ है।“

“इज़राइल भी तो अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए ही लड़ रहा है। इस तरह देखें तो हर एक का अपना नज़रिया है।“

“तू कब से इज़राइल भक्त बन गया ?“ आफिया ने गुस्से में त्यौरियाँ चढ़ाईं।

“मैं इस मारा मारी के हक में नहीं हूँ। कुछ न कुछ ले देकर यह मसला सुलझाया जा सकता है। यहूदियों का भी बहुत नुकसान हुआ है। दूसरी बड़ी जंग के समय हिटलर ने साठ लाख यहूदी मारे थे।“

“यह सब झूठ है। मेरे ख़याल में कोई हालोकास्ट हुआ ही नहीं। यहूदियों ने संसार की हमदर्दी प्राप्त करने के लिए ऐसी बातें अपने मन से घड़ी हैं। यह सब बकवास है।“

“ओह, कम ऑन आफिया। तू एक साइंटिस्ट होकर कैसी बातें कर रही है। मैं तो हैरान हूँ कि तू कुछ भी बोली जा रही है।“

“चल, तू मेरी सारी बातों को बकवास समझ, पर मेरी आख़िरी बात का जवाब दे।“ आफिया असली मुद्दे की ओर मुड़ आई।

“कौन-सी असली बात ?“

“तू मुझे यह बता कि क्वेटा के लिए कब कूच कर रहा है ? क्या मैं आज रात तेरी सारी तैयारी कर दूँ। आगे वहाँ से अफगानिस्तान जाने में भी कई दिन लग जाएँगे।“

“तू तो ऐसे बात कर रही है जैसे मैं जाने के लिए तैयार ही बैठा होऊँ। आख़िरी बात, मैं कहीं नहीं जाऊँगा।“

“जाना तो तुझे पड़ेगा। तू मेरी बात नहीं टाल सकता। मैं तेरी घरवाली हूँ। तेरी दुख-सुख की साथिन।“

अमजद ने ध्यान से आफिया की ओर देखा। इस वक़्त आफिया की आँखों में मोह झलक रहा था। उसको भी आफिया पर प्यार आया। वह उसके करीब होता हुआ उसको अपनी बाहों की जकड़ में लेता हुआ बोला, “आफिया, अपने दो प्यारे-प्यारे बच्चे हैं। अपनी बढ़िया ज़िन्दगी है। मुझे यह भी पता है कि हम एक दूजे को बेइंतहा मुहब्बत करते हैं। एक-दूजे के बग़ैर एक पल नहीं रह सकते। मैं चाहता हूँ कि हम अल्लाह की दी हुई इस रहमतोंभरी ज़िन्दगी का आनन्द उठाएँ। तू प्लीज़ इस जिहाद वाली बात को भूल जा।“

“अमजद, तेरी सभी बातें सही हैं। तू मुझे दुनिया की हर शै से प्यारा है, पर जिहाद मेरे लिए अल्लाह का एक पाक काम है। उसके लिए मैं कुछ भी कुर्बान कर सकती हूँ।“

अमजद चुप हो गया। वह समझ गया कि यह इसके साथ बात करने का सही समय नहीं है। वह यह भी जानता था कि यह हद से ज्यादा जिद्दी है। जो बात एक बार कह दे, उससे पीछे नहीं हटती। उस वक़्त उसने फिर सोचने का कहकर बात बदल ली। रात गुज़र गई। पर अमजद को सारी रात एक पल भी चैन नहीं पड़ा। उसको कोई राह नहीं सूझ रहा था। वह आफिया को नहीं छोड़ सकता था और आफिया जिहाद को नहीं। आख़िर सुबह के समय उसको ख़याल आया कि इस्लाम यह भी कहता है कि मुश्किल के समय घर के बड़े-बुजुर्गों की मदद लेनी चाहिए। वह अपने बड़े भाई के पास चला गया और उसके साथ हिचकिचाते हुए बात की, “भाई जान, मैं तो मुसीबत में फंस गया हूँ। मेरी रहनुमाई करो।“

“क्यों अमजद, क्या हुआ ?“

इस पर अमजद ने सारी बात बता दी कि कैसे आफिया उसको जिहाद में जाने के लिए मज़बूर कर रही है और उसके पास पत्नी की बात मान लेने के सिवा और कोई चारा भी नहीं है। उसकी बात सुनकर भाई के तो होश ही उड़ गए। उसने स्वयं कोई बात नहीं की, बल्कि वह अमजद की बांह पकड़कर सीधा अपने अब्बा के पास ले गया और

उसको सारी हुई-बीती सुना दी। नईम खां भड़कता हुआ बोला, “अमजद, यह क्या बकवास है ? क्या तुझे अच्छी तालीम यही सिखाती है कि तू ऐसे उल्टे काम करे ?“

“अब्बू आफिया कहती है कि...।“

“कौन क्या कहता है, तू यह बात छोड़। तुझे पहले यह सीखने की ज़रूरत है कि जिहाद क्या होता है। हर लड़ाई जिहाद नहीं होती। राजनीतिक लोग अपने निजी स्वार्थों के लिए इस पाक लफ़्ज का हर जगह इस्तेमाल करके नौजवानों को भड़का देते हैं और फिर वे वही करते हैं जो ये राजनीतिक लोग चाहते हैं। मैं तो जिया उल हक के वक़्त से ही कहता आ रहा हूँ कि यह एक राजनीतिक खेल है। पच्चीस साल से भी ऊपर का समय हो गया बेचारे गरीब अफगानिस्तान को इस गंदी राजनीति की बलि चढ़ते हुए। अफगानिस्तान आज मिट्टी का ढेर बनकर रह गया है। और सुनो, यह कहते हैं कि अफगानिस्तान ही एक ऐसा मुल्क है जहाँ सच्चा इस्लामी राज है। पर वहाँ की जनता से पूछकर देख कि उनके साथ क्या घटता है। वे पशुओं से भी खराब हालत में ज़िन्दगी व्यतीत कर रहे हैं। इन उजड्ड लोगों ने उनका जीना दूभर करके रख दिया। अब की जो हालत है, इसके लिए तालिबान जिम्मेदारी हैं। क्योंकि उन्होंने उस कातिल आदमी ओसामा बिन लादेन को अपने मुल्क में पनाह दी हुई है। इस सारे का जिम्मेदारी वही है और उसकी सज़ा भुगत रहा है, अफगानिस्तान का गरीब आदमी।“

“पर अब्बू, मुझे क्या हुक्म है ?“ अमजद डरता हुआ बोला।

“तू भूल जा इन बातों को और अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे।“

अमजद ऊपर गया और उसने आफिया को बता दिया कि उसके अब्बू ने जिहाद में जाने से मना कर दिया है।

“पर तू उसकी सलाह लेने गया ही क्यों ?“ आफिया ऊँचे स्वर में बोली तो नीचे खड़े नईम खां को उसकी आवाज़ सुनाई दे गई। उसके पूरे बदन में आग लग गई। पर वह फिर भी ज़ब्त में रहा। अमजद सीढ़ियाँ उतरने लगा तो नईम खां ने ऊँची आवाज़ में कहा, “अमजद, अगर तू वहाँ गया तो फिर कभी इस घर में पैर न रखना।“

अपने ससुर की यह बात सुनकर आफिया हवा की तरह नीचे उतरी और आते ही अमजद के गिरेबान में हाथ डालकर तेज़ आवाज़ में बोली, “अभी फैसला कर। या अपने माँ-बाप के साथ रह या मेरे साथ।“

अमजद कुछ न बोला तो आफिया और अधिक गुस्से में आ गई। वह फिर चिल्लाई, “ठीक है अगर तूने मेरी बात नहीं माननी तो मुझे अभी तलाक दे। समझा तू ? तलाक दे मुझे। अभी इसी वक़्त।“

फिर वह चीखती-चिल्लाती ऊपर कमरे में चली गई। घर में मुकम्मल चुप पसर गई। आख़िर नईम खां ने अपनी बेगम को कहा कि अगर ये मियाँ-बीबी और कुछ दिन अपने साथ रहे तो ज़रूर इनका तलाक हो जाएगा। हम ऐसा करें कि इन्हें अपने से दूर रहने दें। तब तक इनका आपसी फर्क भी मिट जाएगा और शायद हालात कुछ और ही करवट ले लें। इसके बाद उनके जाने का इंतज़ाम कर दिया गया। अमजद बच्चों और आफिया को लेकर इस्लामाबाद की ओर चल पड़ा। आफिया का कहना था कि अगर जाना ही है तो वह अपने मामा एच.एस. फारूकी के पास इस्लामाबाद जाना पसंद करेगी। शाम तक वे फारूकी के पास पहुँच गए। कुछ दिन आराम से गुज़रे कि एक दिन आफिया फिर नई स्कीम लेकर अमजद के सामने आ खड़ी हुई।

“अमजद, कश्मीर और अफगानिस्तान की पहाड़ियों के बीच पड़ने वाले बालकट शहर में आजकल जैशे मुहम्मद का कैम्प चल रहा है।“

“क्या !“ अमजद को बात समझ में नहीं आई। वह हैरान होता हुआ बोला, “यह जैशे मुहम्मद किस शै का नाम है ?“

“तुझे पता ही होगा कि दिसंबर 1999 में कुछ जिहादी, इंडियन एअरलाइन्ज़ जहाज अगवा करके काबुल ले गए थे। उन्होंने यह सब अपने लीडर मौलाना मसूद अजहर को छुड़वाने के लिए किया था जो कि उस वक़्त इंडिया की जेल में बंद था। वो आपरेशन सफल रहा और मौलाना मसूद अजहर को छुड़वा लिया गया। बाद में मसूद ने यहाँ आकर एक नया संगठन बना लिया। उसी का नाम जैशे मुहम्मद है। जैशे मुहम्मद वालों के कैम्प इन पहाड़ियों में हैं। इनके परिवार भी इनके संग ही रहते हैं।“

“पर ये क्या करते हैं ?“

“ये जिहाद लड़ते हैं।“ आफिया ने यह बात कही तो अमजद का मुँह कसैला हो गया। उसने सोचा कि जिस बात से डरता वह यहाँ आया है, वही बात फिर सामने आ खड़ी हुई है। वह कुछ देर सोचता रहा तो आफिया बोली, “हम वहाँ चलते हैं। तू वहाँ अस्पताल में काम करना और मैं जिहादियों के बच्चों के लिए स्कूल चला लूँगी।“

अमजद फिर भी कुछ न बोला। आख़िर उसको एकाएक एक विचार कौंधा और वह आफिया से बोला, “हम यूँ करते हैं कि पहले एबटाबाद चलते हैं। वहाँ से बालकट कुल मिलाकर पाचेसेक मील होगा। वहाँ जाकर देखेंगे कि आगे क्या करना है।“

आफिया खुशी-खुशी तैयार हो गई। उसको लगा कि अमजद सही राह पर आता जा रहा है। अगले दिन वह एबटाबाद चले गए। रात के समय वे किसी होटल में ठहरे। रात भर आफिया भविष्य की योजनाएँ बनाती रही। अगली सवेर अमजद ने अपनी योजना बताई, “आफिया, मैं यहाँ किसी अस्पताल में नौकरी कर लेता हूँ। बच्चों को हम यहाँ के मशहूर मिशनरी स्कूल में पढ़ने के लिए दाख़िला दिला देते हैं। हर इतवार हम बालकट जाकर जैशे मुहम्मद का कैम्प अटैंड कर आया करेंगे। एक तो हम उनके बारे में कुछ सीख लेंगे, और साथ ही यहाँ तब तक हम सैट हो जाएँगे। फिर अगर तू चाहेगी तो हम पक्के तौर पर वहाँ चले जाएँगे।“

“जैसे तेरी मर्ज़ी।“ आफिया चुप-सी हो गई। मगर उसको लगा कि शायद इस तरह वह अमजद को मना ही ले।

अगली सुबह आफिया उठते ही बोली, “अमजद, सारी रात बम धमाके होते रहे हैं, तूने सुने ही होंगे ?“

“आफिया, यह शहर फौज का बहुत बड़ा केन्द्र है। ऐसा होना यहाँ कुदरती है। कोई ट्रेनिंग वगैरह चल रही होगी।“

“नहीं, यह वो धमाके नहीं। ये तो उन बमों के धमाके हैं जो अमेरिकी हवाई हवाज़ अफगानिस्तान में फेंक रहे हैं।“

“हो सकता है, तेरी बात सच हो।“

“मैं तो रात में एक पल भी नहीं सो सकी। सारी रात यही सोचती रही कि अमेरिकी हमारे मुसलमान भाइयों को किस तरह मार रहे हैं।“

“युद्ध में तो ऐसा होता ही है। दोनों ओर की फौजें एक दूजे को मारती ही हैं।“

“मुझे तो यह सोच सोच कर ही अफसोस हुआ जा रहा है कि यह कुछ ही मील दूर बार्डर के पार जिहाद चल रहा है और हम उसमें शामिल नहीं हो सकते।“

अमजद ने उसकी बात का कोई उत्तर न दिया तो वह पुनः बोलने लगी, “अमजद, मैं बच्चों को किसी मिशनरी स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं भेजूँगी। और न ही तुझे यहाँ कोई नौकरी करने की ज़रूरत है।“

“फिर मैं यहाँ निठल्ला घूमता क्या करूँगा ?“

“हम आज ही जैशे मुहम्मद के कैम्प चलते हैं। वहाँ जो काम मिलेगा, कर लेंगे।“

“आफिया, मेरी बात ध्यान से सुन ले कि मैं यह काम नहीं करूँगा।“ अमजद ने दो टूक जवाब दे दिया।

“क्यों नहीं करना ? अब तो हम जिहादियों के बिल्कुल करीब बैठे हैं। बस, दो घंटों का रस्ता है। चल उठ, चलें। मैं बच्चों को तैयार करती हूँ।“ आफिया शांत होकर बोली।

“आफिया, तुझे एक बार कही बात समझ में नहीं आती ? मैं तुझे आख़िरी बार बता रहा हूँ कि मैं किसी जिहाद में हिस्सा नहीं लूँगा।“ अमजद भड़क उठा।

इसके पश्चात दोनों के बीच बहस शुरू हो गई। मगर आज आफिया अमजद को मारने के लिए नहीं बढ़ी। वह पता नहीं किस दुनिया में गुम थी। वह अंदर जाकर बैड पर लेट गई। अमजद बैठा सोचता रहा कि वह क्या करे। आख़िर उसके मन ने कहा कि वह कहीं भी चला जाए और कुछ भी कर ले, पर आफिया तब तक खुश नहीं होगी जब तक वह जिहाद में शामिल नहीं हो जाता। उसने एकदम वापस लौटने का फैसला कर लिया। उसने आफिया को उठाया। वह जली-भुनी उसके साथ कार में बैठ गई और वे वापस चल पड़े। घर आकर जब अमजद ने सभी को आफिया की जैशे मुहम्मद वाली बात बताई तो उसका पिता बहुत ही चिंतित होते हुए बोला, “कहीं यह न हो कि हम देखते ही रह जाएँ और पता तब चले जब यह आतंकवादियों के किसी गिरोह से जा मिलें।“

“अमजद के अब्बू, फिर इसका क्या इलाज है ?“ जाहिरा खां उदास लहजे में बोली।

“तुम अमजद को मेरे सामने बुलाओ।“

अमजद को बुलाया गया। वह यहाँ अकेला ही आया था। एबटाबाद से लौटते हुए आफिया बच्चों को लेकर मायके चली गई थी। अमजद आया तो नईम खां कठोर लहजे में बोला, “अमजद, तू तुरंत फ्लाइट लेकर अमेरिका रवाना हो जा।“

“और अब्बू, आफिया ?“

“फिलहाल तू सब कुछ भूल जा और वहाँ जाकर अपनी पढ़ाई पूरी कर। बाद में देखते हैं कि क्या होता है।“

अमजद ने अगले दिन की ही टिकट ले ली। इसके बाद उसने आफिया को फोन करके इतना ही बताया कि यूनिवर्सिटी की पढ़ाई के कारण वह वापस जा रहा है और कल

शाम की उसकी फ्लाइट है। अगले दिन आफिया बच्चों सहित उसको एअरपोर्ट पर विदा करने आई। दोनों की बीच कोई ख़ास बात नहीं हुई। आफिया हद से ज्यादा उदास थी।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –12

(12)

अमजद अमेरिका आ तो गया, पर उसका आफिया और बच्चों के बग़ैर ज़रा भी दिल नहीं लगता था। दिन के समय तो काम पर होने के कारण जैसे तैसे समय बीत जाता था, परंतु रात के समय उसको घर काटने को दौड़ता था। कभी उसको बच्चों की किलकारियाँ सुनाई देने लगतीं और कभी आफिया इधर-उधर चलती-फिरती दिखाई देती। एक दिन रात के समय फोन आया। फोन उसकी अम्मी का था। अमजद के फोन उठाते ही जाहिरा खां बोली, “बेटे, मैं जानती हूँ कि तू इस वक़्त किन हालातों में से गुज़र रहा होगा। पर इस सब की मैं ही जिम्मेदारी हूँ।“

“अम्मी, ऐसी बात नहीं है। और फिर तुम क्यों अपने आप को दोष दे रही हो ?“

“क्योंकि आफिया मेरी ही पसंद है। मैंने ही इसे तेरे लिए चुना था। पता नहीं क्या बात हो गई। यह तो बहुत ही जहीन लड़की थी। मेरी तो समझ में नहीं आता कि इसको हो क्या गया है।“

“अम्मी, तू यूँ ही फिक्र न कर।“

इतना कहकर अमजद सोचने लगा कि उसकी माँ ने तो आफिया को कुछ देर या कुछ दिन के लिए देखा होगा, मगर वह तो कितने ही सालों से उसके साथ रहता आ रहा है। और क्या वह खुद उसको अच्छी तरह जानता है। उधर अमजद को फोन पर चुप-सा हुआ देखकर जाहिरा खां बोली, "अमजद बेटे, तू मेरी बात सुन रहा है न ?"

"हाँ-हाँ, अम्मी तू बात कर। मेरा ध्यान तेरी बातों में ही है।"

जाहिरा खां दुबारा बोलने लगी, पर अमजद का ध्यान फिर आफिया की ओर चला गया। उसके मन में ख़याल आया, 'आफिया नाइन एलेवन के बाद एकदम इतना डर क्यों गई थी। वह क्यों खड़े पांव भाग जाने के लिए उतावली पड़ गई थी। फिर वहाँ जाकर वह कुछ दूसरी ही तरह की स्कीमें बनाने लगी। सीधे ही जिहादियों के संग जा मिलने की बातें करने लग पड़ी। और वह बता रही थी कि हमारे विवाह से पहले भी एफ.बी.आई. वाले उसको तलाश रहे थे। यह तो खैर हो सकता है कि उसके चैरिटी के काम के संबंध में वे उसके साथ कोई बातचीत करने आए होंगे।' उसकी मन में चलती बात बीच में ही रह गई जब उधर से माँ की ऊँची आवाज़ उसके कानों में पड़ी, "बेटे तू ऐसा कर कि एक बार आफिया को फोन करके कह दे कि वह तेरे पास आ जाए। औरत को कई बार मानसिक कारणों से बहुत सारे हालातों से गुज़रना पड़ता है। अब वह ठीक हो चुकी होगी। तू मेरे बेटे, उसको अपने पास बुला ले। अल्लाह सब ठीक कर देगा।" माँ ने नसीहतें देकर फोन काट दिया। पर अमजद का मन फिर से पहले चल रही सोचों की ओर चला गया। उसको एक नया ही ख़याल आया और वह सोचने लगा, 'कहीं आफिया यह सब ड्रामा तो नहीं कर रही। हो सकता है कि वह मुझसे अलग होना चाहती हो और सिर्फ़ बहाने घड़ रही हो ताकि मैं उसकी बात से इन्कार कर दूँ और उसको अलग हो जाने का बहाना मिल जाए। हाँ, यही बात है। लगता है कि वह मेरे साथ खुश नहीं है। वैसे उसके बर्ताव से तो लगता है कि वह मुझे बहुत प्यार करती है, मगर हो सकता है कि यह सब दिखावा ही हो।'

खैर, कुछ भी था उसने अपनी माँ की बात मानते हुए आफिया को फोन करने का मन बना लिया। उधर आफिया का पिता देख रहा था कि अमजद के जाने के बाद से आफिया का चेहरा मुरझाये फूल जैसा हो गया था। उसने ढंग से खाना-पीना छोड़ दिया था। सारा दिन उदास-सी बैड पर पड़ी रहती थी। सुलेह सद्दीकी सब समझता था। उसने आफिया को पास बुलाया और उसके सिर पर हाथ फेरता हुआ बोला, "बेटी, मैं ज्यादा कुछ नहीं कहूँगा, बस इतना ही कि औरत का पहला फ़र्ज़ अपना परिवार

बचाना होता है। तुम्हारे बीच सिर्फ़ तनाव है, और कुछ नहीं। मैं तुझे सलाह दूँगा कि तू अमजद के पास चली जा।“

“पर अब्बू, उसने तो जाकर एक बार भी फोन नहीं किया ?“

“बेटी, कई बार इन्सान काम में उलझ जाता है और...।“ वह बात कर ही रहा था कि फोन की घंटी बजी। उसने फोन उठाते हुए हैलो कही तो उसके चेहरे पर रौनक आ गई। वह फोन को आफिया की ओर बढ़ाते हुए बोला, “ले बात कर, अमजद का फोन है।“

आफिया चहक उठी और दूसरे कमरे में जाकर बात करने लगी। आधे घंटे बाद फोन बंद करके वह बाहर निकली तो उसका चेहरा गुलाब के फूल की तरह खिला हुआ था। उसने उसी समय टिकटें बुक करने के लिए कह दिया और तीसरे दिन बच्चों को लेकर अमेरिका के बॉस्टन लोगन इंटरनेशनल एअरपोर्ट पर जा उतरी। अमजद उसको लेने आया खड़ा था। वह घर पहुँच गए। घर आकर आफिया का चेहरा एकदम बदल गया और वह गुस्से में काँपने लगी।

“तूने मुझे इतने दिन फोन भी नहीं किया। तू अपने आपे को समझता क्या है ?“ वह ऊँचे स्वर में बोलती हुए अमजद के गिरेबान को चिपट गई। इधर-उधर खींचती वह उसकी छाती में मुक्के मारने लगी। अमजद ने बिल्कुल विरोध न किया। आख़िर, आफिया थक गई और वह मुक्के मारना छोड़ अमजद की छाती से लिपट गई। अमजद ने उसको अपनी बांहों में जकड़ लिया। आफिया इतना रोई कि अमजद की कमीज़ भीग गई। उसकी आँखों में भी आँसू आ गए। इसके साथ ही उसके मन के अंदर का वह ख़याल कि शायद आफिया बहाने से उससे तलाक लेना चाहती है, कपूर की भाँति उड़ गया।

उधर, अफगानिस्तान में अमेरिका का आतंकवाद के विरुद्ध लड़ा जा रहा युद्ध लम्बा खिंचता जा रहा था। तालिबान सरकार तो पाँच-छह हफ़्तों में ही ढह-ढेरी हो गई थी। पर ओसामा बिन लादेन और उसका समस्त अलकायदा संगठन तोरा बोरा पहाड़ियों के पीछे से होकर पाकिस्तान की ओर निकल चुका था। वहाँ जाकर उन्होंने कराची में अड्डे जमाने प्रारंभ कर दिए। अमेरिका समझ गया था कि अफगानिस्तान

में कच्चे घरों अथवा सूखे पहाड़ों पर बम फेंकने बेकार हैं। जिन्हें पकड़ने के लिए यह सबकुछ किया गया था, वे तो सब बचकर निकल गए। इस कारण अमेरिका युद्ध का मुहाज़ अफगानिस्तान से इराक की ओर मोड़ने के लिए तैयार होने लग पड़ा। तोरा बोरा पहाड़ियों में से भागे अलकायदा के सदस्यों को संभालने वाले पाकिस्तान में बहुत बैठे थे। इनमें से सबसे अधिक सक्रिय बलोची परिवार था। रम्जी यूसफ जो कि 1993 के नॉर्थ टॉवर वाले बम धमाके का आरोपी था, इसी परिवार से था। इस परिवार के अग्रज का नाम था - खालिद शेख मुहम्मद। जिसे सभी उसको निक नेम अर्थात के.एस.एम. से बुलाते थे। जो लोग अलकायदा सदस्यों को संभालने में लगे हुए थे, उनमें स्त्रियों का एक ग्रुप भी था। आफिया की माँ इस्मत भी इसी ग्रुप में काम कर रही थी। इतना ही नहीं, अल बलोची परिवार के कई मेंबर उसके घर मेहमान बनकर ठहर भी चुके थे। जब अफगानिस्तान में से भाग निकले अलकायदा सदस्यों को भलीभाँति संभाल लिया गया तो के.एस.एम. अपनी अगली योजना पर काम करने लगा। वह चाहता था कि जब तक अमेरिका नाइन एलेवन वाली चोट से उभरे, तब तक इससे भी बड़ा झटका अमेरिका को एक और दिया जाए। इस दूसरे हमले के लिए के.एस.एम. ने ऐसे लोगों की खोज शुरू कर दी जो कि पहले ही अमेरिका में रह रहे थे। इसके लिए उसने अमेरिका में अपने सम्पर्कों के माध्यम से ऐसे व्यक्तियों की भर्ती प्रारंभ कर दी। इनमें नए रंगरूटों में होज़े पदीला नाम का एक व्यक्ति पहले अमेरिकन था। वह फ्लोरिडा का रहने वाला था और किसी बड़े गैंग का सदस्य रहा था। उसको समझा-बुझाकर मुसलमान बनाया गया और फिर अलकायदा में लाया गया। प्रशिक्षण के लिए उसको पाकिस्तान ले जाया गया। इस प्रकार आगे से आगे के.एस.एम. को और लोग मिलते चले गए जो कि उसके काम में सहायक हो सकते थे। होज़े पदीला को इस तरफ लाने वाला एडम हुसैन था जो कि बोनेवोलैंस इंटरनेशनल में काम करता था। एडम हुसैन आगे सुलेमान अहमर को जानता था। सुलेमान की आफिया से जान-पहचान थी। यही कारण था कि आफिया बोनेवोलैंस के एक अन्य सक्रिय सदस्य अदनान शुक्रीजुमा के सम्पर्क में आई थी। आफिया के अमेरिका से लौट आने से सभी में फिर से तालमेल होने लगा। जाली ई मेल के ज़रिये अथवा कोई अन्य गुप्त तरीके से ये लोग आपस में सम्पर्क बनाये रखते थे।

जब आफिया वापस आई तो वह कई दिन बहुत बढ़िया मिज़ाज में रही। वह अमजद के साथ बड़ी मुहब्बत से पेश आती थी। अमजद को लगा कि उसके अंदर परिवर्तन हो रहा है। वह खुश था। इसी खुशी के कारण वह अगले इतवार बच्चों को लेकर एक मंहगे होटल में रात ठहरने के लिए चला गया। वहाँ पहुँचते ही आफिया भड़क उठी, “अमजद, तुम्हें शर्म आनी चाहिए। अफगानिस्तान जैसे मुल्कों में हमारे मुसलमान भाई गरीबी से मर रहे हैं और तुम्हें अय्याशी की पड़ी है।“

“आफिया, अय्याशी वाली इसमें क्या बात है। मेरी कमाई के पैसे हैं। मैं किसी गलत जगह पर नहीं खर्च कर रहा। मैं अपने परिवार की खुशी के लिए खर्च कर रहा हूँ। यह मेरा हक भी है कि हलाल की कमाई से अपने बच्चों को ज़रा बाहर घुमा फिरा दूँ।“

“तुझे कभी समझ नहीं आ सकती। मैं यहाँ नहीं रहूँगी। चल, घर वापस चलें।“

आफिया वहाँ न रुकी और अमजद को साथ लेकर घर लौटकर ही उसने साँस लिया। अमजद परेशान हो गया। उसने सोचा था कि पुरानी कड़वाहटें भूलकर नई ज़िन्दगी शुरू करेगा, पर आफिया तो वहीं अटकी हुई थी। फिर कुछ दिनों बाद अमजद ने उससे कहा कि बच्चों को अब स्कूल भेजने का समय है। अब तो इन्हें प्री-स्कूल जैसी क्लासों में डाल दें तभी कहीं ये दूसरे स्कूलों में जाने योग्य हो सकेंगे। परन्तु आफिया ने जवाब दिया कि अभी वह उन्हें स्कूल नहीं भेजेगी। वह घर में ही उन्हें मज़हबी शिक्षा देगी। अमजद मनमसोस कर रह गया। कुछ दिनों के बाद अमजद एक दिन जल्दी घर आया तो वह बड़ा हैरान हुआ। आफिया टी.वी. पर वो कुछ देख रही थी जो कि जंग के मैदान में हो रहा था। आसपास मारा मारी हो रही थी। समीप ही लाशों के ढेर लगे हुए थे। अमजद से यह सब देखा न गया। पर जब उसने देखा कि आफिया ने बच्चों को भी अपने करीब बैठा रखा है तो उसके सब्र का प्याला छलक गया। वह गुस्से में आकर बोला, “आफिया, यह क्या है ?“

“क्यों, क्या हुआ ? जो सच है, वह सच है। फिर उसको देखने में क्या हर्ज़ है।“

“बात यह नहीं है। बात यह है कि तू इन बच्चों को इतनी ख़तरनाक घटनाएँ दिखा रही है। इनके मन पर क्या असर पड़ेगा।“

“मैं तो चाहती हूँ कि इनके मन पर असर पड़े। ताकि ये बड़े होकर तेरी तरह अमेरिकी भक्त न बनें।“

“यह सही नहीं है। और फिर मैंने अमेरिकी भक्त बनने वाली क्या बात कर दी ?“

“तुझे अपनी नौकरी करने और पैसा बनाने तक ही मतलब है। तुझे इस बात से कोई सरोकार नहीं है कि आसपास मुसलमानों के साथ क्या हो रहा है।“

“अब मुसलमानों के साथ क्या अलग होने लग पड़ा जो तू आज इतनी संजीदा हुई बैठी है?“

“अमेरिका, इराक पर हमला करने की तैयारी कर रहा है।“

“यह तो एक दिन होना ही था।“

“क्यों ? क्यों होना था यह एक दिन ? सिर्फ़ इसलिए कि अमेरिका दुनिया में सबसे अधिक शक्तिशाली है ?“ आफिया के माथे पर बल पड़ गए।

“नहीं, यह बात नहीं है। तू याद कर, जब 1991 में पहली इराक जंग डज़र्ट स्ट्रोम खत्म हुई थी तो जंगबंदी अहदनामे में यह मद शामिल थी कि इराक अपने बायलोजिकल और केमिकल हथियार खत्म करेगा। पर वो उसने खत्म ही नहीं किए और न ही करना चाहता है।“

“जब इराक ने कह दिया है कि उसके पास इस किस्म के हथियार है ही नहीं तो बात खत्म हो जानी चाहिए।“

“वो झूठ बोल रहा है। उसके पास ये सारे हथियार हैं।“

“तेरे पास क्या सबूत है ?“

“यह तो तुझे भी पता ही है कि इरान-इराक युद्ध आठ दस साल चलता रहा। पर जब खत्म होने पर आया तो एक दिन में ही खत्म हो गया। ऐसा पता है, क्यों हुआ था ?“

“क्यों ?“

“क्योंकि इराक ने युद्ध के मैदान में केमिकल हथियारों का प्रयोग किया था। हज़ारों इरानी फौजी मोर्चों में बैठे बैठे ही सदा की नींद सो गए। इस कारण विवश होकर इराक को लड़ाई बंद करनी पड़ी थी। सबको पता है कि इराक के पास अभी भी वो हथियार हैं। उनका इस्तेमाल करके वह लाखों लोगों को मौत के घाट उतार सकता है। साथ ही, यह फैसला यू.एन.ओ. का है न कि अमेरिका का कि इराक को उन घातक हथियारों से मुक्त किया जाए।“

“यह तो सब बहाने हैं। असली मसला तो कुछ और है।“ आफिया उसकी किसी बात से सहमत नहीं हो रही थी।

“असली बात क्या है तू बता फिर ?“

“अमेरिका, इज़राइल को महा इज़राइल बनाने के लिए उसके करीबी मुल्कों को खत्म करके सबको इज़राइल में शामिल कर देगा। सारे अरब मुल्क खत्म हो जाएँगे। अकेला इज़राइल रह जाएगा और अरब के सारे तेल भंडारों पर अमेरिका का कब्ज़ा हो जाएगा।“

“यह मुमकिन नहीं है। यह सब कोरी अटकलें हैं।“

“क्यों मुमकिन नहीं है। पहले भी यही कुछ तो हुआ था।“

“पहले कब ?“

“जब यह सो-कॉल्ड इज़राइल बना था। तब भी ऐसी ही जबरदस्ती की गई थी।“

“मैं जानता हूँ कि तू क्या कहना चाहती है, पर मैं उस बात को भी अलग नज़रिये से देखता हूँ। तब इज़राइल नाम का कोई देश नहीं था। सिर्फ़ फलस्तीन नाम का देश था जो कि उस वक़्त अंग्रेजों का गुलाम था। फलस्तीन के यहूदी अधिक अधिकारों वाला सूबा मांगते थे। क्योंकि उन्होंने देख लिया था कि अपने घर के बग़ैर उनका अस्तित्व कायम नहीं रह सकता। दूसरी बड़ी जंग के समय ही हिटलर ने आधे से ज्यादा यहूदी आबादी खत्म कर दी थी। उन्होंने जद्दोजहद करके अधिक अधिकारों वाला सूबा इज़राइल, फलस्तीन के अंदर ही ले लिया। जब अंग्रेज चले गए तो सारे अरब देशों ने मिलकर उस पृथक सूबे इज़राइल में से यहूदियों को भगाने की मुहिम शुरू कर दी। पर यहूदियों को इस बात का पहले ही अहसास था कि ऐसा होगा। उन्होंने भी अपनी तैयारी की हुई थी। जब हालात अधिक खराब हो गए तो अरब मुल्कों ने एकत्र होकर यहूदियों के खिलाफ़ मोर्चा खोल दिया। तू तो जानती ही है कि यह 1948 की इज़राइल-अरब देशों की पहली लड़ाई की बात है। उस लड़ाई में अरब मुल्क हार गए। फिर इज़राइल ने अपने आप को तगड़ा करना शुरू कर दिया। क्योंकि उसको पता था कि जो कुछ अब हुआ है, यह आगे भी होगा। और इस तरह हुआ भी। आगे चलकर 1973 में फिर इज़राइल और अरब देशों के बीच युद्ध हुआ। इस बार भी इज़राइल विजयी रहा। असली बात यह है कि यदि इज़राइल कमज़ोर हो तो अरब देश उसको एक दिन में ही खत्म कर दें। सो, अपने आप को बचाने का तो हरेक का पहला हक है।“

“अमजद, यह तू नहीं बोल रहा, तेरे अंदर का अमेरिकी व्यक्ति अमजद बोल रहा है।“ आफिया ने व्यंग्य कसा।

“जब तुझे कोई उत्तर नहीं सूझता तो तू मुझे यह ताना मार देती है।“

बातें करती आफिया ने इस तरह महसूस किया मानो उसके पेट में दर्द उठा हो और वह नीचे फर्श पर बैठ गई। अमजद ने शीघ्र ही एंबूलेंस को कॉल किया और उसको अस्पताल ले गया। परन्तु अस्पताल वालों ने किसी बीमारी की बजाय उनको खुशी की ख़बर दी। आफिया तीसरे बच्चे की माँ बनने वाली थी। वे खुश-खुश घर लौट आए। घर आकर आफिया सोफे पर टेढ़ी होकर लेट गई। अमजद कुर्सी खींचकर उसके पास बैठ गया। आफिया उसके मुँह की ओर एकटक देखती रही। फिर आँखें भरकर बोली, “अमजद, मेरा यहाँ दिल नहीं लगता।“

“क्यों ऐसी क्या बात है ?“

“बस, पता नहीं क्या बात है। मैं चाहती हूँ कि हम पाकिस्तान वापस लौट चलें।“

अमजद कुछ न बोला। वह चुपचाप उसके मुँह की ओर देखता रहा तो आफिया फिर बोली, “तू कोई जवाब क्यों नहीं देता ?“

“आफिया, वहाँ जाकर तू पहले की तरह फिर मेरे पर ज़ोर डालेगी कि जिहाद में शामिल हो।“

“अमजद, मैं तो बीच में फंस गई हूँ।“ काफ़ी देर चुप रहने के बाद दीवार की ओर देखते हुए आफिया बोली।

“वो कैसे ?“

“एक तरफ तू है और दूसरी तरफ पाक पवित्र जिहाद।“

“आफिया, एक बात पूछूँ ? सच सच बताना।“

“हाँ पूछ।“ आफिया ने मुँह उसकी तरफ कर लिया।

“अगर कभी तुझे चुनाव करना पड़े तो तू किसका चुनेगी ? मुझे या जिहाद को ?“

“अमजद, अगर ऐसे चुनाव का वक़्त कभी आता है तो यह मेरे लिए बड़ा दुखदायी होगा। पर सच्ची बात पहले ही बता देती हूँ कि आख़िर मैं चुनूँगी तो जिहाद को ही।“

इतना कहते हुए आफिया ने आँखें मूंद लीं और सीधी होकर सोफे पर लेट गई। अमजद उदास-सा उठकर बाहर चला गया।

अगले दिन सवेरे किसी फोन की घंटी ने आफिया को नींद से जगाया। फोन सुहेल का था। वह बताने लगा कि एफ.बी.आई. द्वारा केयर ब्रदर्ज़ और बोनेवोलैंस इंटरनेशनल के कई अन्य सदस्यों को पूछताछ के लिए पकड़ा था। पर लम्बी इंटरव्यू के बाद सब को छोड़ दिया गया। सुहेल ने आफिया को सावधान किया कि वह अपनी असली ई मेल पर कुछ भी संदेहास्पद न लिखे। साथ ही फोन का प्रयोग करते समय एतिहात बरते। कोशिश करे कि अधिक बात वह उसको दिए गए गुप्त फोन पर करे। सुहेल को लगा कि आफिया नींद में होने के कारण शायद बात नहीं करना चाहती। उसको सोने के लिए कहकर उसने फोन काट दिया। आफिया को दुबारा नींद आने ही लगी थी कि फोन फिर बजा। उसने स्क्रीन पर देखा। सुहेल ही दुबारा फोन कर रहा था। उसने फोन ऑन किया तो सुहेले बड़े उत्साह में बोला, "मैं जो कुछ बताने जा रहा था, वो तेरी नींद और तेरी सुस्ती सब मिटा देगा।"

"अच्छा !"

"मुझे अभी अभी अदनान शुक्रीजुमा का मैसज मिला है।"

"मेरे साथ भी उसकी रात ही बात हुई थी। पर अब वह क्या कह रहा है ?"

"आफिया, तुझे याद है न कि पिछले दिनों एक यहूदी पत्रकार ने पाकिस्तान जाकर जैशे मुहम्मद के लीडर की इंटरव्यू की थी और बाद में उसने जैशे मुहम्मद के बारे में काफ़ी कुछ ऐसा भी लिखा था जो कि हमारे उस लीडर को पसंद नहीं आया था।"

"मुझे पता है। तू डेनियल पर्ल की बात कर रहा है।"

"हाँ, उसी की। उसको उसकी आख़िरी मंज़िल पर पहुँचा दिया गया है।"

“क्या मतलब ?“ आफिया उछलकर खड़ी हो गई।

“तू यह एड्रेस इंटरनेट पर डालकर इस वेबसाइट को खुद देख।“ एड्रेस लिखवा कर सुहेल ने फोन कोट दिया। आफिया ने कंप्यूटर ऑन करके सुहेल द्वारा बताई गई वेबसाइट खोली और वीडियो चला दी। वीडियो शुरू हुई तो वह बड़े ध्यान से देखने लगी। दो ढके चेहरों वाले व्यक्ति डेनियल पर्ल को एक खुले आँगन में लेकर आते हैं। फिर उसकी बाहें पीछे से बाँध दी जाती हैं। ढके चेहरे वाला एक व्यक्ति आगे बढ़ता है और डेनियल पर्ल की जीभ काट देता है। फिर बायें हाथ से उसके बाल पकड़कर सिर को पीछे की ओर खींचता है और दायें हाथ से धीरे धीरे उसकी गर्दन इस तरह काटता है जैसे बकरे को हलाल किया जाता है। सब कुछ करीब दो मिनट की वीडियो में ही घटित हो जाता है। आफिया इन दो मिनटों में आँखें नहीं झपकती। पहले उसका चित्त खराब होने लगता है। फिर उसको अफगानिस्तान में अमेरिका द्वारा मारे जा रहे जिहादी याद आते हैं तो उसका मन बदलने लगता है। आख़िर में वह उन जिहादियों पर गर्व महसूस करती है जो डेनियल पर्ल की हत्या करते हैं।

अगले दिन यह घटना अख़बारों की मुख्य सुर्खी बन गई। असल में डेनियल पर्ल कई दिनों से पकड़ा हुआ था। उसकी गर्भवती पत्नी ने टी.वी. पर जाकर जिहादियों से विनती भी की थी कि उसके पति की जान बख़्श दी जाए। उसने कहा था कि और किसी के लिए नहीं तो इस नन्हीं जान के लिए ही सही, जो कुछ ही महीनों बाद जन्म लेने वाली है। कम से कम इसको पिता से वंचित न किया जाए। पर उसकी मिन्नतों का कोई असर न हुआ। आतंकवादियों ने पर्ल की सिर्फ़ हत्या ही नहीं की, बल्कि उसको मारते समय की वीडियो इसलिए बनाई ताकि अन्य पत्रकारों डराया जा सके।

अमेरिका युद्ध का मुँह हालांकि इराक की तरफ मोड़ रहा था, पर उसने अलकायदा सदस्यों का पीछा करना और तेज़ कर दिया था। आख़िर, मार्च 2002 में अमेरिका को उस वक़्त सफलता मिली जब उन्होंने बहुत ही उच्च कोटि का अलकायदा सदस्य अबू जुबेद पकड़ लिया। पहली बार अबू जुबेद ने ऐसी जानकारी दी कि अमेरिकी सरकार के होश उड़ गए। उसके अनुसार नाइन एलेवन की सारी कार्रवाई को अंजाम देने की जिम्मेदारी खालिद शेख मुहम्मद की थी जिसको कि आमतौर पर के.एस.एम. कहा जाता था। और 1993 में नॉर्थ टॉवर के पॉर्किंग लॉट में बम धमाका करके छह जनों की मौत और सैकड़ों को ज़ख़्मी करने वाला रम्जी यूसफ इसी के.एस.एम. का भतीजा है। अमेरिकी एंजेसियाँ जो अब तक नाइन एलेवन को लेकर अँधेरे में ही तीर मार रही थीं, अब सारी कहानी समझ गईं। वे जान गईं कि कैसे के.एस.एम. ने ओसामा बिन

लोदन के साथ मिलकर नाइन एलेवन वाली घटना का खाका बनाया। फिर इसको अंजाम देने की सारी जिम्मेदारी भी के.एस.एम. ने ही पूरी की। उसने सारे आतंकवादियों को अमेरिका में पहुँचाने में मदद की और उन्हें ट्रेनिंग दी। अबू जुबेद बहुत थोड़े टार्चर के बाद ही बहुत कुछ उगल गया। उसने के.एस.एम. की भविष्य की स्कीमों के बारे में भी बता दिया। अबू ने बताया, "के.एस.एम. अपनी इस नाइन एलेवन की प्राप्ति से बहुत उत्साहित है। वह इस लड़ाई को ज़ोर-शोर से आगे बढ़ाते हुए दूसरे बड़े हमले की तैयारी कर रहा है। उसकी आगे की योजना यह है कि अमेरिका में रेडियो एक्टिव बमों के साथ हमला किया जाए। अमेरिका की प्राकृतिक गैस लाइनों को आग लगा दी जाए जिससे एक ही बार में लाखों लोग मर जाएँगे। या फिर वह चाहता है कि अमेरिका के पानी के सिस्टम में ज़हर मिला दिया जाए। इससे भी बहुत लोग मरेंगे। अमेरिकी एटमी ऊर्जा प्लांट भी उसके निशाने पर हैं।"

अबू जुबेद ने यह भी बताया कि इस दूसरे हमले के लिए के.एस.एम. ने भिन्न तरीका अपनाया है। इसके लिए वह पहले से ही अमेरिका में रह रहे लोगों में से जिहादियों की भर्ती कर रहा है। इस काम के लिए उसने होज़े पदीला जैसे कई लोग चुन भी लिए हैं। इसके अलावा अबू जुबेद ने आगे बताया कि अगली सारी योजनायों को अंजाम देने के लिए के.एस.एम. ने अदनान शुक्रीजुमा को जिम्मेदारी सौंपी है। वही अमेरिका में रहते हुए आगे के आपरेशनों को अंजाम देगा। अबू जुबेद से जिनके बारे में जानकारी मिली, एफ.बी.आई. उन सबके पीछे लग गई।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –13

(13)

अमजद ने अपनी आख़िरी परीक्षा पास कर ली और उसने डॉक्टरी की सारी पढ़ाई मुकम्मल कर ली जो कि उसका लक्ष्य था। उसके लिए बड़े गर्व की बात थी कि वह अपनी कक्षा में अव्वल आया था। उसकी पार्ट टाइम टीचर की जॉब भी उसके लिए अच्छी साबित हुई। यह परीक्षा पास करते ही उसको असिसटेंट प्रोफेसर बना दिया

गया। वह अब खुश था। उसकी पढ़ाई की जिम्मेदारियाँ पूरी हो चुकी थीं। उसने आफिया को खुश रखने का एक और ढंग निकाला। वह आफिया से कहने लग पड़ा कि अभी तो हम जिहाद के बारे में सीख ही रहे हैं, जब हम इस बारे में पूरी जानकारी हासिल कर लेंगे तो इसमें शामिल होने की सोचेंगे। उसने फिर से दाढ़ी बढ़ा ली ताकि आफिया को लगे कि वह मज़हब की ओर लौट रहा है। पर आफिया इस वक़्त उसकी बातों में कोई दिलचस्पी नहीं ले रही थी। शायद वह उसका नाटक समझ रही थी। ख़ैर, अमजद ने आफिया को खुश रखने के लिए काफ़ी सारा वक़्त घर में ही बिताना प्रारंभ कर दिया। वह हर इतवार को उसको और बच्चों को कहीं बाहर घुमाने ले जाता। एक दिन उसने घर में बात की, "आफिया, मेरे परिवार में शिकार का बहुत शोक रहा है।"

"अच्छा।" आफिया ने साधारण-सा हुंकारा भरा।

"मैं चाहता हूँ कि मैं अपने बच्चों को खानदानी शोक से परिचित करवाऊँ।"

"इसके लिए क्या करेगा ?"

"हम इस वीक एंड पर कहीं बाहर चलते हैं। शिकार खेलने का सारा सामान वगैरह मेरा मतलब बंदूक आदि और अन्य सामान हम किसी स्टोर से खरीद लेंगे।" उसकी बंदूक वाली बात आफिया को जच गई। उसने सोचा कि इसी बहाने वह बंदूक चलाने का अभ्यास कर लेगी। साथ ही फील्ड में पेश आने वाली मुश्किलों से परिचित हो जाएगी। उसने खुशी खुशी इस काम के लिए हामी भर दी। अगले ही दिन वे किसी असले की दुकान पर गए। दुकान वालों ने उनकी आई.डी. आदि चैक कीं। फिर उन्होंने आवश्यक सामान खरीद लिया। इस में पिस्तौल, बंदूक, सरवाइवल गाईड, बुलेट प्रूफ और नाइट विज़न गोगल्ज़ आदि थे। वे वीक एंड पर किसी शूटिंग रेंज पर चले गए। वहाँ उन्होंने दो दिन बिताये। खूब मस्ती की। शिकार खेला। ख़ास तौर पर आफिया ने बंदूक के निशाने लगाने का अभ्यास किया। इतवार की शाम वे घर लौट आए। अमजद ने देखा कि इस घटना के बाद आफिया में बहुत परिवर्तन आने लगा। वह अमजद से कहने लगी कि फिर से शूटिंग रेंज पर चला जाए। और इस बार बड़े हथियार मतलब ए.के. फोर्टी सेवन जैसी राईफलें चलाने का लुत्फ़ उठाया जाए। अमजद इसके लिए मान गया। अगले सोमवार वे यह कहकर काम पर गया कि वह कुछ घंटों के बाद लौट आएगा और फिर वे शिकार पर जाने का कार्यक्रम बनाएँगे।

आफिया खुशी खुशी तैयारी करने लगी। करीब ग्यारह बजे उसके घर की डोर बेल बजी। वह दौड़ती हुई दरवाज़े की ओर गई कि शायद अमजद आ गया है। दरवाज़ा खोलने से पहले उसने की-होल में से देख लेना ज़रूरी समझा। जब उसने बाहर झांका तो वह भौंचक्क रह गई। बाहर दो व्यक्ति सूटिड-बूटिड और काली ऐनक लगाए दरवाज़ा खुलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। आफिया का दिल ज़ोर से धड़का, पर उसने अपने आप पर नियंत्रण रखते हुए पूछा, "कौन हो तुम ?"

"हम एफ.बी.आई. से हैं। आपसे मिलना है। दरवाज़ा खोलो।"

"मैं घर में अकेली औरत हूँ। मैं इस तरह दरवाज़ा नहीं खोल सकती। तुम तब आना जब मेरा पति घर में हो।" उसने धैर्य से उत्तर दिया।

"वह कब आएगा ?" एफ.बी.आई. वालों ने पूछा। पर आफिया कुछ न बोली। वह कुछ देर दरवाज़ा खुलवाने अथवा अन्य कोई बात करने का यत्न करते रहे, मगर आफिया ने अंदर जाते ही बैडरूम का दरवाज़ा भी बंद कर लिया। अंदर से ही वह अमजद को फोन मिलाते हुए बोली, "अमजद, गज़ब हो गया।"

"क्यों, क्या हो गया ? ख़ैर तो है ?"

"नहीं, ख़ैर नहीं है। अपने दरवाज़े पर एफ.बी.आई. वाले खड़े हैं और वे मुझे दरवाज़ा खोलने के लिए ज़ोर दे रहे हैं।"

"तू दरवाज़ा खोलकर पूछ तो सही कि आख़िर बात क्या है। वे यहाँ क्या करने आए हैं ?"

"नहीं अमजद, मैं दरवाज़ा नहीं खोलूँगी।"

“आफिया हो सकता है कि वे कोई ज़रूरी बातचीत करने आए हों। या किस दूसरे का अता-पता पूछ रहे हों। मेरा तो ख़याल है कि तू एक बार उनसे बात कर ले।“

“अमजद, मैंने तुझे कह दिया कि मैं किसी हालत में भी दरवाज़ा नहीं खोलूँगी। मुझे तो बहुत डर लग रहा है।“

“डरने की इसमें क्या ज़रूरत है। तू तो...।“ बात करते करते अमजद एकदम चुप हो गया। उसने देखा कि उसके सामने कोई आ खड़ा हुआ था। जो देखने से ही किसी एंजेंसी का व्यक्ति लगता था।

“आफिया, मैं तुझे ठहरकर फोन करता हूँ।“ इतना कहते हुए अमजद ने फोन काट दिया। उसने फोन एक तरफ रखा तो सामने खड़े व्यक्ति ने अपना कार्ड निकालकर उसके सामने कर दिया और बोला, “आए एम फ्रॉम एफ.बी.आई.।“

“जी, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?“ अमजद की आवाज़ में कंपन था।

“हम आपके साथ बातचीत करने आए हैं। मेरा साथी बाहर खड़ा है। क्या हम कुछ देर पॉर्क में जाकर बैठ सकते हैं ?“

“हाँ जी, बिल्कुल। मैं अपने बॉस को बता दूँ।“ इतना कहते हुए अमजद ने अपने बॉस से बात की और एफ.बी.आई. अफसर के साथ चल दिया। चलते हुए वह सोच रहा था कि यह तो काई खास बात लगती है कि ये एक समय में उसके घर और दफ़्तर में आए हैं। फिर उसको याद आया कि कुछ हफ़्ते पहले ही उसने असले की दुकान से जो सामान खरीदा था, ये उसी के कारण आए होंगे। यह बात याद आते ही उसका मानसिक तनाव काफ़ी घट गया, पर असल में यह बात नहीं थी। पहली बात तो अबू जुबेद ने ही यहाँ के अलकायदा सैलों के बारे में बहुत कुछ जानकारी दी थी। शेष कसर तब पूरी हो गई जब उसकी गिरफ्तारी के अगले हफ़्ते ही पाकिस्तान से चलकर चिकागो एअरपोर्ट पर जैसे ही होजे पदीला उतरा, उसे पकड़ लिया गया। उसके पास से जो कंप्यूटर बम ड्राइव मिली, उसमें से बहुत सारी जानकारी प्राप्त हुई थी। उसमें से अदनान शुक्रीजुमा का नाम का पता चला। एफ.बी.आई. पहले ही उन लोगों की

गतिविधियों पर नज़र रखे हुए थी जिनके नाम अबू जुबेद से मिले थे। अबू जुबेद की गिरफ्तारी छिपाकर रखी गई थी। इसी कारण होजे पदीला, एफ.बी.आई. के हाथ चढ़ गया। पर उसके पकड़े जाने के पश्चात शेष सभी सदस्य गुप्तवास में चले गए। ख़ैर, अमजद को साथ लेकर एफ.बी.आई. के दोनों अफ़सर पॉर्क में जा बैठे।

"मि. अमजद, हम एफ.बी.आई. से हैं। लो, तुम अपनी तसल्ली के लिए मेरा आई कार्ड देख लो।" इतना कहते हुए एक अफ़सर ने सरकारी बैज दिखलाते हुए अपना विजिटिंग कार्ड निकालकर अमजद के हवाले कर दिया। अमजद ने सरसरी नज़र डालते हुए विजिटिंग कार्ड जेब में डाल लिया।

"मि. अमजद, आप कोई घबराहट तो महसूस नहीं कर रहे ? मेरा मतलब हम बात कर सकते हैं ?"

"नहीं सर, ऐसा कुछ नहीं है। आप बात शुरू करो।"

"मि. अमजद, नाइन एलेवन का हादसा करने वाले हाईजैकर्स घटना से पहले आपके अपार्टमेंट की बिल्डिंग में आते जाते रहे हैं। क्या आप उनके बारे में कुछ जानते हैं ?"

"नहीं सर। मुझे बात की कोई जानकारी नहीं है।" पहली बात ने ही उसके पैर उखाड़ दिए। जितनी छोटी बात वह समझ रहा था, उतनी छोटी उसको लगी नहीं।

"क्या आपकी पत्नी को इस बारे में कुछ पता होगा ?"

"जहाँ तक मेरा ख़याल है, इस बात के बारे में उसको भी कुछ पता नहीं होगा। हम तो आम-सी ज़िन्दगी जीने वाले सादे-से लोग हैं।"

"आपको या आपकी पत्नी को और कुछ अता-पता है। हमारा मतलब हाईजैकर्स या उनकी कार्रवाइयों के बारे में ?"

“नहीं सर, हमें इस तरह की कोई जानकारी नहीं है।“

इसके बाद दोनों अफ़सरों की आपस में नज़रें मिलीं। फिर उनमें से एक बोला, “मि. अमजद, हम आप दोनों यानी पति-पत्नी की एकसाथ इंटरव्यू करना चाहेंगे। इसके लिए आपको हमारे दफ़्तर से सरकार का लैटर आएगा। पर तब तक आप शहर छोड़कर कहीं नहीं जा सकते। यह एक सरकारी आदेश है। मेरा कार्ड आपके पास है, जब चाहे कॉल करके बता सकते हो। वैसे घबराने वाली कोई बात नहीं है। यह एक रूटीन काम है।“

“जी सर।“

वे चले गए तो अमजद के मन पर से बहुत सारा बोझ कम हो गया। शुरू में तो उसको पहला प्रश्न सुनकर ही लगा था कि यह तो बात ही उल्टी दिशा की ओर चल पड़ी। पर अब उसको लगा कि यह तो वास्तव में ही आम-सी इंकुआरी है जो कि किसी के साथ भी हो सकती हे। लेकिन जब अमजद घर पहुँचा तो आफिया डर से काँपे जा रही थी। उसके घर में प्रवेश करते ही वह अमजद से लिपटकर रोने लग पड़ी। अमजद ने उसको ढाढ़स देकर शांत करवाया। आफिया थोड़ा संभलते हुए बोली, “अमजद, तू मेरी बात सुन ले। हमें आज ही पाकिस्तान चले जाना चाहिए।“

“क्यों ? हमने क्या कोई गलत काम किया है कि यहाँ से भागें ?“

“बस, मैंने कह दिया कि हमें यहाँ नहीं रहना।“

“पर कोई बात तो हो जिसकी वजह से हमें भागना पड़े।“

“इसका मतलब, तू मेरी बात नहीं मानेगा ?“

“मैं तेरी बात मान लूँगा यदि तू मुझे साफ़ साफ़ बता दे कि तुझे डर किस बात का है। पहले भी तूने ऐसा ही किया था। घटना न्यूयॉर्क में हुई थी और तूने यहाँ धरती आसमान पर उठा ली। आख़िर मेरी बात न मान पाकिस्तान जाकर ही साँस लिया था। फिर क्या निकला उस बात में से ? सिर्फ़ परेशानी के। मेरी पढ़ाई का नुकसान हुआ, साथ ही सारे रिश्तेदारों को तंग किया।“

“अमजद, तू तब की बात छोड़। मैं तेरी मिन्नत करती हूँ, प्लीज़ अब मेरी बात मान ले।“ आफिया आँखों में आँसू भरती हुई बोली। उसके आँसू देखकर अमजद ढीला पड़ गया। वह कुछ सोचता हुआ बोला, “चल, मैं कुछ दोस्तों के साथ सलाह-मशवरा करता हूँ। फिर देखते हैं कि क्या होता है।“

“अगर तब तक वो दुबारा आ गए तो ?“

“नहीं, इतनी जल्दी नहीं आते। और फिर उन्हें और भी कोई काम होगा। अकेले हम ही तो यहाँ नहीं बैठे। यहाँ लाखों मुसलमान रहते हैं। क्या पता, उन्हें किस-किस की इंटरव्यू करनी होगी।“

“तू मेरे साथ एक बात का फैसला कर, अभी।“ आफिया गुस्से में काँपने लगी।

अमजद ने हैरान होकर आफिया की ओर देखा कि यह कभी नरम पड़ जाती है और कभी फिर से भड़क उठती है।

“अमजद, तुझे मेरी परवाह है कि नहीं ?“

“तेरी परवाह मुझे न होगी तो फिर और किसको होगी।“

“फिर मेरी बात मान और कल ही पाकिस्तान चल।“

अमजद ने उसकी बात का कोई उत्तर न दिया। उसने कई मित्रों को फोन मिलाकर बातें कीं। हरेक ने उसको यही बताया कि आजकल यह बात आम हो गई है कि एफ.बी.आई. वाले किसी भी मुसलमान के घर जा पहुँचते हैं। पर जब कुछ मिलता नहीं तो वापस लौट पड़ते हैं। फिर अमजद ने आफिया के भाई मुहम्मद अली को हूस्टन में फोन किया। सारी बात सुनकर अली ने आफिया के साथ बात करनी चाही। आफिया ने फोन पकड़ लिया तो वह हँसता हुआ बोला, "तू हमारी बहादुर लिटिल सिस्टर कब से डरपोक बन गई। यह तुझे क्या हो गया। इस तरह तो सारे मुसलमान अमेरिका छोड़कर चले जाएँगे। तुझे डरने की ज़रूरत ही नहीं। शांत रह।"

"पल्ले शांति ही रह जाएगी। वे उठाकर जेल में फेंक देंगे।"

"कुछ नहीं होता। यूँ ही न घबरा।"

उसका भाई भी बार बार पूछता रहा कि वह किस बात से इतना डर रही है, पर आफिया ने कोई जवाब नहीं दिया। आख़िर वह चुप हो गई और काँपती-सी सोफे पर बैठ गई। मगर उस रात वह पल भर भी न सोई। वह सारी रात कमरे में चक्कर लगाती रही। अमजद को उसकी हरकतें बहुत परेशान कर रही थीं। उसे चिंता भी थी कि कहीं इसके दिमाग पर ही बोझ न पड़ जाए। सुबह होते ही उसने बॉस्टन के मशहूर वकील को फोन करके सारी बात बताई। साथ ही यह भी बताया कि उसकी पत्नी इस घटना से बहुत ही डरी हुई है। वकील ने सलाह दी कि इसके लिए तुम खुद ही एफ.बी.आई. वालों से मुलाकात का समय लेकर इंटरव्यू वाला काम पूरा कर सकते हो। बल्कि इस तरह तुम्हें लम्बे समय तक एफ.बी.आई. के डर तले दिन नहीं गुज़ारने पड़ेंगे। अमजद के हाँ कहते ही वकील ने एफ.बी.आई. को फोन करके उनके साथ इंटरव्यू की तारीख़ तय का ली। अमजद ने आफिया को बताया तो वह और अधिक डर गई और भड़क गई। वह कहने लगी कि वह किसी भी हालत में एफ.बी.आई. के सामने नहीं जाएगी।

"पर तुझे तकलीफ़ क्या है। तू किसी भी बात पर कान नहीं धर रही। अब वकील ने इंटरव्यू का प्रबंध कर दिया है तो तू कह रही है कि तू एफ.बी.आई. वालों से नहीं मिलेगी। तुझे पता होना चाहिए कि यह सरकारी हुक्म है कि हम इंटरव्यू के बिना यहाँ से नहीं जा सकते।"

“अमजद, क्या तुझे इस बात का ज़रा-सा अहसास भी है कि यदि कोई पंगा पड़ गया तो क्या होगा ?“

“आफिया, यह तो तुझे तब सोचना था जब मेरे रोकने के बावजूद चैरिटी के कामों में हिस्सा लेने से नहीं हटा करती थी। अब यूँ डरी जा रही है। जितने भी केयर ब्रदर्ज़ या बोनेवोलैंस इंटरनेशनल के सदस्य हैं, सबके साथ एफ.बी.आई. ने बातचीत की है। किसी को कुछ नहीं कहा।“

“उनकी और मेरी बात में अंतर है।“

“क्या ! क्या कहा ? तेरे में और उनमें क्या फर्क है ?“ अमजद का दिल ज़ोर से धड़का।

“ये बातें तू नहीं समझ सकता। ये चैरिटी के अपने काम करने के ढंग होते हैं।“ आफिया के मुँह से कोई दूसरी बात निकलने ही वाली थी, पर उसने चुस्ती के साथ बात को गोल कर दिया। फिर अमजद धैर्य से बोला, “देख आफिया, हमने बहुत बहस कर ली। अब मैं एक पति के अधिकार से तुझसे कह रहा हूँ कि कल सवेरे दस बजे हम वकील के दफ़्तर जा रहे हैं। वहीं एफ.बी.आई. वाले आएँगे और वहीं अपनी इंटरव्यू होगी। अब इस मसले पर कोई बात नहीं होगी।“ इतना कहकर अमजद घर से बाहर चला गया। शाम के वक़्त वह लौटा तो आफिया मुँह-सिर लपेटकर बैड पर पड़ी हुई थी। अमजद ने सोचा कि यह शायद इस कारण गुस्सा दिखा रही है कि मैं इसकी बात नहीं मान रहा। परंतु आफिया के अंदर बहुत बड़ी उठा-पटक मची हुई थी। उसको पूरा विश्वास था कि कल उसको गिरफ़्तार कर लिया जाएगा

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –14

(14)

अगले दिन वह निश्चित समय पर वकील के दफ़्तर पहुँच गए। तभी एफ.बी.आई. के वही दो अफ़सर जो कि अमजद को मिलकर गए थे, वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने कुछ काग़ज़ों पर दोनों के दस्तख़्त करवाकर वकील की सहमति से इंटरव्यू शुरू कर दिया। प्रारंभ में वह कोई अधिक कठिन प्रश्न नहीं कर रहे थे। बल्कि वे बीच बीच में अमजद को ऐसे मजाक भी कर रहे थे जो कि आम लोग डॉक्टरों के बारे में करते रहते हैं। इस बात ने अमजद को निश्चिंत कर दिया कि कोई ख़तरे वाली बात नहीं है। फिर एक अफ़सर बोला, “मिस्टर और मिसेज अमजद, अब हम आफिशियल मीटिंग शुरू कर रहे हैं।“

“जी, ठीक है।“

फिर एक अफ़सर ने आफिया की ओर देखा। आफिया ने काला बुर्का पहन रखा था और मुँह-सिर दुपट्टे में लपेटा हुआ था। उसकी आँखें भी सिर्फ़ बुर्के की जालियों में से ही आधी-अधूरी-सी दिख रही थीं।

“मिसेज आफिया, आपको अपना मुँह नंगा करना पड़ेगा। क्योंकि यह ज़रूरी है।“

“नहीं, यह मैं नहीं कर सकती। यह मेरा धार्मिक अधिकार है कि मैं जैसे मर्ज़ी कपड़े पहनूँ।“

उसकी यह बात सुनकर दोनों अफ़सरों ने आपस में नज़रें मिलाईं। फिर वे उठकर एक तरफ हो गए और आपस में बातचीत करने लगे। वापस बैठते हुए उनमें से एक बोला, “मिसेज आफिया, हम आपके धार्मिक अकीदे की इज्ज़त करते हैं, पर कानून अपनी जगह है। हम आपको इतनी छूट दे सकते हैं कि आप अपने बुर्के को इस ढंग से पहने कि हमें आपका चेहरा दिखता रहे। आमने सामने की बातचीत में यह बहुत ज़रूरी है। अगर आपको यह भी मंजूर नहीं तो हम अपनी किसी औरत एजेंट को बुला लेते हैं। फिर आपको बुर्का उतारकर एक तरफ रखना पड़ेगा।“

आफिया ने स्वयं ही बुर्का ठीक कर लिया। अब उसका सारा चेहरा नंगा था। अफ़सरों ने एक इतने पर ही संतुष्टि प्रकट की। बातचीत शुरू हुई तो अफ़सर बोला, “मि. अमजद, आपके अपार्टमेंट में एक बार कोई सउदी अरब का बाशिंदा रहा करता था, वह कौन था ?“

“वह मेरे अस्पताल में ही काम करता था। उसको किराये के कमरे की ज़रूरत थी और मुझे अपने घर का एक कमरा किराये पर देना था। वह कमरा मैंने उसको दे दिया। बस, उसके बारे में इतना ही जानता हूँ।“

“उसके पास कौन आता था ?“

“हमने कभी देखा नहीं कि कभी कोई उसको मिलने आया हो।“

“आपने पिछले दिनों असले की दुकान से काफ़ी सामान खरीदा है। वो क्यों ?“

“मेरे परिवार में शिकार का शौक रहा है। मैं अपने बच्चों को उस पारिवारिक परंपरा से परिचित करवाने के लिए उन्हें शिकार के ट्रिप पर ले गया था।“

“पर वो सामान सिर्फ़ शिकार तक ही सीमित नहीं था। आपने नाइट विज़न गॉगल्ज़, बुलट प्रूफ़ जैकेट और सरवाइवल गाइड जैसी वस्तुएँ भी खरीदी थीं। यह सब किस लिए ?“

“इन सबका ताल्लुक सिर्फ़ शिकार से ही था, और कुछ नहीं।“

“मिसेज आफिया, क्या आपको बंदूक चलानी आती है ?“

“नहीं, मैंने कभी बंदूक नहीं चलाई।“

“इस शिकार के ट्रिप के समय भी चलाकर नहीं देखी ?“

“नहीं, मुझे ऐसे काम अच्छे नहीं लगते।“

“अजीब बात है कि सभी ने बंदूक चलाई, शिकार खेला, पर आपने हथियार चलाकर नहीं देखा ?“

“ये तो अपने अपने शौक पर निर्भर करता है।“ आफिया जब यह बात कह रही थी तो एक अफ़सर ने गौर से उसकी तरफ देखा। आफिया ने उसके साथ आँखें मिलाने की बजाय नीचे झुका लीं। अफ़सर समझ गया कि यह झूठ बोल रही है। इसने शिकार के समय बंदूक अवश्य चलाकर देखी होगी।

“मि. अमजद, आजकल काम का काफ़ी सारा बोझ रहता होगा ?“ एक अफ़सर ने अमजद से उसके काम की बात प्रारंभ की तो अमजद को लगा कि शायद इंटरव्यू इतनी संजीदा नहीं है। परंतु तभी अफ़सर के अगले प्रश्न ने उसकी घबराहट बढ़ा दी। वह बोला, “मि. अमजद, क्या आप कभी ओसामा बिन लादेन से मिले हो ?“

“ओसामा से ! जी बिल्कुल नहीं। मैं उन्हें कभी नहीं मिला।“

“उसकी फोटो तो देखी होगी ?“

“हाँ जी, वह तो दिनभर टी.वी. पर देखते ही रहते हैं।“

“निजी तौर पर मिलते समय फोटो से कितना भिन्न दिखाई देता है लादेन ?“

“जी, कभी मिले ही नहीं तो क्या कह सकते हैं ?“ अमजद ने ज़रा मुस्कराते हुए उत्तर दिया। एक अफ़सर इसी दौरान आफिया के चेहरे को बड़े गौर से देख रहा था। वह मन ही मन सोच रहा था कि अब यह अपने आप को इसी सवाल के लिए तैयार कर रही है जो अमजद से पूछा गया है कि क्या वह कभी ओसामा बिन लादेन से मिली है। मगर उसने दूसरे किस्म का सवाल करके आफिया को हैरान कर दिया।

“मिसेज आफिया, क्या आप कभी रम्जी यूसफ से मिली हैं ?“

“क्या ! क्या कहा ?“ आफिया वाकई हैरान रह गई।

“आपने यह नाम सुना होगा ?“

“हाँ जी, यह वही आदमी है जो कि 1993 के नॉर्थ टॉवर पॉर्किंग में बम धमाके का दोषी है। पर मैं इससे कभी नहीं मिली।“

“अच्छी तरह याद करो। कई बार आदमी वैसे ही मिल जाता है। कहीं शॉपिंग सेंटर में, किसी मस्जिद में या कहीं एअरपोर्ट की लाइन में लगे हुए।“

उसकी बात सुनकर आफिया को पसीना आ गया कि यह तो उसके बारे में बहुत कुछ जानते हैं। उसको याद आया कि बहुत पहले उसने रम्जी यूसफ को एअरपोर्ट पर साथ वाली लाइन में खड़ा देखा था। दोनों की नज़रें भी आपस में मिली थीं। यह बात याद करते ही वह अंदर तक काँप गई। वह समझ गई कि इन्हें उसके बारे में बहुत सारी जानकारी है, पर फिर भी उसने कह दिया कि वह रम्जी यूसफ को कभी नहीं मिली। उसके इस जवाब के तुरंत बाद अफ़सर बोला, "रम्जी को न सही, पर आप उसके चाचा के.एस.एम. से तो कभी मिली होंगी ?"

"नहीं, मैं उससे भी कभी नहीं मिली।"

"आपने आख़िरी बार मुहम्मद अट्टे को कहाँ देखा था ?"

"मुहम्मद अट्टा ?"

"हाँ हाँ, वही जो नाइन एलेवन की घटना को अंजाम देने वाली टीम का नेता था।"

"मैं उसको कभी नहीं मिली।"

"आपकी अपार्टमेंट की इमारत में कम से कम छह हाईजैकर्स आते रहे हैं। आपकी उनके साथ कभी न कभी तो मुलाकात हुई ही होगी ?"

"नहीं, कभी नहीं हुई।"

"वैसे आते-जाते देखे होंगे। अक्सर आता-जाता आदमी मिल ही जाता है।"

“जी नहीं। मैंने किसी को नहीं देखा।“ अफ़सर गौर कर रहे थे कि एक के बाद एक किए जा रहे सवाल आफिया को परेशान कर रहे थे। पर अभी तो वे भूमिका ही बाँध रहे थे।

“मि. अमजद क्या आपने केयर ब्रदर्ज़ और बोनेवोलैंस के बारे में सुना है ?“

“जी, जहाँ तक मुझे पता है, ये चैरिटी का काम करने वाले संगठन हैं।“

“आपको यह कैसे पता है ? क्या आप इनके मेंबर रहे हैं ?“

“नहीं जी, मेरी पत्नी इनकी मेंबर है। इसी की बातों से मुझे पता लगता रहता था कि ये संगठन चैरिटी का काम करते हैं।“

“मिसेज आफिया, क्या आपका इनसे वास्ता रहा है ?“

“जी, थोड़ा-बहुत।“

“क्या आपको पता है कि ये चैरिटी द्वारा एकत्र किए गए पैसे का क्या करते हैं ?“

“मेरा ख़याल है कि गरीबों में बाँटते होंगे।“

“क्या आपने कभी इनके कारकुनों से पूछा नहीं कि इतने एकत्र हुए पैसे का क्या किया जाता है ?“

“मुझे ऐसी बातों से क्या लेना। जो चाहे करें।“ आफिया उनकी बातों को सुनकर ऊब गई थी, पर साथ ही उसको थोड़ी-सी तसल्ली भी थी कि यह तो साधारण-से प्रश्न ही पूछ रहे हैं।

“आपको पूछने का पूरा अधिकार है। आप इसको फंड इकट्ठा करके जो देती हैं।“

“नहीं, मैंने कभी किसी के लिए फंड इकट्ठा नहीं किया।“

“क्या आपने बोनेवोलैंस को फंड इकट्ठा करके नहीं दिया ?“

“नहीं, मैंने कभी कोई फंड इकट्ठा नहीं किया और न ही किसी को दिया है।“

“पक्की बात है ?“

“और क्या झूठ है ?“ आफिया ने आँखें तरेरीं।

“तो फिर आपके खाते में जो हज़ारों डॉलर इकट्ठे हुए हैं और आपने इन्हें आगे बोनेवोलैंस के खाते में भेजे हैं, यह सब फिर क्यों किया ?“

“यह सब झूठ है। मैंने ऐसे कोई पैसे इकट्ठे नहीं किए।“

“ये पेपर्स फिर झूठ बोलते हैं।“ इतना कहते ही अफ़सर ने आफिया के बैंक की पिछले दो सालों की स्टेटमेंट निकालकर वकील के सामने रख दीं। आफिया की आँखें फटी की फटी रह गईं। पर वह बात को संभालती हुई बोली, “हमारे मज़हब में यह भी है कि यदि हमारी इच्छा हो तो चैरिटी के बारे में किसी को न बताएँ।“

“चलो, ठीक है।“ अफ़सर खुश था कि उसने आफिया को झूठी साबित कर दिया था।

“मिसेज आफिया, क्या आप बता सकती हैं कि के.एस.एम. की अमेरिका को तबाह करने की भविष्य में क्या योजना है ?“

“मैं न उसको जानती हूँ, न ही कभी उससे मिली हूँ। फिर मुझे क्या मालूम कि वह क्या करता है, क्या नहीं।“

“क्यों ? आपको अदनान शुक्रीजुमा ने उसकी योजना के बारे में नहीं बताया ?“

“कौन अदनान शुक्रीजुमा ?“ यह नाम सुनकर आफिया अंदर तक काँप गई, पर बाहर से अपने को सहज ही दर्शाने की कोशिश की।

“आपके कहने का अर्थ है कि आप अदनान शुक्रीजुमा को नहीं जानती ?“

“जी, बिल्कुल नहीं।“

“सच बात है ?“ अफ़सर ने सीधा उसकी ओर देखकर पूछा।

“कह तो दिया न कि मैं उसको नहीं जानती। और कैसे बताऊँ ?“ आफिया की आवाज़ में खीझ थी।

उसने बात समाप्त की तो अफ़सर उसकी आँखों में देखता रहा। फिर वह गंभीर आवाज़ में बोला, “यदि आप उसको जानती ही नहीं तो हर रोज़ उससे ई मेल पर बातें क्यों करती हैं ?“

“क्या ?“ आफिया को लगा जैसे कंरट लगा हो। मगर उसने अपने आप को संयत रखते हुए कहा, “मैंने उसको कोई ई मेल नहीं भेजी।“

“तो फिर यह क्या है ?“ अफ़सर ने बैग में से काग़ज़ों का पुलिंदा निकालकर वकील के सामने रख दिया। ये वे ई मेल थीं जो कि अदनान शुक्रीज़ुमा और आफिया में आदान-प्रदान होती रही थीं। वकील ने बड़े गौर से ई मेलों को देखा। उधर आफिया परेशान हुई कुर्सी पर बैठी करवटें बदलने लगी।

“मैम, आपने हमारी बात का जवाब नहीं दिया ?“

“यह ... यह तो मैं... मेरा मतलब ...।“ उससे कोई जवाब न दिया गया। उसने गर्दन झुका ली।

दोनों अफ़सर उठे और एक तरफ जाकर आपस में बातें करने लगे। आफिया को पूरा यकीन हो गया कि अब वह उसको गिरफ्तार करने की सलाह कर रहे हैं। पर जब उन्होंने वापस आकर अपनी बात कही तो आफिया को कुछ तसल्ली-सी हो गई।

वे वकील से मुखातिब हुए, “सर, ये इंटरव्यू हम यहीं बंद करते हैं। पर इनकी इंटरव्यू अभी और होगी। उसके लिए हम अगले महीने की उन्नीस तारीख तय कर रहे हैं।“

“ठीक है। आप उसके बारे में मुझे पूरी सूचना भेज दो।“

“हाँ, ऐसा ही होगा। साथ ही मिस्टर और मिसेज अमजद खाँ से कुछ कहना चाहते हैं।“

“जी...।“ अमजद डरता हुआ बोला।

“आपका अगले इंटरव्यू में शामिल होना बहुत ज़रूरी है। आप उस इंटरव्यू से पहले यह देश छोड़कर नहीं जा सकते। यह एक सरकारी आदेश है। लीजिए, इस सरकारी आदेश पर दस्तख़्त कर दो।“ अफ़सर ने अगली इंटरव्यू पर उपस्थित रहने वाला काग़ज़ उनके सामने रख दिया। दोनों ने बारी बारी उस पर साइन कर दिए। फिर अफ़सरों ने अपने बैग संभाले और दफ़्तर से बाहर निकल गए। उनके जाते ही अमजद ने वकील से पूछा, “आपको कैसा लगा। यह इंटरव्यू कितना संजीदा था ?“

“यह तो आम-सी बात है। मेरे ख़याल में आपके लिए इसमें डरने वाली कोई बात नहीं है। साथ ही, अगली इंटरव्यू से पहले हम बैठकर आपस में बातचीत करेंगे। ऐसा करने से कई सवाल-जवाब करते समय आसानी रहती है।“

“जी ठीक है।“

इसके बाद अमजद और आफिया घर की ओर लौट पड़े। अमजद ने कई मित्रों को फोन करके आज की इंटरव्यू की कारगुज़ारी के बारे में बताया। सभी ने कहा कि ऐसे सवाल पूछे जाना आम-सी बात है। इसमें घबराने वाली कोई बात नहीं है। अमजद को लगा कि इंटरव्यू ठीक ही रही और उसने सोचा कि अगली इंटरव्यू के बाद उनका एफ.बी.आई के लफड़ों से पीछा छूट जाएगा। परंतु जब वे घर पहुँचे तो आफिया ने बावेला खड़ा कर दिया।

“अमजद, मेरी बात सुन, हमें कल ही बच्चों को लेकर वापस अपने देश चले जाना चाहिए।“

“पर क्यों ? मेरा मतलब अपनी इंटरव्यू तो ठीक ही रही है।“

“तुझे लगता है कि ठीक रही है। पर तू नहीं जानता कि.... बस, मैं तुझे कह रही हूँ कि हम यहाँ से निकलने की सोचें।“

“तू पूरी बात बता कि मैं क्या नहीं जानता। मुझे भी तो पता चले कि तुझे कौन-सी बात का भय सता रहा है ?“

“क्यों, सारी बात क्या बताना ज़रूरी है ?“ आफिया गुस्से में भड़क उठी।

“हाँ ज़रूरी है। तू ही बता कि वो अदनान शुक्रीजुमा कौन है ?“

“तुझे उससे क्या लेना ?“

“मैं उसके बारे में सबकुछ जानना चाहता हूँ। सिर्फ़ वही नहीं, और बहुत से लोग हैं जिनके एफ.बी.आई वालों ने नाम लिए थे। मैंने ऐसे लोगों का पहले कभी जिक्र भी नहीं सुना और तू उनके साथ मिलकर पता नहीं क्या काम करती रही है। कौन हैं ये सब लोग ? तू उन्हें कैसे जानती है ? मुझे सब कुछ बता।“ अमजद गुस्से में आ गया।

“मुझे इन बातों पर कोई चर्चा नहीं करनी। पर तू मेरी बात पर ध्यान दे और हम यहाँ से वापस चलें। यहाँ मेरी जान को ख़तरा है।“

“आफिया, मेरी बात सुन ले अच्छी तरह। मुझे लगता है कि तू दोहरी ज़िन्दगी जी रही है। जो मेरे सामने दिख रही है, उसके अलावा एक दूसरी आफिया और है जिसकी निजी ज़िन्दगी पता नहीं क्या है। तुझे आज सबकुछ बताना होगा।“

अमजद ने बात खत्म की तो आफिया चुप बैठी सोच में गुम थी। अचानक वह चेहरे पर बनावटी मुस्कान ले लाई और अमजद के करीब आ गई। अमजद उसके बनावटीपन को न समझ सका। वह उसको अपनी बांहों में लेती हुई बोली, “अमजद इतना चिंतित न हो। ऐसी कोई बात नहीं है। ये सब चैरिटी का काम करते हैं और मुझे वहीं मिलते रहे हैं। वे जो अदनान शुक्रीजुमा का ज़िक्र कर रहे हैं, उससे भी मेरी चैरिटी की बाबत ही ई मेल का आदान-प्रदान हुआ है। इससे अधिक इस बारे में मुझे कुछ नहीं पता।“

“फिर तू इतना घबरा क्यों रही है ?“

“मैं तो यह सोचती हूँ कि अगर यहाँ एफ.बी.आई वालों ने एक बार किसी चक्कर में फंसा लिया तो फिर पीछा नहीं छूटेगा। अपना मुल्क अपना ही होता है। मैं तो सिर्फ़ इसी कारण कह रही हूँ। अगर नहीं जाना तो कोई बात नहीं, तू गुस्सा न हो।“ आफिया ने उस समय अमजद को ठंडा कर लिया। अमजद को भी उसकी बात पर यकीन आ गया।

अगले दिन अमजद सो कर उठा तो उसने देखा कि आफिया अपना सामान बाँध रही थी। उसे इस तरह तैयारी करते देख वह हैरान-सा होकर बोला, “आफिया यह क्या ? रात अपनी बात खत्म हो गई थी कि हम कहीं नहीं जा रहे।“

“अमजद, मैंने घर फोन किया था। अब्बू की सेहत खराब है। मैं चाहती हूँ कि जल्दी से जाकर उनका पता लूँ।“

“पर चार दिन पहले ही तो अपनी बात हुई थी। तब तो वे ठीक थे।“

“तुझे पता है कि वह दिल के मरीज़ हैं। अगर में अब न जा सकी तो फिर कई महीने नहीं जा सकूँगी। तू जानता ही है, इस वक़्त मैं सात महीनों की गर्भवती हूँ।“ आफिया ने बैग तैयार करना जारी रखा और अमजद के अंदर ही अंदर गुस्सा होते मन ने सोचा कि अब्बू की बीमारी का यह सिर्फ़ बहाना बना रही है। कुछ सोचता हुआ वह बोला, “पर तुझे पता ही है कि हमें एफ.बी.आई. ने हिदायत दे रखी है कि हम उनकी इंटरव्यू पूरी किए बग़ैर कहीं नहीं जा सकते।“

“कुएं में जाए तेरी एफ.बी.आई.। मैं यहाँ अब एक पल भी नहीं रुकूँगी।“ आफिया गुस्से में पैर पटकती बोली।

उसकी बात सुनकर अमजद को गुस्सा तो बहुत आया, पर इस समय वह मज़बूर था। आफिया के गर्भवती होने के कारण वह उसके साथ कोई झगड़ा नहीं करना चाहता

था। लेकिन आफिया उसकी कोई बात नहीं मान रही थी। उसने अपने वकील को फोन करके बताया कि आफिया के डैड बीमार हैं, इसलिए इस वक्त उनका पाकिस्तान जाना बहुत ज़रूरी है। उसने पूछा कि क्या यह इंटरव्यू आगे बढ़ सकती है। वकील ने मशविरा देते हुए कहा, “मि. अमजद, इस तरह इंटरव्यू बीच में छोड़कर जाना ठीक नहीं है। तुम्हारा केस खुला ही रह जाएगा जो कि तुम्हारे लौटने पर तुम्हारे लिए मुश्किल खड़ी कर देगा। अच्छा यही है कि तुम अपनी एपाइंटमेंट पूरी करके जाओ।“

“सर, इस वक़्त मेरे पास कोई दूसरा चारा नहीं है। वापस लौटकर दुबारा इंटरव्यू की तारीख ले लेंगे।“

“मि. अमजद इंटरव्यू तो मैं कैंसिल करवा देता हूँ। पर इस तरह तुम शक के घेरे में आ जाओगे। एफ.बी.आई. एक बार जिसके पीछे पड़ जाए तो फिर पीछा छुड़ाना कठिन हो जाता है।“

“ठीक है सर, मैं आपको अपनी वाइफ़ से सलाह करके बताता हूँ।“ वकील से फोन पर बात खत्म करके अमजद ने आफिया से वकील के साथ हुई बात बताई। उसकी बात सुनते ही आफिया भड़कती हुई बोली, “अगर तू चाहता है कि मैं मारी जाऊँ तो जाने की बात छोड़ देते हैं।“

“यह तू क्या कह रही है, मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा।“ अमजद आफिया की ओर देखता हुआ सोचने लगा कि कोई न कोई बात अवश्य है जो यह यहाँ से भागने के लिए उतावली हुई पड़ी है। आफिया की हरकतों ने उसका यह शक पुख्ता कर दिया कि वह सच में ही नाइन एलेवन की साजिश के बारे में कुछ न कुछ जानती है। पर उसने एकबार और उसको समझाना चाहा तो वह वैसे ही गुस्से में चीखती हुई बोली, “ओ.के. ठीक है। तू अपनी मर्ज़ी कर। पर मैं अपने बच्चों को लेकर आज ही जा रही हूँ।“

फिर अमजद ने वकील को दुबारा फोन करके कहा कि उसको जाना ही पड़ेगा। वकील ने एफ.बी.आई. के ऑफिस में फोन करके बता दिया कि उसके क्लाइंट तय की गई तारीख पर नहीं पहुँच सकेंगे। अमजद ने अपने काम पर से भी एक साल की छुट्टी ले ली।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –15

(15)

26 जून 2002 को अमजद और आफिया बच्चों सहित कराची एअरपोर्ट पर आ उतरे। वे घर पहुँचे तो घरवाले उनके आने पर काफ़ी ख़फा थे। रात के समय नईम खां ने अमजद के साथ बात शुरू की, “तू नहीं टला फिर ? अपने मन की करके ही हटा न। तुझे मैंने कितना कहा कि इस वक़्त करियर बीच में छोड़कर आना तेरे लिए ठीक नहीं है। पर तेरे दिमाग में कोई बात आए, तभी न।“

अमजद ने अपने अब्बा की ओर देखा और फिर लम्बा सांस लेता मायूस-सा बोला, “अब्बू मेरी वजह से नहीं है। अल्लाह खैर करे, कहीं आगे चलकर मुझे इससे भी बड़े इम्तहान में से गुज़रना पड़ जाए।“

अमजद की इस एक ही बात से परिवार सारी बात समझ गया। नईम खां से रहा न गया तो वह बोला, “इस लड़की ने मेरे बेटे का भविष्य तबाह करके रख दिया...।“ नईम खां गुस्से में बोल रहा था तो उसकी पत्नी ने उसको चुप रहने का इशारा किया क्योंकि बाहर खड़ी आफिया चोरी-सी उनकी बातें सुन रही थी। नईम खां तो चुप हो गया, पर आफिया अंदर ही अंदर बल खा गई। वह उसी शाम बच्चों सहित अमजद को लेकर मायके चली गई। वहाँ जाकर उसने सबसे पहले तो अमजद को करीब बिठाकर कहा, “अमजद, अब मौका आ गया है कि तुझे कोई फैसला करना पड़ेगा।“

“फैसला ? फ़ैसला किसके बारे में ?“

“अब यह फैसला कर ले कि तूने मेरे साथ रहना है या अपने घरवालों के साथ ?“

“आफिया यह तू क्या कह रही है। घरों में आपसी गुस्से-गिले तो होते ही रहते हैं। इसका मतलब यह तो नहीं कि मियाँ-बीवी अलग हो जाएँ।“

“नहीं, अमजद तुझे फ़ैसला करना ही होगा। तुझे पता ही है कि मैं आम औरत नहीं हूँ। मैं इस बीच के रास्ते को और ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकती।“ वह क्रोध में काँपे जो रही थी। उसकी माँ ने आकर उसको शांत करने की कोशिश की, पर आफिया ने उसकी कोई बात न सुनी। आफिया चीखने-चिल्लाने लगी तो अमजद उठकर बाहर चला गया। अँधेरा होने पर घर लौटा तो बात ठंडी पड़ गई थी। लेकिन अगले ही दिन आफिया ने फिर से बवाल खड़ा कर दिया। उसकी वही मांग थी कि या तो वह उसको छोड़ दे या अपने घरवालों को। अमजद को आफिया और बच्चों से बहुत लगाव था, पर वह उसके व्यवहार से तंग आ चुका था। अब उसके शक पुख़्ता होते जा रहे थे कि यह ऐसा कुछ कर रही है जो कि सही नहीं है। और उसने यह सब किया भी उससे छिपकर है। आफिया का उस पर दबाव बढ़ता ही जा रहा था, साथ ही वह यह भी ज़ोर डालने लग पड़ी कि अब अवसर आ गया कि उन्हें जिहाद में शामिल हो जाना चाहिए। ख़ासतौर पर वह जैशे-मुहम्मद के कैम्प में जाने की जल्दी मचा रही थी। अमजद इतना ऊब गया कि उसने किसी मज़हबी रहनुमा की सलाह लेनी चाहिए। वह आफिया को लेकर पाकिस्तान के देवबंदी सम्प्रदाय के सबसे बड़े इमाम के पास चला गया। यह इमाम दोनों के परिवारों को भलीभाँति जानता था। इमाम ने उनकी बातें सुनीं। उसने आफिया का जिहाद में शामिल होने का नुक्ता बड़े ध्यान से विचाराते हुए पूछा, “आफिया बेटी, तू घरवाले सहित जैशे मुहम्मद के कैम्प में जाकर क्यों रहना चाह रही है ?“

“कैम्प में रहते हुए मैं यतीम बच्चों को पढ़ाऊँगी और अमजद वहाँ गरीबों के लिए अस्पताल चलाएगा।“

“देख बेटी, आजकल ज़माना बदल गया है। गरीबों की सेवा के लिए तुम्हें उजाड़-बियाबान जगहों पर जाने की ज़रूरत नहीं है। तुम यहाँ कराची में रहते हुए समाज सेवा के ये सारे काम कर सकते हो। बल्कि मैं तो कहूँगा कि तुमने जो अमेरिका में रहकर ऊँची तालीम हासिल की है, उसको लोगों में बाँटो। यही सबसे बड़ा दीन का काम है।“

“तो फिर जिहाद कौन लड़ेगा ?“ भड़कती हुई आफिया ऊँची आवाज़ में बोली तो इमाम हैरान रह गया। आज तक किसी ने उसके साथ इस तरह बात नहीं की थी। पर वह फिर भी शांत रहते हुए आफिया से मुखातिब हुआ, “आफिया बेटी, मैं एकबार फिर कहूँगा कि तुम्हारा पहला फ़र्ज़ अपना परिवार संभालना है। इसके बाद यदि तुम्हारे पास वक़्त बचता है तो उसे तुम समाज सेवा के लिए इस्तेमाल कर सकते हो। अगर तुम्हारे पास ज्यादा पैसा है तो वह तुम गरीबों में दान कर सकते हो।“

“पर जिहाद...।“ आफिया फिर से जिहाद के बारे में कुछ कहने लगी तो इमाम ने उसको हाथ का इशारा करके रोक दिया। फिर बड़े धैर्य से बोलने लगा, “सिर्फ़ लोगों को मारना ही जिहाद नहीं है। जो डॉक्टर कैंसर की बीमारी का इलाज करके मरीज़ की जान बचाते हैं, यह उनका जिहाद है कैंसर के खिलाफ़। तुम डॉक्टर लोगों की आँखों का आपरेशन करके उनकी आँखों की रौशनी उन्हें वापस देते हो, वह तुम्हारा जिहाद है - अंधेपन के खिलाफ़। इस तरह जितने चाहो उदाहरण ले लो। तू यह दृढ़-संकल्प ले ले कि तुझे अनपढ़ता के खिलाफ़ जिहाद लड़ना है और गरीब बस्तियों में जाकर बच्चों को मुफ़्त तालीम देना शुरू कर, यह तेरा असली जिहाद होगा।“

इसके बाद इमाम ने बातचीत बर्खास्त कर दी। अमजद और आफिया घर आ गए। अगले दिन वह अमजद के घर चले गए। पर इसके बाद उनके बीच सुलह न हुई। इस बात के दो दिन बाद अमजद ने देखा कि उसके बैंक में आठ हज़ार डॉलर कम हैं। उसने आफिया से बात की तो थोड़ी न-नुकर के बाद वह मान गई कि पैसे उसने ही निकलवाए हैं। अमजद ने जब पूछा कि उसने ये पैसे कहाँ खर्च किए तो आफिया ने कंधे उचकाते हुए कहा, “मुझे ज़रूरत थी, इसलिए मैंने वे कहीं इस्तेमाल कर लिए।“

“पर तूने मुझे तो बताया नहीं कि तुझे ऐसी क्या ज़रूरत आन पड़ी कि एकसाथ आठ हज़ार डॉलर निकलवा लिया।“

“क्यों तुझे हर बात बतानी ज़रूरी है ?“ आफिया भड़क उठी।

“मेरी भी बात सुन ले फिर...।“ अमजद का चेहरा भी लाल होने लगा। वह ज़रा रुकते हुए फिर बोलने लगा, “तेरा मेरा एकसाथ रहने का क्या फायदा जब तू हर बात मुझसे छिपाती है। जो तू सामने दिखती है, इसके अलावा तेरी एक दूसरी ज़िन्दगी भी है और

उसमें पता नहीं तू क्या करती है। मैं ऊब चुका हूँ, तेरी ज्यादतियों को सहते सहते। अब हम एक छत के नीचे नहीं रह सकते।“

आफिया ने बिना किसी बात का उत्तर दिए बच्चों को उठाया और टैक्सी लेकर मायके चली गई। कई दिन इस तरह ही गुज़र गए। फिर दोनों परिवारों के बुजुर्गों ने साझे बंदों की मदद से एक मुलाकात का प्रबंध किया और उनके बीच सुलह करवाने का यत्न किया। यह बात सफल भी हुई। इस बीच फैसला किया गया कि दोनों जन अपना अलग अपार्टमेंट लेकर कहीं और रहें। उनके लिए अपार्टमेंट का इंतज़ाम भी कर दिया गया और वे बच्चों सहित वहाँ जाकर रहने लगे। वहाँ एक सप्ताह ही बीता था कि एक दिन फिर झगड़ा शुरू हो गया। काफ़ी देर तक बहसबाज़ी होने के बाद अमजद ने ठंडी साँस भरते हुए कहा, “आफिया बस, अब हम और इकट्ठे नहीं रह सकते।“

“तू फिर क्या करना चाहता है ?“

“मैं तुझसे तलाक चाहता हूँ।“

उसकी यह बात सुनकर आफिया के मुँह का रंग उतर गया। उसने बच्चों को उठाया और अपने माँ-बाप के घर चली गई। अमजद चुपचाप अपने घर आ गया। दो सप्ताह बाद खान परिवार ने फिर से बड़े-बुजुर्गों की बैठक बुलानी चाही, पर आफिया के परिवार वालों ने उनसे बात करने से इन्कार कर दिया। उन्होंने खान परिवार का फोन ही उठाना बंद कर दिया। वैसे तो अमजद तीन बार तलाक कहकर तलाक ले सकता था, पर अब सद्दीकी परिवार उसका फोन ही नहीं उठाता था और आफिया के साथ बात होनी तो दूर की बात थी। फिर उसने चिट्ठी लिखकर तलाक मांगने के बारे में सोचा। पर इसी बीच आफिया के पिता सुलेह सद्दीकी का निधन हो गया। हालाँकि सद्दीकी परिवारवाले अमजद को आफिया के पिता की मौत का ज़िम्मेदार ठहरा रहे थे और कह रहे थे कि वह बेटी का ग़म न सह सका और इसीलिए उसको दिल का दौरा पड़ गया। पर सब जानते थे कि यह बात सही नहीं थी। बल्कि अधिकांश लोगों का सोचना था कि वह एक नेक बंदा था जो कि आफिया और अमजद के बीच शायद एक और समझौता करवा सकता था। पर जब वह न रहा तो सब उम्मीदें ख़त्म हो गईं। इसी दौरान आफिया ने अस्पताल में बेटे को जन्म दिया। मगर उसने या उसके परिवारवालों ने अमजद को इस बच्चे की आमद की भनक न पड़ने दी। न ही उन्होंने

पुनः अमजद को दूसरे बच्चों से मिलने दिया। इसी बीच सरकारी कारिंदे तलाक वाला काग़ज़ लेकर आफिया के पास गए तो उसने उस पर दस्तख़्त करने से इन्कार कर दिया। एक दिन शाम के वक़्त अमजद की माँ ने बात शुरू की, “अमजद बेटे, हमने हर जतन करने देख लिया, पर बात किसी किनारे नहीं लगती।“

“अम्मी, शायद आफिया को अक्ल आ जाए और वह तलाकनामे पर दस्तख़्त कर दे।“ वैसे वह दिल से यह चाहता था कि काश आफिया सुधर जाए और तलाक वाला मसला टल जाए। यह सोच उसकी आफिया के प्रति मुहब्बत में से उपजती थी।

“नहीं बेटे, हर मसले का एक वक़्त होता है। जब बात किसी ख़ास मुकाम से आगे निकल जाए तो फिर दुबारा से इकट्ठे रहने की कोई तुक ही नहीं रह जाती।“ उसकी माँ उसके मन के भाव समझती थी।

“ठीक है अम्मी, जैसे आपकी मर्ज़ी हो, वैसा कर लो।“ अमजद ने निराशा भरा जवाब दिया।

“अमजद बेटे, पिछली बार मुझसे गलती हुई थी जिसकी तुझे इतनी बड़ी सज़ा भुगतनी पड़ी। इस बार मैं रिश्ता अपने ही परिवार में से खोजूँगी।“

अमजद ने इस बात का कोई उत्तर न दिया और वह उठकर दूसरे कमरे में चला गया। इन्हीं दिनों वह कराची के एक अस्पताल में काम करता था। असल में, ज़ाहिरा खां ने अपने मायके वालो से जुड़े घरों में से किसी भाई की लड़की उसके लिए पसंद कर रखी थी। बस, वह अमजद की सहमति चाहती थी। यह मसला भी हल हो गया तो बात आगे चला दी गई। ज़ाहिरा खां और नई बहू का पिता चाहते थे कि यह निकाह वाला मसला जल्द हल हो जाए। उन्हें डर था कि कहीं आफिया फिर से अमजद के साथ प्यार जताकर वापस न आ जाए। जल्दबाजी में सादी-सी रस्म करके मंगनी कर दी गई। अमजद के घरवाले चाहते थे कि इसके साथ ही यदि आफिया के तलाक वाला काम भी निपट जाए तो फिर वे बिल्कुल निश्चिंत हो जाएँगे। मगर यही एक मसला उन्हें सबसे अधिक कठिन लग रहा था।

मंगनी वाली शाम को अमजद ने अपनी होने वाली नई बीवी को शाम के खाने के लिए कहीं बाहर लेकर जाना था। इसीलिए उसने शाम का काम शीघ्र समाप्त किया। तभी एक नर्स ने आकर उसको संदेश दिया कि कोई लड़की उससे मिलने आई है। उसने सोचा कि उसकी नई दुल्हन होगी। उसने डॉक्टरों वाला गाउन उतार दिया और अपने कपड़े वगैरह ठीक किए। वह ज्यूँ ही बाहर आया तो देखता ही रह गया। सामने आफिया खड़ी थी। इस वक़्त वह उसको इतनी सुंदर लगी जितनी पहली मुलाकात के समय भी नहीं लगी थी। वहाँ आसपास के स्टाफ ने यही सोचा था कि यह अमजद की होने वाली बीवी है। आफिया की ओर देखते हुए अमजद ने अंदाज़ा लगा लिया कि यह तकरीबन महीनाभर पहले बच्चे को जन्म दे चुकी होगी। मगर फिर भी इस वक़्त उसकी खूबसूरती लाजवाब थी।

“जनाब किन सोचों में गुम हैं ?“ आफिया ने आगे बढ़कर बड़े मोह से अमजद की बांह पकड़ ली। अमजद की रूह को शांति मिल गई।

“मैं तो तुझे ही देख रहा था। कितनी खूबसूरत लग रही है। पर...।“

“पर... पर क्या, मेरे भोलेभाले डॉक्टर साहब ?“ आफिया ने उसकी ‘पर’ का मतलब समझते हुए गहरा मज़ाक किया।

“अब समझ गई हो तो खुद ही बता दे।“

“तेरा छोटा साहिबजादा एक महीने का हो चुका है।“ आफिया ने उसकी बांह पर हल्की-सी चिकौटी भरी।

“और मुझे पता भी नहीं ?“ अमजद ने नाराज़गी प्रकट की।

“मैं मानती हूँ यह बात। पर कईबार इन्सान के हाथ में कुछ नहीं होता। अब तू ही बता कि उस वक़्त मैं तो तुझे यह ख़बर देने की हालत में ही नहीं थी। घर के किसी दूसरे मेंबर ने तुम्हारे घर ख़बर भेजनी थी, पर मेरा ख़याल है कि हम दोनों के घरवाले हमें

जोड़ने से ज्यादा तोड़ने की तरफ ध्यान दे रहे हैं।“ आफिया ने बहाने से नवजन्मे बच्चे के बारे में अमजद के घर ख़बर न देने के लिए अपने घर वालों को कसूरवार ठहराया। साथ ही, उसने उनकी आपसी अनबन के लिए पहली बार अपने मायके वालों को भी दोष दिया। अमजद कुछ न बोला तो आफिया ने उसकी ठोड़ी घुमाकर अपनी ओर करते हुए कहा, “चल, अब तो इस बात पर मुआफ़ कर दे। अब तो मैं खुद चलकर तुझे बताने आई हूँ।“ आफिया ने खूबसूरत अदा से कानों को हाथ लगाया। अमजद को आफिया का भोलापन अंदर तक भा गया। उसने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया। वे वैसे ही चलते हुए बाहर आ गए।

“मेरा ख़याल है कि मेरा प्यारा प्यारा खाविंद इतना तो समझता ही होगा कि शाम का वक़्त है और मुझे भूख भी बहुत लगी होगी ?“

“ओह हाँ-हाँ। हम किसी नज़दीकी रेस्टोरेंट में चलते हैं।“ इतना कहते हुए अमजद आफिया को लेकर कार की ओर चल दिया।

“वैसे मैं जानती हूँ कि मेरे डॉक्टर साहब हद दरज़े के कंजूस हैं। पर जनाब, आज यह कंजूसी नहीं चलेगी। आज आपके साहिबजादे के जन्म की खुशी में यह डिनर मेरी पसंद का होगा।“

“बता फिर कहाँ चलें ?“

“होटल शैरेटन।“

“ठीक है, बैठ गाड़ी में।“ अमजद ने गाड़ी का दरवाज़ा खोलकर आफिया को संग बिठा लिया और चल पड़ा। शैरेटन होटल के रेस्टोरेंट पहुँचकर उन्होंने बड़ा शानदार डिनर किया। आफिया की उपस्थिति ने पिछले कितने ही दिनों से परेशान चले आते अमजद के कलेजे को ठंडक प्रदान की।

“कैसा रहा डिनर ?“ अमजद बिल चुकाकर चलते हुए बोला।

“अमजद, तेरे हाथ का तो ज़हर भी आब-ए-हयात है। यह तो फिर भी डिनर है।“ आफिया ने अँधेरे-से में पीछे होकर अमजद को अपनी बांहों में भर लिया। अमजद ने उसकी बांह पकड़कर अपने साथ लगा लिया।

“अब क्या प्रोग्राम है ?“

“आ जा, सामने वाले पॉर्क में चलते हैं।“ आफिया उसको पॉर्क की ओर ले चली। वह होटल के लॉन की कोने वाली एक नए-से पत्थर की बैंच पर बैठ गए। आफिया ने अमजद की बांह से सिर टिकाकर आँखें मूंद लीं और मन में सोचा कि काश वक़्त यही रुक जाए। अमजद, आफिया के बालों में हाथ फेरने लगा।

“अमजद, कितने अच्छे थे वे दिन जब हम बॉस्टन में हुआ करते थे।“

“उन सुहावने दिनों की याद बड़ा तड़पाती है आफिया, क्या बताऊँ।“ अमजद ने भी ठंडी आह भरी।

“हम लड़ते-झगड़ते भी थे, पर पलों में फिर से वैसे हो जाते थे।“

“मुझे तेरी लड़ने और मान जाने की अदा बड़ी प्यारी लगती थी।“

“और मुझे तेरी मुँह फुलाने की।“ आफिया ने अमजद की ओर मुँह फुलाकर नकल-सी उतारी तो दोनों हँस पड़े।

“काश कि वे दिन वापस आ जाएँ।“

“पुलों से गुज़रे पानी भी कभी लौटे हैं पगली। पर हम मौजूदा वक़्त को ज़रूर वैसा ही बना सकते हैं। बस, इन्सान के हाथ में इतना ही होता है।“

“अमजद, पिछले दिनों हमने लड़ने-झगड़ने की सब हदें पार कर दीं। कई बार मैं तेरे पर हद से ज्यादा गुस्सा हुई होंगी। पर क्या तुझे अभी भी मेरे से मुहब्बत है ?“

“आफिया, ऐसी बातों का मुहब्बत पर कोई असर नहीं पड़ता। एकसाथ रहते हुए गुस्से-गिले होना तो एक आम बात है।“

आफिया ने अमजद के गिर्द लपेटी अपनी बांहें और कस लीं। अमजद को भी इस वक़्त आफिया पर बेइंतहा प्यार उमड़ रहा था।

“मैंने तेरे पर कई ज्यादतियाँ की हैं अमजद...।“ इतना कहते हुए आफिया रोने लग पड़ी। अमजद से उसका रोना सहन न हुआ। उसने उसके कंधे पर हाथ फेरते हुए ढाढ़स देते हुए उसे फिर से बातों में लगा लिया। आफिया अमजद की गोद में सिर रखकर लेट गई।

“अहमद का क्या हाल है ?“ उसने उसका मन बहलाने के लिए बात बच्चों की ओर मोड़ ली।

“बिल्कुल ठीक। पर जब गुस्सा होता है तो माथे पर डाले बल बाप की तरह गहरे हो जाते हैं।“

“और माँ की तरह पीटने नहीं लगता ?“ अमजद ने आफिया का नाक पकड़कर हिलाया। आफिया ने हँसते हुए उसकी छाती में प्रेमभरी हल्की-हल्की मुक्कियाँ मारीं।

“मरियम कैसी है ?“

“वह भी ठीक है। पढ़ने में बहुत होशियार है।“

“बाप पर गई है न।“

“बाप पर नहीं, माँ पर गई है जनाब। याद है, यूनिवर्सिटी में टॉप करके मैंने सबको हैरान कर दिया था।“

“मुझे गर्व है तुझे पर आफिया पर...।“

आफिया ने अमजद के मुँह पर उँगली रखते हुए उसको आगे बोलने से रोक दिया और बोली, “ये प्यार के क्षण मुश्किल से मिले हैं। इन्हें हम कड़वाहट में बिल्कुल नहीं बदलेंगे।“

“चल ठीक है।“

“बल्कि मैं तो वे कड़वाहटें हमेशा के लिए ख़त्म करने आई हूँ।“

“अच्छा !“

“अमजद, बच्चों का तेरे बग़ैर दिल नहीं लगता।“ आफिया ने बात दूसरी ओर मोड़ ली।

“और बच्चों की माँ का ?“ अमजद हँसा।

“मछली पानी से बाहर रहकर कितना तड़पती है, ये पीड़ा तो सिर्फ़ वो बेचारी ही जानती है।“ आफिया ने आँखें पोंछी।

“आफिया, तुझे दुख पहुँचाने के लिए मैं तेरा गुनाहगार हूँ।“

“नहीं प्लीज़, ऐसी बातें न कर। पुराना सबकुछ भूल जा।“

“ठीक है पुराने सबकुछ पर मिट्टी डाली। अब फिर आगे बता क्या हुक्म है सरकार का ?“

“अमजद, तुझे बच्चे बहुत याद करते हैं। मुझसे उनकी तड़प देखी नहीं जाती।“ आफिया बच्चों की बात कर रही थी, पर अमजद आफिया की तड़प महसूस कर रहा था। गहरी आह भरते हुए वह बोला, “मैं कौन-सा सुखी हूँ तुम्हारे बग़ैर।“

“चल फिर अपने बच्चों के पास चल। क्यों हम एक-दूजे के बिना भटकते फिरते हैं।“

“चल तो पड़ता, पर कहाँ ?“

“मेरे घर, और कहाँ।“

“नहीं आफिया, वहाँ नहीं मैं जा सकता। तुझे पता ही है कि पीछे क्या कुछ होकर हटा है।“

“अमजद, उसके लिए हम दोनों ही कसूरवार थे। अब पुरानी बातों को भुलाने का फैसला भी हम दोनों का ही है।“

“मगर फिर भी आफिया मैं मुआफ़ी चाहता हूँ उस घर में...।“ आगे उसने बात बीच में ही छोड़ दी।

“चल फिर यूँ करते हैं। न तेरे घर और न ही मेरे। हम अपार्टमेंट ले लेते हैं और अपनी ज़िन्दगी नए सिरे से शुरू करेंगे।“

“तेरी इस बात पर गौर किया जा सकता है।“

“गौर क्या करना है। हमें कौन-सा किसी से इजाज़त लेनी है। चल उठ, आज किसी होटल में रुक जाएँगे। कल मैं टैक्सी करके बच्चों को ले आऊँगी और तू तब तक कहीं अपार्टमेंट का इंतज़ाम कर लेना।“

“हाँ, यह बात तेरी बिल्कुल ठीक है।“

अमजद के हामी भरते ही आफिया ने उसके इर्द-गिर्द बांहें कस लीं। उसको लगा जैसे मन पर से एक भारी बोझ उतर गया हो। तभी अमजद के फोन की घंटी बजी। उसने आफिया को वैसे ही छाती से लगाए रखा और फोन ऑन करके ‘हैलो’ कही। उधर फोन पर उसकी माँ की आवाज़ उभरी, “बेटा अमजद, तू किधर रह गया ?“

“अम्मी मैं तो...।“ उसने आफिया को मुँह पर उँगली रखकर चुप रहने का इशारा किया और फिर आगे बोला, “अम्मी मुझे तो इधर किसी काम से आना पड़ गया था।“

आफिया जिसका मन अमजद की माँ का फोन आने पर ही खराब हो गया था, फोन में से उस तक धीमी आवाज़ में पहुँचती बात ध्यान से सुनने लगी। अमजद की माँ आगे बोली, “तुझे याद होना चाहिए था कि तुझे आज किसी को डिनर के लिए ले जाना था।“

“जी अम्मी। मैं आपको बाद में फोन करता हूँ।“

अमजद की माँ ने उसकी दुबारा फोन करने वाली बात सुनी ही नहीं और बोलती चली गई, “तेरी होने वाली दुल्हन तेरा इंतज़ार करती रही। तू न आया तो आख़िर वह घर लौट गई।“

‘होने वाली दुल्हन!’ ये लफ्ज़ सुनते ही आफिया के सीने पर आरी चल गई। पर फिर भी वह ज़ब्त में रही। उसको अमजद की माँ की बात फिर सुनाई देने लगी, “अभी यह हाल है तो बाद में क्या करेगा। दो दिन बाद तुम्हारी शादी है। तूझे कुछ तो सोचना था।“

अब आफिया से अपने आप पर नियंत्रण रखना कठिन था। वह उछलकर उठ बैठी।

“अमजद जनाब, प्यार के वायदे मेरे साथ किए जा रहे हो और उधर नया निकाह करवाने की तैयारी भी चल रही है। मैंने तुझे इतना कमीना नहीं समझा था।“ इतना कहते हुए आफिया ने झपटकर अमजद के गिरेबान पर हाथ डाल दिया। वह उसको इधर-उधर खींचती रही। फिर उसकी छाती पर मुक्के मारने लगी। मुक्के मार मार कर वह हाँफ गई तो अमजद की छाती से लगने के लिए बढ़ी जैसा कि वह हर झगड़े के बाद किया करती थी। पर फिर वह एकदम रुकी और पीछे हटती हाथों में मुँह छिपाती रोने लगी। अमजद की भी रूठी हुई आफिया को सीने से लगाने की चाहत मन में ही रह गई।

कुछ देर सिसकियाँ भरती आफिया संभली और उसने जाने के लिए अपना बैग उठा लिया।

“आफिया मेरी बात सुन...।“ अमजद ने उसको रोकना चाहा। पर आफिया ने उसकी ओर ध्यान न दिया।

“अभी कुछ नहीं हुआ। मैं सब संभाल लूँगा। तू मुझसे मुँह न मोड़।“

“अमजद, रस्सी टूट चुकी है। अब जितना चाहे ज़ोर लगा ले, यह दुबारा नहीं जुड़ेगी। मगर दुख इस बात का है कि मैं यूँ ही भ्रम पालती रही।“

“आफिया, पूरी बात सुन ले, यूँ ही बखेड़ा न कर।“

आफिया ने उसकी बात बीच में ही काट दी और बोली, “तेरी हाँ के बग़ैर तो यह निकाह नहीं हो रहा होगा ? मैं यह भी जानती हूँ कि मुझे मन से उतारने के लिए ही तूने अपनी रज़ामंदी दी होगी। फिर क्या फायदा, यूँ ही सफ़ाई देने का। अच्छा, तुझे नई दुल्हन मुबारक।“ आफिया उठकर चल पड़ी।

“आफिया, एक बार मेरी बात सुन ले। फिर चाहे...।“ अमजद कुछ कहने लगा तो आफिया ने रुकते हुए उसकी बात अनसुनी करके कहा, “क्या तुझे पता है कि मैं तेरे बार बार कोशिश करने पर भी तलाकनामे पर दस्तख़्त क्यों नहीं करती थी ?“

अमजद ने कोई जवाब नहीं दिया तो आफिया फिर बोली, “क्योंकि मुझे पता था कि तू मुझे बेहद चाहता है। और यह तलाक वाला यूँ ही एक डरावा है। मैं सोचती थी कि हम दोनों एक-दूसरे को इतनी मुहब्बत करते हैं कि एक-दूजे के बिना रह ही नहीं सकते। पर मुझे क्या पता था कि तेरे दिल में खोट है।“

आफिया खड़ी होकर अमजद के बोलने का इंतज़ार करती रही, पर जब वह कुछ न बोला तो वह मुड़कर अमजद की ओर आई और धैर्य के साथ बोली, “जिस वजह से मैंने यह तलाक वाला काम रोका रखा था, वह वजह अब रही ही नहीं तो मेरे यूँ ही अड़े रहने का क्या फायदा। आ मेरे साथ, अभी वकील के यहाँ चलकर तलाकनामे पर दस्तख़्त करवा ले।“

अमजद फिर भी कुछ नहीं बोला तो आफिया उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई उसे बाहर ले आई। वहाँ से टैक्सी लेकर नज़दीक ही वकील के दफ़्तर पहुँचे। जहाँ जहाँ वकील ने कहा, आफिया ने दस्तख़्त कर दिए। काम खत्म हो गया तो आफिया जाने के लिए उठ खड़ी हुई। वकील फाइल समेटता बोला, “अमजद साहब, इस तलाकनामे के अनुसार तुम बच्चों का खर्चा हर महीने तब तक देते रहोगे जब तक वे बालिग नहीं हो जाते। और तुम मोहतरमा आफिया, अमजद साहिब को बच्चों से मिलने से नहीं रोकेंगी। ये कानूनी नुक्ते हैं, इसी कारण तुम्हें पढ़कर सुनाए हैं।“ वकील एक तरफ हो गया तो चलने से पहले आफिया, अमजद से हाथ मिलाते हुए बोली, “नई ज़िन्दगी मुबारक मिस्टर अमजद, यह शायद अपनी आख़िरी मुलाकात है।“ आफिया ने बाहर से टैक्सी ली और चली गई। इसके कुछ दिनों बाद अमजद का निकाह हो गया।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –16

(16)

बचपन से लेकर आज तक आफिया ने बड़ी लड़ाइयाँ लड़ी थीं। क्या पढ़ाई का क्षेत्र, क्या मज़हब या फिर समाज सेवा का क्षेत्र। आफिया ने हर तरफ अपना लोहा मनवाया था। सबको पता था कि आफिया एक बहुत ही बुद्धिमान शख़्सियत है। मगर इस सबके बावजूद आज वह इकतीस वर्ष की उम्र में अकेली रह गई थी। गुमनामी की ज़िन्दगी उसके सामने खड़ी थी। उस पर तलाकशुदा का धब्बा लग चुका था जिसको पाकिस्तान समाज में कोई पूछता नहीं। तलाक के बाद कई सप्ताह तक वह बड़े ही मानसिक तनाव में गुज़री। फिर धीरे-धीरे वह संभलने लगी। एक सुबह वह पंछियों को दाना डाल रही थी कि उसकी माँ ने दूर से आवाज़ लगाई, “आफिया, तेरा फोन है।”

“कौन है फोन पर अम्मी जान ?“

“वकील है।“

“क्या कहता है ?“

“तू खुद ही बात करके पूछ ले।”

“जी अम्मी।“ आफिया ने दानों वाला छिक्कू एक तरफ रख दिया और फोन उठा लिया। दूसरी तरफ से आवाज़ आई, “जी मुझे मोहतरमा आफिया जी से बात करनी है।”

“मैं आफिया ही बोल रही हूँ। आप कौन साहब ?“

“जी मैं जनाब अमजद का वकील बोल रहा हूँ।”

“बताओ, कैसे याद फरमाया ?“ आफिया ज़रा व्यंग्य में बोली।

“जी अमजद साहब पूछ रहे थे कि जो चैक उन्होंने बच्चों के लिए भेजा था, क्या वह कैश हो चुका है।”

“हाँ हो चुका है कैश। और कुछ ?“

“जी वे बच्चों से मिलने की इजाज़त मांग रहे थे।” वकील झिझकता हुआ-सा बोला। वह आफिया के तीखे स्वभाव से परिचित था।

“हूँ...।” आफिया उसकी बात का हुंकारा भरते हुए मन ही मन बोलने लगी, क्या इस तड़प को सहने का ठेका अकेली आफिया ने ही उठा रखा है। अमजद साहिब को भी इसमें शरीक होना चाहिए। ज़रा उसको भी पता लगे कि तड़प क्या होती है और यह कलेजे को कैसे चीरती है।’

तभी उधर से वकील की आवाज़ ने आफिया को ख़यालों में से बाहर निकाला। उसने डरते हुए पूछा था, “जी, मैं फिर अमजद साहिब को क्या संदेश दूँ ?“

“तुम अपने अमजद साहब को कह दो कि आफिया और उसके बच्चे इस पते पर नहीं रहते।” आफिया ने तंज़ कसा।

“मोहतरमा, बच्चों को मिलने का अधिकार मेरे साइल को कोर्ट देती है। आप प्लीज़ ऐसा न करो। मेरी बात...”

“जो कुछ मेरे साथ हो चुका है, तुम्हारी कोर्ट मेरा इससे बुरा क्या कर देगी। जाओ, मैं नहीं किसी को अपने बच्चों के करीब लगने देती।” खरा और तीख़ा जवाब देकर आफिया ने फोन सोफे पर पटक दिया। उसकी माँ करीब खड़ी सब सुन रही थी। वह गुस्से में आकर बोली, “कुछ न रहे इस नईम खां के बेटे का। मेरी बेटी का बेड़ा डुबा दिया उसने। अल्लाह करे उसके कीड़े...।“ इस्मत की बात बीच में ही थी कि आफिया ज़ोर से चिल्लाई, “अम्मी ! तुम्हें कितनी बार कहा है कि तू उसको लेकर जलेभुने शब्द न बोला कर।”

“तुझे उसने किसी तरफ नहीं छोड़ा और तू अभी भी उसका पक्ष लेती है ?“

“वह हमारा आपस का मामला है। पर किसी को कोई अधिकार नहीं कि अमजद के बारे में बुरे लफ्ज़ बोले।”

आफिया पैर पटकती अंदर चली गई तो इस्मत मन ही मन बोली, ‘अजीब है ये लड़की भी।’

इसके घंटाभर बाद फिर फोन बजा तो आुफिया ने गुस्से में ‘हैलो’ कहा। पर शीघ्र ही ठंडी पड़ गई। पहले वह समझी थी कि फोन अमजद के वकील का होगा, मगर यह कोई उसको जानने वाला था। फोन बंद करते हुए वह अपना मिज़ाज ठीक करने लगी। कुछ देर बाद उसने तल्ख़ी दूर करते हुए माँ को बाज़ार जाने के लिए मना लिया। माँ बेटी तैयार होकर बाज़ार की ओर चल पड़ीं। बाज़ार में खरीद-फरोख़्त करते आफिया माँ से अलग हो गई। पंद्रह-बीस मिनट के बाद वह फिर माँ के पास आ गई। इस बीच वह एक रेस्टोरेंट में बैठे सुलेमान अहमर के पास गई थी। बस दो-चार बातें करने के बाद ही वह लौट आई। घर आकर उसने इस्मत को इस बात के लिए सहमत कर लिया कि घर का आधा हिस्सा किराये पर दे दिया जाए। इस्मत ने भी सोचा कि इससे आमदनी में मदद मिलेगी। अगले दिन ही आफिया ने इश्तहार दे दिया। फिर घर किराये पर लेने वालों के फोन आने लगे। मगर आफिया ने सबको टाल दिया। उसने उसी परिवार को घर किराये पर देने के लिए ‘हाँ’ कही जिसके लिए सुलेमान अहमर ने बताया था। यह था - अल बलोची परिवार।

घर किराये पर लेने के उपरांत पहले बलोची परिवार की स्त्रियों ने यहाँ आकर रहना आरंभ किया। इस्मत से उन्होंने बड़े अच्छे संबंध रखे। आफिया के साथ भी उनकी निकटता हो गई। यह निकटता शीघ्र ही दोस्ती में बदल गई। उस परिवार में दो जवान लड़कियाँ थीं जिनके साथ आफिया के गहरे संबंध बन गए। वह उनके साथ बाहर-अंदर भी जाने-आने लगी। इस बीच वह उनके असली घर भी गई। वहीं उन लड़कियों ने आफिया को अपने भाई अली अब्दुल अजीज अली से मिलवाया। उसको सभी सिर्फ़ अली कहकर ही बुलाते थे जो कि करीब पच्चीस साल की आयु का युवक था। फिर इस परिवार की औरतों का आफिया के घर आना-जाना कम होता गया। परंतु वहाँ हर रोज़ ही नए लोग आने लगे। कोई आता और कोई जाता। इस्मत हर रोज़ नए चेहरे देखती। पर उसको इससे मतलब नहीं था। वैसे वह सोचती थी कि बड़ा परिवार है, इसलिए पारिवारिक सदस्य भी अधिक हैं। उसको बताया भी गया था कि यह एक व्यापारी परिवार है जिसके लोग आते-जाते रहते हैं। पर असल में सुलेमान अहमर ने अल-कायदा के रूपोश मेंबरों को छिपाने के लिए घर किराये पर देने वाला यह प्रबंध करवाया था। यहीं पहली बार आफिया, अल बलोची परिवार के सम्पर्क में आई। उसके इस परिवार में घुलमिल जाने का इंतज़ाम अल बलोची परिवार के अग्रज के.एस.एम. की रज़ामंदी के बाद ही किया गया था। उसको अच्छी प्रकार देखने-परखने के बाद ही एक दिन सुलेमान अहमर ने के.एस.एम. के साथ बात की, “कैसी लगी तुम्हें यह लड़की ?“

“यह पता तो तभी चलेगा जब यह किसी काम को अंजाम देगी।”

“यह बात तुम्हारी ठीक है। पर इसके अंदर जिहाद के लिए बड़ी आग भरी हुई है। वैसे भी बहुत बुद्धिमान है। साइंसटिस्ट है, दिमाग की बहुत तेज़ है।”

“तेरा क्या ख़याल है कि यह केमिकल हथियार वगैरह बनाने में मदद कर सकती है ?“

“बिल्कुल! ऐसे कामों की तो यह माहिर है। ज़रा काम लेकर देखो।”

“यह भी देख लेते हैं। पर इसमें एक और बहुत बड़ा गुण है।”

“वह क्या ?“

“यह अमेरिकन रेज़ीडेंट है। वहाँ जाने-आने में इसको मुश्किल नहीं आएगी।”

“यह बात भी तुम्हारी ठीक है।”

“चल, एक बार इसको मुफ्ती साहिब से मिला दे। वही इसको इसका आगे का काम बताएँगे।”

मुफ्ती अबू लुबाबा शाह मन्सूर, मुकामी मस्जिद का इमाम था, जो अल रशीद ट्रस्ट का डिप्टी डायरेक्टर भी था। इस ट्रस्ट का डायरेक्टर, खुद रशीद मुहम्मद था। कराची के दहशतगर्दों में सबको पता था कि इन दोनों के ओसामा बिन लादेन से सीधे संबंध हैं और ये तालिबानों के लिए पैसे का प्रबंध बड़े स्तर पर करते हैं। मुफ्ती ने सुलेमान की सारी बात सुनते ही आफिया को फतवा जारी करके जर्म वारफेयर और अन्य बॉयोलोजिकल हथियारों पर काम करने का आदेश दे दिया। जिसको आफिया ने खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया। इस बीच उसका अल बलोची परिवार में आना-जाना और अधिक बढ़ गया।

अली अपने मामा के.एस.एम. का ख़ास भरोसेमंद आदमी था जो पूरी तौर पर उसके सभी मिशनों के विषय में जानता था। इतना ही नहीं, वह हर मिशन में अपना योगदान भी देता था। यद्यपि नाइन एलेवन का मास्टर माइंडिड के.एस.एम. था, पर उस मिशन को सफल बनाने के लिए अली ने भी ऐड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया था। वह अंग्रेजी स्कूलों से पढ़ा हुआ था और पश्चिमी ढंग से रहता था। उसने ही न्यूयॉर्क के ट्विन टॉवर्ज़ तबाह करने वाले हाई जैकरों को पश्चिमी ढंग के रहन-सहन और पहनने-ओढ़ने के तरीके सिखाये थे। इसके अलावा उसने इनमें से कम से कम हाई जैकरों को उनके मिशन के बारे में प्रशिक्षण दिया था जिनमें मारवां अल शेही भी एक था जिसने कि युनाइटिड फ्लाइट नंबर 175 वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के साउथ टॉवर से हिट की थी। अली ने तकरीबन सवा लाख डॉलर मालवा अल शेही और मुहम्मद अत्ता को अमेरिका में भेजा था। वह खुद भी हाई जैकरों के साथ अमेरिका जाकर मिशन में हिस्सा लेने वाला था। इसके लिए उसने दुबई की अमेरिकन एम्बेसी में वीज़ा के लिए एप्लाई भी किया था, पर वीज़ा न मिलने के कारण वह वापस पाकिस्तान लौट आया

था। नाइन एलेवन के बाद उसने के.एस.एम. के साथ पूरे ज़ोर-शोर से दूसरे बड़े हमले के लिए काम करना प्रारंभ कर दिया। उसका मुख्य काम अगले लक्ष्य के लिए जिहादियों को प्रशिक्षण देना था। इस मिशन में वह उन जिहादियों को इस्तेमाल करना चाहते थे जिन्हें अमेरिका जाने-आने में कठिनाई न आए। तात्पर्य यह है कि जो पहले ही वहाँ के बाशिंदे हों। पहले तैयार किए गए ग्रुप के होजे पदीला और रिचर्ड रीड जैसे व्यक्ति पकड़े जा चुके थे, इसलिए यह अगले मिशन के लोगों को बहुत ही सोच विचार के साथ अमेरिका में दाख़िल करवाना चाहते थे। इनके नए जिहादियों में एक लड़का आया था - मजीद खान। यह कंप्यूटर प्रोगैमर था। इसका परिवार अमेरिका की स्टेट मैरीलैंड के शहर बाल्टीमोर में रहता था। मजीद खान का परिवार जब अमेरिका आया तो उस समय वह पंद्रह वर्ष का था। यहाँ आकर उसके परिवार ने राजनीतिक शरण ली थी। इसके छह वर्ष बाद मजीद खान पहली बार पाकिस्तान गया था। मगर अभी उसको ग्रीन कार्ड नहीं मिला था। इसी वजह से उसको अमेरिका से बाहर जाने के लिए इमीग्रेशन विभाग से अनुमति लेनी पड़ती थी, जो कि वह गलती से लेनी भूल गया था। इस बात का पता उसको बाद में जाकर लगा कि बिना इजाज़त के आने के कारण वह वापस अमेरिका में प्रवेश नहीं कर सकेगा।

ख़ैर, अब तक वह काफ़ी धार्मिक बन चुका था और किसी अच्छी लड़की से शादी करना चाहता था। उसकी शादी किसी मज़हबी हस्ती ने रबिया जाकूब की बेटी से करवा दी। इसी मज़हबी हस्ती ने उसके अंदर जिहाद के लिए आकर्षण को पहचाना और उसको के.एस.एम. के साथ मिलवाने का फ़ैसला किया। निश्चित किए गए समय पर वह उसको लेकर के.एस.एम. के पास गया और कहा कि इस लड़के को खालिद साहिब से मिलवाया जाए। के.एस.एम. ग़ौर से मजीद खान की ओर देखते हुए बोला, “बात सुन काके। यह जिहाद बातों से नहीं लड़ा जाता। इसके लिए अंदर जिहाद की आग होने ज़रूरी है।”

“जी, मैं हर तरफ से इसके लिए तैयार हूँ।”

“यह कोई भांडों का खेल नहीं है। हर वक़्त मौत साथ-साथ चलती है।”

“जी, मैं सब समझता हूँ।”

वे अभी बातें कर ही रहे थे कि एक व्यक्ति अंदर आया और के.एस.एम. से बोला, “उस लड़के ने आत्मघाती मिशन को बड़े अच्छे तरीके से अंजाम दे दिया है। वहाँ दस लोग मारे जा चुके हैं।”

“अल्लाह उसे बहिश्त बख़्शे। आगे का क्या प्रोग्राम है ?“

“पेट से बांधी जाने वाली बैल्ट तैयार है। धमाकाखेज सामग्री भी उसके अंदर फिट कर दी गई है। बस, अब तो किसी ऐसे लड़के की ज़रूरत है जो कि आत्मघाती मिशन के लिए तैयार हो।”

उसकी बात सुनकर के.एस.एम. ने पल भर सामने बैठे मजीद खां की ओर देखा और फिर बोला, “लड़का अपने पास पहुँच चुका है। तू बैल्ट लेकर आ।”

वह अंदर से बैल्ट ले आया तो के.एस.एम. ने उसको मजीद खां के पेट से बांध दिया। अच्छी तरह देख-परख कर वह बोला, “ले भई जवान, तू जिहाद के लिए मर मिटने के लिए तैयार है तो जिहाद भी तेरा ही इंतज़ार कर रहा था। तू किस्मत वाला है जो तुझे आते ही आत्मघाती मिशन का काम मिल गया। अब तू यहाँ से जा और डाउन टाउन की फराहखान मार्किट में जाकर इस काम को अंजाम दे। यह बम पूरे एक बजे चलेगा। बस, काम ध्यान से करना।”

“जी, बहुत बेहतर जनाब।” मजीद खां उठने लगा तो के.एस.एम. उसे रोकता हुआ बोला, “तुझे मालूम है कि यह क्या चीज़ है ?“

“जी, बिल्कुल पता है।”

“यह बम चलेगा तो वहाँ तेरे आसपास के सभी लोग मारे जाएँगे, पर तू भी उनके साथ ही मरेगा। तू नया है इसलिए मैं तुझे यह बात स्पष्ट बता रहा हूँ।”

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद - 17

(17)

“जी मुझे इजाज़त दो।“ इतना कहते हुए वह बाहर निकल गया और फराखान मार्किट पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर वह एक भीड़ वाली जगह पर खड़ा हो गया ताकि अधिक से अधिक लोगों को शिकार बना सके। एक बज गया, पर उसके पेट से बंधा बम न फटा। कोई आधा घंटा वह वहाँ खड़ा रहा, पर उसको बताये गए समय के अनुसार बम नहीं फटा और न कोई धमाका हुआ। आख़िर वह वापस लौट आया तो वहाँ कोई नहीं था। वहाँ से वह घर चला गया। अगले दिन वह उसी मज़हबी हस्ती के पास गया तो उसने कहा, “बधाई हो।“

“जी !“ मजीद खां हैरान हुआ।

“तू खालिद शेख मुहम्मद साहिब के इम्तिहान में पास हो गया। असल में, कल तुझे तो बैल्ट दी गई थी, वह नकली थी। सिर्फ़ तुझे परखने के लिए। पर तू वाकिया ही पक्का जिहादी है। के.एस.एम. तुझे बड़ा काम सौंपने वाले हैं।“

फिर अगले सप्ताह उसको पैसे देकर इंडोनेशिया भेजा गया। उसने वहाँ पहुँचकर किसी हंबाली नाम के व्यक्ति से सम्पर्क किया और पैसे पहुँचाए। इन पैसों की मदद से हंबाली ने अगले हफ़्ते बाली के किसी क्लब में बम धमाका किया जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए। इसके पश्चात, मजीद खां और छोटे-मोटे काम करके के.एस.एम. के पास वापस लौट आया तो उसको अली के हवाले कर दिया गया। मजीद खां को अमेरिका भेजकर आगे का काम करने की ट्रेनिंग देने का काम अली का था। के.एस.एम. ने अली से मिलकर दूसरे बड़े हमले की जो साजिश तैयार की थी, उसमें वह मजीद खां को इस्तेमाल करना चाहता था। उसके माध्यम से वह अमेरिका के तेल भंडारों को आग लगाने या वहाँ पीने वाले जल में ज़हर मिलाने का काम करना चाहते थे। लेकिन मजीद खां ने बताया कि वह अब अमेरिका में दाख़िल नहीं हो

सकता। अली ने कारण पूछा तो मजीद खां ने बताया कि वह अमेरिका से चलते समय ट्रैवल परमिट लेना भूल गया था। और इस परमिट के बग़ैर वह अमेरिका में प्रवेश नहीं कर सकेगा। कुछ सोचता हुआ अली बोला, “मजीद जो हो गया, सो हो गया। अब उस वक़्त को वापस तो नहीं लाया जा सकता। पर तू यह बता कि इस मुश्किल का कोई हल है ?“

“हल तो इसका है, पर वह काफ़ी कठिन है।“

“हल क्या है तू बता। कठिन को आसान बनाना तेरा नहीं, मेरा काम है।“

“वह यह है कि रिफ्यूजी सिस्टम वाले व्यक्ति को अमेरिका से बाहर जाने के लिए ट्रैवल परमिट लेना पड़ता है। उस परमिट के बिना वह दुबारा अमेरिका में दाख़िल नहीं हो सकता। ट्रैवल परमिट लेने वाले व्यक्ति को अमेरिका से चलने से पहले ही यह परमिट लेना होता है। या यूँ कह लो कि परमिट लेने वाला व्यक्ति अमेरिका में होना चाहिए। वहाँ पहले वह अर्ज़ी भरकर इमिग्रेशन विभाग को मेल करता है। फिर बाद में उन्हें फोन करना पड़ता है। इसके बाद ही वे ट्रैवल परमिट भेजते हैं।“

“हम अब क्या कर सकते हैं, वह बता ?“

“वहाँ से कोई व्यक्ति मेरी अर्ज़ी इमिग्रेशन वालों को मेल करें फिर मजीद खान बनकर उन्हें फोन करे। पर इसमें एक अड़चन और है।“

“वह क्या है ?“

“कोई व्यक्ति वहाँ से अर्ज़ी भी भेज सकता है। मजीद खान बनकर फोन भी कर सकता है, पर मेरे पास वहाँ का कोई एड्रेस नहीं है जिस पर सारी कार्रवाई पूरी होने के बाद इमिग्रेशन वाले ट्रैवल डाक्युमेंट भेजेंगे। यह एड्रेस कोई ऐसा होना चाहिए जो कि बाद में पकड़ा न जा सके। फ़र्ज़ करो कि मैं वहाँ अपने घर का एड्रेस ही दे देता हूँ तो

पता लग जाने पर एफ.बी.आई. तुरंत मेरे परिवार को पकड़ लेगी। साथ ही, तभी मेरा नाम भी सामने आ जाएगा।“

“फिर इसका हल क्या है ?“

“कोई भरोसेमंद आदमी वहाँ के किसी पोस्ट आफिस में मेरे नाम का पोस्ट बॉक्स किराये पर ले ले। वही पता मैं अपनी अर्ज़ी में भेजूँगा। जब एकबार परमिट आ गया तो पोस्ट बॉक्स में से परमिट उठाकर पोस्ट बॉक्स बंद कर दिया जाएगा। इस प्रकार सारे सबूत खत्म हो जाएँगे।“

“हूँ... अब समझा मैं तेरी बात, पर...।“ आगे अली सोचने लगा कि ऐसा भरोसेमंद आदमी कौन हो सकता है जो इतना बड़ा खतरा मोल ले ले। उसकी यह भी सोच थी कि यह काम किसी आम व्यक्ति से नहीं करवाया जा सकता। इस प्रकार सारी पोल खुल जाएगी। इसके लिए कोई सच्चा जिहादी ही हो सकता है। सोचते सोचते एकदम उसके मन में आफिया का ख़याल आ गया। उसने यह बात आफिया से करने का मन बना लिया। उसने अपनी बहन को भेजकर आफिया को घर में बुला लिया और अवसर मिलते ही मजीद खां की सारी कहानी सुना दी। आफिया ने पूछा, “मैं इसमें क्या कर सकती हूँ ?“

“तू अमेरिकन रैजीडेंट है। तू वहाँ बड़ी आसानी से जा सकती है। ग्रीन कार्ड होल्डर होने के कारण तेरे पर कोई शक भी नहीं करेगा।“

“मगर मैंने तुम्हें पहले ही बता रखा है कि मैं और अमजद एफ.बी.आई की इंटरव्यू बीच में ही छोड़कर भाग आए थे। इस कारण एफ.बी.आई. हमें ज़रूर ढूँढ़ रही होगी। मुझे डर लगता है कि कहीं उनके हत्थे ही न चढ़ जाऊँ।“

“वैसे तो बड़ी शेखियाँ मारती फिरती है कि मैं जिहाद के लिए कुछ भी कर सकती हूँ।“

“बात वो नहीं है। बात यह है कि मुझे अभी बहुत कुछ करना है। अगर शुरुआत में ही पकड़ी गई तो जिहाद के लिए जो कुछ करने के बारे में सोचा हुआ है, वे सारे सपने अधूरे ही रह जाएँगे।“

“आफिया कल किसने देखा है। और फिर, यह न भूल कि हम जिहादी हैं। और जिहादी आने वाले ख़तरों से नहीं डरा करते।“

“ठीक है। बता फिर मुझे क्या हुक्म है।“ अली के शब्दों ने आफिया के मान-सम्मान पर चोट मारी तो वह हर ख़तरा उठाकर अमेरिका जाने के लिए तैयार हो गई। आगे का सारा प्रबंध कर दिया गया। लेकिन आफिया की सलाह पर यह काम दो हिस्सों में करने के बारे में सोचा गया। पहले हिस्से में आफिया ने सिर्फ़ अमेरिका जाना था और वहाँ मजीद खां के नाम पर किसी पोस्ट ऑफिस में पोस्ट बॉक्स किराये पर लेकर वापस लौट आना था।

इसके तीसरे दिन ही आफिया कराची से अमेरिका के लिए रवाना हो गई। पूरे रास्ते उसको एकपल भी चैन न आया। उसको बार बार एफ.बी.आई. का डर सताता रहा कि कहीं ऐसा न हो कि उसे उतरते ही पकड़ लिया जाए। लेकिन ऐसा कुछ भी न हुआ। वह मौज से बाल्टीमोर एअरपोर्ट पर उतरी और सामान उठाकर बाहर निकल आई। सामने ही टैक्सी खड़ी थी। वह अपना बैग उठा टैक्सी में जा बैठी। संयोग से टैक्सी ड्राइवर पाकिस्तानी ही था। होटल तक जाते हुए वह उसके साथ बातें करती रही। आफिया ने बातों बातों में बताया कि वह पाकिस्तान सरकार की अधिकारी है और यहाँ किसी सेमिनार में भाग लेने आई है। इस कारण किसी होटल में ठहर रही है। वह होटल पहुँची और डैस्क पर जाकर कमरा बुक करवा लिया। अगले दिन वह दोपहर के बाद टैक्सी लेकर करीबी शहर गैदर्सबर्ग के पोस्ट आफिस में गई और पोस्ट बॉक्स किराये पर लेने के लिए अर्ज़ी भरी। अर्ज़ी में उसने अपने पति का नाम मजीद खां लिखा। थोड़ी-बहुत काग़ज़ी कार्रवाई के बाद आफिया सद्दीकी और मजीद खां के नाम पर पोस्ट बॉक्स मिल गया। आफिया ने पोस्ट बॉक्स की चाबी लेकर पर्स में डाली और बाहर आकर टैक्सी से फिर होटल चली गई। अगले दिन वह फ्लाइट लेकर वापस पाकिस्तान लौट आई। वहाँ पहुँचकर उसने नए खोले पोस्ट बॉक्स का पता और चाबी, दोनों अली के हवाले कर दिए।

अब अली ने काम के दूसरे भाग को अंजाम देने के लिए योजना बनानी प्रारंभ कर दी। मजीद खां ने नए पते के अनुसार अपनी अर्ज़ी भरकर तैयार कर ली थी। अली किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश करने लगा जो उनके काम के अलग हिस्से को पूरा करने में मदद कर सके। इसके लिए भी भरोसेमंद व्यक्ति की ज़रूरत थी। बहुत सोच विचार के बाद अली ने यह बात अपने मामा के.एस.एम. को बताई। उसने अली से कहा कि वह एक आध दिन में उसके लिए कोई प्रबंध करेगा। दूसरे ही दिन के.एस.एम. ने अली से कहा कि शाम के समय वह सुपर स्पाइसी रेस्टोरेंट में चला जाए। वहाँ उसको उज़ेर पराचा नाम का लड़का मिलेगा जो कुछ दिन बाद ही अमेरिका जा रहा है। उसके साथ बात कैसे करनी है, के.एस.एम. ने यह सबकुछ अली को समझा दिया। उधर उज़ेर को उसके पिता सैफउल्ला पराचा ने कह दिया कि उसके कोई जान-पहचान वाले हैं, वह उनकी मदद कर दे। उज़ेर को पता था कि उसका पिता बड़ा बिजनेसमैन है और उसके कई अल-कायदा मेंबरों से भी संबंध हैं। लेकिन स्वयं वह ऐसे कामों से दूर ही रहता था। उसका पिता भी उसको यही कहता रहता था कि उसके जितने भी संबंध अलकायदा के साथ हैं, वे सिर्फ़ बिजनेस नज़रिये से हैं। वैसे वह कहता था कि उसका उनके साथ कोई लेना-देना नहीं है। खैर, शाम के समय उज़ेर पराचा रेस्टोरेंट में अली और मजीद खां से जाकर मिला। बातचीत अली ने शुरु की, “उज़ेर भाई, अपना यह दोस्त मजीद, एक काम करने वाला मिडल क्लास आदमी है और यह आते समय अपना ट्रैवल परमिट लेना भूल गया है। बस, इसका इतना काम करना है कि इसकी अर्ज़ी वहाँ लेकर जानी है और अमेरिका पहुँचकर इमिग्रेशन को मेल कर देनी है। फिर हफ़्ते बाद उन्हें मजीद खां बनकर फोन करना है। इसके बाद इमिग्रेशन वाले इसका ट्रैवल परमिट मेल कर देंगे और तू जाकर उस मेल बॉक्स में से वह मेल उठा लेना। परमिट मिल जाने के बाद पोस्ट बॉक्स बंद करने की अर्ज़ी दे देना। और वापस पाकिस्तान आते समय इसका वो परमिट साथ ले आना ताकि इसको दुबारा अमेरिका में प्रवेश करने की अनुमति मिल जाए।“

बाईस-तेईस वर्षीय शर्मीले-से उज़ेर को बात कुछ अटपटी-सी लगी। परंतु वह उनके प्रभाव के कारण कुछ बोल न सका। और उसने मजीद खां के सारे काग़ज़-पत्र, उसका लायसेंस, सोशल सिक्युरिटी कार्ड, मेल बॉक्स की चाबी और अर्ज़ी वगैरह ले लिए। घर आकर उसने अपने पिता से कहा कि उसको यह काम कुछ जंचता नहीं है। पर सैफउल्ला पराचा ने बातचीत में उसका भय दूर कर दिया और आधे मन से उज़ेर पराचा अमेरिका जाते समय मजीद खां के सभी काग़ज़-पत्र अपने संग ले गया। वहाँ जाकर उसने अपना सारा सामान अपने पिता के दफ़्तर में रख दिया और अपने कामों में व्यस्त हो गया।उज़ेर का पिता सैफउल्ला पराचा बहुत वर्ष पहले अमेरिका में पढ़ता रहा था। कुछ समय उसने वहाँ ट्रैवल एजेंसी भी चलाई। फिर पाकिस्तान वापस आकर उसने कपड़े का बिजनेस आरंभ कर लिया। जब उसका बिजनेस भलीभाँति

जम गया तो उसने इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट का लायसेंस लेकर पाकिस्तान से अमेरिका को रेडीमेड कपड़े भेजने प्रारंभ कर दिए। उसने एक दफ़्तर न्यूयॉर्क में खोल लिया। पाकिस्तान में उसने घर बनाकर बेचने का काम भी बड़े स्तर पर चला लिया। न्यूयॉर्क में सैफउल्ला का पुराना अमेरिकी दोस्त चाल्स उसका बिजनेस पार्टनर बन गया। इस दौरान एकबार वह पाकिस्तान की राइस एक्सपोर्ट एसोसिएशन के साथ अफगानिस्तान गया। टीम के एक सदस्य ने उसको ओसामा बिन लादेन के साथ मिलवाने का विचार बताया तो वह खुशी खुशी मान गया। लादेन से मिलते समय उसको अपना कार्ड देते हुए सैफउल्ला ने कहा कि वह एक यूनिवर्सल ब्राडकास्टिंग नाम का टी.वी. कार्यक्रम चलाता है। उसने लादेन को अपने इस प्रोग्राम में इंटरव्यू देने के लिए कहा। लादेन ने मुस्तकराते हुए सैफउल्ला का कार्ड जेब में डाल लिया। तब तक सैफउल्ला सोच रहा था कि उसको अलकायदा से बहुत बिजनेस मिल सकता है। वह उसके नए बन रहे घरों के खरीददार हो सकते हैं। इस बीच काफी समय बीत गया कि उसके दफ़्तर में एक व्यकित आया जिसने अपना नाम मीर बताया। वास्तव में मीर, के.एस.एम. ही था। उसने वो कार्ड निकालकर दिखलाया जो कभी सैफउल्ला ने ओसामा बिन लादेन को दिया था। मीर बने के.एस.एम. ने कहा कि उन्हें कुछ घर किराये पर चाहिएँ और कुछ खरीदने भी हैं। सैफउल्ला यह काम करने के लिए खुशी से तैयार हो गया। अगले एक साल तक उसने अलकायदा को बेचे घरों में से लगभग तीन करोड़ रुपये कमाये। पिछले दिनों ही के.एस.एम. ने एक दिन उसको मुस्तफा नाम के किसी बड़े जमींदार से मिलवाया। पर मुस्तफा असल में के.एस.एम. का भान्जा अली ही था। मीर ने सैफउल्ला पराचा से कहा, “सैफउल्ला साहिब, मुस्तफा बलोचिस्तान का बहुत बड़ा बिजनेसमैन है। यह भी अमेरिका में इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट का बिजनेस करना चाहता है। तुम इसकी मदद करो।“

“हाँ जी, मीर साहिब फरमाओ, मैं इसके लिए क्या कर सकता हूँ ?“

“तुम इसके पार्टनर मजीद खां के लिए वहाँ कोई कंपनी खुलवा दो ताकि यह भी अपना सामान वहाँ भिजवा सके। शुरु में तुम इसको अपनी कंपनी के रास्ते ही सामान भेजने की इजाज़त दे दो तो बहुत अच्छा होगा। आगे चलकर यह शायद तुम्हारा पार्टनर ही बन जाए।“

“कोई बात नहीं मीर साहिब, ये अगर चाहें तो एक आध डिलीवरी मेरी कंपनी की मार्फ़त भी भेज सकते हैं। आगे की आगे देखी जाएगी।“ सैफउल्ला अंदर से खुश हो गया कि उसका बिजनेस और आगे बढ़ेगा। पर के.एस.एम. की स्कीम कुछ और थी।

उसने सोचा था कि अली का सामान भेजने के बहाने वह सैफउल्ला की कंपनी को इस्तेमाल करेगा। जिन कंटेनरों में सैफउल्ला कपड़े डालकर भेजता था, उनमें वह सी-4 एक्सप्लोसिव और अन्य घातक केमिकल्स डालकर भेजेगा। जिन्हें वहाँ बाद में मजीद खां ने संभालना था। यही हथियार अमेरिका के तेल भंडारों को आग लगाने के लिए प्रयोग में लाए जाने थे। बातचीत समाप्त करके मीर और मुस्तफा मामा-भान्जा सैफउल्ला के दफ़्तर से चले गए।

उधर आफ़िया यह सोचकर खुश हो रही थी कि वह चुपचाप अमेरिका का फेरा लगा आई ओर किसी को इसकी भनक भी नहीं पड़ी। लेकिन यह उसकी भूल थी। क्योंकि उसका नाम पहले ही एफ.बी.आई. वालों के रिकार्ड में आ चुका था। वह और अमजद जब एफ.बी.आई. की दूसरी इंटरव्यू बीच में ही छोड़कर चले गए थे तो एफ.बी.आई. ने उनका नाम ट्रैवल लिस्ट में डाल दिया था। जिसका परिणाम यह हुआ कि जैसे ही वह अमेरिका जाने के लिए कराची से जहाज पर बैठी थी तो उसी समय पाकिस्तान की फैडरल ट्रैवल एजेंसी ने अमेरिकी एफ.बी.आई. को सूचित कर दिया था। एफ.बी.आई. वालों ने उसको एअरपोर्ट पर पकड़ने की बजाय उसका पीछा करना उचित समझा। क्योंकि वह उसको पकड़ने की अपेक्षा सारे रिंग को जोड़ना चाहते थे। आफ़िया ने अमेरिका पहुँचकर जब एअरपोर्ट के बाहर से टैक्सी ली तो जो पाकिस्तान टैक्सी ड्राइवर उसको एअरपोर्ट से लेकर होटल में छोड़कर आया था, वह एफ.बी.आई का ही आदमी था। अगले दो दिन भी उसका पीछा होता रहा। उसके पीछे-पीछे रहते हुए एफ.बी.आई. को पता लगा कि आफ़िया ने पोस्ट आफिस में पोस्ट बॉक्स किराये पर लेने के वक्त मजीद खां का नाम अपने पति के रूप में लिखा है तो वह समझ गए कि अब इस नाम का व्यकित अमेरिका में आएगा। परंतु मजीद खां या बाकी ग्रुप इस बात से अनभिज्ञ आगे की कार्रवाई करने में व्यस्त हो गए

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –18

मगर इसी बीच 1 मार्च 2003 के अख़बार ने तहलका मचा दिया। मुख्य ख़बर थी कि के.एस.एम. को पाकिस्तानी पुलिस ने पकड़ लिया है। साथ ही, यह भी ख़बर थी कि के.एस.एम. जिसका पूरा नाम खालिद शेख मुहम्मद है, अलकायदा का आपरेशन चीफ़ है। वह ओसामा बिन लादेन के मुकाबले का अलकायदा का लीडर और नाइन एलेवन का मास्टर माइंडिड है। पुलिस के अनुसर के.एस.एम. रावलपिंडी फौज़ी छावनी के करीब किसी के बड़े घर में से गिरफ्तार किया गया था। किसी मुख़बिर ने अमेरिका द्वारा घोषित पच्चीस मिलियन डॉलर के इनाम को लेने की खातिर उसको पकड़वाया था। के.एस.एम. को जिसके घर में से पकड़ा गया था, वह खुद एक साइंसटिस्ट था। उसके घर से जो अन्य सामान मिला, उससे पता चला कि अल कायदा, बॉयलॉजिकल हथियार के करीब पहुँच चका था। वहीं से दूसरे अल कायदा सदस्यों के पते मिले। मजीद खां को भी अगले दिन ही पकड़ लिया गया। इसी प्रकार इस रिंग के कई अन्य सदस्य भी पुलिस की गिरफ्त में आ गए। उधर अमेरिका में एफ.बी.आई आफिया की बहन फौज़िया के घर पहुँची। फौज़िया से सवाल-जवाब करके वह वापस चले गए तो उसने अपने भाई को हूस्टन टैक्सास में फोन किया। वह हैरान रह गई जब उसने बताया कि उसके घर से भी एफ.बी.आई. वाले अभी अभी गए हैं। वह आफिया को बुरी तरह खोज रहे थे। इस बारे में फौज़िया ने आफिया को पाकिस्तान में फोन करते हुए कहा, “आफिया, तुझे एफ.बी.आई. खोजने आई थी।“

“क्या ? पर क्यों ?“ फौजिया की बात सुनते ही आफिया के होश उड़ गए।

“यह तो पता नहीं, पर मुझे पता चला है कि मार्च के शरु से ही जो के.एस.एम. जैसे लोगों की गिरफ्तारियाँ हुई हैं, यह सब उसी कड़ी का एक हिस्सा है।“

“हूँ...।“ आफिया किसी सोच में गुम हो गई।

“आफिया, क्या तू इस के.एस.एम. के बारे में कुछ जानती है ?“ फौज़िया ने सवाल किया।

“नहीं तो। पर तू क्यों पूछ रही है ?“

“आफिया, यह कोई लम्बा चक्कर लगता है, जो धड़ाधड़ गिरफ्तारियाँ हो रही है। इसके घेरे में पता नहीं कौन कौन आएगा। सुना है कि कोई मजीद खां नाम का लड़का भी पकड़ा गया जो अमेरिका आकर अगले हमले करने चाहता था। आफिया सच बताऊँ तो मुझे बड़ा डर लग रहा है। तू संभलकर रहना।“

फौज़िया के फोन ने आफिया के होश उड़ा दिए। उसको लगने लगा कि उसको पकड़ने के लिए कोई आया कि आया। उसने तुरंत अपने तीनों बच्चों को तैयार किया और टैक्सी बुला ली। उसकी माँ ने उसको समझाते हुए कहा, “आफिया, यह क्या पागलपन है। तेरा इन लोगों से क्या संबंध है। तुझे कोई क्यों पकड़ेगा। जब तूने कुछ गलत किया ही नहीं तो डरने की कौन-सी बात है।“

“अम्मी, तू नहीं समझ सकती यह बात। इस वक्त मेरा यहाँ से चले जाना ही बेहतर है।“

“आफिया, सच बता, कहीं तेरा किसी उलटे-सीधे काम से वास्ता तो नहीं है ?“ इस्मत ने आफिया की बांह पकड़कर सख़्ती से कहा।

“अम्मी, मैंने कहा है न कि यह वक्त बहसबाजी का नहीं है।“ इतना कहते हुए आफिया ने बांह छुड़वा ली और अपनी तैयार में लग गई।

“मेरा मन कहता है कि तू ज़रूर अल कायदा के किसी आदमी के साथ जुड़ी हुई है। तू मुझे सच सच बता दे, मैं तेरा सारा प्रबंध कर लूँगी। तुझे आँच नहीं आने दूँगी।“

लेकिन आफिया ने माँ की बात का कोई जवाब नहीं दिया तो इस्मत रोने लगी। तभी, टैक्सी आ गई और आफिया बच्चों को उठाती बाहर निकलने लगी। इस्मत रोती हुई आगे आ गई और बोली, “पर इतना तो बता दे कि जा किधर रही है ?“

“फिलहाल तो फारूकी अंकल के पास जा रही हूँ। वहाँ पहुँचकर तुम्हें फोन करुँगी।“ इतना कहते हुए आफिया बच्चों सहित टैक्सी में जा बैठी। इस्मत के देखते-देखते

टैक्सी आँखों से ओझल हो गई। आफिया स्टेशन पहुँची और वहाँ से टैक्सी बदल ली। अगली टैक्सी लेकर वह सीधे अल बलोची के परिवार के पास पहुँची। परिवारवालों ने उसका खुशी खुशी स्वागत किया। पर साथ ही यह भी कहा कि इस परिवार में एक अनब्याहा मर्द यानी अली रहता है, इसलिए मज़हबी अकीदे के अनुसार आफिया का वहाँ रहना उचित नहीं हागा। परंतु घर के बुजुर्गों ने इसका हल सोचते हुए आफिया से पूछा, "बेटी क्या तू अली के साथ शादी करने के लिए राज़ी है ?"

"जी, जैसा आप सबको ठीक लगता हो।" आफिया ने एक किस्म की सहमति दे दी। अगले दिन ही सादे ढंग से उनका निकाह करवा दिया गया और आफिया अपने बच्चों सहित अली के साथ रहने लगी।

उधर इस्मत सारा दिन प्रतीक्षा करती रही, मगर आफिया का फोन न आया। फिर उसने खुद ही फारूकी को फोन किया तो उसने बताया कि आफिया तो उसके पास आई ही नहीं। वह भी चिंतित हो उठा। अगले दिन शाम के समय फिर इस्मत का फोन आया तो सद्दीकी उदास आवाज़ में बोला, "आपा, मुझे लगता है कि आफिया को पुलिस ने कहीं रास्ते में ही गिरफ्तार कर लिया है। नहीं तो वह कहीं से फोन ज़रूर करती।" इस तनाव में ही सप्ताह गुज़र गया। इस्मत थोड़ी थोड़ी देर के बाद फारूकी के घर फोन करती रही। उधर फौज़िया भी सुबह-शाम अपनी माँ से बात करती, पर आफिया का कहीं कोई ठौर-ठिकाना न मिला तो एक दिन इस्मत रोती हुई फारूकी से बोली, "भाईजान, तुम्हारी बात सही है। वह पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर ली गई लगती है। पर मैं अकेली औरत क्या करुँ। कहाँ खोजूँ उसको। फिर यह भी पता नहीं कि उसने किया क्या है। उसने बताया भी कुछ नहीं। जिस तरह डरकर वह भागी है, उससे तो लगता है कि बात कोई ज़रूर है।"

"आपा तू अकेली नहीं है। मैं तुम्हारे साथ हूँ। हम मिलकर उसको ढूँढ़ेंगे।"

पर उनके लाख टक्करें मारने के बावजूद आफिया का कोई अतापता नहीं मिला। दिन गुज़रते गए। इस्मत, बेटी के दुख से बिस्तर से लग गई। फारूकी भी सारा दिन इसी चिंता में खोया रहता था कि क्या किया जाए। उधर फौज़िया का बुरा हाल था। उसको आफिया की तो चिंता थी ही, साथ ही उसको यह भी लगता था कि जैसे उसकी भी निगरानी की जा रही हो। इस सबसे अनभिज्ञ उधर आफिया अपने नए पति अली के साथ उसके बड़े अल बलोची परिवार में रह रही थी।

फिर एक दिन एफ.बी.आई उज़ेर पराचा के न्यूयॉर्क वाले दफ़्तर में पहुँची। वह कई दिनों से उसकी निगरानी कर रहे थे। उसका दफ़्तर अंदर से बंद था। दरवाज़ा खटखटाया गया तो उज़ेर ने दरवाज़ा खोला। सामने वर्दीधारी एफ.बी.आई. की टीम देखकर उसके होश उड़ गए। उजेर के सामान की तलाशी ली तो उसमें से मजीद खां के पेपर निकले। उसको भी गिरफ्तार कर लिया गया। उसको न्यूयॉर्क मैट्रोपॉलेटिन डिटैनशन सेंटर ले जाया गया। उसकी इंटैरोगेशन शुरू हुई तो उसने सबकुछ बता दिया कि कैसे उसका पिता ही उसको इस चक्कर में डालने का कारण बना। एफ.बी.आई. के लिए अब यह बहुत आवश्यक हो गया कि उज़ेर के पिता को पकड़ा जाए। मगर अब तक महीने से ऊपर हो गया था इन गिरफ्तारियों को चलते, इस कारण बहुत कुछ बदल गया था। शुरू में पाकिस्तान सरकार ने एफ.बी.आई. की मदद की थी। परंतु फिर वहाँ की एजेंसी आई.एस.आई. अलकायदा के मशहूर आदमियों को बचाने में लग पड़ी थी। जब भी एफ.बी.आई. धावा बोलती तब तक उनका टारगेट भाग चुका होता। वे समझ गए कि आई.एस.आई. अब उनकी पेश नहीं चलने दे रही। इसी कारण उन्होंने सैफउल्ला पराचा वाली बात बाहर न निकाली। पता था कि जैसे ही उसका नाम बाहर आएगा, आई.एस.आई. उसको पहले ही कहीं भगा देगी। लेकिन उसके लिए एफ.बी.आई. ने एक अलग ही तरीका चुना।

एक दिन न्यूयॉर्क में रहते सैफउल्ला पराचा के पुराने मित्र और बिजनेस पार्टनर चार्ल्स का उसको फोन आया। वह बोला, “सैफउल्ला तुझे एक ज़रूरी बात तो यह कहनी है कि तू इधर अमेरिका की ओर मुँह न करना। यहाँ आना तेरे लिए खतरे से खाली नहीं होगा।“

“चार्ल्स यह बात तो मैं भी समझता हूँ। इन्होंने मेरे निर्दोष बेटे को यूँ ही पकड़ लिया। पर बिजनेस भी बंद नहीं किया जा सकता।“

“यह बात भी ठीक है। बिजनेस के लिए अपना मिलना ज़रूरी है। पर मैं भी यार पाकिस्तान आने से डरता हूँ।“

“चार्ल्स तू भी यहाँ अभी बिल्कुल मत आना। अभी तो मैं भी यहाँ छिपा फिरता हूँ। इन एफ.बी.आई वाले कमबख्तों का क्या पता है कि कब किससे चिपट जाएँ।“

“तू फिर ऐसा क्यों नहीं करता कि हम कहीं दूसरी जगह छिपकर मिल लें।“

“तू ही बता कि कहाँ मिल सकते हैं ?“

“तू ऐसा कर, थाईलैंड आ जा। वहाँ किसी को पता भी नहीं चलेगा और हम मिल भी लेंगे। पर ज़रा होशियारी से जहाज में चढ़ना।“

“हाँ, यह तो ठीक है। साथ ही वहीं कुछ देर गुज़ार आऊँगा। जब तक बात ठंडी नहीं पड़ती।“

“ठीक है फिर हम वहीं मिलते हैं।“

इसके पश्चात उन्होंने तारीख़ तय कर ली। निश्चित दिन सैफउल्ला चुपचाप-सा कराची से थाईलैंड के लिए फ्लाइट लेकर जहाज में जा बैठा। जहाज बैंकाक पहुँचा तो दूसरे यात्रियों सहित सीढ़ियों से नीचे उतरा। नीचे एक सिक्युरिटी वाले ने बात करने के लिए एक तरफ बुला लिया। अगले ही पल पास खड़ी वैन में से कुछ लोग उतरे और उन्होंने सैफउल्ला को दबोचकर अपने साथ बिठा लिया। किसी को भनक भी न लगी कि वहाँ क्या हुआ। वे असल में एफ.बी.आई. वाले थे। उन्होंने ही चार्ल्स को डरा-धमकाकर अपनी मदद के लिए मनाया था। यह सारा ड्रामा चार्ल्स द्वारा सैफउल्ला को बैंकाक में लाने के लिए करवाया गया। अगले ही दिन सैफउल्ला पराचा को दूसरों की भाँति अफगानिस्तान की गुप्त जेलों में पहुँचा दिया गया। उधर उसके परिवार और जान-पहचानवाले हैरान रह गए कि सैफउल्ला गया तो किधर गया।

इसी दौरान एफ.बी.आई. के हाथ एक ऐसा व्यक्ति आ गया गया जिसने सारा रिंग ही तोड़ दिया। यह था फारसी नाम का ट्रक ड्राइवर जो कि चिकागो में रहता था। यह मजीद खां का दोस्त था, जिसका भेद मजीद खां की इंटैरोगेशन के समय ही मिला। जितना बड़ा यह अलकायदा का सोर्स था, उतना ही बड़ा यह पहेली निकला। उसने इंटैरोगेशन का एक दौर भी नहीं झेला कि वह एफ.बी.आई की हर किस्म की मदद करने को मान गया। एफ.बी.आई. शायद उसकी बातों को न मानती, पर जब उसने कहा कि वह के.एस.एम. के भान्जे अली को पकड़वा सकता है तो एफ.बी.आई. वालों

की बांछें खिल उठीं। उसको किसी गुप्त घर में ले जाकर अली के साथ राब्ता कायम रखने को कहा गया। कुछ ही देर बाद उसने बताया कि अली पाकिस्तान में बैठा वहाँ की अमेरिकन एम्बेसी पर हमला करने की तैयारी कर रहा है तो एफ.बी.आई. एकदम हरकत में आ गई।

जब एफ.बी.आई. की टीम ने पाकिस्तानी पुलिस फोर्स के साथ उस घर को घेरा डाला जहाँ अली अमेरिकन एम्बेसी पर फेंके जाने वाले बम को बनाने में व्यस्त था, तो तभी अली और उसके साथी ने पुलिस पर गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं। इधर पुलिस ने भी गोलाबारी शुरू कर दी। कुछ मिनट ही बीते थे कि तभी वहाँ आई.एस.आई. का हथियारबंद दस्ता आ पहुँचा। वह शायद देर हो जाने के कारण सिर मार रहे थे। इतने में अंदर से अली की आवाज़ आई कि वे कुछ देर के लिए सीज़ फायर कर दें ताकि अंदर घिर बच्चे को बाहर निकाला जा सके। आई.एस.आई. वालों ने गोलाबारी रुकवा दी। कुछेक मिनट प्रतीक्षा करने के बाद आई.एस.आई. वालों ने अपना ट्रक दरवाजे के साथ लगा दिया और किसी को चुपचाप-से ट्रक में बिठाकर चलते बने। बाद में पुलिस वाले भौंचक्के खड़े देखते रह गए। वे आई.एस.आई. की इस हरकत के बारे में सोच ही रहे थे कि तभी अंदर से फिर आवाज़ आई कि यदि उन्हें आई.एस.आई. गिरफ्तार कर रही है तो वे हथियार फेंकने के लिए तैयार हैं। पुलिस वालों ने कहा कि ठीक है, जैसा तुम कहते हो, वैसा ही होगा। अंदर से अली और उसका साथी हाथ खड़े किए बाहर आ गए। जब पुलिस ने उन्हें बांधकर गाड़ियों में बिठा लिया तो उन्हें अहसास हुआ कि आई.एस.आई. वाले तो जा चुके थे। पर अब कुछ नहीं हो सकता था। पाकिस्तानी पुलिस और अमेरिकन एफ.बी.आई. वाले इस गिरफ्तारी से इतना खुश हुए कि वे आई.एस.आई. द्वारा दख़लअंदाज़ी करके किसी को वहाँ से निकालने वाली बात भूल गए। एफ.बी.आई. वालों की खुशी तब और भी बढ़ गई जब उन्हें पता चला कि अली के साथ पकड़ा गया व्यक्ति खालिद अल अशाद है। खालिद अल अशाद वर्ष 2000 में अमेरिकी समुद्री बेड़े यू.एस.एस, कॉल्ज पर हमला करके सत्रह अमेरिकी फौजियों को मार देने वाली आतंकवादी घटना में शामिल था। आख़िर, 1 मार्च को शुरु हुआ गिरफ्तारियों का सिलसिला बंद हो गया। अमेरिका पर दूसरा बड़ा हमला करने वाली साज़िश के प्रमुख दोषी के.एस.एम. से लेकर निचले स्तर के सभी आतंकवादी एफ.बी.आई. के कब्ज़े में आ चुके थे। सिर्फ़ एकमात्र इन्सान बच गया था जो एफ.बी.आई. की पहुँच से दूर था। वह थी आफिया सद्दीकी। एफ.बी.आई. ने दुनिया का कोना कोना छान मारा, पर आफिया का कोई अता पता नहीं मिला। एफ.बी.आई. उसको बहुत अहम मान रही थी। इसके अलावा जिस घर में से के.एस.एम. पकड़ा गया था, वहाँ से एफ.बी.आई. को जो दस्तावेज़ मिले थे, उनसे साबित होता था कि अल कायदा बॉयलॉजिकल और केमिकल हथियार बनाने के करीब पहुँच चुका है।

एफ.बी.आई. सोच रही थी कि कहीं यह न हो कि कोई न काई खतरनाक हथियार बन चुका हो और आतंकवादी उसको अमेरिका के खिलाफ़ इस्तेमाल के लिए तैयार हों। अब तक पकड़े गए कई अलकायदा सदस्यों ने अपनी इंटैरोगेशन के दौरान माना था कि आफिया बहुत ज्यादा खतरनाक है। वह अमेरिका पर केमिकल हथियारों से करने वाले अगले हमले के लिए देहतोड़ काम कर रही है। एफ.बी.आई. इस बात से भी चिंतित थी कि कहीं वह किसी परिवर्तित नाम से पासपोर्ट लेकर अमेरिका में न आ घुसे और किसी को पता ही न चले। आख़िर, एफ.बी.आई. ने उसकी फोटो और अन्य जानकारी अपने इश्तहारी मुज़रिमों वाली सूची में डाल दी। इस सूची पर अकेला उसका नाम नहीं था, बल्कि साथ ही उसके पहले पति का नाम भी डाला गया था।

जैसे ही यह ख़बर आई कि एफ.बी.आई ने आफिया को अपने इश्तहारी मुज़रिमों वाली सूची में डाल दिया है तो हर तरफ तहलका मच गया। अख़बारों ने इस ख़बर को उठा लिया। अमेरिकी मीडिया ने ख़बर दी कि आफिया को गिरफ्तार कर लिया गया है और उसको अमेरिकी सरकार के हवाले भी किया जा चुका है। और अमेरिकी उसको अफगानिस्तान की किसी गुप्त जेल में ले गए हैं। इसी दौरान पाकिस्तानी मीडिया ने ख़बर दी कि आफिया पकड़ी अवश्य गई थी, पर उसको थाने में ले जाकर रिहा कर दिया गया। इसके अगले दिन पाकिस्तान के मशहूर अख़बार डॉन ने ख़बर दी कि आफिया को उस वक्त कराची एअरपोर्ट से गिरफ्तार किया गया जब वह फ्लाइट लेकर कहीं जाने की ताक में थी। एक अन्य अख़बार ने अपने पुलिस सोर्स का नाम गुप्त रखते हुए यह लिखा कि आफिया को तब गिरफ्तार किया गया जब वह बच्चों सहित कराची से इस्लामाबाद जा रही थी और उसको आई.एस.आई. के हवाले कर दिया गया है। अगले ही दिन फिर ख़बर आ गई कि आफिया को पाकिस्तान सरकार ने पकड़ा है और इस वक्त वह उनकी कैद में है। परंतु अगले दिन पाकिस्तान ने मीडिया कान्फ्रेंस करके इस ख़बर का खंडन कर दिया। जब फिर से डॉन अख़बार ने ज़ोर-शोर से लिखा कि आफिया इस वक्त अमेरिकी सरकार के पास है और उसको अफगानिस्तान में कहीं गुप्त जेल में रखा हुआ है तो अमेरिका सरकार ने इस ख़बर का खंडन करते हुए कहा कि आफिया उनकी जेल में नहीं है। इस बीच यह भी ख़बर आई कि आफिया क्योंकि अल कायदा के बारे में सब कुछ जानती थी और हो सकता है कि उसका हश्र भी आफिस भूजा वाला ही हुआ हो। (आसिल भूजा का नाम पत्रकार डेनियल पर्ल के क़त्ल में आ गया था। अगले दिन जब पुलिस उसके घर उससे बातचीत के लिए पहुँची तो वह वहाँ मरा हुआ मिला। सबको शक था कि उसको अलकायदा ने स्वयं ही मार दिया है ताकि कहीं कोई भेद बाहर न निकल सक।) खैर, ख़बरों का बाज़ार हर तरफ गरम था। परंतु लोग असमंजस जैसी स्थिति में थे। क्योंकि कोई भी ख़बर ऐसी नहीं थी जिस पर भरोसा किया जा सके। आख़िर बनते बनते आफिया की ख़बर वास्तव में एक रहस्य बनकर रह गई। आफिया एक रहस्य

बनकर रह गई। किसी को पक्के तौर पर कुछ भी पता नहीं था, बस सबके अपने अपने कयास थे। फिर धीरे धीरे आफिया के नाम की चर्चा कम होने लगी। 2003 की गर्मियाँ खत्म होने तक आफिया का नाम ख़बरों में से गायब हो चुका था

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –19

(19)

आफिया का नाम यद्यपि हर तरफ से गायब हो चुका था, परंतु एक ऐसा इन्सान भी था जो हर वक़्त उसके बारे में सोचता था। वह था उसका पहला पति अमजद। जब भी कहीं ख़बर आती कि आफिया गिरफ्तार हो गई है तो वह रात रातभर सो न पाता। आफिया का चेहरा उसकी आँखों के आगे घूमता रहता। वह यह सोचकर तड़पता रहता कि इस समय पता नहीं उस पर क्या बीत रही होगी। मगर जब ख़बर आ जाती कि नहीं वह अभी तक किसी की हिरासत में नहीं आई है तो उसको कुछ शांति मिलती। आफिया के साथ गहरा जुड़ा होने के अलावा उसको बच्चों की बड़ी चिंता रहती थी। वह सोचता कि वह जहाँ कहीं भी रह रही है, रहे जाए, पर पुलिस के हाथ न आए। यह दर्द उससे झेला नहीं जाएगा और साथ ही, बच्चों का जीवन भी बर्बाद हो जाएगा।

परंतु जब उसको पता चला कि आफिया के साथ उसका नाम भी एफ.बी.आई. ने मुज़रिमों के इश्तहार की लिस्ट में डाल दिया है तो उसके होश उड़ गए। क्योंकि वह तो अपने ही घर में रहता था और उसने सोचा कि उसको पुलिस किसी भी समय गिरफ्तार कर सकती है। उसने अपने पिता से बात की। पिता ने अपने किसी दोस्त की राय ली। यह दोस्त पहले आई.एस.आई. का अफ़सर रह चुका था और इस समय रिटायर हो चुका था। इसी दोस्त के उद्यम से अमजद की आई.एस.आई. के मौजूदा

किसी अफ़सर के साथ इंटरव्यू करवाई गई। उसने अमजद से बहुत सारे सवाल पूछे। लेकिन अमजद ने जो सच था, वह बता दिया कि जिस आफिया को वह जानता है, वह ऐसी नहीं है और हो सकता है कि आफिया उससे छिपाकर कोई दोहरी ज़िन्दगी जी रही हो। लम्बी इंटरव्यू के बाद अफ़सर ने उसको फ्री कर दिया। अपने रिकार्ड में उसका नाम लिख दिया कि इस व्यक्ति की पूछताछ हो चुकी है और इसका किसी असामाजिक तत्वों से कोई संबंध नहीं है। अब एफ.बी.आई उसको आसानी से गिरफ्तार नहीं कर सकती थी। ख़ास तौर पर पाकिस्तान में तो कतई नहीं। इस दौरान अमेरिका के बाल्टीमोर दफ़्तर से एफ.बी.आई. का एक एजेंट उसके घर आ पहुँचा। घर वालों की तो जैसे जान ही सूख गई। पर अमजद ने उसको आई.एस.आई. के साथ हुई अपनी इंटरव्यू के बारे में बताया और साथ ही इंटरव्यू करने वाले अधिकारी का नाम-पता आदि दे दिया। उस वक़्त तो एजेंट चला गया, पर अगले रोज फिर आ गया। ख़ैर, अब उसने बताया कि वह सिर्फ़ अमजद की उसके घर में ही पूछताछ करेगा। लम्बी बातचीत के बाद इस एजेंट ने भी यही नतीजा निकाला कि अमजद को आफिया की दूसरी ज़िन्दगी का कोई इल्म नहीं है। वह वापस अमेरिका लौट गया।

आफिया की माँ के पास ग्रीन कार्ड था और वह अमेरिका जा सकती थी। वह अपनी बेटी को खोजने के लिए अमेरिका के लिए रवाना हो गई। न्यूयॉर्क के कनेडी एअरपोर्ट पर ही उसको एफ.बी.आई. वालों ने घेर लिया। पर वह डरी नहीं और ज़ोर-ज़ोर से चीख-चिल्लाकर कहती रही कि तुमने मेरी बेटी को कैद किया हुआ है। चार घंटों के बाद उसको छोड़ दिया गया तो वह बाहर इंतज़ार कर रही फौज़िया के साथ उसके घर चली गई। करीब दो दिन बाद ही फौज़िया के दरवाज़े पर शैरिफ़ दफ़्तर का एक अधिकारी खड़ा था। उसने इस्मत सद्दीकी के विषय में पूछा, “मैम, मैं इस्मत सद्दीकी से मिलना चाहता हूँ।“

“किसलिए ?“ फौज़िया के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं।

“उसको कोर्ट को आदेश हुआ है कि वह ग्रैंड ज्यूरी के पास पेश हों।“

तभी इस्मत वहाँ आइ गई। उसने दस्तख़्त करके कोर्ट का सम्मन ले लिया। इसके बाद दोनों माँ-बेटियाँ गहरी फिक्र में डूब गईं। फौज़िया ने अपने भाई को टैक्सास में फोन करके इस बारे में बताया। उसने वकील कर लेने की सलाह दी। डर था कि कहीं

उनकी माँ को जेल में ही न बंद कर दें। किसी दोस्त ने बॉस्टन की बहुत ही मशहूर वकील शार्प के विषय में बताया। फौज़िया ने शार्प को फोन किया। पहले तो वह केस लेने से हिचकिचाती रही, पर फिर मान गई। इससे माँ-बेटी दोनों को बड़ी राहत मिली। शार्प ने सबसे पहला काम यह किया कि इस्मत को दिमागी तौर पर परेशान बताकर, फिलहाल ग्रैंड ज्यूरी के पेश होने से छूट दिलवा दी। इधर से पीछा छूटते ही इस्मत अपने बेटे मुहम्मद के पास टैक्सास चली गई। पर उसके वहाँ पहुँचने के अगले दिन ही एफ.बी.आई. वाले उसके दरवाज़े पर भी आ खड़े हुए। वह इस्मत की इंटरव्यू करना चाह रहे थे। मुहम्मद ने तुरंत अपने लोकल वकील को फोन किया तो वकील उसी समय उसके घर आ गया। एफ.बी.आई एजेंट ने इंटरव्यू शुरु करते हुए सवाल किया, "मैम, तुम अमेरिका में क्या करने आई हो ?"

"मेरे पास ग्रीन कार्ड है। मैं जब चाहे यहाँ आऊँ-जाऊँ, तुम कौन हो मुझे पूछने वाले ?" इस्मत यहाँ भी भयभीत न हुई। अपितु डटकर उत्तर देने लगी।

"तुम कभी ओसामा बिन लादेन से मिली हो ?"

"मुझे उससे मिलने की कोई ज़रूरत नहीं है। नहीं, मैं उससे नहीं मिली।"

"तुम्हारी बेटी आफिया कहाँ है ?"

"मैं तो खुद उसको खोजती घूमती हूँ। उसी को तलाशती मैं अमेरिका आई हूँ। इस बात का जवाब तुम दो कि तुमने आफिया को कहाँ कैद करके रखा हुआ है।"

"व्हट नानसेंस ! हमने उसको नहीं पकड़ा। वह हमारे कब्जे में नहीं है। तुम जानबूझ कर नहीं बता रही। तुम माँ-बेटियों ने मिलकर अमेरिका के खिलाफ़ कोई साज़िश रची है। उसी साज़िश को अमली रूप देने के लिए तुम यहाँ आई हो।"

"यह सब बकवास है। तुमने मेरी बेटी को कहीं खपा दिया है। बताओ, कहाँ है मेरी बेटी ?" वह ऊँची आवाज़ में बोलने लगी।

“मैम, तुम हमारी इंटरव्यू नहीं कर रहीं, बल्कि हम तुम्हारी इंटरव्यू कर रहे हैं। इसलिए तुम्हें हमारे सवालों के उत्तर तो देने ही पड़ेंगे। तुम बताओ कि के.एस.एम. के बारे में तुम क्या जानती हो ? मजीद खान तुम्हारा क्या लगता है ? उसने क्या योजनाएँ बना रखी थीं। तुम्हारी बेटी आफिया ने उसके लिए पोस्ट ऑफिस बॉक्स किराये पर क्यों लेकर दिया था ?“

“तुम सब झूठे हो। मैं किसी भी बात का उत्तर नहीं दूँगी। जाओ, कर लो जो करना है।“

“उत्तर तो मैम तुम्हें देने ही पड़ेंगे।“

इतना कहकर एफ.बी.आई. के एजेंट उठ खड़े हुए। उनके वकील ने कहा कि तुम देख ही रहे हो कि इस औरत दिमाग सही ढंग से काम नहीं कर रहा। अपनी बेटी के गम में यह बेज़ार हो चुकी है। इसको इलाज की ज़रूरत है। मगर एफ.बी.आई. वाले उसकी बात का नोटिस लिए बग़ैर बाहर निकल गए। अगले दिन यहीं कोर्ट का समन आ पहुँचा कि इस्मत सद्दीकी ग्रैंड ज्यूरी के सामने पेश हो। लेकिन वकील ने एक बार फिर उसकी बीमारी का बहाना बनाकर यह काम टाल दिया।

“अम्मी, मुझे लगता है कि तुझे वापस चले जाना चाहिए। कहीं यह न हो कि तू यहीं घिरकर रह जाओ।“ उस शाम घर बैठी फौज़िया ने बात शुरु की।

“मेरी एक बेटी तो गायब हो ही चुकी है, मैं नहीं चाहती कि तू भी एफ.बी.आई. के चक्कर में फंस जाए। तू भी यहाँ से चली चल।“ इस्मत ने फौज़िया से कहा।

“फौज़िया, मैं भी तुझे यही सलाह दूँगा, जो अम्मी दे रही है।“ समीप बैठा मुहम्मद बोला।

“वैसे तो भाईजान मेरे पीछे भी एफ.बी.आई. वाले घूमते रहते हैं। मेरी पहले वाली जॉब चली गई। हर रोज़ अस्पताल आ पहुँचते थे। अपनी रेपुटेशन के कारण अस्पताल वालों ने मुझे नौकरी से निकाल दिया। इसी बात की सताई मैं वहाँ से दूर बाल्टीमोर

जाकर एक साधारण-सी नौकरी करने लगी तो एफ.बी.आई. ने वहाँ भी मेरा ठिकाना खोज लिया। पर मैं एक बात सोचती हूँ।“

“वह क्या ?“

“जब मेरा किसी बात से कोई लेना-देना ही नहीं तो मुझे कोई क्या कर देगा।“

“फौज़िया, यह बात नहीं है। असल में तू और आफिया शुरु के काफी दिन एकसाथ रहती रही हो। फिर, तू वहाँ उसके पास बॉस्टन में भी रही। इसीलिए एफ.बी.आई. सोचती है कि तू उसके बारे में बहुत कुछ जानती होगी। या वह अवश्य तेरे से सम्पर्क कायम करती होगी।“

“भाईजान, आफिया की वजह से सारा परिवार मुश्किलों में फंसा हुआ है। पता नहीं, उसने यह राह क्यों चुना ?“ इतना कहती हुई फौज़िया रोने लगी। माँ ने उसका ढाढ़स दिया।

“फौज़िया, यह मौका इस तरह हिम्मत हारने का नहीं है। मैं चाहता हूँ कि तू कल ही अपने वकील से सारी बात बता दे और अम्मी को लेकर यहाँ से चलती बन।“

“ठीक है भाईजान।“ फौज़िया वापसी के लिए मन बनाने लगी।

अगले दिन फौज़िया ने वकील शार्प को फोन करके कहा, “मैम, मैं इन एफ.बी.आई. वालों से बड़ी तंग आ चुकी हूँ। जिस अस्पताल में मैं काम करती थी, उन्होंने एफ.बी.आई. के चक्कर में मुझे नौकरी से निकाल दिया। अब मुझे कहीं ढंग की नौकरी नहीं मिल रही। मैं यहाँ से चले जाने के बारे में सोच रही हूँ।“

“मिस फौज़िया, यह तो तेरी मर्ज़ी है। तुझे कोई यहाँ जबरन रोक नहीं सकता। तेरे पर केस भी कोई दर्ज़ नहीं हुआ। इसलिए तू जाने के लिए आज़ाद है। दूसरा इस्मत

सद्दीकी को भी अपने मुल्क में ले जाकर तुम्हें उसका अच्छा इलाज करवाना चाहिए।“ इशारे से वकील ने कह दिया कि अच्छा है कि इस्मत यहाँ से चली जाए। अगले ही दिन माँ-बेटी दोनों ही वापस जाने की तैयारियाँ करने लगीं और दो दिन बाद वह पाकिस्तान पहुँच गईं।

इन्हीं दिनों आई.एस.आई. की पूरी टीम आफिया के पहले पति अमजद के घर पहुँची।

“मि. अमजद, तुझे हमारी मदद करनी पड़ेगी। हम आफिया को पकड़ने की योजना बना रहे हैं।“

“कहाँ है आफिया ? क्या मेरे बच्चे भी उसके पास हैं ?“ अमजद ने उत्साह से आई.एस.आई. के अफ़सर से पूछा।

“यह नहीं पता, पर तुम्हें हमारे साथ चलना पड़ेगा।“

“साथ चलना पड़ेगा ? पर कहाँ ?“

“इस बात का पता भी वहीं चलकर लगेगा। अब तू चलने के लिए तैयार हो।“

इसके पश्चात आई.एस.आई. वालों ने अमजद को संग लिया और कराची एअरपोर्ट पर पहुँच गए। वह वहाँ खड़े हो गए जहाँ जहाज की सवारियाँ उतरकर आ रही थीं। करीब आधे घंटे के बाद आई.एस.आई. वालों ने अमजद से कहा कि सामने जो औरत आ रही है, वह उसको पहचाने और बताए कि क्या यही आफिया सद्दीकी है। अमजद ने ध्यान से सामने से आ रही औरत की ओर देखा। उसका सारा शरीर लम्बे बुर्के से ढका हुआ था। अमजद ने उसकी आँखें देकर नब्बे प्रतिशत अंदाजा लगा लिया कि यह आफिया ही है। उसके साथ चले रहे बच्चे को भी अमजद ने पहचान लिया कि वह उसका ही बेटा है। एकबार तो वह बहुत ही भावुक हो गया। पर साथ ही उसने सोचा कि यदि उसने आई.एस.आई. वालों को बता दिया कि उसे लगता है कि यही आफिया

है तो वे उसको तुरंत गिरफ्तार कर लेंगे। लेकिन उसके अंदर का अमजद यह नहीं सहन कर सकता था। उसने सिर मारते हुए कह दिया कि यह आफिया नहीं है।

उधर, आफिया के मामा एस.एच. फारूकी को भी आई.एस.आई. तंग करने लग पड़ी तो उसने दौड़-भाग करके बमुश्किल अपना पीछा छुड़वाया। फौज़िया और उसकी माँ पाकिस्तान में आकर अपने घर में रहने लग पड़ी थीं। इसी बीच उन्हें फोन आने शुरू हो गए कि या तो वे आफिया के मामले में चुप हो जाएँ, नहीं तो उनका हाल भी उसके जैसा होगा। इसके बाद माँ-बेटी दोनों ने आफिया को लेकर बातें करनी बंद कर दीं। साथ ही, उन्होंने भी मीडिया से विनती की कि वे आफिया का मामला न उठाएँ। मीडिया ने तो क्या मानना था अपितु उन्हें एक और ख़बर मिल गई कि आई.एस.आई. सद्दीकी परिवार को तंग कर रही है। एकबार फिर से लोगों में आफिया का नाम चर्चा का विषय बन गया।

जो कुछ हो रहा था, अमजद बड़े ग़ौर से सब देख रहा था। वह चाहता था कि बस एकबार वह अपने बच्चों को देख ले। पर यह मुमकिन न हो सका। एक दिन वह अपने पिता को संग लेकर उनके उसी आई.एस.आई. के रिटायर्ड अधिकारी दोस्त से मिलने पहुँचा जिसने उसकी आई.एस.आई. से इंटरव्यू करवाकर उसको क्लियरेंस दिलवाई थी। वह अफ़सर अमजद को सलाह देते हुए बोला, "अच्छा यही रहेगा कि तुम यहाँ से कहीं दूसरी जगह चले जाओ। यहाँ किसी का कोई भरोसा नहीं कि क्या करवा दे। तुम प्रेज़ीडेंट मुशरफ का उदाहरण ले लो। वह अमेरिका को खुश करने के लिए किसी को भी उनके हवाले कर देता है। मेरे कहने का अर्थ है कि कई ऐसे व्यक्ति भी उसने अमेरिका को सौंप दिए जिनका गुनाह इतना बड़ा नहीं था कि उन्हें बेगाने देश के हवाले किया जाता। कई तो सिर्फ़ पूछ-पड़ताल तक ही सीमित थे। पर इसने सभी पर अलकायदा सदस्य होने का लेबल लगाकर गिरफ्तार किया और एफ.बी.आई. के हवाले कर दिया।"

उसकी बातें सुनकर पिता-पुत्र चिंतित हो गए। कुछ देर बातें करके वे वापस लौटने लगे तो वह अजमद के पिता को एक तरफ ले गया। फिर धीमे स्वर में बोला, "नईम खां, तुम्हें एक भेद की बात बताता हूँ।

"जी।"

“तुम्हें याद होता कि कुछ समय पहले के.एस.एम. का भान्जा अली और एक अन्य आतंकवादी पकड़े गए थे। दूसरे आतंकवादी पर चार्ज है कि उसने अमेरिकी समुद्री यू.एस.एस. कोहल नामी बेड़े पर हमला किया था।“

“जी हाँ, याद है मुझे वो घटना।“

“तो फिर तुम्हें यह भी याद होगा कि उस दिन उनकी पुलिस के साथ फायरिंग हो गई थी और उन्होंने वहाँ फंसे हुए किसी बच्चे को बाहर निकालने के लिए कुछ देर के लिए फायरिंग रुकवाई थी। बाद में आई.एस.आई. का हथियारबंद दस्ता भी वहाँ पहुँच गया था।“

“हाँ जी, बिल्कुल। बाद में पता चला था कि आई.एस.आई. ने उस बच्चे को अपने कब्ज़े में कर लिया था।“

“हाँ-हाँ, वहीं घटना। पर क्या तुम्हें पता है कि वह कोई बच्चा नहीं था बल्कि एक औरत थी ?“

“जी नहीं, यह तो नहीं पता। पर फिर वो औरत कौन थी ?“

“वह तुम्हारे बेटे की पहली बीवी आफिया ही थी।“

“हैं ! यह तुम क्या कर रहे हो ?“

“यह बिल्कुल सही है। वह अलकायदा की बहुत ही सक्रिय मेंबर है। साथ ही, वह बहुत ज्यादा ख़तरनाक भी है। इसीलिए कह रहा हूँ कि तुम अपने बेटे को कहीं बाहर भेज दो। कल अगर वह फिर पकड़ी गई और उसने कहीं अमजद का नाम ले दिया तो इसकी ज़िन्दगी बर्बाद हो जाएगी।“

“पर जनाब एक बात और...।“ नईम खां कोई दूसरी बात शुरु करता करता रुक गया।

“हाँ, बताओ तुम क्या कहना चाहते हो ?“

“तभी पता लगा था कि आफिया एकबार आई.एस.आई. द्वारा पकड़ ली गई थी। पर क्या वह फिर से छोड़ दी गई ? मेरा मतलब यह सब क्या है ?“

“ये दोनों बातें सहीं है। लेकिन यह एजेंसियों के काम करने का ढंग होता है, तुम इस बात के पीछे न जाओ। बस, अमजद का कुछ सोचो।“

“जी, बहुत बेहतर जनाब। मैं सब समझ गया।“

बात समाप्त करके नईम खां बाहर खड़े अमजद के साथ कार में आ बैठा। घर तक वह अपने दोस्त की कही बात के विषय में ही सोचता रहा। घर आकर उसने अमजद को समझाया कि उसको चाहिए कि अब अतीत का पीछा छोड़कर भविष्य के बारे में सोचे। अमजद भी आफिया की तलाश से ऊब चुका था। पिता की बात से सहमत होते हुए उसने अपनी ज़िन्दगी को आगे बढ़ाने का फैसला कर लिया। उसका नाम एफ.बी.आई. की वांटिड लिस्ट में से उतर चुका था। इसलिए उसने पाकिस्तान छोड़ने का निर्णय करते हुए सउदी अरब के किसी अस्पताल में नौकरी कर ली। वह अपनी नई दुल्हन और छोटी-सी बच्ची को लेकर सउदी अरब चला गया।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –20

इस्मत और फौज़िया अपने घर तक सीमित होकर रह गई थीं। वे भयभीत-सी किसी के साथ आफिया को लेकर बात भी नहीं करती थीं। इसके अलावा उनके घर की आई.एस.आई. निगरानी करती रहती थी। कभी उन्हें गुप्त फोन आते थे कि आफिया के बारे में बात नहीं करती, नहीं तो उनका हश्र भी आफिया जैसा ही होगा। ऐसे समय उन्हें लगता कि आफिया इस दुनिया में नहीं है। फिर अगले ही दिन कोई फोन आ जाता कि आफिया जहाँ कहीं भी है, वो ठीक है, तुम उसकी चिंता न करो। ऐसा फोन सुनकर उन्हें लगता कि आफिया जिन्दा है। इसी दुविधा में ही दिन, महीने, सालों में बदल गए, पर उन्हें कभी आफिया का कोई सुराग नहीं मिला। एक दिन इस्मत ने अपने पुत्र मुहम्मद को ह्यूस्टन में फोन करते हुए कहा, "बेटा, बता हम क्या करें। हमारे पास तो कोई घर का सदस्य भी नहीं है। तुझे बता नहीं सकती कि हम डर के साये में कैसे दिन बिता रहे हैं।"

"अम्मी, मैं यह बात समझ सकता हूँ। पर क्या किया जाए।"

"बेटा, मैं चाहती हूँ कि तू भी यहीं पाकिस्तान ही आ जा। कहीं यह न हो कि तुझे भी अमेरिकी सरकार किसी केस में फंसा लें।"

"नहीं अम्मी, ऐसा नहीं होगा। मैं कभी भी किसी गलत लोगों के साथ नहीं जुड़ा। हमेशा अपने काम से काम रखा है। इस कारण मुझे यहाँ कोई खतरा नहीं है।"

"फौज़िया के साथ भी तो यही कुछ हो चुका है। वह जहाँ कहीं भी नौकरी करने लगती थी, एफ.बी.आई. वाले वहीं पहुँच जाते थे। आख़िर, उसको अमेरिका छोड़ना पड़ा।"

"अम्मी, मेरे और फौज़िया में फर्क़ है।"

"वह कैसे ?"

"तुझे पता ही है कि आफिया फौज़िया के पास रहती रही है। आफिया की कई चैरिटियों के पते फौज़िया के घर के थे। फौज़िया हालांकि किसी बात से संबंधित नहीं

थी, पर यह आफिया से जुड़ी रही है। यही कारण है कि एफ.बी.आई को हमेशा शक रहता था कि कभी न कभी आफिया उसके साथ अवश्य संबंध कायम करेगी। इसीलिए इसका हर वक्त पीछा किया जाता था, पर मुझे उसके बाद कभी कोई तकलीफ़ पेश नहीं आई।"

"फिर बेटा, तू ही बता कि हम माँ-बेटी किधर जाएँ। अमेरिका में हमको एफ.बी.आई. नहीं टिकने देती थी। यहाँ पाकिस्तानी सरकार चैन से नहीं रहने देती। आई.एस.आई. सारा दिन अपने घर के इर्द-गिर्द घूमती फिरती है। रोज़ गुप्त फोन आते रहते हैं। पता नहीं हमारा क्या बनेगा ?" इतना कहते हुए इस्मत रोने लगी। उसके बेटे का मन भर आया।

"अम्मी, तू रो न। इस तरह तो मसला हल नहीं हागा।"

"बेटा, तू कौन से मसले की बात करता है। हमारी ज़िन्दगी नरक बनकर रह गई है। तू भी हमको भूल चुका है।"

"अम्मी, ऐसी बात नहीं है। मैं बताओं कर ही क्या सकता हूँ।"

"बेटा, आफिया तेरी भी माँ-जाई बहन है। तू ही उसको कहीं तलाशने की कोशिश कर।"

"अम्मी, पहले कौन सा हमने कम खोज की है। पर वह कहीं मिले भी।"

"मुहम्मद बेटा, तू एकबार फिर से हिम्मत कर। मेरा दिल कहता है कि वह कहीं आसपास ही है।"

"अम्मी, मेरी अपनी नौकरी है। और फिर मेरे भी बाल-बच्चे हैं। मैं ऐसे कैसे कहीं जा सकता हूँ। तुझे पता ही है कि पहले भी मेरे घर में क्या हुआ था।"

असल में, मुहम्मद की बीवी आफिया का जिक्र छिड़ते ही झगड़ा करने बैठ जाती थी। उसका कहना था कि उसकी वजह से ही पूरा परिवार परेशान हो रहा है।

“बेटा, कैसे भी कर। कोई बात नहीं, तू अपनी बीवी का गुस्सा एकबार और झेल ले। अगर मेरी बेटी का कोई पता ठिकाना न लगा तो मैं तो पागल हो जाऊँगी।“

“ठीक है अम्मी, मैं देखता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ। पर एक बात है कि यहाँ एक उजेर पराचा नाम के लड़के पर आतंकवाद संबंधी केस शुरू होने वाला है। मुझे लगता है कि उसके केस में ज़रूर आफिया का जिक्र आएगा। शायद इस तरह ही कोई पता चल जाए।“

“ठीक है, तू मुझे इस बारे में जल्दी बताना।“ इस्मत ने फोन काट दिया।

उज़ेर पराचा के केस का उन दिनों अख़बारों में खूब हो-हल्ला हो रहा था। के.एस.एम. से लेकर अब तक पकड़े गए बंदियों में सबसे पहले मुकदमा उज़ेर पराचा पर चला। न्यूयॉर्क की कोर्ट में उसने वही बयान दिया जो उसने पहले एफ.बी.आई. के सामने दिया था। उसने कहा कि न ही उसको अलकायदा के बारे में कोई पता था और न ही उनके किसी प्लाट के बारे में। उसने कोर्ट को बताया कि उसने सिर्फ़ मजीद खां की एप्लीकेशन इमीग्रेशन को भेजी थी और दूसरा उसने मजीद खां बनकर इमीग्रेशन को फोन किया था। वह सोचता था कि उसका इतना ही जुर्म है कि उसने इमीग्रेशन को झूठ बोला। पर उसका वकील सब समझता था। वकील ने गवाहों आदि को अदालत में पेश करने की मांग की। लेकिन सरकारी वकील यह सब नहीं होने देना चाहता था। क्योंकि गवाह तो अफगानिस्तान के उजाड़ इलाकों की किन्हीं जेलों के अंदर बंद थे। गवाहों से उसका मतलब था - के.एस.एम., उसका भान्जा अली या मजीद खां। सरकार डरती थी कि यदि इन गवाहों को अदालत में पेश करना पड़ा तो बहुत सारे गुप्त भेद बाहर आ जाएँगे। उजेर का वकील सरकार के डर को समझ गया। उसने सरकार से कहा कि या तो गवाहों को अदालत में पेश किया जाए, या फिर प्ली बारगेनिंग की इजाज़त दी जाए। सरकार ने भी प्ली बारगेनिंग के बारे में सोच लिया। वकील ने उज़ेर को गिल्टी प्ली कर देने के लिए समझाया और बताया कि इस तरह सरकार के साथ डील हो जाएगी और वह सज़ा कम कर देगी। परन्तु उज़ेर उसकी बात नहीं माना। उसका सोचना था कि सिर्फ़ किसी अन्य के नाम पर इमीग्रेशन को फोन कर देने की कितनी सज़ा हो सकती है। दूसरी बात यह भी थी कि उसको जो

वकील मिला था, वह सरकार द्वारा दिया गया था। इस कारण उज़ेर उस पर पूरा भरोसा नहीं कर रहा था। वह छोटी आयु का भोला-सा लड़का था और न ही वह इस किस्म के कानूनी पचड़ों में कभी पड़ा था। यही कारण था कि वह उस वक्त मौके की नज़ाकत नहीं समझ सका और यह न जान सका कि वह कितने बड़े चक्रव्यूह में फंसा हुआ है। उसने गिल्टी प्ली करने से इन्कार कर दिया। केस चला तो ज्यूरी ने उसको दोषी साबित करते हुए उम्र क़ैद की सज़ा सुना दी।

यह केस बंद डिब्बे की तरह बंद ही रह गया तो मुहम्मत मायूस हो गया। उसकी आफिया के बारे में कुछ पता लगाने की उम्मीद अधूरी रह गई। उसको भी आफिया की बहुत चिंता थी। साथ ही, माँ और फौज़िया की भी। पर उसके घर के हालात इजाज़त नहीं देते थे कि वह नौकरी छोड़कर इधर-उधर भटकता फिरे। वह कई दिन उदास रहा। फिर उसने अपनी पत्नी के साथ बात की। आहिस्ता आहिस्ता उसने पत्नी को इस बात के लिए राजी कर लिया कि वह बस एकबार आफिया की तलाश के लिए जाएगा। लौटकर कभी वह इस मामले में नहीं पड़ेगा। नौकरी पर से छुट्टी लेकर वह पाकिस्तान जा पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने माँ और फौज़िया के साथ आगे की योजना बनाई। फैसला हुआ कि वह अपने मामा फारूकी की मदद ले। अगले दिन वह इस्लामाबाद चला गया। फारूकी भी इस मामले में पड़कर अब तक बहुत मुसीबतें झेल चुका था। पर वह सोचता था कि आफिया उसकी सगी भान्जी है। अगर वह मदद नहीं करेगा तो और कौन करेगा। आख़िर विचार-विमर्श के बाद उसने मुहम्मद से कहा, “यहाँ एक जहीर खां नाम का आदमी है, वह शायद अपनी कोई मदद कर सके। पर...।“ फारूकी बात करता करता चुप हो गया।

“पर क्या अंकल ?“ मुहम्मद ने उसकी चुप तोड़ी।

“बात यह है कि यहाँ एक संगठन बना है जिसका मुख्य मकसद गुम हो चुके व्यक्तियों को तलाश करना है। जहीर खां उस संगठन का मुखिया है। पर साथ ही यह भी सुना है कि यह व्यक्ति पहले आई.एस.आई का अधिकारी रह चुका है।“

“फिर क्या है अंकल। हमें तो पता ही लगवाना है कि शायद इन्हें आफिया के बारे में कुछ मालूमात हो।“

“बेटा, बात यह है कि आई.एस.आई. के लफड़ों से हर कोई डरता है। क्या पता कि यह जहीर खां नाम का आदमी दिखावे के तौर पर ही गुमशुदा लोगों की तलाश में लगा हो और असल खेल इसका कुछ और ही हो।“

“अंकल, दूसरी कोई राह भी तो नहीं है। पता नहीं, अपने मुल्क को क्या हो गया है कि किसी पर भरोसा ही नहीं किया जा सकता। कौन किसके लिए काम कर रहा है, कुछ पता नहीं। सरकार के आदमी सरकार के बीच रहते हुए आतंकवादियों की मदद कर रहे हैं। उधर आतंकवादी गवर्नमेंट की मदद करने में लगे हुए हैं। मैं तो ऐसी बातें सुन सुनकर ऊब चुका हूँ। अगर मेरी अपनी बहन का मसला न हो तो मैं इस मुल्क में एक पल भी न रुकूँ।“

“ठीक है, फिर तू जहीर खां से मिलकर देख ले। शायद बात किसी राह लग जाए। वैसे उससे सावधान रहना। मेरा अर्थ है कि अपने बारे में अधिक बात न करना। बस, बात आफिया तक ही सीमित रखना।“

“ठीक है अंकल, आप मुझे उसका पता ठिकाना ला दो। फिर मैं देखता हूँ कि आगे क्या करना है।“

अगले दिन फारूकी ने मुहम्मद को जहीर खां का अता-पता ला दिया। उसने फोन करके उससे यह कहते हुए मुलाकात के लिए वक्त मांगा कि वह अपने किसी सरकार द्वारा गुम कर दिए गए रिश्तेदार के बारे में मालूम करना चाहता है। उसको शाम का वक्त मिल गया। शाम के समय वह जहीर खां के दो मंज़िला घर में दाख़िल हुआ। यह रोज़ों के दिन थे। उसके घर में बहुत सारे लोग रोज़ा खोलने के लिए इकट्ठे हुए बैठे थे। रोज़ा खोलने के बाद जहीर खां ने मुहम्मद को अपने कमरे में बुला लिया। उसने मुहम्मद की ओर ग़ौर से देखा और फिर धीमे से बोला, “बरखुरदार, तुम किस बात के सिलसिले में मुझसे मिलने आए हो ?“

“जी, मैंने फोन पर भी बताया था कि मेरी बहन गुम है। उसको गुम हुए काफी समय बीत गया है। उसके बारे में जगह-जगह पता करता घूम रहा हूँ।“

“क्या नाम है तेरी बहन का ?“

“जी उसका नाम आफिया सद्दीकी है।“

“हैं ! आफिया सद्दीकी ?“ जहीर खां ऐसे बोला जैसे बिच्छू ने डंक मारा हो। फिर वह धीरे धीरे संभल गया। मुहम्मद भी हैरान हुआ कि आफिया का नाम सुनकर यह ऐसे क्यों चैंक उठा। दीवार की ओर देखता जहीर खां बोला, “मैंने तो यह नाम ही पहली बार सुना है। मुझे इस लड़की के बारे में कोई पता नहीं है। किसी दूसरे के बारे में बात करनी है तो बता ?“

“मुझे मेरी बहन के अलावा दूसरे किसी से कोई सरोकार नहीं है।“

“ये सारी औरतों को देख रहा है ?“ जहीर खां ने सामने इशारा करते हुए बात दूसरी ओर मोड़ ली।

“जी।“ मुहम्मद उतावला-सा होता बोला।

“इन सभी ने कोई न कोई खोया है। किसी का घरवाला जिहाद में शहीद हो गया। किसी का पुत्र अफगानिस्तान की जंग की बलि चढ़ गया। पता नहीं, कितनें घरों के सदस्य आई.एस.आई. खा गई। यहाँ हर कोई अपने खोये हुओं को तलाशता फिरता है।“

“जी, वह सब तो ठीक है, पर इस बात से मेरा क्या ताल्लुक है। मुझे तो पता चला था कि आपका संगठन आई.एस.आई. या अमेरिकी एफ.बी.आई. द्वारा उठाकर गुम कर दिए गए लोगों की तलाश करने में मदद करता है। बस, इसी कारण मैं आपके पास आया हूँ।“

“तू ऐसा कर, अपना पता-ठिकाना दे और कल को यहीं पर मुझसे मिलना। मैं तुझे अपने आगे के किसी लीडर से मिलवाऊँगा। वह शायद तेरी बहन को खोजने में कोई मदद कर सके।“

“जी, ठीक है। पर एक सवाल है जो इजाज़त हो तो...?“

“हाँ बोलो।“

“ये गुमशुदा लोगों की तलाश आप कानूनी ढंग से करते हैं ? मेरा मतलब अदालत में पेटीशन वगैरह डालकर करते हैं कि वैसे ही अपने तौर पर ?“

“हमारा कोई भी ढंग हो। तुम्हें अपने काम तक मतलब रखना चाहिए। तू कल आ जाना।“ इतना कहते हुए जहीर खां उठकर चला गया और मुहम्मद घर लौट आया। फारूकी भी उसके साथ कराची ही आ गया था, इसलिए जब मुहम्मद घर लौटा तो वह भी घर में ही था। उसने घर आकर जहीर खां से हुई बातचीत बताई तो फारूकी बोला, “मैं तो तुझे पहले ही वहाँ भेजकर राज़ी नहीं था। मुझे आज ही एक और बात का पता चला है।“

“वह क्या ?“

“अमेरिकी पत्रकार डेनियल पर्ल गुम हो जाने से पहले इसी जहीर खां के घर गया था। उसके बाद उसकी लाश ही मिली थी।“

“ओह माय गॉड ! यह सब क्या हो रहा है। ये लोगों को खोजने में मदद कर रहे हैं कि लोगों को गुम करने में लगे हुए हैं। आप बता रहे थे कि ये आदमी आई.एस.आई. में पहले कोई अफ़सर रहा है, पर मुझे शक होता है कि यह अलकायदा के साथ भी जुड़ा हुआ है।“

“बस, चुप ही भली।“

“अंकल, आफिया को पाकिस्तान का बच्चा बच्चा जानता है और वह कहता है कि उसने तो यह नाम कभी सुना ही नहीं।“

“पता नहीं सरकार क्या खेल खेल रही है। किसी की कुछ समझ में नहीं आ रहा। पिछले दिनों गुम हुए लोगों के कई परिवारों ने इकट्ठा होकर सुप्रीम कोर्ट में पेटीशन डाली थी। चीफ़ जस्टिस इफ्तिखार चैधरी ने यह पेटीशन मंजूर करते हुए कार्रवाई शुरु भी कर दी थी। उसके कई अच्छे नतीजे भी आए थे। क्योंकि जस्टिस चैधरी ने सफाई देने के लिए हुक्मरानों को अदालत में बुलाना शुरु कर दिया था। अधिक दबाव पड़ने पर आई.एस.आई. ने बहुत सारे लोग छोड़ भी दिए थे। पर सबको डरा-धमकाकर छोड़ा गया था कि यदि बाहर जाकर किसी से कोई बात की तो दुबारा पकड़ लिए जाओगे। आख़िर लोगों की यह उम्मीद भी खत्म हो गई।“

“वह क्यों ?“

“क्योंकि पहले तो प्रैज़ीडेंट मुशर्रफ़ ने चीफ़ जस्टिस चैधरी पर दबाव डाला कि वह यह पेटीशन वाला काम बंद कर दे, पर जब वह नहीं माना तो मुशर्रफ़ ने उसको मुअŸाल कर दिया।“

“भाईजान, तब कुछ उम्मीद बंधी थी कि शायद चीफ़ जस्टिस चैधरी के हुक्म से हो रही इंकुआरियाँ के कारण ही कहीं आफिया का भेद खुल जाए। पर तभी दुष्ट मुशर्रफ़ ने यह कर डाला।“ चुप बैठी इस्मत भी बातचीत में हिस्सा लेने लगी।

“आपा बात यह है कि अपने हुक्मरान अमेरिका के इशारों पर नाचते हैं। जैसा वह कहता है, वैसा ही करते हैं। अमेरिका नहीं चाहता कि उसकी गुप्त जेलों में बंद किए लोगों के बारे में बाहर के लोगों का पता चल। इसी कारण उसने मुशर्रफ़ से कहकर चीफ़ जस्टिस चैधरी को ही एक तरफ करवा दिया।“

“अमेरिका तो अपने दूसरे भरोसेमंद चमचों को भी आगे लगाने लगा था, पर उसको अल्लाह ने खुद ही सज़ा दे दी।“

“तुम किसकी बात करते हो ?“

“बेनज़ीर की, और किसकी। भुट्टो की लाडली आई थी, यहाँ शांति स्थाति करने। सारा मुल्क चुनकर खा गई और फिर कहने लगी कि मैं मुशर्रफ़ के साथ मिलकर सरकार बनाऊँगी। पर यह नहीं पता कि इन्साफ तो तेरा इंतज़ार कर रहा है। दो महीने भी नहीं निकले कि उन्होंने जहन्नुम का टिकट काट दिया।“

“पता नहीं इस मुल्क का कया होगा। पहले ही चीफ़ जस्टिस चैधरी के मुअत्तल होने वाले मसले के कारण हर तरफ धरने-प्रदर्शन हो रहे हैं। फिर फौज लाल मस्जिद में जा घुसी। वहाँ सैकड़ों लोग मारे गए। उसके बाद बेनज़ीर भुट्टो वाला हादसा हो गया।“

“तुम राजनीति की बातें छोड़ो। हम आफिया के बारे में कुछ सोचें।“

“आपा, हम उस दिन के एक पल के लिए भी चैन से नहीं बैठे जब से आफिया गुम है। पर शायद अल्लाह को मंज़ूर ही नहीं कि उसका कोई पता लगे।“ फारूकी ने बहन के दिल को ढाढ़स दिया।

“सुना है कि अमेरिकियों ने अफगानिस्तान में बहुत ही बुरी जेलें बनाई हुई हैं। जहाँ हर रोज़ बेकसूरों को अमानवीय यातनाएँ दी जाती हैं। पता नहीं मेरी बेटी किन कोठरियों में मौत की घड़ियाँ गिन रही होगी।“ इस्मत रोने लगी।

“आपा तू यह रोना-धोना बंद कर। इससे कोई मसला हल नहीं होने वाला।“

“भाईजान, फिर कुछ न कुछ करो। इस तरह बातें करते तो सालों के साल बीत गए हैं।“

“आपा तू ही बता कि क्या करें ? क्या है अपने हाथ में ?“ फारूकी का भी दिल भर आया और उसने जेब में से रूमाल निकालते हुए आँसू पोंछे।

“भाईजान, तुम वॉन रिडली का शो देखा करते हो ?“ इस्मत ने बात बदली।

“यह कौन है ?“

“यह कोई इंग्लैंड की औरत है। क्रिश्चियन से मुसलमान बनी है। यह एक टी.वी. शो चलाती है। इसका मुख्य मुद्दा मुसलमानों पर हो रहे अत्याचार होता है। खास तौर पर टैरेरिज़्म की आड़ में आम मुसलमानों पर हो रहे अत्याचार।“

“अच्छा !“

“हाँ। पिछले हफ़्ते के प्रोग्राम का मुख्य उद्देश्य था - अफगानिस्तान की भयंकर गुप्त जेलों में छिपा कर रखे गए निर्दोष लोग। जिनके खिलाफ़ कोई केस नहीं बनता। उन गरीबों की कहीं सुनवाई नहीं हाती और वे इसी तरह जुल्म न सह पाने की वजह से मौत की गोद में जा पड़ते हैं। क्योंकि उनकी कहीं गिरफ्तारी भी नहीं दिखाई गई होती, इसलिए वे दुनिया के लिए रहस्य बने रह जाते हैं।“

“तुम्हारा मतलब...।“ फारूकी ने ग़ौर से इस्मत की ओर देखा।

“हाँ-हाँ, मैं वही बात करने जा रही हूँ। पिछले हफ़्ते उसने आफिया का मुद्दा उठाया था। उसके प्रोग्राम में कोई मुअज़म बेग नाम का आदमी आया था। वह बता रहा था कि उसको भी शक के आधार पर पकड़ा गया था। उसको अफगानिस्तान की किसी गुप्त जेल में रखा गया था। उस पर अमानवीय अत्याचार हुआ। पर जो खास बात उसने बताई, वह यह थी कि उसको हर रोज़ किसी औरत की चीखें सुनाई देती थीं। मानो किसी पर जुल्म ढाया जा रहा हो और वह उसको सहन न कर पाने के कारण चीखती चिल्लाती हो। यह हर रोज़ का काम था। वह जितने समय वहाँ रहा, ये चीखें सुनता रहा।“

इस्मत बात करते करते चुप हो गई और उसने अपनी आँखें पोंछ लीं। पर किसी ने बोलकर उसकी बात में विघ्न डालना उचित नहीं समझा। वह फिर से बोलने लगी, “बेग ने बताया कि वह कई बार उसको कैद में रखने वालों से पूछता कि यह औरत कौन है जो विलाप कर रही है। पर वह हमेशा कह यह कहकर टाल देते कि यह तो टेपों में भरी हुई आवाज़ है जो कि उसको सिर्फ़ डराने के लिए इस्तेमाल की जाती है। पर असलियत कुछ और थी...।“ वह ज़रा रुकी और फिर बोलने लगी।

“उसको किसी ने एक दिन लोकल अफगानी पुलिस वाले ने बताया कि यह कोई टेप वगैरह नहीं है। यह असली औरत है जो कि साथ वाली कोठरी में बंद है। इस औरत के पहनने वाले कपड़ों पर कैदी नंगर 650 लिखा हुआ है। उसकी हर रोज़ इंटैरोगेशन होती है और तभी वह रोती-चिल्लाती है। फिर मुअज़म बेग ने एक दिन उस औरत का चेहरा भी देख लिया।“

“अच्छा ! क्या वह उसको पहचान सका ?“ फारूकी ने उत्साह से पूछा।

“तब तो उसने क्या पहचानना था। पर उसी प्रोग्राम पर रिडली ने उसके सामने आफिया की फोटो कर दी और पूछा कि क्या वह इस लड़की जैसी लगती थी। इस पर वह झट बोला, हाँ यह फोटो उसी लड़की की है।“

इसके वहाँ कोई न बोला। सभी सुन्न हो गए। इस्मत ने लम्बी आह भरी और अपनी बात आगे शुरु की।

“इतना ही नहीं, फिर रिडली ने उन पाँचों तालिबानों के साथ हुई इंटरव्यू दिखाई जो कि बैगराम शहर की उसी जेल में से भागने में कामयाब हो गए थे। उन्होंने अपनी इंटरव्यू में माना था कि उन्होंने ने भी उस औरत की चीखें सुनी थीं। बाद में उसको देखा भी था। उनके मुताबिक वह 650 नंबर की कैदी आफिया सद्दीकी ही थी।

इस्मत ने बात ख़त्म की तो काफ़ी देर सभी चुप बैठे रहे। फिर फारूकी बोला, “आपा तू ही बता, फिर आफिया को अब कहाँ खोजें ?“

“बात तो भाईजान मैं भी समझती हूँ, पर किसी पर एतबार ही नहीं आता। क्या पता, कौन सही है। लगता है कि हो सकता है, वॉन रिडली झूठी हो और अपना शो बेचने के लिए यह सब कर रही हो।“

“आपा यह बहुत बड़ी परेशानी है। पता नहीं, आगे क्या होने वाला है।“

वे बातें कर ही रहे थे कि फोन बजने लगा। इस्मत ने आगे बढ़कर फोन उठा लिया। उधर से बग़ैर अपना नाम बताये कोई बोलने लगा, “तुम फिर आफिया को खोजना शुरु कर दिया। क्या तुमको चैन की ज़िन्दगी जीना अच्छा नहीं लगता ?“

“नहीं जी, ऐसी तो कोई बात नहीं है। पर आप कौन हैं ?“

“तेरा बेटा अमेरिका से चलकर यहाँ आफिया को खोजने आया है। अच्छा यही है कि वह वापस चला जाए। नहीं तो इसकी ख़ैर नहीं।“

“कहाँ है मेरी बच्ची ? क्या तुम उसके बारे में कुछ बता सकते हो ?“ इस्मत तड़पकर बोली।

“वो ठीकठाक है। उसको कोई खतरा नहीं है। पर यदि तुम उसको तलाशने वाला सिलसिला बंद नहीं करोगे तो ज़रूर उसकी ज़िन्दगी को खतरे में डाल दोगे। साथ ही, अपनी ज़िन्दगियों को भी बर्बाद करवाओगे।“ इतना कहकर उधर से फोन काट दिया गया।

“कौन था ?“ फारूकी उठकर इस्मत के पास आ गया।

“वहीं धमकियों वाला सिलसिला शुरु हो गया है। कहते हैं कि अगर आफिया की भली चाहते हों तो अपने बेटे को कह दो कि वापस अमेरिका चला जाए।“

इस बात के उŸार में फारूकी ने कहा तो कुछ नहीं, पर उसको जहीर खां याद आ गया। वह कुछ देर चुप रहकर बोला, “आपा मैं एक बात कहना चाहता हूँ।“

“जी भाईजान, बताओ क्या बात है ?“

“मेरा ख़याल है कि मुहम्मद को वापस अमेरिका लौट जाना चाहिए। कहीं एक काम ठीक करते करते किसी नए लफड़े में न फंस जाएँ।“

“भाईजान, तुम्हारी बात मुझे बिल्कुल ठीक लगती है। मैंने यूँ ही भावुक होकर इसको यहाँ बुला लिया। अब मैं सोचती हूँ कि जितनी जल्दी हो सके, इसको वापस लौट जाना चाहिए।“

“अगर यह बात है तो मैं कल ही इसकी टिकट का प्रबंध करवा देता हूँ।“

फिर उनकी इस बात पर सहमति हो गई। अगले दिन फारूकी ने टिकट का पता करवाया। दो दिन बाद की उनको सीट मिल गई। अगले दो दिन वे अन्य कई बड़े व्यक्तियों से मिले और आफिया के बारे में पता किया। पर उसका कोई पता न चला। तीसरे दिन फारूकी, मुहम्मद को कराची के एअरपोर्ट पर अमेरिका की फ्लाइट पर चढ़ा आया। इसके बाद वह वापस इस्लामाबाद चला गया। अगले कई दिन वह बड़ा अपसैट रहा। फिर नित्य की भाँति ज़िन्दगी ने अपनी रफ्तार पकड़ ली।

उधर लोगों में आफिया का मामला ठंडा पड़ता जा रहा था, क्योंकि अब वहाँ चीफ़ जस्टिस चैधरी को बहाल करवाने की मुहिम तेज़ हो गई थी। यह ऐसे ही होता था। जब कभी आफिया की बात मीडिया में आने लगती तो लोगों का रोष जाग उठता और वे सड़कों पर निकल आते, पर तभी कोई अन्य मुद्दा सामने आ जाता तो लोग उधर से हट जाते। वैसे भी बहुत कम पाकिस्तानी लोगों को पता था कि आई.एस.आई. अथवा एफ.बी.आई. आफिया के पीछे इस तरह क्यों हाथ धोकर पड़ी हुई है। या फिर यदि वह उनकी हिरासत में है तो भी यह मामला क्या है। आम लोगों को इस बात का भी पता नहीं था कि वह के.एस.एम. के भान्जे अली की दूसरी बीवी है। इस बलोची परिवार का पूरा किस्सा भी लोगों को मालूम नहीं था। आफिया अमेरिका रहकर क्या

करती रही या यहाँ आकर किस किस्म की कार्रवाइयों में हिस्सा लेती रही या उसका जिहाद की ओर झुकना, ऐसी किसी भी बातों का लोगों को पता नहीं था। लोग समझ रहे थे कि एक दुखियारी औरत को दुनिया की सुपर पावर अमेरिका तंग कर रहा है। इसी कारण लोगों को आफिया सद्दीकी से हमदर्दी थी।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –21

(21)

वर्ष 2008 में जनवरी महीने के एक दिन एस.एच. फारूकी पाकिस्तान में अपने घर बैठा टी.वी. देख रहा था। दोपहर के समय उसके घर की डोर बेल बजी तो उसकी बेगम ने दरवाज़े से बाहर झांका। किसी अज़नबी को बाहर खड़ा देख उसने इस बारे में पति को बताया। फारूकी टी.वी. की आवाज़ कम करते हुए बाहर आया। उसने दरवाज़ा खोला तो सामने टैक्सी ड्राइवर खड़ा था। टैक्सी ड्राइवर ने कहा कि उसकी टैक्सी में एक औरत बैठी है जो आपसे मिलना चाहती है। फारूकी हैरान होता हुआ टैक्सी के पास आया और अंदर देखने लगा।

“अंकल मैं हूँ।“ इस आवाज़ ने फारूकी के रौंगटे खड़े कर दिए। बेशक औरत ने अपने आप को बुर्के में लपेट रखा था, पर यह कैसे हो सकता था कि मामा अपनी भान्जी को न पहचानता। वैसे तो उसको आवाज़ से ही अंदाज़ा लग गया था, पर उसकी आँखों की ओर देखकर उसे पक्का यकीन हो गया कि यह आफिया ही है।

“आफिया बेटी, अंदर घर चल।“ पहचानने के बाद उसने मोह भरे शब्दों में कहा।

“अंकल, इस वक्त मैं घर में नहीं जा सकती। यदि हो सकता है तो आप मेरे साथ चलो। हम बाहर कहीं एकांत में बैठकर बातें करेंगे।“ एस.एच. फारूकी ने पलभर सोचा और फिर आफिया के साथ टैक्सी में बैठ गया। वे किसी रेस्टोरेंट में जा पहुँचे।

“आफिया बेटी, तू पिछले पाँच सालों से कहाँ थी ?“ मौका मिलते ही फारूकी ने बात छेड़ी।

“अंकल, कुछ न पूछो तो बेहतर है।“

“नहीं बेटी, हम सब तेरे लिए बहुत परेशान हैं। तू कुछ तो बता।“

“अंकल...।“ आफिया बात शुरु करते हुए अपने मामा की ओर देख पलभर रुकी और फिर आगे बताने लगी, “अंकल, मैं किसी चैरिटी की मीटिंग में हिस्सा लेने कराची में ही किसी के घर गई थी कि वहाँ पुलिस ने रेड कर दी। उसके साथ अमेरिकी एफ.बी.आई. भी थी। दूसरों के साथ उन्होंने मुझे भी पकड़ लिया। बाद में मुझे आई.एस.आई. के हवाले कर दिया गया।“

“यह वाकया किस दिन घटित हुआ ?“ फारूकी ने ग़ौर से आफिया की तरफ देखा।

“जी यह 29 अप्रैल 2002 की बात है।“

“पर तू तो 3 मार्च वाले दिन अपनी माँ को यह कहकर घर से निकली थी कि तू मेरी तरफ आ रही है।“

“अंकल, वो बात भी सही है।“

“फिर यह महीना भर तू कहाँ रही ? मेरा मतलब तू न मेरे पास आई और न ही तेरा कहीं और पता चला।“

“अंकल वो...।“ आफिया बात करते करते चुप हो गई।

“हाँ बेटे, बता न कि इस बीच क्या हुआ ?“

“अंकल, आप उन दिनों की बात न छेड़ो। मुझे अपनी बात अपने ढंग से कहने दो, प्लीज़। मैं बहुत परेशान हूँ।“

फारूकी कुछ न बोला, पर वह समझ गया कि यह जो तीस मार्च से लेकर 29 अप्रैल तक का वक्फ़ा है, इस बीच ज़रूर कुछ अन्य घटित हुआ है जिसके बारे में आफिया शायद बात नहीं करना चाहती। उसने इशारे से उसको अपनी बात चालू रखने को कहा तो आफिया फिर बोलने लगी, “अब मुझे लगता है कि वे पहले से ही मेरी तलाश कर रहे थे। आई.एस.आई वाले मुझे अपने किसी गुप्त ठिकाने पर ले गए। वहाँ मुझे मेरे बच्चों से अलग कर दिया गया। अगले दिन वे मुझे अफगानिस्तान के बैगराम एअरबेस में ले गए जहाँ अमेरिका का बड़ा अड्डा है।“

“फिर...?“ आफिया बोलते बोलते चुप हुई तो फारूकी बीच में बोला।

“वहाँ मुझे चार साल रखा गया। उन्होंने मुझे बेतहाशा यातनाएँ दीं।“

“कौन थे वे लोग ? मेरा मतलब आई.एस.आई. या अमेरिकी एजेंसियाँ ?“

“दोनों ही।“

“क्या उन्होंने तुझे मारा पीटा भी ?“

“अंकल, मारपीट तो शायद मैं बर्दाश्त कर जाती, पर उनका टार्चर ज्यादा मानसिक था। मुझे कईबार बहुत ही छोटे आकार के डिब्बे में लगातार दो दो दिन खड़े रखा जाता था। वह इतना भीड़ा होता था कि मैं दो दिन बैठ नहीं सकती थी और टांगे अकड़ जाती थीं। कईबार लोहे का ऐसा एक और कमरा होता जो गर्मियों के दिनों में आग की भाँति तपा होता था, मुझे वहाँ बंद कर दिया जाता। जो गर्मी मेरा बुरा हाल करती थी, वह तो करती ही थी, पर इसके अलावा वहाँ बेइंतहा तेज़ रोशनियाँ होती थीं जो आँखों को फोड़ने वाली थीं। इसके अलावा, वहाँ सारा दिन बहुत ही ऊँचा, भद्दा और कान फोड़ू म्युजिक बजता रहता था। कई कई दिन मैं सो ही नहीं सकती थी। मुझे वो वहाँ से निकालते तो करीब के एक तालाब में ले जाते, जहाँ दो दो मिनट पानी में डुबाये रखते। या फिर लकड़ी के फट्टे के साथ बाँधकर मुँह-सिर लपेट देते और ऊपर से पानी डालना शुरु कर देते। साँस बंद हो जाता और साथ ही मुँह पर लगातार पानी पड़ते रहने के कारण डूबने का अहसास होने लगता जो कि जान निकाल देता था। यह कोई एक दिन का काम नहीं था। यह हर रोज़ होता था। और यह लगातार चार साल चलता रहा...।“ आफिया बात बीच में छोड़ते हुए थोड़ा रुकी और आसपास देखते हुए फिर बोली, “अंकल, मेरे ऊपर और बड़े भयानक अत्याचार हुए जो कि बयान से बाहर हैं।“

“आफिया बेटी तेरे पर इतना जुल्म हुआ...।“ फारूकी का दिल भर आया।

“अंकल, यह अफसोस वाली बात नहीं है। क्योंकि जिहाद की राह पर चलते हुए ऐसा तो होता ही है। पर मुझे गर्व है कि मैंने यह सब कुछ बर्दाश्त किया, पर अपने इरादे से नहीं डोली।“

“पर वे तुझसे चाहते क्या थे ?“

“वे मुझे डबल एजेंट बनाकर अपने ही जिहादी बहन भाइयों के खिलाफ़ इस्तेमाल करना चाहते थे।“

“फिर आगे क्या हुआ ?“

“अंकल, जो भी जुल्मो-सितम मेरे पर हुआ, वह मैंने अल्लाह का हुक्म समझकर झेला। पर आख़िर उन्होंने ऐसा ढंग तलाशा कि मैं एक दिन बीच में ही टूट गई।“

“वह क्या ?“

“जो जुल्म वो मेरे पर करते थे, वही उन्होंने मेरे बच्चों पर शुरु करने की धमकी दी। बस, यही बात मुझे बर्दाश्त न हुई और मैं उनकी बात मानने के लिए मज़बूर हो गई। क्योंकि मैं जानती थी कि मेरे बच्चे उनके कब्ज़े में आ चुके हैं। फिर, मैंने डबल एजेंट बनने के लिए हामी भर दी। वैसे तो मैं उनके अनुसार डबल एजेंट बन गई, पर मुझे लगा कि इस तरीके से भी मैं जिहाद का काम ही कर रही होऊँगी।“

“वह कैसे ?“

“क्योंकि मैंने कुछ और सोचा था। मुझे उन्होंने आई.एस.आई की एजेंट बना लिया और कहा कि इस बात को गुप्त रखते हुए मैं उनके लोगों को अलकायदा में दाख़िल करवाऊँ। उन्होंने मुझे नई पहचान देकर इस्लामाबाद भेज दिया। मैं उनका काम भी करती रही और साथ ही अपनी सोची हुई स्कीम के अनुसार अलकायदा को आई.एस.आई. के भेद भी देती रही। यह काम बड़ा ज़ोख़िम भरा था क्योंकि चौबीस घंटे आई.एस.आई. के लोग मेरे इर्दगिर्द रहते थे। इसी दौरान कुछ देर बाद मुझे पाकिस्तान की फैडरल इनवैस्टीगेशन एजेंसी ने गिरफ्तार कर लिया।“

“ओह ! फिर क्या हुआ ?“

“फिर उन्होंने भी मुझे वही काम करने के लिए कहा जो आई.एस.आई. करवा रही थी, अर्थात डबल एजेंट। मुझे नई पहचान देकर यह एजेंसी मेरे से अपने लिए काम करवाने लगी। अब भी मैं वहीं हूँ। पर मुझे पता है कि यह काम ज्यादा देर नहीं चल सकेगा। इसलिए मैं ताक में थी कि कब मौका मिले और यहाँ से भागूँ। आज उनके पहरेदारों की आँखों में धूल झोंककर मैं भाग आई हूँ।“

“अब फिर आगे तू क्या करना चाहती है ?“

“अंकल, अगर मैं यहाँ रही तो मुझे फिर से किसी न किसी एजेंसी ने गिरफ्तार कर लेना है और फिर से वही जासूसी का काम करवाना है। आपको पता ही है कि इस काम में कितना ज़ोखिम है। मैं यह भी जानती हूँ कि जब भी पाकिस्तानी एजेंसियों का काम निकल गया तो वे मुझे अमेरिकियों के हवाले कर देंगे। और वे मेरे पर कोई न कोई चार्ज लगाकर हमेशा के लिए जेल में बंद कर देंगे। इसलिए मैं चाहती हूँ कि इस सबसे दूर किसी ऐसी जगह चली जाऊँ जहाँ कि मुझे इनका डर न हो। जहाँ मुझे यह न रहे कि कोई अपना ही मेरे साथ दगा कमाकर मुझे पकड़वा देगा।“

“ऐसी जगह फिर कौन सी हो सकती है ?“

“अंकल, इस समय अगर मुझे कोई उचित जगह दिखाई देती है तो वह है अफगानिस्तान के तालिबान। पर मेरा अकेली का वहाँ पहुँचना आसान नहीं है।“

“आफिया बेटी, मैं तो कहता हूँ कि अपने घर में आ जा। हम सब कुछ ठीक कर लेंगे।“

“नहीं अंकल, यह मेरा निशाना नहीं है। मैंने अपनी ज़िन्दगी जिहाद के लेखे लगानी है। मेरी तीव्र इच्छा है कि मैं फ्रंट पर जाकर लड़ाई में हिस्सा लूँ और काफिरों का खात्मा करुँ।“

“ठीक है बेटी जैसे तेरी मर्ज़ी...।“ फारूकी ने बात बीच में छोड़कर आँखों के कोये पोंछे और फिर कहा, “अच्छा बता फिर मैं तेरी उस काम में क्या मदद कर सकता हूँ ?“

“आप मेरी अफगानिस्तान के तालिबानों तक पहुँचने में मदद करो। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है कि अकेली औरत का वहाँ जाना आसान नहीं है। वह भी मेरा जिसको जगह जगह पर एजेंसियाँ खोजती घूमती हैं।“

उसकी बात सुनकर फारूकी सोच में पड़ गया। फिर उसको ख़याल आया कि इसकी मदद करनी ही पड़ेगी। वह आफिया की ओर देखता हुआ बोला, “ठीक है बेटी, मेरी तालिबान गवर्नमेंट के समय की कई अफ़सरों से जान-पहचान है। मैं तुझे उन तक पहुँचा दूँगा। पर यह प्रबंध करने में कुछ दिन लग जाएँगे। चल तब तब तू मेरे घर में ठहर जा।“

“नहीं अंकल, मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकती। खूफिया एजेंसियाँ मुझे जगह जगह खोजती फिरती होंगी। मेरे साथ तुम भी मुसीबत में फंस जाओगे।“

फारूकी अकेला ही उठकर चल दिया। उस रात आफिया किसी होटल में रुकी। अगले दिन फारूकी ने जैसे तैसे उसको घर आने के लिए मना लिया। आफिया डरती थी कि कहीं कोई एजेंसी उसका पीछा न कर रही हो। पर फिर भी वह उसके संग घर आ गई क्योंकि उसको फारूकी ने बताया था कि उसकी माँ और बहन आ रही हैं जिन्हें उसने रात में ही फोन करके उसके बारे में ख़बर दे दी थी। जब दोनों घर पहुँचे, तब तक इस्मत और फौज़िया आ चुकी थीं। अंदर जाते ही आफिया ने सूख कर तीला बन चुकी माँ की ओर देखा। आफिया के आँसू छलक आए। इस्मत धाह मारकर उठी और आफिया से लिपट गई।

“हाय री बेटी, तू किन भटकती राहों पर चल पड़ी ?“ रोते हुए इस्मत ने आफिया को बाहों में लपेट लिया।

आफिया ने कुछ कहना चाहा, पर मुँह से बोल न फूटे और वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। दो चार मिनट माँ-बेटी वैराग्य के आँसू बहाती रहीं। माँ की छाती से सिर हटाते हुए आफिया ने बड़ी बहन फौज़िया की ओर देखा तो वह माँ से हटकर उससे लिपट गई। एकबार फिर से आँसुओं की धारा बहने लगी। दोनों बहनें जी भरकर रोयीं। फारूकी और उसकी घरवाली ने आँखें पोंछते हुए तीनों को चुप करवाया। बड़ी भावुक मिलनी थी। अलग अलग होकर भी काफी देर तक सभी अपने आँसू पोंछते रहे। आहिस्ता आहिस्ता फारूकी छोटी छोटी बातें करने लगा। उसके साथ ही दूसरे भी चुप हो गए और उसकी बातचीत में हिस्सा लेने लगे।

“अम्मी, मेरे बच्चों का क्या हाल है ?“ आफिया ने उदास स्वर में पूछा।

“तेरा बेटा और बेटी दोनों ठीक हैं। तू बता बड़ा अहमद कैसा है ?“

“ठीक है, वह भी अम्मी।“ इतना कहते हुए आफिया चुप हो गई और दीवार की ओर देखने लगी।

“सब ठीक हैं, एक मेरी बेटी के सिवा।“ इतना कहते हुए इस्मत ने एक आह भरी। उसकी बात ने आफिया की चेतना भंग की और उसने खाली खाली नज़रों से माँ की ओर देखा।

“अहमद कहाँ है अब ?“ माँ ने पूछा।

“अम्मी वहाँ कहीं भी है, ठीक है।“

“उस बच्चे पर भी मुसीबत पड़ गई।“

“नहीं अम्मी, मुसीबत नहीं बल्कि उस पर तो अल्लाह की मेहर हुई है जो वह जिहाद में शामिल हुआ है।“

“बच्चे के खेलने-कूदने के दिन थे, पता नहीं...।“ बात अधूरी छोड़ती हुई इस्मत चुप हो गई।

“जिहादी माँ का बेटा है। उसको कुछ नहीं हुआ। वह मौज में है।“ इतनी बात कहते हुए आफिया के चेहरे पर आत्म-विश्वास लौट आया। कुछ देर पहले उदासी में डूबी आफिया फिर से हौंसले में आ गई। भावुक बातों को छोड़कर वह जिहाद की बातें करने लगी। सभी उसके मुँह की ओर देखते उसकी बातें सुनते रहे। इस प्रकार बातचीत करते शाम हो गई। कमरे में तीनों, माँ-बेटियाँ रह गईं तो फौज़िया ने बात शुरु की, “आफिया, अब तेरा आगे क्या करने का इरादा है ?“

“क्या मतलब ?“ आफिया ने चौंककर फौज़िया की तरफ देखा।

“मतलब यही कि अब आगे का क्या सोचा है ?“

“आगे-पीछे कुछ नहीं आपा। मेरा सबकुछ जिहाद हो समर्पित है।“

“आफिया, वापस लौट आ। पीछे जो हो गया, सो हो गया। हम मिलजुल कर सब कुछ ठीक कर लेंगे।“

पर आफिया उसकी बात नहीं सुन रही थी। वह तो दीवार की ओर देखती फिर कहीं गुम हो गई थी।

“आफिया, तेरा कमरा तेरा इंतज़ार कर रहा है। तेरे पालतू जानवर, कुत्ते-बिल्ली हर जगह तुझे खोजते फिरते हैं। तेरे लगाए हुए बूटे तेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उनमें लगे फूल तेरी राह देख रहे हैं।“

“हैं ! क्या कहा ?“ सोच के समंदर से बाहर निकलती आफिया ने फौज़िया की ओर देखा।

“आफिया, मेरी बेटी, तू हमारे साथ अपने घर चल।“ इस्मत उठी और उसने मोह में आफिया को अपनी बांहों में कस लिया। आफिया ने भी माँ के इर्दगिर्द बांहें लपेटते हुए आँखें मूंद लीं। उसको चूप देखकर इस्मत फिर खुद बोल उठी, “यह सारा कसूर उस नईम खां के बेटे का है।“ उसका इशारा आफिया के तलाक ले चुके पति अमजद की ओर था।

“उसका क्यों अम्मी ?“ माँ की छाती से लगी आफिया बोली।

“उसने तुझे तेरे हक की मुहब्बत नहीं दी। अल्ला करे उसके कीड़े...।“

“अम्मी... इससे आगे कुछ न बोलना।“ माँ की बात बीच में काटते हुए आफिया उससे अलग हो गई।

“तू अभी भी उसकी तरफदारी करती है। उसने तो तुझे तलाक देते समय कुछ सोचा नहीं।“

“अम्मी वो दूसरी बात है। वह हमारा आपसी मामला था। पर मैं अमजद के बारे में कुछ नहीं सुन सकती।“

“मैं तेरे साथ सहमत नहीं आफिया। अगर वह चाहता तो तू अपने घर में सुख-शांति से रह सकती थी और...।“

“और क्या ?“

“तू इन गलत राहों पर जाने से बच जाती।“

“अम्मी...।“ आफिया भड़कते हुए उठ खड़ी हुई। वह गुस्से में कांपती हुई फिर बोली, “ये गलत राह नहीं है। यह तो बल्कि अल्लाह की खिदमत करने का एकमात्र राह है। तुम लोग क्या जानो कि जिहाद कितना पवित्र काम है।“

“पहले तेरे दुख में तेरा अब्बू चल बसा और अब...।“ इस्मत रोने लगी।

“मरना तो सबने ही है। पर कुर्बानी कोई कोई ही करना जानता है।“ आफिया वैसे ही गुस्से से कांपे जा रही थी।

“तुझे पता है कि तेरे अब्बू ने मरते वक्त क्या कहा था ?“

“हाँ-हाँ, मुझे याद है।“ आफिया को वह बात याद आई जब आख़िरी दिनों में उसके अब्बू ने उसके बारे में कहा था कि इससे तो अच्छा था, आफिया पैदा होते ही मर जाती। उस वक्त आफिया चुप रही थी क्योंकि वह जानती थी कि यह उसके पिता का अन्तिम समय है। पर आज वह चुप न रही। माँ की ओर घूरते हुए वह फिर बोली, “तुम लोग इस धरती पर बोझ हो। खा लिया, पी लिया और ज़िन्दगी गुज़ार ली। तुम्हें जिहाद जैसे पवित्र कामों की समझ नहीं आ सकती।“

फौज़िया ने इशारे से माँ को चुप करवाया और फिर वह आफिया को शांत करने लगी। धीरे धीरे माहौल शांत हो गया। देर रात तक इस्मत और फौज़िया उसको अनेक प्रकार से समझाती रहीं। पर आफिया ने दुबारा उनके साथ ढंग से बात नहीं की। खा-पीकर सब पड़ गए, पर आफिया पलभर भी न सोई। वह रातभर नमाज़ें अदा करती रही और अपने आप से बातें करती रही। अगले दिन सुबह-सवेरे ही सद्दीकी ने उसको बुलाया, “आफिया बेटी, तू तो सारी रात सोई ही नहीं। क्यों, तबीयत तो ठीक है न ?“

“अंकल, भावुक माहौल ने मेरे अंदर कमज़ोरी पैदा कर दी थी। मैं उसके लिए अल्लाह से भूल बख़्शवाती रही। अब मैं पूरी तरह से उस माहौल से बाहर आ चुकी हूँ।“

उसकी बात का कोई जवाब दिए बग़ैर सद्दीकी रसोई में चला गया और उसके लिए चाय का कप ले आया। पर आफिया ने कुछ भी खाने-पीने से इन्कार कर दिया। जब इस्मत और फौज़िया वहाँ आईं तो आफिया अपना सामान बाँध रही थी। उन्होंने हैरान होकर उसकी तरफ देखा और इस्मत बोली, “आफिया, तू इतनी सुबह कहाँ के लिए तैयार हो रही है ?“

“मैं अपनी असली मंज़िल की ओर जा रही हूँ।“ वह उनकी ओर देखे बग़ैर बोली। सभी चुपचाप उसकी तरफ देखते रहे और वह तैयार होती रही। आख़िर, सद्दीकी ने प्यार से उसको बुलाया, “आफिया बेटी, इतनी जल्दी क्यों कर रही है ? मैंने तेरे साथ वायदा किया है कि मैं तुझे तेरी मंज़िल पर पहुँचाकर आऊँगा।“

“नहीं अंकल, अब मेरे लिए यहाँ और ठहरना मुमकिन नहीं है। मैं नहीं चाहती कि यह माहौल मेरे इरादे को कमज़ोर बनाए।“

“पर मैं कह रहा हूँ कि मैं तुझे....।“

“अंकल, मेरी मंज़िल मुझे पता है और वहाँ पहुँचने की राह भी मैं खुद ही खोजूँगी।“ इतना कहते हुए आफिया ने अपना भारी काला बैग उठाकर कंधे से लटका लिया। सद्दीकी ने उसका बैग उठाने में मदद करनी चाही तो आफिया ने बैग को हाथ न लगाने दिया। जब वह चलने लगी तो सद्दीकी ने टैक्सी की प्रतीक्षा करने को कहा। आफिया ने बैग नीचे रखते हुए उसकी बात मान ली तो सद्दीकी ने टैक्सी को फोन कर दिया। टैक्सी आने तक इस्मत और फौज़िया उसके साथ बात करने की कोशिश करती रहीं, पर उसने ढंग से बात नहीं की। इस्मत रोने लगी। उसने आफिया को कुछ पैसे देने चाहे तो उसने पैसों की तरफ देखा भी नहीं। तभी टैक्सी आ गई। आफिया ने नीचे रखा बैग उठाया और बाहर निकल पड़ी। सारा परिवार रोता रह गया और आफिया बिना उनकी ओर ध्यान दिए टैक्सी मे बैठकर चली गई।

अगले छह महीने तक आफिया के घर वालों को उसके बारे में कुछ पता न चला। फिर, उस दिन उनके होश उड़ गए जब ख़बर आई कि आफिया अफगानिस्तान के गज़नी शहर में पकड़ी गई है।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –22

(22)

हालांकि अमेरिका ने आफिया की गिरफ्तारी के विषय में कुछ नहीं बताया था, पर फिर भी यह बात पाकिस्तान में पहुँच गई। इतना ही नहीं, यह भी कि अमेरिकियों ने उसको गोली मारी है जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई है। लोगों का सोचना था कि उसको जान से मारने के लिए ही गोली मारी गई होगी, पर वह संयोग से बच गई।

परंतु इस बात के बारे में अमेरिकी फौज के अफ़सरों का कुछ और ही कहना था। उनके अनुसार जब उन्हें पता चला कि कोई आतंकवादी स्त्री पकड़ी गई है तो वे उसके साथ इंटरव्यू करने के लिए उस कमरे में पहुँचे जहाँ उसको रखा गया था। अंदर सामने कुछ अफगानी पुलिस वाले बैठे थे। सभी के पीछे आफिया पर्दे की ओट में बैठी थी। वे बैठकर अफगान पुलिस वालों से बातचीत करने ही लगे थे कि आफिया ने पर्दे के पीछे से आकर एकाएक अमेरिकी अफसर की एम 4 गन उठा ली और वह उन पर गोलियाँ चलाने लगी। अपने बचाव के लिए अमेरिकी अफसर ने गोली चलाई जो आफिया के पेट में लगी। फिर वह उसको घायल अवस्था में स्ट्रैचर पर डालकर अपने बेस में ले गए। इस घटना के बारे में आफिया ने आगे चलकर कोर्ट में कुछ और बताया। खैर, आफिया के गोली लगने की बात सुनकर पाकिस्तान के लोग भड़क उठे। ह्यूमन राइट्स वाले और अन्य कई ग्रुप आगे आ गए थे। पाकिस्तान में माहौल बहुत गरमा गया। आफिया सद्दीकी का नाम बच्चे बच्चे की जुबान पर चढ़ गया। जलसे-जुलूसों की हर तरफ बाढ़ आ गई। मुज़ाहरे होते तो लोगों के हाथों में बैनर होते। किसी पर लिखा होता - 'डाक्टर सद्दीकी को रिहा करो। किसी पर लिखा होता - 'इस्लाम की बेटी आफिया सद्दीकी। कुछ ही दिनों में आफिया का नाम कौम के लिए गर्व बन गया। इधर जलसे-जुलूस ज़ोरों पर थे और उधर अमेरिका वाले आफिया को न्यूयॉर्क ले जा चुके थे। अमेरिका के जस्टिस डिपार्टमेंट द्वारा प्रैस कॉन्फ्रेंस बुलाकर यह बता दिया गया कि एफ.बी.आई द्वारा घोषित सबसे अधिक खतरनाम आतंकवादी औरत आफिया सद्दीकी पकड़ी जा चुकी है।

आफिया को न्यूयॉर्क के उस मैट्रोपोलिटन डिटैशन सेंटर में बंद किया गया जहाँ कभी 1993 के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के नॉर्थ टॉवर की पार्किंग में धमाका करने वाले रम्जी यूसफ या उजैर पराचा को रखा गया था। उसके अन्य बहुत सारे साथी जो इस वक्त जेलों में अपनी सज़ा भुगत रहे थे, इसी सेंटर में से निकलकर गए थे। पाँच अगस्त 2008 को सुबह दस बजे आफिया को पहली बार कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट कंपलैक्स खचाखच भरा हुआ था। प्रैस सहित बहुत से लोग यह देखने के लिए उतावले थे कि आतंकवाद की दुनिया की सबसे खतरनाक औरत देखने में कैसी लगती है। कुछ देर बाद पुलिस वालों ने करीब पैंतीस वर्षीय छोटी-सी और भोलीभाली औरत को लोकर कोर्ट में खड़ा किया तो सब हैरान रह गए। उसने हल्के रंग के कपड़े पहने हुए थे। सिर पर कत्थई रंग का स्कॉर्फ लपेट रखा था। देखने में वह बहुत ही कमज़ोर लगती थी। शायद वह अभी तक गोली लगे ज़ख़्म के कारण पूरी तरह ठीक नहीं हुई थी। जज ने उससे पूछा कि तू अपना केस स्वीकार करती है तो उसने 'ना' में सिर हिला दिया। प्रैस के लोगों से खचाखच भरी कोर्ट में चुप्पी पसर हुई थी। सबको लग रहा था कि यह केस आतंकवाद के खिलाफ़ चल रही गुप्त लड़ाई का सबसे कठिन केस होगा। आम लोग तो इस बात को भी मानने के लिए तैयार नहीं थे कि आफिया को सचमुच

गज़नी शहर में पकड़ा गया होगा। वे सोच रहे थे कि पिछले पाँच वर्षों से गुप्त जेलों में रखी आफिया को सिर्फ़ नाटक रचने के लिए गज़नी के बाज़ार में लाकर छोड़ दिया गया होगा और साथ ही साथ पकड़ लिया गया होगा। कइयों को तो यह भी लगा कि यह लड़की आतंकवादी हो ही नहीं सकती। ख़ैर, यू.एस.ए. की सिविल राइट्स यूनियन को लगा कि ऐसा केस आ चुका है जिसकी वे बहुत अरसे से प्रतीक्षा कर रहे थे। क्योंकि वे कई सालों से सरकार पर दोष लगाते आ रहे थे कि वह आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई का बहाना बनाकर बहुत सारे लोगों को लम्बे समय से गुप्त जेलों में बंद किए बैठी है और उन पर अमानवीय अत्याचार किया जा रहा है। अब उनका सोचना था कि इस केस के माध्यम से वे इस सच्चाई को सामने ले आएँगे। आफिया को सिविल राइट्स यूनियन की ओर से फिंक नाम की एक उच्चकोटि की वकील दी गई। उस दिन थोड़ी-बहुत कार्रवाई करते हुए जज ने कोर्ट बरखास्त कर दी। मार्शल आफिया को वापस जेल में ले गए। अगले दिन आफिया के परिवार की वकील शार्प भी वहाँ पहुँच गई। फिंक और शार्प ने लगभग तीन घंटे जेल में आफिया से लम्बी इंटरव्यू की। बाहर आकर शार्प ने ऐलान किया कि आफिया के अनुसार उसको पिछले कई वर्षों से अफगानिस्तान की बैगराम एअरफोर्स बेस के किसी गुप्त सेल में कैद करके रखा गया था। इसके उलट अमेरिकी सरकार यह मानने से इन्कार कर रही थी कि वह पहले से एफ.बी.आई. अथवा सी.आई.ए. की हिरासत में थी। पर वह यह कह रही थी कि यह बहुत ही खतरनाक आतंकवादी है। सरकार के अनुसार सबसे बड़ा सुबूत उसके पास से बरामद हुए वे काग़ज़-पत्र थे जो उसकी गिरफ्तारी के समय थानेदार गनी खां ने पकड़े थे। आफिया की वकील का कहना था कि ये सारे पेपर झूठे और सरकार की ओर से प्लांट किए गए हैं। पर इनमें से बहुत सारे पेपर आफिया की अपनी हस्तलिपि में थे जो उसको शक के घेरे में ला रहे थे। बाद में पाकिस्तान में यही बात उसके मामा फारूकी ने सुनी तो उसको कोई शक न रहा। उसको याद आया कि छह महीने पहले जब आफिया उसके घर आई थी तो यही काला बैग उसके पास था जिसको वह हाथ नहीं लगाने दे रही थी और बहुत संभाल संभालकर रख रही थी। अमजद और उसके घरवालों ने उसकी गिरफ्तारी होने की बात सुनी तो उन्हें सबसे पहले यह जानने की उतावली हुई कि उसके पास बच्चे थे कि नहीं। ख़ैर, बच्चे उसके पास नहीं थे। पर जब अमजद ने वो वीडियो देखी जो आफिया की गिरफ्तारी से अगले दिन पुलिस की ओर से बनाई गई थी तो उसने आफिया के साथ पकड़े गए लड़के को पहचान लिया। यह उसका अपना पुत्र अहमद था। परंतु आफिया अपने पुत्र की शनाख़्त छिपाकर रखना चाहती थी। उसने अपनी इंटैरोगेशन करने वालों को यही कहा कि यह लड़का कोई यतीम था, इसलिए उसने उसको अपने पास रखा हुआ था क्योंकि उसका अपना कोई नहीं था। दूसरा, साथ रखने का एक कारण उसने यह भी बताया कि औरत होने के कारण वह अकेली सफ़र नहीं कर सकती, इसलिए उस लड़के को साथ रखती थी। पर जब एफ.बी.आई ने उस लड़के का डी.एन.ए. टैस्ट

करवाया तो यह बात स्पष्ट हो गई कि वह आफिया का अपना पुत्र था। इस बात का खुलासा होने के बाद आफिया बहुत उदास हो गई और उसने बोलना बंद कर दिया। उसको अपने बेटे की ज़िन्दगी को लेकर चिंता हुई। वह सोचने लगी कि एफ.बी.आई. उसके बेटे को मार सकती है या लम्बे समय तक अपनी हिरासत में रख सकती है, सिर्फ़ उसको उसके खिलाफ़ इस्तेमाल करने के लिए। क्योंकि अमेरिकी कानून के अनुसार बारह साल का बच्चा अपने माँ-बाप के हक में अथवा उलट गवाही देने के योग्य समझा जाता है। आफिया बिल्कुल ही चुप हो गई। उसने अपने वकीलों के साथ भी बोलना छोड़ दिया। ई मेल वगैरह भेजनी बंद कर दीं। पुत्र के दुख में वह सारा दिन अकेली बैठी रोती रहती थी। सही ढंग से खाना तक छोड़ दिया था। उधर पाकिस्तान में जनता बड़ी सहानुभूति के साथ आफिया की कहानी सुनती जा रही थी। सभी को इसके साथ हद से ज्यादा हमदर्दी थी। पाकिस्तान के टी.वी. चैनल जिओ टी.वी. ने ख़ास प्रोग्राम शुरु किया हुआ था जिसका नाम था - 'ए ह्यूमन राइट्स ट्रैजेडी - आफिया सद्दीकी। पाकिस्तान की सरकार में उस समय हालात ठीक नहीं थे। मुशर्रफ़ ने इस्तीफ़ा दे दिया था और नए चुनाव होने जा रहे थे। लोगों की नब्ज़ पहचानते हुए वहाँ की नेशनल एसेम्बली ने आफिया सद्दीकी के हक में प्रस्ताव पास करते हुए आफिया की मदद के लिए एक डेलीगेशन अमेरिका भेजने का फैसला कर लिया। उधर अमेरिका ने इस समय ड्रोन हमले बढ़ा दिए थे और इनमें चोटी के अलकायदा मेंबर मारे जा रहे थे। समझने वाले समझते थे कि यह सब इस कारण हो रहा है क्योंकि आफिया के पास से पकड़ी गई थंब ड्राइव में से बहुत सारे अलकायदा मेंबरों के ठिकानों का पता लगा होगा। और कुछ तो पाकिस्तानी सरकार न कर सकी, पर आफिया का बेटा उसकी बहन के हवाले करवाने का काम अवश्य करवा दिया।

उधर आफिया का बर्ताव अभी भी ख़ामोश और जिद्दी था। उसने अपनी तारीख़ पर कोर्ट में जाने से इन्कार कर दिया। उसने किसी को भी मुलाकात करने से मना कर दिया। जब उसने वकीलों से मिलने से इन्कार कर दिया तो फिंक जैसी प्रसिद्ध वकील ने भी स्वयं को बेबस-सा महसूस किया। इस प्रकार आफिया अपनी कई कोर्ट सुनवाइयों पर भी नहीं गई। यह देखते हुए उसकी वकील ने कोर्ट से विनती की कि आफिया दिमागी तौर पर सही प्रतीत नहीं होती, इसलिए उसका मुआयना करवा कर इलाज़ करवाया जाए। जज ने इस विनती को मानते हुए आफिया को फैडरल मेडिकल सेंटर कार्सवैल, टैक्सास भेजने का आदेश कर दिया। यहाँ पहुँचकर आफिया ने मानसिक तौर पर काफ़ी राहत अनुभव की। दिसंबर महीने में जब पाकिस्तान की सरकार का ख़ास डेलीगेशन उससे मिलने आया तो आफिया उस समय मेडिकल सेंटर में थी। उसने बड़े अच्छे ढंग से डेलीगेशन के साथ मुलाकात की। डेलीगेशन ने पाकिस्तान सरकार की ओर से उसको कानूनी मदद का भरोसा दिलाया। इसके शीघ्र बाद पाकिस्तान सरकार ने आफिया के कानूनी खर्चों के लिए लगभग दो मिलियन

डॉलर की मदद का प्रबंध कर दिया। तभी अमेरिकी सरकार ने फैसला किया कि वह आफिया पर आतंकवाद का मुकदमा नहीं चलाएगी, बल्कि उस पर उस जुर्म के खिलाफ़ मुकदमा चलाया जाएगा जो उसने अमेरिकी फौजियों पर गोली चलाने का किया। इसी समय आफिया के डॉक्टरों ने अपनी रिपोर्ट में लिख दिया कि वह मानसिक तौर पर बीमार है। उसकी वकील फिंक ने इसका लाभ उठाते हुए सरकार पर इल्ज़ाम लगाया कि एफ.बी.आई. की यातनाओं के कारण ही आफिया की यह हालत हुई है। पर आफिया ने उसके साथ बोलना बंद कर दिया। सिर्फ़ उसके साथ ही नहीं अपितु आफिया हर उस शख़्स से दूर रहने लगी जिसके बारे में उसका लगता था कि यह यहूदी है या यहूदियों के संपर्क में है। उसकी ऐसी हरकतें उसके वकीलों और उसके अपनों को भी परेशान कर रही थीं। वैसे इस समय आफिया बड़ी अच्छी रौ में थी। एक तो पाकिस्तानी सरकार उसकी मदद कर रही थी, पर इससे भी बड़ी बात वह थी जो डॉक्टर ने लिख दी थी कि आफिया सद्दीकी मानसिक बीमारी के कारण मुकदमें का सामना नहीं कर सकती। उसको लगता था कि शायद मानसिक बीमारी की वजह से उसको यूँ ही रिहा कर दिया जाएगा। परंतु आफिया की यह खुशी उस वक्त उड़ गई जब उसको पता चला कि डॉक्टरों की एक अन्य टीम उसका मुआयना करने आ रही है। इसी बीच उसने अमेरिकी सरकार के नाम एक लम्बा पत्र लिखा। इस पत्र में उसने अपने ढंग से यह नुक्ता रखने की कोशिश की कि उसके पास बहुत सारे गुप्त भेद हैं जो कि अमेरिकी सरकार के काम आ सकते हैं। वह सोच रही थी कि शायद ये भेद जानने के बदले ही सरकार उसको रिहा करने के लिए मान जाए। जेल वार्डन को यह पत्र देते हुए उसने आगाह किया कि इस पत्र को प्रेज़ीडेंट ओबामा तक पहुँचा दिया जाए। पर आफिया को फिर निराशा हाथ लगी। उसके इस पत्र की ओर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। बल्कि उसको बड़ा धक्का तब लगा जब डॉक्टरों की नई टीम ने अपनी रिपोर्ट में लिख दिया कि वह बिल्कुल ठीक है और अपने केस का सामना सही ढंग से कर सकती है। मेडिकल की इस नई रिपोर्ट मिलने के बाद सरकार उसको वापस न्यूयॉर्क में ले आई और केस फिर से प्रारंभ कर दिया। जज ने उसका वकील बदलते हुए केस की तारीख तय कर दी। उसकी नई वकील डॉन कार्डी थी और केस की तारीख़ थी- 7 जून 2009 ।

उस दिन जज बर्मन ने कार्रवाई शुरु करते हुए आफिया को पेश करने का आदेश दिया। मार्शलों ने आफिया को लाकर कोर्ट में खड़ा कर दिया। आवश्यक कार्रवाई निपटाते हुए जज ने उसको वकील के पास बैठने की अनुमति दे दी। वकील अपना काम करने लगी, पर लगता था कि आफिया को अपनी वकील से कोई सरोकार नहीं था। वह चलती कार्रवाई में उठ खड़ी हुई और ऊँचे स्वर में बोली -

“मैं कुछ कहना चाहती हूँ...।“

“मिस आफिया, तुम्हें बोलने का वक्त मिलेगा, पर अभी तुम बैठ जाओ।“ जज ने हुक्म सुनाया। पर आफिया उसकी बात मानने की बजाय फिर से बोली, “मैंने जो कुछ किया है, वो दुनिया में शांति स्थापित करने के लिए किया...।“

उसके बोलने के साथ कोर्ट के काम में रुकावट पड़ गई। जज ने गुस्से होकर आफिया की ओर देखा, पर आफिया ने अपनी बात जारी रखी -

“मैं तो तालिबानों और अमेरिका के बीच समझौता करवाना चाहती हूँ। आप मेरी बात क्यों नहीं सुनते ?“

“मिस आफिया, तुम प्लीज़ बैठ जाओ।“ जज ने सख़्त लहजे में यह शब्द कहे तो आफिया बैठ गई। उसने मेज़ पर सिर रख लिया और आँखें मूंद लीं। उसकी यह हालत देखकर उसकी वकील जज से अनुमति लेती हुई बोली, “आप मिस आफिया की हालत देखकर खुद अंदाजा लगा सकते हैं कि इसके ऊपर कितना टार्चर हुआ है। इसकी हालत सही नहीं है। एफ.बी.आई. के टार्चर ने इसको इस हालत में पहुँचा दिया है।“

“युअर ऑनर, मैं कुछ कहना चाहती हूँ।” सरकारी वकील उठ खड़ी हुई। जज ने उसको बोलने की इजाज़त दी तो वह अपनी बात रखने लगी -

“मिस आफिया अभी तक यह नहीं बता सकी कि उस पर यह टार्चर कब और कहाँ हुआ है। इसने अब तक जो भी बयान दिए हैं, वे आपस में मेल नहीं खाते। यह बार बार अपने बयान बदल रही है। इस वजह से हम यह समझने में असमर्थ हैं कि इसका कौन सा बयान सही माना जाए। मैं यह भी कहना चाहूँगी कि मिस आफिया दिमागी बीमारी का सिर्फ़ बहाना बना रही है। वैसे यह बिल्कुल ठीक है। यह अपने केस का सामना कर सकती है।”

“वही तो मैं कह रही हूँ कि मिस आफिया किसी भी बात का उत्तर ठीक नहीं दे रही। वह भूल जाती है कि पहले उसने क्या कहा था और अब क्या कह रही है। वह पुरानी कई बातें भी भूल चुकी है। और यह सबकुछ एफ.बी.आई. के अत्याचारों की वजह से हुआ है। मिस आफिया मासूम है, निर्दोष है।“ इजाज़त लेते हुए आफिया की वकील बोली।

जज ने दोनों पक्षों की बातचीत सुनने के बाद फैसला कर दिया कि आफिया बिल्कुल सही है और वह अपने केस का सामना कर सकती है। इसलिए उसने अगली तारीख़ नवंबर की रख दी।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –23

(23)

सबको लगता था कि यदि आफिया अपने वकीलों का कहा मान ले तो वह इस केस से बरी हो सकती हे। पर वह तो केस को ठीक ढंग से चलने ही नहीं देती थी। उसके वकील उसको कुछ भी कहते रहते, पर वह उनकी बात पर कान ही नहीं रखती थी। आफिया को उसके अपनों ने भी समझाया कि वह वकीलों का कहा माने, पर उसने किसी की बात न सुनी। बड़ी बात यह भी थी कि उसके ऊपर आतंकवाद के चार्ज नहीं लगे थे। विद्वान वकील समझते थे कि यदि सरकार उस पर आतंकवाद के चार्ज़ लगा देती है तो गवाहों को कोर्ट में पेश करना पड़ेगा। गवाह भी कोई साधारण नहीं थे। इनमें से के.एस.एम. जैसे मुख्य अलकायदा के सदस्य थे। उन लोगों के पास बहुत सारे भेद थे। उन्हें अदालतों में पेश करके सरकार इन सभी रहस्यों के खुलने का खतरा मोल नहीं ले सकती थी। इसके अलावा ये आतंकवादी अभी तक गुप्त जेलों में कहीं क़ैद थे। इन सारी बातों से बचने के लिए सरकार ने आफिया पर आतंकवाद के चार्ज नहीं लगाए थे। उसके वकील समझते थे कि उस पर जो भी चार्ज लगे हैं, उन्हें वे

आसानी से उड़ा देंगे। ये वकील भी कोई साधारण वकील नहीं थे। आफिया के भाई ने पाकिस्तान सरकार से मिली दो मिलियन डॉलर की मदद से बहुत ही उच्च कोटि के वकीलों की टीम खड़ी की थी। परंतु आफिया वकीलों का कहा बहुत कम मान रही थी। आख़िर उसके वकीलों ने आफिया के भाई को सलाह-मशवरे के लिए बुलाया।

“मि. सद्दीकी, हमने एक खास ढंग से इस केस को लड़ने की स्कीम बनाई है। उसकी बाबत ही तुम्हारे साथ हमें बात करनी है।” आफिया के भाई से मुख्य वकील ने बात की शुरुआत की।

“सर, वह क्या ?“

“बात तो बड़ी सादी-सी है, पर इसके लिए मिस आफिया को हमें पूरा सहयोग देना पड़ेगा।”

“आप बताओ तो सही कि बात क्या है। उसके साथ मैं बात करुँगा।”

“हम जज से विनती करेंगे कि हमारा क्लाइंट कोर्ट में बिल्कुल चुप रहेगा। चुप रहना उसका अधिकार भी है और जज इस बात को मान लेगा।”

“फिर ?“

“इसके बाद मिस आफिया सारी सुनवाई के दौरान चुप रहेगी। सरकारी वकील भी उससे कोई सवाल नहीं कर सकेगा। हमारी योजना यह है कि सरकार के लगाए इल्ज़ामों में से किसी एक को झूठा साबित कर दें। यह कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि सबूतों में बहुत कमज़ोरियाँ हैं। हमारे इस प्रकार करने से एक आध ज्युरर के मन में यह बात अवश्य आ जाएगी कि सरकार ने झूठा केस तैयार किया है।”

“इससे क्या होगा ?“ आफिया के भाई को अभी भी बात समझ में नहीं आ रही थी।

“इससे ज्युरी का फैसला ’हंग ज्युरी’ हो जाएगा और केस खत्म हो जाएगा। इस तरह मिस आफिया केस से बरी हो जाएगी।”

“हंग ज्युरी मतलब ?“

“मि. सद्दीकी, ज्युरी जो भी फैसला करती है, वह सर्वसम्मति से होना चाहिए। यदि एक भी ज्युरी मेंबर फैसले से असहमति प्रकट कर दे तो उसको हंग ज्युरी कहा जाता है। यदि हंग ज्युरी हो जाए तो केस वहीं खत्म हो जाता है और मुलज़िम बरी हो जाता है।”

“अच्छा अच्छा, यह बात है। मैं पूरी बात समझ गया हूँ।” आफिया के भाई को लगा कि वकील वाकई बहुत अच्छा रास्ता चुन रहे हैं।

“बस, इसके लिए ज़रूरी है कि मिस आफिया केस की सारी सुनवाई के दौरान बिल्कुल ख़ामोश रहे। हमारी हर बात माने।”

आफिया के भाई ने वकीलों को भरोसा दिलाया कि वह आफिया को मिलकर सारी बात समझा देगा। इसके अलगे ही दिन वह आफिया से मुलाकात करने जेल में पहुँचा। आफिया को लाकर उसके पास बिठा दिया गया। आफिया की ओर देखते हुए मुहम्मद का दिल भर आया, पर उसने अपने आप पर नियंत्रण रखा और वकीलों के साथ हुई बातचीत बताई। उसकी बात का जवाब देने के बजाय आफिया उसको जिहाद के बारे में बताने लग पड़ी। बड़ी कोशिशों से मुहम्मद ने आफिया को उसकी बात सुनने के लिए मनाया। उसने उसको वकीलों की योजना समझाई। वह सिर-सा हिलाकर वकीलों के अनुसार चलने के लिए मान गई। पर जब मुहम्मद उठकर चलने लगा तो उसने उसको रोक लिया और बोली, “भाई जान, तुम मेरी बात छोड़ो और अपने मुसलमान भाइयों की फिक्र करो।“

“कौन से मुसलमान भाइयों की ?“

“जितने भी यहाँ रह रहे हैं। सभी से कहो कि वे अमेरिका छोड़कर चले जाएँ।”

“क्यों ?“

“क्योंकि अमेरिकी सरकार किसी भी मुसलमान को बख़्शने वाली नहीं। सबको मेरी तरह जेलों के अंदर बंद कर देगी।”

“आफिया मैं तेरा सगा भाई हूँ। मुझे तो किसी ने जेल में बंद नहीं किया। मैं तो अपने परिवार के साथ पूरी स्वतंत्र ज़िन्दगी जी रहा हूँ।” मुहम्मद ज़रा रूखा बोला।

“जो तुम्हारी मर्ज़ी। बाद में भुगतना पड़ा तो रोते रहोगे।”

“आफिया, तू मेरी वकीलों की कही बात पर ध्यान दे। इस वक्त सबकुछ भूल जा।”

“ठीक है।” आफिया उठकर चल पड़ी। मुहम्मद उसको जाते हुए देखता रहा। उसको ख़याल आया कि यह कितना बदल गई है। वह सोचने लगा कि इतनी ज़हीन लड़की क्यों इस तरह की बेतुकी-सी बातें कर रही है। फिर उसको लगा कि ऐसा सचमुच एफ.बी.आई. के अत्याचार के कारण हो रहा है। फिर वह उठकर जेल से बाहर निकल आया।

तय तारीख़ पर कोर्ट शुरु हुई तो ट्रायल की ज़रूरी कार्रवाई के बाद सरकारी वकील ने आफिया पर लगे चार्ज पढ़कर सुनाए। आफिया पर चार्ज ये लगे थे कि उसने यू.एस. आर्मी के स्पेशल फोर्स के लोगों पर गोली चलाई। एक से अधिक व्यक्तियों के क़त्ल की मंशा का आरोप था। सरकारी वकील ने कोर्ट को कहानी इस प्रकार बताई -

“जिस दिन मिस आफिया गज़नी पुलिस द्वारा पकड़ी गई थी, उसके अगले दिन स्पेशल फोर्स की टीम कैप्टन रार्बट सिंडर की अगुवाई में उसका इंटरव्यू करने पहुँची। उस वक्त उसको किसी बड़े कमरे में रखा हुआ था। सामने कुछ अफ़गान पुलिस के

अफ़सर बैठे थे और पर्दे के पीछे मिस आफिया बैठी थी। जब स्पेशल फोर्स वाले भी अफ़गान अफ़सरों के पास बैठ गए तो अगले ही पल मिस आफिया ने पर्दा हटाते हुए वारंट अफ़सर की एम 4 गन उठा ली और उन पर गोलियाँ चलाने लगी। यह देखते ही वारंट अफ़सर ने अपनी सर्विस रिवाल्वर निकाली और आफिया पर गोली दागी। गोली उसके पेट में लगी। वारंट अफ़सर का कहना है कि यदि वह आफिया को ज़ख़्मी न करता तो वह सभी को मार देती। जब वह ज़ख़्मी हो गई तो वे उसको स्ट्रेचर पर डालकर बैगराम एअरफोर्स बेस ले गए। वहाँ उसका इलाज करवाने के बाद उसको अमेरिका लाया गया।"

सरकारी वकील ने आफिया पर लगे चार्ज पढ़कर सुनाए तो जज साथ के साथ कुछ लिखता रहा। थोड़ी बहुत कुछ और कार्रवाई हुई और अदालत बर्खास्त हो गई। इसी प्रकार एक दो दिन और प्रारंभिक काम होता रहा। फिर जब पूरी तरह से आफिया का केस चल पड़ा तो गवाहों के बयान होने शुरु हुए। ये सभी गवाह स्पेशल फोर्स के वही लोग थे जो कि गोली चलने के समय वहाँ मौका-ए-वारदात पर मौजूद थे। इनमें से उस वक्त घटना के समय पर मौजूद एक दुभाषिया भी था जो कि अफ़गानी था। एक एक करके गवाह जो कुछ बता रहे थे, वह सारी बात आपस में मिलती-जुलती थी। जब वारंट अधिकारी ने गवाही दी तो सफाई वकील ने उससे सवाल किया -

"मि. ऑफीसर, तुम्हारी एम 4 गन तुम्हारा सर्विस वैपन है जो कि हर वक्त तुम्हारे कब्ज़े में रहता है और रहना भी चाहिए। क्या तुम कोर्ट में बता सकोंगे कि तुम्हारी एम 4 गन मिस आफिया के पास कैसे चली गई ?"

"बात यह है कि मैं जब भी अफ़गान लोगों को मिलने के लिए उनके करीब बैठता हूँ तो सम्मान के तौर पर अपनी गन कंधे से उतारकर एक तरफ रख देता हूँ।"

"इसमें सम्मान वाली क्या बात है। तुम ड्यूटी पर होकर ऐसा कैसे कर सकते हो कि हथियार एक तरफ रख दो ?" सफाई वकील वारंट अधिकारी को घेरने लगा।

"हमें वहाँ यही सिखाया जाता है कि हम अफ़गानी लोगों की भावनाओं की कद्र करें। क्योंकि उनका सभ्याचार कुछ इस तरह का ही है।"

“लगता नहीं कि इस छोटी सी लड़की ने गन उठा ली होगी।” वकील ने सवाल का रुख मोड़ा।

इस बात का उत्तर वारंट अफ़सर कुछ सोच ही रहा था कि सरकारी वकील ने बीच में बोलते हुए कोर्ट के कारिंदे को कहकर पहले से लाकर रखी एम 4 गन मंगवा ली। सरकारी वकील जो कि खुद भी आफिया जितनी ही थी, उसने एक हाथ से गन उठाकर ज्युरी मेंबरों को दिखाई। सभी मेंबरों ने गन उठाकर देखी। उनसे गन वापस लेते हुए सरकारी वकील ने कहा कि यह गन बिल्कुल बच्चों के खिलौने जैसी है और आफिया के लिए उसको उठाना कोई कठिन बात नहीं।

“फिर आगे क्या हुआ ?“ सफाई वकील फिर वारंट अधिकारी से संबोधित हुआ।

“फिर आफिया ने मेरी गन उठाकर सभी पर गोलियाँ चलानी शुरु कर दीं। मैंने शीघ्रता से अपना सर्विस रिवाल्वर निकाला और आत्मरक्षा के लिए गोली चलाई जो कि मिस आफिया के पेट में लगी।”

“रिवाल्वर तुम्हारे पास कहाँ से आ गया ?“

“आना कहाँ से था। मेरा सर्विस रिवाल्वर मेरी कमर में बंधा हुआ था।”

“पर अभी तो तुम कह रहे थे कि अफ़गानी लोगों से मिलते समय तुम हथियार उतारकर एक तरफ रख देते हो जैसे कि एम 4 गन रख दी थी। फिर तुमने यह रिवाल्वर क्यों नहीं उतारा ?“

“वह मैं...।“ वारंट अधिकारी को कोई उत्तर न सूझा। सफाई वकील के चेहरे पर मुस्कान आ गई। उसने देखा कि ज्युरी मेंबरों ने इस बात पर परस्पर आँखें मिलाईं कि जब एक हथियार उतारकर रख दिया था तो दूसरा क्यों कमर में खोंसे रखा। उनके मन में कुछ कुछ शक उपजा। सफाई वकील यही चाहता था।

“फिर तेरी उस गन का क्या हुआ जो मिस आफिया ने उठा ली थी और बाद में उसी से तुम लोगों पर गोलियाँ चलाई थीं ?“

“जब मिस आफिया ज़ख़्मी हो गई तो मैंने उस गन को अपने कब्ज़े में ले लिया।”

“वह वारदात में प्रयोग किया गया हथियार था। कानूनन उसको बड़ा संभालकर प्लास्टिक वगैरह में लपेटकर रखना चाहिए था ताकि उस पर लग चुके मिस आफिया के फिंगर प्रिंट्स सुरक्षित रहते और बाद में अच्छी प्रकार से जाँच-पड़ताल हो सकती।”

“जी...।”

“क्या तुमने ऐसा किया ? मतलब गन को इस ढंग से संभालकर सुरक्षित रखा ?“

“जी नहीं। उस मौके पर ऐसा कुछ नहीं कर सका।”

“इसका अर्थ है कि उस गन पर से उंगलियों के निशान वैगरह नहीं लिए गए जो यह साबित करें कि गन वाकई आफिया के हाथों में आई थी। न ही तुमने उस गन की ऐसी कोई जाँच करवाई जो यह साबित कर सके कि उस दिन वह गन चलाई गई थी। और उस घटना स्थल की कोई फॉरसेनिक जाँच वगैरह भी नहीं हुई।”

“नहीं, ऐसा हम नहीं कर सके।”

“युअर ऑनर, यह बात गौरतलब है कि वारदात के समय प्रयोग में लाए गए हथियार पर मिस आफिया के फिंगर प्रिंट्स नहीं मिले। वारदात की घटना वाली जगह पर दूसरे सबूत भी इकट्ठा नहीं किए गए। जैसे उन चली हुई गोलियों के खोल कहाँ हैं जो आफिया ने चलाई थीं। अन्य बहुत कुछ है जज साहिब...।”

“जंगे मैदान में यदि तुम किसी को क़ातिल साबित करने के लिए आवश्यक कार्रवाइयाँ ही नहीं कर सकते तो तुम्हें ऐसे इन्सान पर केस चलाने का भी कोई अधिकार नहीं। क्योंकि सिर्फ़ किसी के कहने से ही क़त्ल साबित नहीं हो जाता। उसके लिए किसी के द्वारा दी गई गवाहियों के साथ कुछ ठोस सबूत भी चाहिएँ जो यह साबित करें कि गवाह सच बोल रहा है। पर इस केस में एक ही रटा रटाया बयान देने वाले तो बहुत हैं, पर बयान पर सच का ठप्पा लगाने वाला सबूत कोई नहीं है।”

“मैं फिर यही कहूँगी कि इन हालातों में यह सब कार्रवाई संभव नहीं थी। क्योंकि हम वहाँ लड़ाई लड़ रहे हैं और वह वार ज़ोन है।” सरकारी वकील ने अपनी बात दोहराई।

“फिर मैं भी यह कहूँगी कि यह एक सिविल कोर्ट है, यह कोई मिलेटरी ट्रिब्यूनल नहीं है।” सफाई वकील ने उसका उत्तर दिया।

“मैंने दोनों पक्षों की बातें नोट कर ली हैं। अब प्लीज़ कार्रवाई को आगे चलने दो।” जज ने दख़लअंदाजी की तो सरकारी वकील फिर से आफिया से सवाल पूछलने लग पड़ी।

तभी एक डिफेंस वकील अपनी टीम के मुखिया के करीब होता हुआ मन में उपजा नया ख़याल उसके संग साझा करने लगा, “वैसे तो अब तक की कार्रवाई अपने हक में जा रही है, पर यदि यह बात सिद्ध कर दी जाए कि आफिया ने हालांकि गन उठाई थी, पर वह उसने आत्मरक्षा के लिए उठाई थी। क्योंकि पहले दिन से ही जब से आफिया पकड़ी गई थी, उस पर घोर अत्याचार किया गया। सिर्फ़ शक के आधार पर उसके साथ अमानवीय व्यवहार किया गया। इसलिए जब वहाँ सभी लोग आफिया को घेरकर बैठ गए तो आफिया को सन्देह हुआ कि अब उसको मार दिया जाएगा, तो उसने अपनी आत्मरक्षा के लिए गन उठा ली होगी। उसने यद्यपि गन चलाई भी हो तो भी उसने किसी को गोली मारी तो नहीं। मेरा विचार है कि यह बात एकाध ज्युरी मेंबर को ज़रूर जच जाएगी और वह इस बात से सहमत हो जाएगा। यही अपना प्रमुख मकसद है कि बस कोई एक ज्युरी मेंबर शक में पड़ जाए।”

मुखिया सफाई वकील को यह बात बहुत जंची। उसने सोचा कि पहले उठाये गए कदम के साथ साथ इस बिन्दु को भी प्रयोग में लाने के लिए तैयार रहना चाहिए। वह

अपने पेपर पर इस नुक्ते की रूपरेखा लिखने लगा। पर तभी उसके कानों में आवाज़ पड़ी तो जिसने उसके सारे जोश पर पानी फेर दिया। उसके समीप ही खड़ी होकर आफिया ने जज को संबोधित होते हुए कहा, “जज साहिब, मैं अपनी स्टेटमेंट देना चाहती हूँ।“

इस बात ने उसके वकीलों की उम्मीदों पर ही पानी नहीं फेरा बल्कि उसका अपना भाई भी सिर पकड़कर बैठ गया। भाई ने इशारे से आफिया को बैठ जाने के लिए भी कहा। परंतु आफिया अब किसी की सुनने वाली नहीं थी। जिस बात का सफाई टीम को डर था, वही हो गई।

आफ़िया सिद्दीकी का जिहाद –24

(24)

“मि. वकील, अपनी क्लाइंट को बोलने से रोको। क्योंकि तुमने इसको कोर्ट में चुप रहने का स्टेट्स प्राप्त किया हुआ है।“ जज ने प्रतिवादी वकील की ओर देखते हुए अपना गुस्सा प्रकट किया।

“नहीं, मुझे बोलना है।“ आफिया फिर से बोली तो जज के माथे पर बल पड़ गए। प्रतिवादी वकीलों ने आफिया को चुप रहने का संकेत किया, पर उसने किसी की परवाह नहीं की और अपनी बात पर अड़ी रही। आख़िर जज उससे सम्बोधित हुआ -

“मिस आफिया, क्या तुम समझ रही हो कि तुम क्या करने जा रही हो ?“

“हाँ, मैं सब समझती हूँ।“

“मिस आफिया, मैं एकबार फिर तुम्हें समझाना चाहूँगा कि इस प्रकार तुम्हारे केस का नुकसान हो सकता है। तुम्हें अपने वकीलों की बात माननी चाहिए।“ जज ने कुछ रूखे स्वर से कहा।

“मुझे किसी की परवाह नहीं है। मुझे अपनी स्टेटमेंट देनी है।“

“वह तो तुम जब चाहो दे सकती हो। वैसे भी केस अभी अधबीच में ही है। कोर्ट तुझे मौके के अनुसार स्टेटमेंट देने की अनुमति देगी।“ जज ने अन्तिम बार आफिया को बोलने से रोकने की कोशिश की।

“नहीं, मुझे अभी इसी वक्त स्टेटमेंट देनी है। यह मेरा अधिकार है।“

“ओ.के. गो अहैड। जो तुम्हारी इच्छा।“ आख़िर जज ने उसको बोलने की अनुमति देते हुए उसका विटनेस बॉक्स में जाने के लिए कहा। आफिया विटनेस बॉक्स में जाकर खड़ी हुई तो प्रतिवादी वकील ने सोचा कि चलो, इसी तरह ही सही। पर उसने इस पैदा हुई नई स्थिति को भी अपने हक़ में रखने की कोशिश करते हुए स्वयं ही आफिया का क्रॉस अगज़ामिनेशन शुरू कर दिया ताकि केस को अपने ढंग से मोड़ दिया जा सके। उसने आफिया से कहा कि वह अपनी सारी कहानी कोर्ट को सुनाए। आफिया बोलने लगी, “मैं अमेरिका से बहुत प्यार करती हूँ। मेरा न्यूयॉर्क और बॉस्टन शहर से बड़ा लगाव है। मैं इन शहरों को नुकसान पहुँचाने के बारे में सोच भी नहीं सकती। मैं बहुत इंटैलीजेंट स्टूडेंट रही हूँ। मुझे अच्छी पढ़ाई करने के कारण अनेक बार इनाम मिले। इसके अलावा, समाज सेवा के लिए मुझे मेरी यूनिवर्सिटी ने कईबार सम्मानिक किया...।“

“मिस आफिया, तुझ पर जो इल्ज़ाम लगाया गया है कि तुमने स्पेशल फोर्स पर गोली चलाई, क्या तुम उसके बारे में बताओगी कि तुमने गोली चलाई थी या नहीं ?“ वकील ने उसको बीच में टोका।

वकील की बात सुनकर पहले आफिया ने हँसते हुए कोर्ट में बैठे लोगों की ओर देखा और फिर बोली, “यह तो एक हास्यास्पद-सा आरोप है। मैं मन ही मन सोचती हूँ कि इल्ज़ाम भी लगाया तो कितना हल्का-सा। जिसकी कोई तुक ही नहीं बनती।“

“मिस आफिया, मेरे सवाल का उत्तर दो प्लीज़।“

“वही दे रही हूँ न। ज़रा सोचकर देखो कि पाँच साल अफगान पुलिस के अधिकारी बैठे हैं। उनके पास पाँच-सात ही अमेरिकी हट्टे-कट्टे फौजी आ बैठते हैं। क्या यह संभव है कि मेरे जैसी दुबली-पतली लड़की जो कि उस समय पुलिस की निगारानी के अधीर है, वह पीछे से आती है और सभी के बीच पहुँचकर एक अफसर की गन उठाती है। इसके बाद वह सभी पर गोलियाँ चलाने लगती है। ऐसा कुछ किसी फिल्मी सीन में तो हो सकता है, पर असली जीवन में बिल्कुल संभव नहीं है।“

“मिस आफिया, तुम हाँ या ना में उत्तर दो कि तुमने इन पर गोली चलाई थी कि नहीं?“

“मैंने न ही कोई गन उठाई और न ही किसी पर गोली चलाई।“

“फिर तुम कोर्ट को बताओ कि उस दिन क्या हुआ ?“

“उस दिन जब इतने सारे आदमी वहाँ थे तो मैं पर्दे के पीछे बैठी हुई थी। बैठी भी नहीं बल्कि लेटी हुई थी क्योंकि सारी रात थाने वाले मुझे मारते-पीटते रहे थे और मेरा शरीर चोटों से तोड़ रखा था। उस समय मेरे कानों में इकट्ठे हुए लोगों का शोर भी गूंज रहा था जो गुस्से में चीख-चिल्ला रहे थे। वहाँ यह अफवाह फैली हुई थी कि अफगानी पुलिस वाले किसी निर्दोष औरत को अमेरिकियों को सौंप रहे हैं। फिर जब अमेरिकी स्पेशल फोर्स वाले अंदर आए तो मैंने यह देखने के लिए पर्दा उठाकर बाहर की ओर झांका कि देखूँ तो सही कि यहाँ आख़िर हो क्या रहा है। मैंने देखा कि अमेरिकी फौजी अंदर आते हुए बहुत डरे और घबराये हुए थे और उन्होंने अपनी बंदूकें उठा रखी थीं। फिर जैसे ही एक फौजी की मेरी तरफ दृष्टि उठी तो वह शायद मुझे झांकते देखकर और अधिक डर गया और उसने जल्दी से अपनी पिस्तौल में से गोली

चला दी जो कि मेरे पेट में आ लगी। इसके बाद वहाँ अफरा-तफरी मच गई। यह शायद अपने बचाव के लिए मुझ घायल को उठाकर साथ ही ले गए। तब तो शायद इन्हें यह भी नहीं पता था कि मैं कौन हूँ। बाद में जब इन्हें मेरी असलियत का पता चला तो सरकार ने मेरे पर यह केस बना दिया जो कि सरकार को ठीक बैठता है।“

फिर प्रतिवादी वकील ने आफिया से कहा कि वह खुलकर बताए कि उसकी गिरफ्तारी से पहले वह कहाँ गायब रही। प्रतिवादी वकील को पूरा विश्वास था कि वह वही बात बताएगी जो कि वह हमेशा कहती है कि उसको एफ.बी.आई. ने कहीं गुप्त जेल में क़ैद में रखा और उस पर जुल्म किया। पर आफिया ने यह सवाल ही टाल दिया और बात को किसी दूसरी तरफ ले गई। उसकी इस हरकत पर प्रतिवादी वकील भी खीझ उठा। वह सोच रहा था कि यदि यह खुलकर बता दे कि कैसे इसको एजेंसियों की ओर से इतने वर्ष टॉर्चर किया गया तो ज्यूरी की इससे हमदर्दी बढ़ जाएगी। पर आफिया ने ऐसा कुछ नहीं कहा। आख़िर माथापच्ची करते हुए प्रतिवादी वकील बैठ गया और सरकारी वकील की बारी आ गई। वह विटनेस बॉक्स के सामने आ खड़ी हुई। ध्यान से आफिया की ओर देखते हुए बोली, “मिस आफिया, तुम इतने साल कहाँ रहीं ?“

“मुझे एफ.बी.आई. ने अफगानिस्तान की किसी गुप्त जेल में रखा हुआ था जहाँ उन्होंने मेरे पर घोर जुल्म किया।“ जिस बात को वह प्रतिवादी वकील अर्थात अपने ही वकील के सम्मुख टाल गई थी, उसका उसने तुरंत ही उत्तर दे दिया। इससे प्रतिवादी वकील को थोड़ी राहत मिली कि चलो, इसने जो कुछ मेरे कहने पर नहीं बताया, वह अब बता रही है।

“पर तेरी गिरफ्तारी के अगले दिन ही तुमने एफ.बी.आई की एक महिला अफ़सर से कहा था कि तुम अपनी इच्छा से अंडरग्राउंड रही थी।“

“वह तो मैं इसलिए डरते हुए कही थी कि अब ये मुझे पर अत्याचार न करें।“

“तेरी गिरफ्तारी के समय तेरे बैग में से जो कागज मिले थे, क्या वे तेरे थे ?“

“नहीं, वो तो मुझे आई.एस.आई. ने दिए थे।“ आफिया का यह उत्तर सुनते ही सरकारी वकील ने बड़े बंडल में से एक पेपर निकालकर बोर्ड पर टांग दिया। इस कागज पर डर्टी बम बनाने के तरीके लिखे हुए थे।

“मिस आफिया, यह हस्तलिखित कागज हैं। और ये तेरे ही हाथ की लिखावट है। इस बारे में तुम क्या कहना चाहती हो ?“

“ओह ये ! ये तो मुझसे जबरन लिखवाये गए थे। मुझे एक पत्रिका दी गई थी। यह सारी जानकारी उसमें थी। मैंने तो सिर्फ़ कॉपी ही की थी।“

“फिर तुमने कॉपी क्यों की ?“

“अगर मैं ऐसा न करती तो वे मेरे बच्चों पर जुल्म ढाने का भय दिखाते थे। साथ ही, यह कोई एकआध दिन की बात नहीं है। पूरे चार साल मैंने ऐसे लोगों की कैद में बिताए हैं जिनका हर रोज़ काम ही मुझे पर अत्याचार करना था। यह सबकुछ मुझे बाद में ब्लैकमेल करने के लिए करवाया गया था। यह बात सच भी है। अब आप उन कागजों को ही मेरे खिलाफ़ इस्तेमाल कर रहे हैं।“

“मिस आफिया, क्या तुम्हें बंदूक या पिस्तौल चलाने की कोई जानकारी है ?“

“नहीं।“ आफिया ने ‘न’ में सिर हिलाकर उत्तर दिया।

“तुमने 1993 में बंदूक पिस्तौल चलाना सीखने के लिए एक क्लब ज्वाइन किया था।“

“नहीं, मैंने कोई क्लब ज्वाइन नहीं किया था।“

उसके इतना कहते ही सरकारी वकील ने उसी समय किसी क्लब के इंस्ट्रक्टर को अदालत में पेश कर दिया जिसने बताया कि उसे अच्छी तरह याद है कि उसने इस औरत को असला चलाने की शिक्षा दी थी। इस प्रकार यह कार्रवाई कई दिन चलती रही। आख़िर गवाहियाँ खत्म हो गईं और जज ने दोनों पक्षों को क्लोज़ स्टेटमेंट देने के लिए कहा। सरकारी वकील ने अपनी क्लोज स्टेटमेंट में कहा कि मिस आफिया लगातार झूठ बोलती रही है। इसने किसी भी प्रश्न का सीधा उत्तर नहीं दिया। कभी यह दिमागी तौर पर बीमार होने का पाखंड करती है और कभी कहती है कि यह अपनी इच्छा से अंडरग्राउंड रही और कभी सरकार पर इल्ज़ाम लगाती है। इस कारण इसकी कोई भी बात विश्वास करने के काबिल नहीं है। जो केस इस पर चलाया गया है, वह पूरी तरह साबित हो चुका है।

डिफेंस टीम ने कहा, "एक मासूम और तीन बच्चों की माँ को सरकारी एंजेसियों ने लगातार कई साल बिना किसी दोष के कैद किए रखा और उस पर घोर अत्याचार किए। आख़िर, ड्रामे के रूप में उसकी गिरफ्तारी दिखाई गई। पर कितने अफ़सोस की बात है कि जिन दोषों के कारण उसको कैद किए रखा और उस पर घोर अत्याचार किए गए, उन दोषों की बाबत उस पर केस चलाया ही नहीं गया। उस पर एक मनगढंत दोष लगा दिया गया। इस केस में भी कोई ठोस सबूत उसके खिलाफ़ नहीं मिला। हम माननीय ज्यूरी को बताना चाहेंगे कि यह केस झूठा है और बेबुनियाद है।

फिर जज ने दिशानिर्देश दिए और ज्यूरी बैठ गई। तीन दिनों के बाद ज्यूरी ने अपना फैसला सुनाते हुए आफिया को दोषी घोषित कर दिया। अदालत में बैठे आफिया के भाई ने सिर पकड़ लिया। वह आफिया को यह समझाने के लिए सारा ज़ोर लगा चुका था कि पाकिस्तान सरकार ने दो मिलियन डॉलर की मदद देते हुए उसके लिए दुनिया के उच्चे कोटि के वकील चुने हैं। वह और कुछ नहीं कर सकती तो कम से चुप ही रहे। पर अब वह सोच रहा था कि इस मूर्ख लड़की ने सबकुछ चौपट करके रख दिया। पर बॉक्स में खड़ी आफिया पर कोई असर नहीं था। उसने ऊँचे स्वर में बोलते हुए इतना ही कहा, "मुझे ज्यूरी का यह फैसला सुनकर कोई हैरानी नहीं हुई। क्योंकि मुझे पता है कि यह फैसला पहले से ही ज्यूरी मेंबरों के मन में तयशुदा था। मैंने यह उम्मीद भी नहीं की थी कि अमेरिका की किसी अदालत में मुझे इन्साफ़ मिलेगा। इस कारण मैं इसके लिए पहले से ही तैयार थी। ज़रा सोचो...।"

"मिस आफिया, तुम्हें इस अवसर पर बोलने की इजाज़त नहीं है। न ही अब तेरे बोलने से कोई अन्तर पड़ेगा। इस कारण कोर्ट का हुक्म है कि तुम इस समय चुप रहे।"

“ठीक है जज साहिब ! देश आपका, कोर्ट आपकी, ज्यूरी आपके लोगों की, वकील आपके। फिर यहाँ किसी बेगाने का केस कैसे निरपक्ष ढंग से चल सकता है। पर मैंने पहले ही कहा है कि मुझे कोई रंजिश नहीं है। किसी पर कोई गुस्सा नहीं है। आपका हुक्म सिरमाथे है।“ इतना कहते हुए आफिया चुप हो गई। कोर्ट में ख़ामोशी पसर गई। फिर, जज की आवाज़ ने इस ख़ामोशी को तोड़ा। उसने कोर्ट बर्खाश्त करते हुए सज़ा देने की तारीख़ अगले दिन की रख दी। मार्शल आफिया को जेल की ओर ले गए और कोर्ट खाली हो गई।

उस रात आफिया का सैल बदल दिया गया। नया सैल बहुत तकलीफ़देह नहीं था। रात के समय हर रोज़ की तरह उसको जागते रखने के लिए तंग-परेशान भी नहीं किया गया। पर आज उसको खुद ही नींद नहीं आ रही थी। वह छोटे-से कमरे में चक्कर लगाए जा रही थी। आख़िर वह बैठ गई और एक तरफ रखा पैन-कागज उठा लिया। काफ़ी देर पैन का पिछला हिस्सा मुँह में लिए वह दीवार की ओर देखती रही। फिर उसने कॉपी खोली और लिखने लगी, “अमजद, कल मेरी ज़िन्दगी का फैसला हो जाएगा। मुझे पहले ही पता है कि मुझे लम्बी सज़ा होगी। इस बात का कोई अफ़सोस नहीं है। बस एक चाहत-सी दिल में है कि काश, तू कल कोर्ट में माजूद हो। तुम ये न सोचना...।“ लिखती लिखती आफिया एकदम चैंकी और उसने लिखना बंद कर दिया। फिर उसने लिखी हुई पंक्तियों को पढ़ा। पैन-कॉपी एक तरफ रखते हुए वह लिखी हुई इबारत को ग़ौर से देखते हुए अपने आप से बोली, “हैं अमजद ! इस वक्त यह मेरे मन में कैसे आ गया।“ उसने आँखें मूंद ली और उसकी आँखों के कोये गीले हो गए। फिर उसने लिखा हुआ कागज फाड़ दिया और कॉपी एक तरफ रख दी। वह उठकर फिर से कमरे में चक्कर लगाने लगी। चलती-फिरती रुक गई और कागज-पैन फिर से उठा लिया। इस बार वह ठीक होकर बैठ गई और बड़े ध्यान से लिखने लगी, “मेरी प्यारी मम्मी, मुझे पता है कि मेरी तरह आज तुझे भी नींद नहीं आएगी। तू तो बल्कि पता नहीं पिछले कितने समय से अच्छी तरह सोई ही नहीं होगी। मैं समझ सकती हूँ कि औलाद का दुख क्या होता है। पर मेरी प्यारी मम्मी, तेरे बताए रास्तों पर चलती हुई मैं आज यहाँ तक का सफ़र तय कर आई हूँ। मैं तेरा धन्यवाद करती हूँ जो तूने मुझे मज़हब के इस असली काम की राह पर डाला। पर मैं तेरी सोच पर खरी न उतरी। तू चाहती थी कि मैं राजनीति में बुलंदियाँ छूती। पर वो मेरा राह नहीं है। मुझे पता है कि आज जो भी हूँ, वह तेरी शिक्षाओं के कारण ही है। पर अपने राह वहाँ आकर अलग अलग हो जाते हैं, जब तू इस मज़हबी काम को राजनीति के लिए सीढ़ी बनाने को कहती है और मैं इस पवित्र काम के असली मायनों को निभाना चाहती हूँ। खैर, ये बातें अब दूर की हैं।

मैं जानती हूँ कि तू भी दूसरों की तरह मेरे केस की हर रोज़ की कारगुज़ारी देखती होगी। आज तू भी अति निराश हुई होगी कि मैंने अपने वकीलों का कहना नहीं माना, नहीं तो शायद मैं बच जाती। अम्मी, तुम सबका यह भ्रम है। क्योंकि अमेरिकियों ने मुझे किसी भी कीमत पर छोड़ना नहीं है। एक केस न हुआ तो कोई और दूसरा घड़ लेंगे।" इसलिए मैं इस अदालती कार्रवाई को महज एक ड्रामे के तौर पर ले रही हूँ। नहीं तो तुम बताओ कि इन्होंने मुझे दुनिया की सबसे ख़तरनाम जिहादी स्त्री घोषित किया हुआ है। इनकी सूची में मेरा नाम सातवें नंबर पर है। हर रोज़ टी.वी. पर मेरा जिक्र चलता है तो उसमें भी मुझे हौआ बनाकर पेश किया जाता है। पर जब मेरे पर केस चलाने की बात आई तो इन्होंने यूँ ही एक फर्ज़ी-सा केस घड़ लिया। जब मुझे एक तरफ ये इतनी ख़तरनाक जिहादी स्त्री घोषित करते हैं तो मेरे पर केस भी वही क्यों नहीं चलाया गया। बात तो फिर बनती अगर ये मेरे पर वही केस चलाते जिसके कारण जैसा कि ये कहते हैं, मुझे कितने ही वर्षों तक तलाशते रहे हैं। यदि मेरे पर टैरेरिज़्म का केस चलता तो मैं दिखाती इन्हें कि असली टैरेरिज़्म क्या होता है। मैं इनका दूसरा चेहरा दुनिया के सामने नंगा करते हुए इनके बखिये उधेड़ देती। पर क्या करूँ इन दोगले लोगों ने अपने आप को बचाने के लिए मेरे पर वो केस चलाया ही नहीं। क्योंकि यदि ये मेरे पर टैरेरिज़्म का केस चलाते हैं तो इन्हें वो सारे बड़े जिहादी कोर्ट में पेश करने पड़ते जो कि इन्होंने अफगानिस्तान की अति भयंकर जेलों में बंद किए हुए हैं। उन्हें बाहर लाकर ये अपना दोगला चेहरा आप ही कैसे नंग कर सकते हैं। चलो फिर जो भी मेरे पर केस बनाया गया, उसमें कौन-सा इन्होंने कोई इन्साफ़ वाली बात की है। बस, पाँच-सात लोगों ने कह दिया कि आफिया ने हमारे पर गोली चलाई और जज ने मान लिया कि हाँ, आफिया इन लोगों के इरादतन क़त्ल की दोषी है। जो गोली मेरे मारी गई, वह तो सबको दिखती है, पर उसकी कोई बात नहीं करता। और जो गोलियाँ ये कहते हैं कि मैंने इन पर चलाईं, उनके कहीं खोल भी बरामद नहीं किए गए। किसी हथियार पर मेरे फिंगर प्रिंट भी नहीं मिले। कोई फॉरसेनिक जांच नहीं हुई। बस, इनके अपने लोगों के कहने पर जज ने मुझे दोषी मान लिया। अच्छा, यह कहते हैं कि ये ज्यूरी सिस्टम के माध्यम से दूध का दूध और पानी का पानी कर देते हैं। पर यहाँ यह उसूल किधर गया। किसी ज्यूरी मेंबर ने भी यह सवाल उठाने की कोशिश नहीं की कि कम से कम एक आध सबूत ही पेश किया जाए जिससे यह साबित हो कि आफिया ने गोली चलाई। यह हो भी नहीं सकता था क्योंकि ज्यूरी मेंबर वही अमेरिकी हैं जो पिछले कितने ही वर्षों से मेरे बारे में अपनी सरकार द्वारा बताया गया ही सुनते आ रहे हैं। उनके लिए तो मैं पहले से ही दोषी हूँ। हाँ, बात तब थी यदि केस किसी ऐसी जगह चलाया जाता, जहाँ के लोग अमेरिकी प्रभाव से मुक्त होते। पर ऐसा संभव नहीं है। इसीलिए मैं इनके किसी नाटक का हिस्सा नहीं बनना चाहती थी और न ही बनी। मैं यह भी नहीं चाहती कि कोई मेरे पर दया करें हाँ, सबूतों के आधार पर मेरे पर केस का फैसला होता तो मैं खुशी खुशी परवान कर लेती। चलो

छोड़ो इस बात को और क्या बढ़ाना है। मैं उन सभी का धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने मेरे लिए आवाज़ उठाई। अच्छा, ख़त लम्बा हो गया है, बस करती हूँ। अम्मी, जब तक भाई जान के जरिये यह ख़त तुम्हें मिलेगा, तब तक मैं अपनी लम्बी सज़ा भुगतने के लिए किसी जेल की कोठरी में स्थायी तौर पर बंद हो चुकी होऊँगी। बस, एक आख़िरी बात और। बड़ा ही दिल करता है, एक बार उस घर को देखने को जहाँ मैं जन्मी, पली-पढ़ी और बड़ी होकर उस घर में हँसते-खेलते हुए अपनी ज़िन्दगी का सुहावना समय गुज़ारा। इसके अलावा दिल में बड़ी इच्छा है कि काश ! एक बार अपने बच्चों के बीच बैठकर उनकी किलकारियाँ सुन सकती। परंतु मुझे पता है कि यह ख्वाहिशें कभी पूरी नहीं होंगी। आख़िर में यही कहूँगी कि मुझे अपने किए पर कोई अफसोस नहीं है। मुझे तो बल्कि गर्व है कि मैं भी अल्लाह के बताये राह पर चलते हुए जिहाद की थोड़ी-बहुत सेवा कर सकी... आफिया।“ ख़त लिखकर आफिया ने दीवार से पीठ टिका ली। आहिस्ता आहिस्ता उसे नींद आ गई।

23 सितंबर, 2010 को कोर्ट फिर से शुरू हुई। कोर्ट खचाखच भरी हुई थी। मीडिया के अलावा आफिया के हमदर्द और उसके रिश्तेदार कोर्ट में हाज़िर थे। यू.एस. मार्शलों ने आफिया को कोर्ट में पेश किया। उसने बैठे हुए लोगों की ओर एक नज़र देखा। कोर्ट शुरू हुई तो जज ने आफिया से कहा कि वह कुछ कहना चाहती है तो उसने ‘ना’ में सिर घुमा दिया। सज़ा सुनाने से पहले जल ने बोलना प्रारंभ किया, “डॉक्टर आफिया का केस एक उलझी हुई कहानी की तरह है। मैं इस केस की तह तक पहुँचने में असफल रहा हूँ। उस पर जो भी आरोप लगे है, उनके अनुसार हालांकि वह दोषी साबित हो गई है, पर फिर भी बहुत कुछ ऐसा है जो कि अनसुलझा रह गया है। इस अजीबोगरीब कहानी को सुलझाने में न ही एफ.बी.आई. ने मदद की और न ही डॉक्टर आफिया ने। दोनों इस बारे में बोलने से कतराते रहे। इसलिए यह कहना कठिन है कि असल में पिछले दिनों के दौरान सचमुच हुआ क्या है। उदाहरण के तौर पर डॉक्टर आफिया कह रही है कि वह अफगानिस्तान के गज़नी शहर में उस दिन इसलिए गई कि वह अपने पति को तलाश रही थी। जब कि सरकार कह रही है कि आफिया उस दिन आत्मघाती हमला करने के लिए अफगानिस्तान में गई थी। या फिर हो सकता है कि वह अफगानिस्तान में ऐसे दस्तावेज़ देने गई थी जिनसे डर्टी बम बनाया जा सकता हो। इसके अलावा कोर्ट यह भी नहीं जान सकी कि डॉक्टर आफिया 2003 से 2009 तक कहाँ रही है। यह मुकदमा भी बहुत पेचीदा और कठिन रहा क्योंकि डॉक्टर आफिया ने अदालती कार्रवाई में बहुत बार बाधा पैदा की।“ अपनी बात कहकर जज कागज पर कुछ लिखने लग पड़ा।

इसके विपरीत डिफेंस वकील ने अपनी स्टेटमेंट में कहा, “यह केस आफिया के खिलाफ इस कारण गया क्योंकि वह मानसिक तौर पर ठीक नहीं है। जो ऊटपटांग उत्तर आफिया ने दिए, वे उसने जानबूझ कर नहीं दिए बल्कि उसकी मानसिक स्थिति खराब होने के कारण उसके वश में कुछ नहीं है। बार बार वह बिना मतलब ही चलती कार्रवाई में बोलने लग पड़ती थी क्योंकि वह मानसिक रोगी है। नहीं तो डॉक्टर आफिया जैसी उच्च पढ़ी-लिखी औरत से ऐसे व्यवहार की आशा नहीं की जा सकती। सारे ही केस के दौरान रहा उसका व्यवहार यह साबित कर देता है कि वह दिमागी तौर पर बीमार है। उसकी इस तरह की दिमागी हालत एफ.बी.आई. के अमानवीय अत्याचार के कारण हुई है। इसीलिए उसको कुछ भी याद नहीं है कि वह इस पिछले अरसे के दौरान कहाँ थी। जो औरत इतने वर्षों से अपने बच्चों को लेकर अपनी और उनकी जान बचाने के लिए छिपती रही हो, फिर चाहे वह किसी से भी छिपती रही हो, वह नरम व्यवहार की हक़दार है। इतने वर्षों से हर वक्त डर के साये में जी रही औरत पर वैसे भी रहम करने का इन्सानी फर्ज़ है। जितनी सज़ा की वह हक़दार है, वह तो उसने पिछले कुछ वर्षों के दौरान भुगत ही ली है। मेरी कोर्ट से अपील है कि छोटे छोटे तीन बच्चों की माँ और दिमागी तवाज़न खो चुकी इस औरत को सज़ा सुनाने के समय इन नुक्तों पर भी ध्यान रखा जाए।“

डिफेंस वकील बोलकर हटी तो आफिया ने जज से कहा कि वह कुछ कहना चाहती है। अब जज ने उसको बोलने की अनुमति दे दी तो आफिया बोलने लगी, “मैं अमेरिका को बहुत प्यार करती हूँ, इसलिए मैं इसको नुकसान पहुँचाने के बारे में सोच भी नहीं सकती। मेरा मिशन है कि संसार में शांति रहे। आख़िर में मैं अपने मुसलमान बहन-भाइयों से विनती करती हूँ कि वह मेरे कारण किसी पर गुस्सा न हों। वह किसी के प्रति मन में ईष्र्या या बदले की भावना न रखें।“ इतना कहकर वह चुप हो गई।

अंत में, जज ने उसकी फाइल पर कुछ लिखा और फिर सज़ा सुना दी। जज ने आफिया को छियासी वर्ष की लम्बी सज़ा सुनाई। जज द्वारा सुनाई सज़ा की बात सुनते ही अदालत में से कइयों की शेम शेम की आवाजें उभरीं तो आफिया फिर से खड़ी हो गई। वह अदालत में उपस्थित लोगों की तरफ देखते हुए बोली, “देखो, मैं पहले ही कह चुकी हूँ कि मेरे कारण किसी पर गुस्सा न होएँ। मुहम्मद साहब ने अपनी शिक्षाओं में कहा है कि अपने दुश्मनों को भी माफ़ कर दो। मेरी सबसे प्रार्थना है कि मुहम्मद साहब की शिक्षा पर अमल करके सच्चे मुसलमान होने का सबूत दें। तुम हर उस शख़्स को माफ़ कर दो जिस पर तुम्हें गुस्सा आ रहा है। किसी के साथ गुस्सा मत करो। शायद अल्लाह को यही मंजूर है। मुझे भी अल्लाह की यह मर्ज़ी मंजूर है। मुझे किसी के साथ रंजिश नहीं है। अगर मुझे खुद को किसी पर गुस्सा नहीं

तो तुम्हें भी नहीं होना चाहिए। खुदा हाफिज़। इंशा अल्ला, सब खुशी खुशी यहाँ से जाएँ।“

उसकी यह बात सुनकर जज उससे सम्बोधित हुआ, “डॉक्टर आफिया तेरा इन बातों के लिए शुक्रिया। खुदा करे, तेरा आगे के जीवन का सफ़र खुशगवार रहे।“ इसके बाद जज उठ गया। यू.एस. मार्शल आफिया को पिछले दरवाज़े से जेल की ओर ले चले।

- समाप्त -